ज्ञान-भण्डार प्रकाशन—१

आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान-भण्डार

(शोध प्रतिष्ठान)

ग्रन्थ-सूची

भाग-१

●

सम्पादक
डा० नरेन्द्र भानावत, एम० ए०, पी-एच० डी०
मानद निर्देशक
आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार
तथा
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

●

प्रकाशक
आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भंडार
लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

प्रकाशक
आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भंडार,
लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

सम्पादक
डॉ० नरेन्द्र भानावत

प्रथम संस्करण १९६८
मूल्य १५.००

मुद्रक
राज प्रिन्टिंग वर्क्स,
किशनपोल बाजार, जयपुर-२

प्रकाशकीय

आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भडार के हस्तलिखित ग्र थो के सूची-पत्र का प्रथम भाग साहित्य जगत् के समक्ष प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस अवसर पर ज्ञान भडार के सम्बन्ध मे दो शब्द कहना अप्रासगिक न होगा।

श्री विनयचन्द्र ज्ञान भडार का इतिहास अधिक पुराना नही है। स० २०१६ मे स्वर्गीय श्रद्धेय अमरचन्द जी म० सा० की लम्बी अस्वस्थता के कारण आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० को जयपुर मे कुछ अधिक समय के लिए रुकना पडा। इस अवधि मे लाल भवन के तहखाने की सफाई की गई तो वहा रखे हुए कतिपय हस्तलिखित ग्र थो को बाहर निकाला गया। ये हस्तलिखित ग्र थ अस्त-व्यस्त अवस्था मे थे। इनमे से कई जीर्ण-शीर्ण हो चुके थे। इनकी उपेक्षित दशा की ओर आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० का ध्यान गया। उन्होंने तथा पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० ने इन ग्र थों को सुरक्षित एव व्यवस्थित करने की प्रेरणा दी। स्थानीय प्रतिष्ठित श्रावक स्वर्गीय स्वरूपचद जी सा० चोरडिया (जिनकी अब स्मृति ही शेष है) के सद्‌प्रयत्नो द्वारा वे ग्र थ तो तत्काल सभाल लिये गये पर उसी प्रेरणा के फलस्वरूप पौष शुक्ला चतुर्दशी (आचार्य श्री हस्तीमल जी म० का जन्म-दिवस) को यह ज्ञान भडार अस्तित्व मे आया। इसका नामकरण पूज्य आचार्य श्री विनयचन्द्र जी महाराज के नाम पर किया गया। ये पूज्य कजोडीमल जी म० के शिष्य थे। इनका जन्म स० १८९७ मे आसोज सुदी १४ को फलौदी (मारवाड) मे हुआ। इनके पिता का नाम प्रतापमल जी पु गलिया तथा माता का नाम रभाजी था। सोलह वर्ष की वय मे स० १९१२ मिगसर वदी २ को अपने लघुभाई श्री कस्तूरचद जी के साथ ये दीक्षित हुए। स० १९३७ ज्येष्ठ वदी ५ को अजमेर मे ये आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। ये बडे शान्त स्वभावी, कवि और विद्वान थे। नेत्र–ज्योति क्षीण हो जाने से स० १९५९ से जयपुर मे इनका स्थिरवास रहा। स० १९७२ मिगसर वदी १२ को ७५ वर्ष की आयु मे जयपुर मे ही इनका स्वर्गवास हुआ। इनके उत्तराधिकारी इनके लघु गुरु भाई श्री शोभाचन्द जी म० हुए, जो आचार्य श्री हस्तीमल जी म० के गुरु थे।

प्रारभ में विद्यमान हस्तलिखित ग्र थों का सरक्षण करना ही हमारा उद्देश्य रहा पर धीरे २ कई स्थानो के व्यक्तिगत सग्रह भी हमे भेट स्वरूप प्राप्त होने लगे। कई सन्त-सतियो ने अपने नेश्राय के शास्त्र भी भडार को भेंट करवाये। कतिपय श्रावक सघो ने भी अपने यहाँ के ग्र थ भडार को भेंट मे दिये। अलभ्य महत्त्वपूर्ण प्राचीन ग्र थों को क्रय करने की भी हमारी नीति रही फलस्वरूप हस्तलिखित ग्र थो की संख्या उत्तरोत्तर बढती गई। सम्प्रति भडार मे लगभग बीस हजार हस्तलिखित ग्र थों का विशाल संग्रह है। ग्र थो के अतिरिक्त प्राचीन नक्शो और चित्रो को सगृहीत करने का भी हमारा लक्ष्य रहा। अन्य भडारो मे उपलब्ध महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्र थो की प्रशस्तियो व आवश्यक अगो को फोटो प्रतियाँ भी

पर्याप्त सख्या मे हैं। अनुसधान मे सहायक मुद्रित सदर्भ ग्रथो का भी अच्छा सग्रह करने का प्रयत्न किया गया है। इस विशाल सग्रह मे मूल प्रेरणा परम श्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० की ही रही है। यह उन्ही की लगन व निष्ठा का फल है।

स० २०२० मे हमारे अनुरोध पर राजस्थान विश्वविद्यालय के तत्कालीन उपकुलपति डॉ० मोहनसिंह मेहता ने अपने विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ० नरेन्द्र भानावत, एम० ए०, पी-एच. डी की मानद निदेशक के रूप मे सेवाएँ देना स्वीकार किया। तब से डॉ० भानावत इस भडार के अभिन्न अग बने हुये हैं। इस अवधि मे दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद, गुजरात, राजस्थान, गोरखपुर आदि विश्वविद्यालयो के कई शोध-छात्रो ने अपनी पी-एच डी उपाधि के लिए भडार मे सगृहीत हस्तलिखित ग्रथो व सदर्भ पुस्तको से लाभ उठाया है।

हमारी प्रारभ से ही यह इच्छा थी (और शोध छात्रो की भी बराबर माग रही) कि भंडार मे सगृहीत हस्तलिखित ग्रथो का विषयवार अकारादि क्रम से सूचीपत्र शीघ्र प्रकाशित हो। इस दिशा में सामान्य रूप से प्रारभिक ग्रथ विवरणिका का ढाचा तो तैयार कर लिया गया था पर विषय-क्रम मे उसका वैज्ञानिक रूप से अवतरण न हो सका। यह कार्य डॉ० भानावत के अथक परिश्रम व अध्यवसाय के द्वारा सम्पादित होकर अब प्रकाश मे आ रहा है। इस महत्त्वपूर्ण एव उपयोगी कार्य के लिए हम डॉ० भानावत व उनके सहयोगियो के प्रति अत्यन्त आभारी हैं। लोक साहित्य के मर्मज्ञ व राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० सत्येन्द्र तथा जैन साहित्य के प्रसिद्ध गवेषक विद्वान श्री अगरचंद नाहटा ने क्रमश प्रस्तावना व भूमिका लिखकर इस ग्रथ का जो गौरव बढाया है, एतदर्थ उनके प्रति हम विशेष आभारी हैं। परम श्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० वर्षों से समाज मे ज्ञान-चेतना प्रबुद्ध करने के लिए प्राचीन ग्रथो के सकलन, सरक्षण और प्रकाशन की प्रेरणा देते रहे हैं। ग्रंथ-सूची के सम्बन्ध मे उनका आशीर्वाद पाकर हमारा विशेष उत्साह बढा है।

सूची पत्र के इस प्रथम भाग मे भडार के सामान्य सूचीपत्र के लगभग २५०० ग्रथो का ही विवरण दिया जा सका है जिसमे ३७१० रचनाएँ हैं। इन ग्रथो की कई पाडुलिपियाँ हमे जयपुर के श्रीमती हगामाबाई ढढ्ढा, श्री गुलाबचन्द जी कोठारी, श्री केसरीमल जी भवरलाल जी मूसल, श्रीमती गुमानबाई गोलेछा, श्री लक्ष्मणलाल जी केसरीमल जी चोरडिया, श्री स्वरूपचद जी नवलखा, श्री भूरामल जी सिरेमल जी नवलखा, श्री अमोलकचद जी ढढ्ढा तथा श्री सघ जयपुर से प्राप्त हुई हैं। २५००–२५०० ग्रथो के ऐसे कई भाग प्रकाशित करने की हमारी योजना है। आशा है, आप लोगो से बल और प्रेरणा पाकर हम उसे शीघ्र ही क्रियान्वित कर सकेंगे।

—सोहनमल कोठारी
व्यवस्थापक
आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भंडार

अनुक्रम

विषय-क्रम

प्राक्कथन

●

आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञानभडार की हस्तलिखित ग्रथ-सूची का प्रथम भाग देखने का अवसर मिला। ग्रथ का सम्पादन वडे परिश्रम और वैज्ञानिक ढंग से किया गया है। सकलित समग्र रचनाओ को विपयानुसार पन्द्रह वर्गों मे विभाजित कर प्रत्येक वर्ग मे समाविष्ट रचनाओ की अकारादि वर्णक्रम से सूची दी गई है। प्रत्येक ग्रन्थ के सम्बन्ध मे ग्रन्थकार, लिपिकार, रचना-काल, लिपिकाल, रचना-स्थल, लिपिस्थल, भापा, विषय, छद-सख्या, पत्र-सख्या, आकार-प्रकार आदि के रूप मे सविस्तार जानकारी दी गई है। ग्रथ के अन्त मे ग्रथकार, लिपिकार, रचना-स्थल, लिपिस्थल, प्रशस्तियां, महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक रचनाए आदि के सम्बन्ध मे परिशिष्ट देकर विद्वान् सम्पादक ने इस कृति को शोधार्थियो के लिए विशेष उपयोगी वना दिया है।

स्थानकवासी समाज मे ज्ञानभडारो मे विद्यमान हस्तलिखित ग्रथो की सूचियो के प्रकाशन का यह पहला ही प्रयास है। राजस्थान और गुजरात के विभिन्न भडारो मे लगभग दो लाख हस्तलिखित प्रतियां उपलब्ध हो सकती है। यदि उन सबकी व्यवस्थित सूचियां वन जाय तो शोधार्थियो को वडा लाभ हो सकता है।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भडार के इस प्रयत्न का अन्यान्य भंडारो मे अनुकरण हो और समाज ज्ञानभडारो का महत्त्व समझकर, श्रुतसेवा मे निरन्तर आगे वढता रहे। इस रूप मे ही हम पूर्वाचार्यों की अमूल्य सेवाओ के प्रति सच्चा सम्मान प्रकट कर सकते हैं।

—आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज

सम्पादकीय

साहित्यिक और ऐतिहासिक अनुसन्धानो मे ग्रथसूचियो का विशेष महत्त्व है। एक प्रकार से ये ग्रंथ-सूचियाँ शोध-कार्य मे आधार-भित्ति काम करती हैं। भारतीय साहित्य की परम्परा बडी समृद्ध और वैविध्यपूर्ण रही है। छापेखाने के आविष्कार से पूर्व यहाँ का साहित्य कठ-परम्परा से लेखन-पराम्परा (लिपिवद्ध रूप) मे अवतरित होकर सुरक्षित रहा। विदेशी आक्रमणकारियो ने यहाँ की सास्कृतिक परम्पराओ को नष्ट करने के लक्ष्य से साहित्य और कला को भी अपना लक्ष्य बनाया। राजघरानो मे सरक्षित बहुत सा साहित्य नष्ट कर दिया गया। राजघरानो मे उपलब्ध वर्तमान साहित्य उस विशाल साहित्य का अल्पाश ही है। व्यक्तिगत सग्रहालय किसी न किसी रूप मे थोडे-बहुत सुरक्षित रहे। पर उनके महत्त्व को ठीक प्रकार से न समझने के कारण बहुत सी महत्त्वपूर्ण पाडुलिपियाँ देश से बाहर चली गई। स्वतन्त्रता के बाद भी यह क्रम जारी है। इस सास्कृतिक निधि की सुरक्षा का प्रश्न राष्ट्रीय स्तर पर हल किया जाना चाहिए।

प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो की दृष्टि से राजस्थान सर्वाधिक समृद्ध प्रदेश है। रेगिस्तानी इलाका होने के कारण विदेशी आक्रमणकारियो से यह थोडा बहुत बचा रहा। इस प्रदेश मे जैनियो की अधिक सख्या होने के कारण भी भारतीय साहित्य का बहुत बडा भाग जैन मन्दिरो और उपाश्रयो के माध्यम से सुरक्षित रहा। जैन श्रावको मे शास्त्र-वाचन और स्वाध्याय की विशेष परम्परा होने के कारण वे महत्त्वपूर्ण ग्रथो का प्रतिलेखन करा कर, उनकी प्रतिलिपियाँ मन्दिरो, उपाश्रयो एव व्यक्तिगत सग्रहालयो मे सुरक्षित रखते। जैन साधु उदार भावना के साथ बहुपठित व बहुप्रचलित जैन तथा जैनेतर ग्रथो की स्वय प्रतिलेखना करते और उनके स्वाध्याय की प्रेरणा देते। श्रुत-सेवा को जैन परम्परा मे विशेष पुण्य का कार्य माना गया है। इस नाते भी विशाल जैन व जैनेतर साहित्य की सुरक्षा हो सकी।

प्राचीन साहित्य का सरक्षण एक बात है और उसका व्यवस्थित वर्गीकृत सूचीकरण दूसरी बात। सरक्षित साहित्य का सम्यक् सदुपयोग तब तक नही किया जा सकता जब तक कि विषयानुसार वर्णक्रम से उसकी सूचियाँ नही बन जाती। हस्तलिखित ग्रथो के वैज्ञानिक सूचीकरण का कार्य सर्वप्रथम योरोपीय विद्वानो ने आरभ किया।

उन्नीसवी शती के प्रारंभ मे योरोपीय विद्वानो का ध्यान भारतीय साहित्य विशेषत जैन साहित्य की ओर गया। बुशनैन (Buchnan) ने अपनी मैसूर, कन्नड, मलाबार, मद्रास, पटना, गया आदि स्थानो की यात्रा के वृत्तान्त मे जैनो के सम्बन्ध मे कई महत्त्वपूर्ण सूचनाए दी हैं। विल्सन ने सन् १८२८ मे कर्नल मैकेन्जी के सग्रह का विवरणात्मक सूचीपत्र प्रकाशित किया जिसमें कई जैन पाडुलिपियो का वर्णन है। इसमे उन्होने उन ४४ हस्तलिखित ग्रथो का भी विवरण दिया है जो लन्दन मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी मे पहुच चुके थे।

जैन शास्त्रो के अनुवाद और उनके वैज्ञानिक सम्पादन की ओर भी योरोपीय विद्वानो का ध्यान गया। सन् १८४७ मे आचार्य हेमचन्द्र कृत 'अभिधान चिन्तामणि' का भूतलिंग (Bohtlingk) और रीउ (Rieu) कृत जर्मन अनुवाद प्रकाशित हुआ। सन् १८४८ मे कल्पसूत्र एव नवतत्त्व प्रकरण का स्टीवेन्सन द्वारा किया गया अग्रेजी अनुवाद सामने आया। वेबर (Weber) ने धनेश्वर सूरि कृत 'शत्रुजय माहात्म्य' का विस्तृत भूमिका के साथ सम्पादन किया जिसका प्रकाशन सन् १८५८ मे लिपजिग (Leipzig) से हुआ। वेबर द्वारा ही 'भगवतीसूत्र' पर किया हुआ महत्त्वपूर्ण कार्य बर्लिन की विसेन्चाफेन (Wissenchaften) अकादमी द्वारा सन् १८६६ मे प्रकाश मे आया। जैकोबी द्वारा सम्पादित 'कल्पसूत्र' का समीक्षात्मक सस्करण सन् १८६७ मे प्रकाशित हुआ। लिउमैन (Leumann) द्वारा 'औपपातिक' व 'आवश्यक' सूत्रो पर किया गया कार्य भी अपना विशेष महत्त्व रखता है। इन विभिन्न ग्रथो के प्रकाशन से जैन सिद्धान्त ही सामने नही आया वरन् भाषा शास्त्रीय अध्ययन के क्षेत्र मे भी कई नये तथ्यो का उद्घाटन हुआ।

वेबर ने बर्लिन की रायल लायब्रेरी मे उपलब्ध जैन पाडुलिपियो का अध्ययन कर कई मूलभूत सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया जो जैन परम्परा और जैन इतिहास को समझने मे बडे सहायक सिद्ध हुए हैं। उक्त पुस्तकालय मे सन् १६४४ तक के खरीदे हुए जैन ग्रन्थो का सूचीपत्र वाल्टर शुब्रिग (Walter Schubring) ने तैयार किया, जिसका प्रकाशन लिपजिग से हुआ। इस सूचीपत्र मे ११२७ ग्रन्थो का विवरण दिया गया है।

बर्लिन मे जो इतने हस्तलिखित जैन ग्रन्थ पहुँचे, उसके मूल मे व्यूह्लर की प्रेरणा रही है। व्युह्लर को बम्बई के शिक्षा-विभाग ने निजी क्षेत्र के सग्रहो का विवरण तैयार करने तथा उपलब्ध हस्तलिखित ग्रन्थो को खरीदने के लिए नियुक्त किया था। व्यूहलर ने तत्कालीन शिक्षा-विभाग से यह अनुमति प्राप्त करली थी कि जिन ग्रन्थो की एक से अधिक प्रतिया उन्हे मिलेगी, उनको वे विदेशी पुस्तकालयो के लिए भी खरीद सकेंगे। व्यूहलर के इस लक्ष्य के कारण ही अनेक महत्त्वपूर्ण जैन ग्रन्थ बर्लिन तक पहुँच सके। व्यूहलर की इस नीति का एक लाभदायक परिणाम यह हुआ कि कई विदेशी अध्यवसायी विद्वान भारत की इस सास्कृतिक निधि का उचित मूल्याकन कर सके और कई भारतीय विद्वानो को वे इस सास्कृतिक थाती को उजागर करने की प्रेरणा दे सके।

ग्रन्थ-सूचियो के निर्माण मे आदर्श कार्य क्लाट (Klatt) ने किया। उन्होने जैन ग्रथकारो और ग्रथो की लगभग १५०० पृष्ठो की विस्तृत अनुक्रमणिका तैयार की पर उनके असामयिक निधन से यह कार्य विशेष सामने नही आ पाया। वेबर और लिउमैन ने उनके सकलन मे से ही कोई ५५ पृष्ठ नमूने के रूप मे छपाये है।[1] क्लाट के बाद ग्रथ-सूचियो के निर्माताओ मे ग्यूरिनाट (Guerinot) का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने सन् १६०६ में जैन ग्रथ-सूची पर अपना निबन्ध प्रकाशित कराया। सन् १६०८ में उन्होंने जैन शिलालेखो पर भी अपना निबन्ध प्रस्तुत किया। ल्युडर्स (Luders) ने भी अपने ब्राह्मी-लेखो की सूची में जैन पट्टावली और जैन परम्परा पर सम्यक् प्रकाश डाला है।[2] इन विभिन्न प्रयत्नो के फल-

१—Indian Antiquary, P. 23, 169

२—एपिग्राफिया एण्डिका, भाग १०, परि०।

स्वरूप ग्रंथ-सग्रहो के कई विवरण, अज्ञात ग्रंथो के मूलपाठ, चूर्णिकाए, अवचूरिया, बालावबोध आदि प्रकाश में आये जिनसे प्रेरणा लेकर कई विदेशी विद्वानो ने समीक्षात्मक निबध लिखे।

राजस्थान में प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो के सरक्षण की दिशा में जिस नव चेतना का उदय हुआ उसके मूल मे कर्नल टॉड व डा० एल० पी० तैस्सितोरि की प्रेरणा रही है। डा० तैस्सितोरि जैनाचार्य विजय धर्म सूरिजी से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्ही की प्रेरणा से इटली मे रहते हुए भी उन्होने जैनदर्शन का अच्छा अध्ययन कर लिया जिसके फलस्वरूप वे 'उपदेशमाला', इद्रियपराजय शतक', 'करकण्डु कथा', आदि जैन ग्रथो का इटालियन भाषा में रूपान्तर प्रस्तुत कर सके। सन् १९१४ में जब उनका भारत में आना हुआ तो उन्होने राजस्थान को ही अपना विशेष कार्य क्षेत्र चुना। अन्तिम समय तक वे राजस्थान मे बिखरे पड़े ग्रंथ-रत्नो की खोज में लगे रहे।

तैस्सितोरि ने जोधपुर और बीकानेर क्षेत्र के ग्रथ भण्डारो का अवलोकन कर, उनका वर्णनात्मक परिचय चार रिपोर्टों में प्रस्तुत किया है।[1] इस विवरण-प्रस्तुति मे उन्हे कडे परिश्रम के साथ-साथ बडी मुसीबतो का भी सामना करना पडा। नागौर के भण्डार से सम्बन्धित कठिनाई का उल्लेख करते हुए उन्होने लिखा है, गये हफ्ते में नागौर गया था। जाने का कारण यह था कि नागौर मे दिगम्बरो का एक बडा भण्डार है जिसमे लगभग दस हजार हस्तलिखित ग्रथ हैं। ऐसा सुनने मे आया कि वह भण्डार सदैव बन्द रहता है और उसका अधिकारी भट्टारक खोलने की इन्कारी करता है। अत जोधपुर दरबार का आज्ञा पत्र लेकर गया था फिर भी भट्टारक ने कुछ नही दिखलाया। अफसोस की बात है कि इतनी प्राचीन और अमूल्य पुस्तकें कीडो का खाद्य होगी।[2]

तैस्सितोरि के इस पत्राश से उस समय के ग्रथ भण्डारो के अधिकारियो की सामान्य मनोवृत्ति का पता चलता है। अब शनै शनै. इस प्रकार की मनोवृत्ति दूर होने लगी है। पर अब भी कई ऐसे ग्रथ भण्डार राजस्थान मे हैं जो उपर्युक्त मनोवृत्ति से अलग नही हो पाये हैं। हम जिस अनुपात मे ग्रथ-भण्डारो को सार्वजनीन रूप दे पायेंगे, उसी अनुपात में जैन दर्शन, जैन साहित्य और जैन सस्कृति की अधिकाधिक सेवा कर सकेंगे, यह बात ध्यान मे रखी जानी चाहिए।

स्वतत्रता के बाद राजस्थान साहित्यानुसधान के कार्य मे काफी आगे बढा है। राजस्थान सरकार ने जोधपुर में 'राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान' नाम से शोध केन्द्र स्थापित किया है जिसकी मुख्य प्रवृत्ति महत्त्वपूर्ण प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो को सगृहीत व प्रकाशित करने की है। इस केन्द्र को बीकानेर, जयपुर,

---

१—(क) A Descriptive Catalogue of Bardic and Historical Manuscripts (Bardic Poetry) Pt I & II.

(ख) A Descriptive Catalogue of Bardic and Historical Manuscripts (Prose Chronicles) Pt I & II.

२—अपने गुरु जैनाचार्य विजयधर्म सूरि को लिखा गया १३—९—१९१४ का पत्राश

उदयपुर, कोटा, चित्तौडगढ आदि स्थानो पर शाखाए भी हैं। इस के अतिरिक्त राज्य सरकार से अनुदान प्राप्त कई शोधसस्थाए कार्यरत हैं जिनमें साहित्य सस्थान, उदयपुर, भारतीय विद्या मदिर शोध प्रतिष्ठान वीकानेर और राजस्थानी शोध सस्थान, चौपासनी विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।

स्वतन्त्र रूप से प्राचीन हस्तलिखित ग्र थो के सरक्षरण का कार्य करने वाली सस्थाओ मे अभय जैन ग्र थालय, वीकानेर, महावीर भवन, जयपुर और आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भडार, जयपुर विशेष उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त छोटे-वडे कई भडार हैं जिनमें हजारो हस्तलिखित ग्र थ सगृहीत हैं, पर व्यवस्था के अभाव मे अद्यावधि उनका कोई सम्यक् उपयोग नही हो पा रहा है।

राजस्थान के ग्र थ भण्डारो के सूचीपत्रो के प्रकाशन की दिशा मे थोडा वहुत कार्य अवश्य हुआ है, पर वह पर्याप्त नही है। वीकानेर को अनूप सस्कृत लायब्रेरी व उदयपुर के सरस्वती भवन के हस्तलिखित ग्र थो के सूचीपत्र पहले प्रकाशित हुए थे। साहित्य सस्थान, उदयपुर की ओर से हस्तलिखित ग्र थो के ४ भाग प्रकाशित हो चुके हैं। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर व जयपुर के हस्तलिखित ग्र थो के भी कुछ भाग प्रकाशित हुए हैं। राजस्थानी शोध सस्थान, चौपासनी के हस्तलिखित ग्र थो का विवरण काफी समय से मुद्रणाधीन है। महावीर भवन, जयपुर ने इस दिशा मे अनुकरणीय कार्य किया है। वहाँ से अब तक राजस्थान के जैन शास्त्र भडारो की ग्र थ सूचियो के चार भाग प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत ग्र थ द्वारा आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भडार के हस्तलिखित ग्र थो का पहला भाग सामने आ रहा है। यदि राजस्थान के सभी भडारो की व्यवस्थित सूचिया प्रकाशित होकर सामने आ जाय तो साहित्य-जगत् व अनुसधित्सुओ का कितना वडा हित हो।

विश्वविद्यालयो मे इन वर्षों मे जैन साहित्य और जैन सस्कृति के अध्ययन की ओर विशेष आकर्षण लक्षित होता है। कुछेक विश्वविद्यालयो मे प्राकृत भाषा के अध्ययन की भी व्यवस्था है। विहार मे प्राकृत जैन विद्यापीठ, वैशाली की स्थापना इस जागरण का ही प्रतीक है। पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध सस्थान, वाराणसी और लालभाई दलपतभाई भारतीय सस्कृति विद्यामदिर, अहमदाबाद जैन विद्या के अध्ययन की दिशा मे महत्त्वपूर्ण शोध प्रतिष्ठान हैं। पिछले दो दशको मे भारतीय विश्वविद्यालयो मे जैन साहित्य और जैन सस्कृति के सम्बन्ध मे महत्त्वपूर्ण शोध कार्य हुआ है, पर उसकी व्यवस्थित समग्र जानकारी न होने से उसकी उपलब्धियो का अद्यावधि समुचित मूल्याकन नहीं हो पाया है। यथाप्रसग यहाँ इस दिशा मे अब तक जो कार्य हुआ है, या हो रहा है, उसकी विवरणिका प्रस्तुत की जा रही है[1]—

१—ज्ञानपीठ पत्रिका अक्तूबर, १९६८

विषय तथा उपाधि	विश्वविद्यालय का नाम	शोधकर्त्ता का नाम पता
१. लाइफ इन एंशियंट इंडिया ऐज डिपिक्टेड इन जैन केनन (पी-एच. डी, (अंगरेजी)	बम्बई विश्वविद्यालय १९४४ (प्रकाशित)	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन, २८, शिवाजी पार्क, बम्बई-२८
२ स्टडीज इन जैन फिलासफी (डी० लिट्, अंगरेजी)	कलकत्ता विश्वविद्यालय (प्रकाशित)	डॉ० नथमल टाटिया, डायरेक्टर. प्राकृत जैन विद्यापीठ, वैशाली (बिहार)
३. प्राकृत, अपभ्रंश साहित्य और हिन्दी पर उसका प्रभाव (पी-एच० डी०, हिन्दी)	इलाहाबाद विश्वविद्यालय १९५१ (प्रकाशित)	डॉ० रामसिंह तोमर अध्यक्ष हिन्दी विभाग विश्वभारती, शान्ति-निकेतन
४. जैन एपिस्टीमोलाजी (पी-एच०डी, अंगरेजी)	हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी १९५२ (अप्रकाशित)	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री १०।१७ शक्तिनगर, दिल्ली-७
५ अपभ्रंश साहित्य (पी-एच० डी०, हिन्दी)	दिल्ली विश्वविद्यालय १९५२ (प्रकाशित)	डॉ० हरिवंश कोछड
६ पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ नार्दर्न इंडिया फ्रॉम जैन सोर्सेज (पी-एच० डी०, अंगरेजी)	हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी (पार्श्वनाथ विद्याश्रम) १९५४ (प्रकाशित)	डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी, नालन्दा पालि संस्थान, नालन्दा (बिहार)
७. जैनिज्म इन राजस्थान (पी-एच० डी० अंगरेजी)	राजस्थान विश्वविद्यालय १९५४-५५ (प्रकाशित)	डॉ० कैलाशचन्द्र जैन, इतिहास विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
८. जैन कर्म-सिद्धान्त का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण (पी-एच० डी०, अंगरेजी)	हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी १९५५ (प्रकाशित)	डॉ० मोहनलाल मेहता, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध-संस्थान, वाराणसी-५
९ जैन राजनीति (पी-एच० डी०, अंगरेजी)	आगरा विश्वविद्यालय, (अप्रकाशित)	डॉ० श्यामसिंह जैन, प्रिंसीपल, के० वी० कालेज, मिर्जापुर

१०. स्टडीज इन द जैन सोर्सेज ऑव द हिस्ट्री ऑव एन्सिएन्ट इंडिया (१००० बी० सी०–९०० ए० डी०) (पी-एच० डी०, अँगरेजी)	आगरा विश्वविद्यालय १९५६	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन, ज्योति निकुंज, चार बाग, लखनऊ (उ० प्र०)
११. जैन आगम शास्त्र के अनुसार मानव व्यक्तित्व का विकास (पी-एच० डी०, हिन्दी)	सागर विश्वविद्यालय १९५७ (अप्रकाशित)	डॉ० हरीन्द्रभूषण जैन, संस्कृत विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
१२ अपभ्रंश साहित्य (पी-एच० डी०, हिन्दी)	आगरा विश्वविद्यालय, १९५७ (प्रकाशित)	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग होल्कर कालेज, इन्दौर
१३. अपभ्रंश काव्य परम्परा और विद्यापति (पी-एच० डी०, हिन्दी)	आगरा विश्वविद्यालय १९५८	डॉ० अम्बादत्त पन्त
१४ ए क्रिटिकल एण्ड कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ रिलीजन एण्ड इथिक्स। (पी-एच. डी., अँगरेजी)	हिंदू विश्वविद्यालय, १९५८ (अप्रकाशित)	डॉ० बी० बी० रायनाडे, दर्शन विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
१५. छठी से आठवी शताब्दी के हिन्दी जैन लेखक (पी-एच० डी०, हिन्दी)	आगरा विश्वविद्यालय (अप्रकाशित)	डॉ० धन्यकुमार जैन, अलीगढ
१६ हिन्दी जैन भक्ति काव्य मे जैन साहित्य का योगदान (पी-एच० डी०, हिन्दी)	आगरा विश्वविद्यालय, १९५९ (प्रकाशित)	डॉ० प्रेमसागर जैन, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दि० जैन कालेज, बडौत
१७ आचार्य पुष्पदन्त : एक अध्ययन (पी-एच० डी०, हिन्दी)	आगरा विश्वविद्यालय, १९५९ (अप्रकाशित)	डॉ० राजकुमार जैन, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, आगरा कालेज, आगरा
१८. कविवर बनारसीदास, जीवनी और कृतित्व (पी-एच० डी०. हिन्दी)	आगरा विश्वविद्यालय, १९५९ (प्रकाशित)	डॉ० रवीन्द्रकुमार जैन, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति, (आन्ध्र)

१९.	भट्टारक सम्प्रदाय (पी-एच०डी०, हिन्दी)	नागपुर विश्वविद्यालय १९५९ (प्रकाशित)	डॉ० विद्याधर जोहरापुरकर, ग०कालिज, मडला
२०	आदिकालीन हिन्दी जैन साहित्य (पी-एच०डी०, हिन्दी)	इलाहाबाद विश्वविद्यालय १९५९	डॉ० हरिशंकर शर्मा
२१.	जैन धर्म मे आत्मा का स्वरूप (पी-एच० डी०, अंगरेजी)	आगरा विश्वविद्यालय, १९६० (अप्रकाशित)	डॉ० सुमतिचन्द्र जैन, जे ११।४१ राजोरी गार्डन, नई दिल्ली
२२	भगवतीसूत्र : एक अध्ययन (पी-एच डी०, अंगरेजो)	बिहार विश्वविद्यालय, १९६० (प्रकाशित)	डॉ० जे० सी० सिंकदार एल० डी० इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलाजी अहमदावाद–९
२३	जैन भंडार्स इन राजस्थान (पी-एच० डी०, अंग्रेजी)	राज० विश्वविद्यालय (प्रकाशित)	डॉ० कस्तूरचन्द कासलीवाल, महावीर भवन, जयपुर–३
२४	एथिकल डाक्ट्रिन्स इन जैनिज्म (पी-एच०डी०, अंगरेजी)	राजस्थान विश्वविद्यालय १९६१ (प्रकाशित)	डॉ०कमलचन्द सोगानी, १०६ अशोकनगर, उदयपुर
२५	प्राचीन हिन्दी साहित्य पर जैन साहित्य का प्रभाव (पी-एच० डी०, हिन्दी)	अलीगढ विश्वविद्यालय १९६१	डॉ० धन्यकुमार जैन
२६.	हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन (पी-एच० डी०, हिन्दी)	विहार विश्वविद्यालय १९६१ (प्रकाशित)	डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, भोला भवन, १, महाजन टोली, आरा (विहार)
२७	जैन कवि स्वयभू कृत पउमचरिउ तथा तुलसी कृत रामायण (पी-एच० डी०, हिन्दी)	आगरा विश्वविद्यालय १९६२ (अप्रकाशित)	डॉ० ओमप्रकाश दीक्षित, हिन्दी विभागाध्यक्ष, जे० बी० कालेज, सहारनपुर
२८	राजस्थानी वेलि साहित्य (पी-एच० डी०, हिन्दी)	राज० विश्वविद्यालय १९६२ (प्रकाशित)	डॉ० नरेन्द्र भानावत, सी० २३५ ए, तिलकनगर, जयपुर–४

२६	ए क्रिटिकल स्टडी ग्राफ पउमचरिय ग्रॉफ् विमल सूरि (पी-एच० डी०, अँगरेजी)	प्राकृत जैन विद्यापीठ, वैशाली १९६२ (अप्रकाशित)	डॉ० के० ऋषभचन्द्र, सीनियर रिसर्च ग्राफिसर, एल० डी० इस्टीट्यूट ग्रॉफ इडोलोजी, ग्रहमदावाद–९
३०	ग्राचार्य कुन्दकुन्द का दर्शन (पी-एच० डी०, अँगरेजी)	ग्रागरा विश्वविद्यालय १९६३ (ग्रप्रकाशित)	डॉ० प्रद्युम्नकुमार जैन, गवर्नमेण्ट कालेज, टिहरी, गढवाल
३१	पउमचरिउ ग्रौर रामचरित मानस का तुलनात्मक ग्रध्ययन (पी-एच० डी०, हिन्दी)	बिहार विश्वविद्यालय १९६३ (ग्रप्रकाशित)	डॉ० देवेन्द्रनारायण शर्मा, वैशाली शोध सस्थान, वैशाली, जिला मुजफ्फरपुर
३२	प्राचीन हिन्दी काव्य मे ग्रहिंसा के तत्त्व (पी-एच०डी०, हिन्दी)	बिहार विश्वविद्यालय १९६३	डॉ० विद्यानाथ मिश्र, हिन्दी विभाग, रामदयालु सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर
३३.	सोमदेव : एक राजनीतिक विचारक (पी-एच० डी०, हिन्दी)	ग्रागरा विश्वविद्यालय १९६४ (ग्रप्रकाशित)	डॉ० पुण्यमित्र जैन, महावीर दि० जैन कालेज, ग्रागरा
३४.	भविसयत्त कहा ग्रौर ग्रपभ्रंश कथाकाव्य (पी-एच०डी०, हिन्दी)	ग्रागरा विश्वविद्यालय १९६४ (ग्रप्रकाशित)	डॉ० देवेन्द्रकुमार शास्त्री, हिन्दी विभाग, राजकीय विज्ञान महाविद्यालय, रायपुर (म० प्र०)
३५	संस्कृत साहित्य को जैन कवियो का योगदान (डी० लिट्०, हिन्दी)	मगध विश्वविद्यालय १९६५ (ग्रप्रकाशित)	डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, भोला भवन, १, महाजन टोली, ग्रारा (बिहार)
३६.	सोमदेव कृत यशस्तिलक का सास्कृतिक ग्रध्ययन (पी-एच०डी०, हिन्दी)	हिन्दू विश्वविद्यालय (पार्श्वनाथ विद्याश्रम) १९६५ (प्रकाशित)	डॉ० गोकुलचन्द्र जैन, कृष्ण निवास, गुरुबाग, वाराणसी–१
३७	कन्नड शासनो का सास्कृतिक ग्रध्ययन (पी. एच. डी.)	मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर (प्रकाशित)	डॉ० चिदानन्द मूर्ति मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर

३८. आचार्य कुन्दकुन्द और उनका समयसार (पी-एच०डी०,हिन्दी)	आगरा विश्वविद्यालय १६६५ (अप्रकाशित)	डॉ० लालवहादुर जैन शास्त्री, २५०१६ वी प्रताप गली, गांधी नगर, दिल्ली
३९ ए कम्पैरेटिव स्टडी ऑफ बुद्धिस्ट विनय एण्ड जैन आचार (अँग्रेजी, पी-एच० डी०)	विहार विश्वविद्यालय १६६४-६५ (अप्रकाशित)	डॉ० नन्दकिशोर प्रसाद, सारनाथ (वाराणसी)
४०. ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ द वर्क्स आफ महाकवि रयधू (पी-एच० डी०, हिन्दी)	बिहार विश्वविद्यालय १६६४-६५ (अप्रकाशित)	डॉ० राजाराम जैन, ह०द० जैन कालेज, आरा
४१ जैनिज्म इन बुद्धिस्ट लिटरेचर (पी-एच०डी०, अँगरेजी)	विद्योदय विश्वविद्यालय श्रीलका, १६६६ (अप्रकाशित)	डॉ० भागचन्द्र जैन, प्राकृत एव पालि विभाग, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर
४२. आदिपुराण का सास्कृतिक अध्ययन (पी-एच० डी०, हिन्दी)	हिन्दू विश्वविद्यालय १६६६ (अप्रकाशित)	डॉ० सिद्धनाथ झा, इस्टीट्यूट आफ ओरियंटल फिलासफी, वृन्दावन(मथुरा)
४३. अपभ्रश के स्फुट साहित्यिक मुक्तक(पी-एच० डी०, हिन्दी)	विहार विश्वविद्यालय १६६६-६७ (अप्रकाशित)	डॉ०एन०पी० शर्मा, प्राकृत विद्यापीठ वैशाली (बिहार)
४४. जिनसेन के हरिवशपुराण का आलोचनात्मक अध्यन (पी-एच० डी०, हिन्दी)	विहार विश्वविद्यालय १६६६-६७ (अप्रकाशित)	डॉ० सूर्यदेव पाण्डेय, पी० वी० कालेजिएट स्कूल, मुजफ्फरपुर (विहार)
४५. कन्सेप्ट ऑव ओमनीसाइन्स (पी-एच०डी०, अँग्रेजी)	भागलपुर विश्वविद्यालय १६६७	डॉ० रामजी सिंह
४६. जैनाचार्य रविषेणकृत पद्मपुराण एव तुलसीकृत रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन (पी-एच० डी०, हिन्दी)	आगरा विश्वविद्यालय १६६७	डॉ० रमाकान्त शुक्ल

४७. जैन और बौद्ध आगमो मे नारी-जीवन (पी-एच० डी०, हिन्दी)	हिन्दू विश्वविद्यालय (पार्श्वनाथ विद्याश्रम) १९६७ (प्रकाशित)	डॉ० कोमलचन्द्र जैन संस्कृत विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी-५
४८ आचार्य जिनसेनकृत महापुराण के आधार पर ऋषभ तथा भरत के जीवनचरित्रों का तुलनात्मक अध्ययन (पी-एच०डी, हिन्दी)	सागर विद्यालय (अप्रकाशित)	डॉ० नरेन्द्र विद्यार्थी, भूतपूर्व एम० एल० ए०, छतरपुर (म० प्र०)
४९. आचारागसूत्र का समालोचनात्मक अध्ययन (पी-एच० डी०, हिन्दी)	सागर विश्वविद्यालय १९६८ (अप्रकाशित)	डॉ० परमेष्ठीदास जैन, ५५ लक्ष्मीपुरा, सागर
५० ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ द लाइफ ऑफ जम्बूसामि आन द बेसिस ऑफ जबूसामि चरिउ ऑफ वीर (पी-एच०डी०, हिन्दी)	जबलपुर विश्वविद्यालय १९६८ (प्रकाशित)	डॉ०विमलप्रकाश जैन पालि-प्राकृत विभाग, जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर
५१ डाक्ट्रिन ऑव मेटर इन जैनिज्म(डी लिट्., अँगरेजी)	जबलपुर विश्वविद्यालय १९६८ (अप्रकाशित)	डॉ० जे० सी० सिकदार एल० डी० इन्स्टीट्यूट ऑव इण्डोलॉजी, अहमदाबाद
५२. उत्तराध्ययन सूत्र का समालोचनात्मक अध्ययन (पी-एच० डी०,हिन्दी)	हिन्दू विश्वविद्यालय (पार्श्वनाथ विद्याश्रम) १९६८ (अप्रकाशित)	डॉ० सुदर्शनलाल जैन, संस्कृत विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी-५
५३ जैनधर्म मे अहिंसा-विचार (पी-एच०डी० हिन्दी)	हिन्दू विश्वविद्यालय (पार्श्वनाथ विद्याश्रम) १९६८ (अप्रकाशित)	डॉ० वशिष्ठनारायण सिन्हा, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध सस्थान, वाराणसी-५
५४. भिक्षु साहित्य का समालोचनात्मक अध्ययन (पी-एच० डी०, हिन्दी)	विहार विश्वविद्यालय प्राकृत जैन विद्यापीठ १९६८	डॉ० छगनलाल शास्त्री, सरदारशहर (राज०

५५. जैन तर्कशास्त्र मे अनुमान प्रमाण (पी-एच० डी०, हिन्दी)	हिन्दू विश्वविद्यालय १९६८	डॉ० दरबारीलाल कोठिया चमेलीकुटीर, डुमरांव बाग, अस्सी, वाराणसी
५६ मध्यकालीन हिन्दी जैन साहित्य	मगध विश्वविद्यालय	प्रो० गदाधरसिंह हिन्दी विभाग, अनुग्रह-नारायण कालिज, बाढ़ (बिहार)
५७ १३ वी १४ वी शताब्दी का जैन सस्कृत महाकाव्य (पी. एच. डी, हिन्दी)	राज० विश्वविद्यालय (अप्रकाशित)	डॉ० श्यामशंकर दीक्षित हिन्दी विभाग, राज० विश्वविद्यालय, जयपुर

शोध-कर्ता

१ आगरा विश्वविद्यालय

डी० लिट्० के लिए

१. जैन राजनीति (अंगरेजी)	डॉ० श्यामसिंह जैन, प्रिंसीपल, के० वी० कालेज, मिर्जापुर (उ० प्र०)
२ आचार्य जिनसेन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ० राजकुमार जैन, आगरा कालेज, आगरा
३. हिन्दी के जैन पुराणो की परम्परा का हिन्दी के अन्य पुराणो की तुलना मे अध्ययन	डॉ० रवीन्द्रकुमार जैन, हिन्दी विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति (आन्ध्र प्रदेश)
४. मध्यकालीन जैन हिन्दी काव्य मे रहस्यवाद और उसका तुलनात्मक विवेचन	डॉ० प्रेमसागर जैन, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दिगम्बर जैन कालेज, बडौत (मेरठ)
५. हिन्दी जैन कवियो का काव्यशास्त्रीय अध्ययन	डॉ० महेन्द्रसागर प्रचडिया, वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ
६. आठवी से दशवी शताब्दी तक भारतीय राजनीतिक चिन्तनधारा का अध्ययन	डॉ० पुष्यमित्र जैन, जैन कालेज, आगरा

पी-एच० डी० के लिए

७ हिन्दी गद्य साहित्य को जैन लेखकों की देन	श्री चन्द्रपाल शर्मा, म० दि० जैन कालेज, आगरा

८ जैन गणित	श्री हरिश्चन्द्र गर्ग, जैन कालेज, आगरा
९. प० आशाधर . व्यक्तित्व और कृतित्व	श्री कपूरचन्द जैन, भगवा, छतरपुर (म० प्र०)
१० पद्मपुराण तथा रविषेणाचार्यकृत पद्मचरित का तुलनात्मक अध्ययक	श्री शिखरचन्द्र जैन, पो० तिजारा, अलवर, (राजस्थान)
११. हेमचन्द्राचार्यकृत त्रिषष्टिशलाका-महापुराण का तुलनात्मक तथा आलोचनात्मक अध्ययन	श्री कुन्दनलाल जैन, ६८ विश्वास रोड, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली—३२
१२. धनंजयकृत द्विसन्धान महाकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन	श्री शिवदत्त गुप्त, पो० परासिया (छिन्दवाडा)
१३. जैन तत्त्व मीमासा : तुलनात्मक अध्ययन	श्री उदयचन्द्र जैन, सस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी—५
१४. हिन्दी मे जैन कथा साहित्य	श्री फूलचन्द जैन, प्राध्यापक, जैन कालेज आगरा (उ० प्र०)
१५. सस्कृत स्तोत्र साहित्य मे आचार्य समन्तभद्र का योगदान	श्री गणेशीलाल जैन, महावीर दि० जैन कालेज, आगरा (उ० प्र०)
१६ हिन्दी का जैन पूजा साहित्य	सुश्री कृष्णा वार्ष्णेय, द्वारा—डॉ० महेन्द्र सागर प्रचडिया, वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ
१७. महाकवि भूधरदास	श्री ब्रजेन्द्रसिंह चौहान, वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ़
१८ जैन रास साहित्य	श्री जगवीर किशोर जैन, वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ़
१९. हिन्दी मे राम विषयक जैन साहित्य	श्री कल्याणचन्द्र जैन, आगरा वि० वि० आगरा
२०. महाकवि स्वयम्भू	श्री सकटा प्रसाद उपाध्याय, आगरा वि० वि०, आगरा
२१ महाकवि पुष्पदन्त	श्री राजनारायण पाण्डेय, आगरा वि० वि०, आगरा
२२ हिन्दी जैन साहित्य मे कृष्ण वार्ता	श्री एम० पी० कोटिया, आगरा वि० वि० आगरा
२३ अपभ्रश जैन प्रेमाख्यानक काव्य (१००० से १२००)	श्री पारसमल जैन, आगरा वि० वि०, आगरा
२४. सस्कृत गद्य साहित्य मे गद्य चिन्तामणि का स्थान एव समीक्षात्मक अध्ययन	प० भगवतशरण शर्मा, जैन कालिज आगरा
२५. हिन्दी जैन पद साहित्य १५ वी शताब्दी के प्रारम्भ से आधुनिक काल पर्यन्त	श्री गोकुलप्रसाद जैन, ५१ रामनगर, नई दिल्ली—१

२६. जैन चम्पू काव्य : एक साहित्यिक तथा आलोचनात्मक अध्ययन — श्री जयन्तीप्रसाद जैन कानूनगो मोहल्ला खतौली, मुजफ्फरपुर (उ० प्र०)

२७. रीतिकालीन कवियो के हिन्दी प्रबन्ध काव्य — श्री लालचन्द्र जैन, वसवा, जयपुर (राज०)

२८ गणित और ज्योतिष के विकास मे जैन कवियो का योगदान — श्री मुकुटबिहारी लाल, जैन साहित्य शोध सस्थान, हरिपर्वत, आगरा—२

२९ चन्द्रप्रभचरित महाकाव्य : एक अध्ययन — जयदेवी जैन, द्वारा श्री खेमचन्द्र जैन, ५४ एफ, कमला नगर नई दिल्ली—६

२. इन्दौर विश्वविद्यालय

३०. अपभ्रंश चरित काव्यो मे शृगार भावना — श्रीमती स्नेहलता कासलीवाल, इन्द्र भवन, साउथ तुकोगज, इन्दौर (म० प्र०)

३१. जैन साहित्य मे राम-कथा — श्री अक्षयकुमार जैन, लोधीपुरा २, इन्दौर (म० प्र०)

३२. पुष्पदन्त का कृष्ण और राम-काव्य — सुश्री मेड्शी कपूर, कपूर निवास, ३ साउथ तुकोगज, इन्दौर (म० प्र०)

३३. श्री करकण्डुचरिउ—सन्दर्भ शिल्प और भाषा . एक अध्ययन — श्री धन्नालाल जैन, द्वारा डॉ० डी० के जैन ११, उषानगर, इन्दौर (म० प्र०)

३. इलाहाबाद विश्वविद्यालय

३४. धर्मशर्माभ्युदय महाकाव्य का तुलनात्मक और समालोचनात्मक अध्ययन — सुश्री स्वप्ना बनर्जी, सस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

४ उदयपुर विश्वविद्यालय

३५ जैन मिस्टिसिज्म — सुश्री शान्ति जैन, प्लाट नम्बर ४८-ए, नारायण निवास कालोनी, रामबाग रोड, जयपुर

५. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

३६. क्रिटिकल स्टडी ऑव तिलकमजरी ऑव धनपाल, — श्री एस० के० शर्मा, सस्कृत विभाग कुरुक्षेत्र वि० वि०, कुरुक्षेत्र

३७. कन्सेप्ट ऑव सरस्वती इन वैदिक एण्ड पास्ट वैदिक पीरियड — श्री आर० एन० अैरी, सस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र वि० वि०, कुरुक्षेत्र

६२.	वादीभसिंहसूरि और उनका काव्य	श्री शीलचन्द जैन, २६० तिलक नगर, इन्दौर (म० प्र०)
६३.	जैन स्तोत्र साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन	श्री कुलभूषण लोखडे, द्वारा-सस्कृत विभाग माधव कालेज, उज्जैन (म० प्र०)

१३ सागर विश्वविद्यालय

६४	मध्यप्रदेश मे जैनधर्म का विकास १२०० ई० तक	श्री गोपीलाल अमर, ५७ लक्ष्मीपुरा, सागर (म० प्र०)
६५.	देवगढ की जैन कला का सास्कृतिक अध्ययन	श्री भागचन्द्र जैन, महात्मा गान्धी कालेज, इटारसी (म० प्र०)
६६	मध्यप्रदेश के प्राचीन जैन अभिलेखो का अध्ययन,	श्री कस्तूरचन्द्र जैन, शा० उ० मा० शाला, पो० लामटा, बालाघाट (म० प्र०)
६७.	जैन पुराणो मे नारी	श्रीमती आशा मलैया, द्वारा श्री मूलचन्द्र लक्ष्मीचन्द मलैया, कटरा बाजार, सागर (म० प्र०)

१४ हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

६८.	अपभ्रंश कथाकाव्यो के शिल्प का हिन्दी प्रेमाख्यानको के शिल्प पर प्रभाव	श्री प्रेमचन्द्र जैन, पार्श्वनाथ विद्याश्रम, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-५
६९	धनपालकृत तिलकमजरी का आलोचनात्मक अध्ययन	श्री जगन्नाथ पाठक, सस्कृत विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-५
७०	ए कल्चरल स्टडी ऑव निशीथचूर्णि	श्रीमति मधु सेन, पार्श्वनाथ विद्याश्रम, वाराणसी-५
७१	आगम साहित्य मे जैन आचार	श्री अजित शुकदेव शर्मा, पार्श्वनाथ विद्याश्रम, वाराणसी-५
७२.	जैन हिस्टोरियोग्राफी	कुमारी मजु वर्मा, पार्श्वनाथ विद्याश्रम, वाराणसी-५
७३	पश्चिमी भारत के जैन मन्दिर	श्री हरिहर सिंह, पार्श्वनाथ विद्याश्रम, वाराणसी-५
७४.	जैन योग का आलोचनात्मक अध्ययन	श्री अर्हद्दास दिगे, पार्श्वनाथ विद्याश्रम, वाराणसी-५
७५.	भारतवर्ष का प्राचीन भूगोल जैन स्रोतो के अनुसार (७०० से १२०० ई० तक)	श्री सकटाप्रसाद, पार्श्वनाथ विद्याश्रम, वाराणसी-५

उपर्युक्त विवरणिका से सूचित होता है कि जैन परम्परा और जैन संस्कृति कितनी समृद्ध, कितनी वैविध्यपूर्ण और कितनी विशाल है। जैन विद्या के विभिन्न परिपार्श्वों व पहलुओं के अध्ययन मे ज्ञात से भी अज्ञात सामग्री अधिक सहायक होती है। कहना न होगा कि अज्ञात सामग्री को प्रकाश मे लाने वाले दीपाधार हस्तलिखित ग्र थो के सूचीपत्र ही हैं।

ग्र थ-सूचियो के निर्माण मे कई कठिनाइयो का सामना करना पडता है। प्रत्येक पाडुलिपि को सावधानी के साथ पढकर ग्र थ, ग्र थकार, रचना-सवत, रचना-स्थल, लिपिकार, लिपि-सवत, लिपि-स्थल आदि का पता लगाना होता है। कभी-कभी एक ही पत्र मे एक से अधिक रचनाएँ लिपिबद्ध मिलती हैं। थोडी सी भी प्रमाद की स्थिति, लिपि की अस्पष्टता व लिपि-पढने की लापरवाही से अनेक भ्रातियो व अशुद्धियो की परम्परा चल पडती है। कभी लिपिकार को रचनाकार समझ लिया जाता है, कभी लिपि-सवत को रचना-सवत। रचना के अन्त मे दी गई प्रशस्तियों का बडा महत्त्व होता है। इनसे ग्र थ,ग्र थकार, रचना-सवत, लिपिकार, लिपि-सवत, लिपि-स्थल आदि की बहुमूल्य सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। साहित्य के इतिहास-लेखन मे इन सूचनाओ का बडा महत्त्व होता है। रचना सवत के निर्देश मे कई स्थानो पर सामान्यत शब्दाक शैली का प्रयोग किया जाता है। इस शैली से ठीक परिचय न होने पर सवत-निर्धारण मे कई बार भूलें हो जाया करती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि ग्र थ-सूची-कर्त्ता की दृष्टि बडी पैनी होनी चाहिए। उसमे अनुभव की गहराई व अभ्यास की निरन्तरता भी अपेक्षित है। सच पूछा जाय तो ग्र थ-सूची-कर्त्ता को एक सजग जौहरी की भाति प्रत्येक अक्षर और शब्द के नगीने को तराशना पडता है, उसकी काट-छाँट करनी पडती है।

प्रत्येक रचना से सम्बन्धित ऊपर लिखित जानकारी प्राप्त करने के बाद समग्र रचनाओ को वर्गीकृत करना पडता है। वर्गीकरण का यह कार्य जितना सरल दिखायी देता है, उतना ही दुरुह भी है। कई विषय और काव्य-रूप अन्य विषयो और काव्य-रूपो से इस तरह मिले दिखाई देते हैं कि उनको अलग-अलग वर्गों मे बाँटना बडा मुश्किल हो जाता है। इसका एक कारण तो यह है कि जैन साहित्यकारो ने काव्य-रूपो के क्षेत्र में नानाविध नये नये प्रयोग किये। एक ही चरित्र व कथा को अलग-अलग रूपो मे वर्णित किया। उन्होने प्रचलित सामान्य काव्य-रूपो को हूबहू स्वीकार न कर उनमे व्यापकता, लौकिकता और सहजता का रग भरा। संगीत को शास्त्रीयता के बन्धन से मुक्त कर विभिन्न प्रकार की लोकदेशियो को अपनाया। आचार्यों द्वारा प्रतिपादित प्रबन्ध-मुक्तक की चली आती हुई काव्य-परम्परा के बीच काव्य-रूपो के कई नये स्तर निर्मित किये। साथ ही काव्य विषय की दृष्टि से भी उन्हे नई भाव-भूमि और मौलिक अर्थवत्ता दी। उदाहरण के लिए वेलि, बारहमासा, विवाहलो, रासो, चौपाई सज्ञक विभिन्न काव्य-रूपो का परीक्षण किया जा सकता है।

डिंगल-परम्परा मे 'वेलि' सज्ञक काव्य सामान्यत वेलियो छद मे ही लिखा गया है पर जैन कवियो ने 'वेलि' काव्य को छद विशेष की इस सीमा से बाहर निकाल कर वस्तु और शिल्प, दानो दृष्टि से व्यापकता प्रदान की। 'बारहमासा' काव्य ऋतु काव्य रहा है जिसने नायिका एक-एक माह के क्रम से अपना विरह-निवेदन—प्रकृति के विभिन्न उपादानो के माध्यम से व्यक्त करती है। जैन कवियो ने 'बारहमासा' की इस विरह-निवेदन-प्रणाली को आध्यात्मिक रूप देकर इसे शृगार-क्षेत्र से बाहर निकाल कर भक्ति और वैराग्य

क्षेत्र तक आगे बढाया। 'विवाहलो' सज्ञक काव्य मे सामान्यतः नायक-नायिका के विवाह का वर्णन रहता है पर जैन कवियो ने इसे भी आध्यात्मिक रूप दिया है। इसमे नायक किसी स्त्री से परिणय न दिखाकर सयम श्री और दीक्षाकुमारी जैसी अमूर्त भावनाओ के साथ परिणय-भाव निभाता है। यहाँ 'रासो' केवल युद्धपरक वीरकाव्य का व्यजक न रह कर प्रेमपरक गेय काव्य का प्रतीक बन गया है। 'सधि' शब्द अपभ्रश महाकाव्य के सर्ग का वाचक न रह कर विशिष्ट काव्य विधा का ही प्रतीक बन गया है। 'चौपाई' सज्ञक काव्य चौपाई छन्द मे ही बधा न रह कर, जीवन की व्यापक चित्रण-क्षमता का प्रतीक बनकर छन्द की रूढ़-कारा से मुक्त हो गया है।

काव्य-रूपो के इन विभिन्न प्रयोगों से यह लाभ हुआ कि काव्य रूपो की गतानुगतिक परम्परा शास्त्रीयता के बन्धन से सहजता की ओर, रूढ़िबद्धता से लौकिकता की ओर और बने बनाये साचो से बाहर निकल कर लोक-जीवन के व्यापक सास्कृतिक परिवेश की ओर बढी, प्रवाहित हुई।[1] पर उन अलग-अलग रूपो के साथ जो वैशिष्ट्य बधा हुआ था, वह ओझल होगया।

प्रस्तुत ग्र थ-सूची तैयार करते समय हमे ऊपर निर्दिष्ट सभी कठिनाइयो से गुजरना पडा। सावधानी रखते हुए भी हम नही कह सकते कि यह सूची अशुद्धियो से सर्वथा मुक्त है। मुद्रण सम्बन्धी अशुद्धियाँ भी इसमें रह गई हैं। अशुद्धियो के परिहार के लिए ही हमने अन्त मे शुद्धि-पत्र दिया है। विद्वानो और अनुसधित्सुओ से निवेदन है कि वे ग्र थ का उपयोग करते समय शुद्धि-पत्र का अवलोकन अवश्य कर लेने की कृपा करें।

इस ग्र थसूची मे समाविष्ट रचनाओं को वर्गीकृत करने की समस्या हमारे सामने भी आई। हमने अध्ययन की सुविधा को ध्यान मे रखकर समग्र रचनाओ को पन्द्रह वर्गों मे विभक्त किया है। ये वर्ग निम्नलिखित है—

(१) स्तुति-स्तोत्र वन्दनादि, (२) कथा-काव्य-चरितादि, (३) उपदेश-नीति-वैराग्यादि, (४) जैनागम, (५) जैन प्रकरण, (६) मत्र-तत्रादि, (७) ज्योतिष, (८) भूगोल-खगोलादि, (९) गणितादि, (१०) इतिहास, (११) आयुर्वेद, (१२) रसालकार छन्दशास्त्रादि, (१३) कोश, (१४) व्याकरण और (१५) प्रकीर्णक

स्तुति-स्तोत्र-वन्दनादि वर्ग मे कुल ६०१ रचनाएँ समाविष्ट हैं। इस वर्ग मे स्तुति, स्तोत्र, वन्दन, गीत, स्वाध्याय, सज्झाय, ढाल, आरती, गुण, सलोको, थुई, छद, गुणमाला, रास, विनति, आरती, प्रभाती, नवकार, अष्टक आदि कई काव्य रूप सम्बन्धी रचनाएँ सकलित हैं। इन रचनाओ मे तीर्थंकर, विहरमान, साधु-साध्वी, गुरू, आचार्य आदि महान चरितात्माओ का गुणानुवाद करते हुए उनके प्रति श्रद्धाभाव व्यक्त किया गया है।

कथा-काव्य चरितादि वर्ग मे कुल ८७८ रचनाए समाविष्ट है। इस वर्ग मे चौपी, चौपई, चौपाई, सधि चरित्र, चौढालिया, पचढालिया, ऋद्धि, चतुष्पदी, प्रश्न, प्रबन्ध, दूहा, फाग, मगल, लावणी,

---

१ साहित्य के त्रिकोण डॉ० नरेन्द्र भानावत पृ० २५०

भव, वखाण, आख्यान, रास, रासो, नवरासा आदि विविध सज्ञक काव्य रूप सकलित है । इन रचनाओ मे महान चरितात्माओ के विविध जीवन-प्रसगो को आख्यान रूप मे गाया गया है ।

उपदेश-नीति-वैराग्यादि वर्ग मे कुल ६२० रचनाएँ समाविष्ट हैं । इस वर्ग मे पच्चीसो, बत्तीसी, छत्तीसी, बावनी, सित्तरी, कडा, सवाद, उपदेश, साक्षी, चेतावनी, भावना, सीख, शिक्षा, सुभाषित आदि विविध सज्ञक काव्य रूप सकलित हैं । इन रचनाओ मे नीति-वैराग्यादि का उपदेश दिया गया है ।

जैनागम वर्ग मे १७४ रचनाएँ समाविष्ट हैं । इन रचनाओ मे जैनागम अपने मूल रूप मे, टब्बा अथवा बालविबोध के रूप मे सकलित हैं । जैन प्रकरण वर्ग मे ८४३ रचनाएँ समाविष्ट हैं । ये रचनाएँ थोकडा, सारिणी, भागा, वासठिया, वोल, नाम, अधिकार, भाषा, विवरण, ठाणा, विधि, चर्चा, द्वार, सख्या, वृत्ति, पृच्छा, अछेरा, प्रकरण, सग्रह, पाटी, पाना, सत्र आदि रूपो मे मिलती हैं । इनका सम्बन्ध मुख्यत: जैन विद्या से है ।

मत्रतत्रादि वर्ग मे ८, ज्योतिष वर्ग मे ५५, भूगोल खगोलादि वर्ग मे १६, गणितादि वर्ग मे ५, इतिहास वर्ग मे ३१, आयुर्वेद वर्ग मे ४, रसालकार छन्दशास्त्रादि वर्ग मे १४, कोश वर्ग मे ४, व्याकरण वर्ग मे ११ और प्रकीर्णक वर्ग मे १४३ रचनाएँ समाविष्ट हैं ।

इस प्रकार इस ग्रथ-सूची मे कुल मिलाकर ३७१० रचनाओ का विवरणात्मक परिचय प्रस्तुत किया गया है ।

रचनाओ का परिचय प्रस्तुत करते समय हमने प्रत्येक रचना के सम्बन्ध मे चौदह प्रकार की जानकारी देने का प्रयत्न किया है जो इस प्रकार है—

(१) क्रमाक, (२) ग्रथाक, (३) पुष्ठाक, (४) ग्रथ-नाम, (५) ग्रथकार, (६) रचना-सवत, (७) रचना-स्थल, (८) लिपिकार, (९) लिपि-सवत, (१०) लिपि-स्थल, (११) भाषा, (१२) छद-सख्या, (१३) पत्र-सख्या और (१४) आकार ।

'क्रमाक,' वर्ग विशेष मे समाविष्ट रचनाओ का क्रम सूचित करते है । 'ग्रथाक' से ग्रथ विशेष के उस क्रम का बोध होता है जो भडार के सामान्य सूचीपत्र मे (General Catalogue) उस ग्रथ विशेष के लिए अकित है । ग्रथाक के नीचे का अक यह सूचित करता है कि अमुक रचना सामान्य सूचीपत्र मे निर्देशित ग्रथाक की इस क्रम की रचना है । पुष्ठाक से यह सूचित होता है कि अमुक रचना इस अक के पुष्ठे मे सुरक्षित है । पुष्ठाक के नीचे का अक पुष्ठे मे रखी हुई रचना के क्रम को बतलाता है ।

इस बात को स्पष्ट करने के लिए स्तुति-स्तोत्र वन्दनादि वर्ग के क्रमाक ९ की रचना 'अजितनाथ स्तवन' लीजिये । इस रचना का क्रमाक ९ यह सूचित करता है कि प्रस्तुत रचना स्तुति-स्तोत्र-वन्दनादि वर्ग की ९ वी रचना है । इस रचना का ग्रथाक $\frac{१७५४}{२}$ यह सूचित करता है कि

यह रचना भडार के सामान्य सूचीपत्र (General Catalogue) की १७५४ वी रचना है। इसके नीचे का अक २ यह बताता है कि यह रचना १७५४ वे नम्बर की दूसरी रचना है। अर्थात् १७५४ वे क्रम की हस्तलिखित प्रति मे एक से अधिक रचनाए लिपिबद्ध हैं। जिनमे यह रचना दूसरे क्रम की रचना है। इस रचना का पुष्ठाक ४४ यह सूचित करता है कि यह रचना ४४ नम्बर के पुष्ठे मे रखी हुई है। इसके नीचे का अक २४ यह बताता है कि यह रचना ४४ नम्बर के पुष्ठे मे २४ वें स्थान पर रखी हुई है। दूसरे शब्दो मे पुष्ठाक का ऊपरी अक पुष्ठे के नम्बर का सूचक है जबकि नीचे का अक उसी पुष्ठे मे रखी गई रचना के क्रम का वाचक है।

भाषा के अन्तर्गत जहाँ हमने 'हिन्दी-राज०' या 'हिन्दी-ब्रज' शब्द का प्रयोग किया है वहाँ हमारा लक्ष्य इस भाव को व्यजित करने का रहा है कि ग्रथ की भाषा सर्वसामान्य दृष्टि से हिन्दी के अन्तर्गत आने वाली भाषा विशेष से है। 'छन्द-सख्या' के अन्तर्गत हमने रचना-विशेष की जो छन्द-सख्या निर्देशित की है वह किसी आधारभूत एकरूपता को लेकर नहीं। जिस रचना की पाडुलिपि मे जो छद सख्या लिखित मिलती है, वही हमने अकित कर दी है। यह सख्या किसी प्रति मे दोहे की सूचक भी हो सकती है, किसी मे सवैया या चौपाई को भी। जिस पाडुलिपि मे ढालें हैं वहाँ हमने ढाल लिख दिया है। जिन पाडुलिपियो मे छद सख्या का उल्लेख नही है, उन रचनाओ के परिचय मे यह खाना रिक्त छोड दिया गया है। 'पत्र सख्या' सामान्यतः उन्ही पाडुलिपियो की दी गई है जिनमे एक से अधिक रचनाए नहो हैं। उदाहरण के लिए उक्त 'अजितनाथ स्तवन' रचना की पत्र-सख्या नही दी गई है क्योंकि सामान्य सूचीपत्र की इस पाडुलिपि मे एक से अधिक रचनाएँ हैं। 'पत्र' से यहा तात्पर्य पृष्ठ विशेष से न होकर पन्ने (अर्थात् दो पृष्ठ) से है। 'आकार' मे हमने पाडुलिपि की लम्बाई, चौडाई के साथ-साथ प्रति पृष्ठ मे कितनी पक्तिया हैं व प्रति पक्ति मे कितने अक्षर हैं, इसका विवरण दिया है। उदाहरण के लिए उक्त 'अजितनाथ स्तवन' रचना का आकार दिया है—$\frac{१७.८ \times १०.२}{१७-३२}$। इसका तात्पर्य है कि इस रचना की पाडुलिपि १७.८ से० मी० लम्बी व १०.२ से० मी० चौडी है। इसके प्रति पृष्ठ मे १७ पक्तिया हैं व प्रति पक्ति मे ३२ अक्षर हैं। पक्ति व अक्षर की गणना औसतन समझनी चाहिये।

शोधार्थियो की सुविधा के लिए हमने जिन ग्रथो मे ग्रथकारो के सम्बन्ध की प्रशस्तियां मिलती हैं उन ग्रथो के क्रमाक से पूर्व 'प्र०' लिख दिया है और जिन ग्रथकारो या लिपिकारो से सम्बन्धित ये प्रशस्तिया हैं उनके नीचे भी 'प्र०' लिख दिया है उदाहरण के लिए कथा-काव्यचरितादि वर्ग के क्रमाक ३ पर अकित 'अजना ने हनुमानजी नी चोपाई (हनुमत चरित्र) ग्रथ के रचयिता भुवनकीर्ति व लिपिकार भुवनसागर के सम्बन्ध मे प्रशस्तिया मिलती हैं। इसलिए क्रमाक ३ से पूर्व 'प्र०' लिख दिया गया है तथा भुवनकीर्ति व भुवनसागर के नीचे भी 'प्र०' निर्देशित है। कही-कही ये चिन्ह लगने से रह भी गये हैं।

ग्रन्थ-सूची को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए अन्त मे ६ परिशिष्ट दिये गये हैं। 'ग्रन्थकार' परिशिष्ट से कई ऐसे ग्रथकारो का पता चलता है जो साहित्य के इतिहास मे अब तक अज्ञात रहे हैं और इस ग्रथ द्वारा पहली बार प्रकाश मे आ रहे हैं। 'लिपिकार' परिशिष्ट से कई विशिष्ट लिपिकारो के सम्बन्ध मे जानकारी मिलती है। इन लिपिकारो मे कई विशिष्ट सत और आर्याए भी हैं। प्रमुख सन्तो मे सर्व श्री जिनहर्ष, जिनरग सूरि, कनीराम, जयमल, ज्ञानसार, दुर्गादास, तिलोकऋषि, भुवनसागर, भोजराज ऋषि, रिख वीरचन्द, रिख शोभाचन्द, हमीरमल, हरजीऋषि आदि उल्लेखनीय हैं। प्रमुख आर्याओ मे सर्व श्री उदाजी, किसनाजी, कुशलाजी, केसरजी, गगाजी, गुमानाजी, चतराजी, चनणाजी, छगनाजी, जेत जी, ज्ञानाजी, दलूजी, नगाजी, पन्नाजी, फूलाजी, लाछाजी, सरसाजी आदि के नाम महत्त्वपूर्ण हैं। इन चरितात्माओ के लिपि-दर्शन का पुण्य लाभ भी इन ग्रथो के अवलोकन से सहज ही किया जा सकता है। 'रचना–स्थल' और 'लिपि-स्थल' के परिशिष्ट उन विशेष गावो और नगरो की जानकारी देते हैं जो उक्त चरितात्माओ की जीवन-साधना से किसी न किसी रूप मे सम्बद्ध रहे है।' 'प्रशास्तियों' से सम्बन्धित परिशिष्ट विशेष महत्त्वपूर्ण है। इसमे ८३ ग्रन्थो से सम्बन्धित ग्रन्थकारो और लिपिकारो की प्रशस्तियाँ मूल रूप से दी गई हैं। इनके अवलोकन से इन ग्रथकारो व लिपिकारो के जीवन परिचय के सम्बन्ध मे कई मूल्यवान सूचनाए मिलती हैं जिनका साहित्यिक एव धार्मिक इतिहास-लेखन मे बडा उपयोग किया जा सकता है। पाठको की सुविधा के लिए परिशिष्ट ६ व ७ मे अकारादि क्रम से उन ग्रन्थकारो व लिपिकारो की सूची दी गई है जिनसे सम्बन्धित प्रशस्तिया परिशिष्ट ५ मे सकलित हैं। अन्त के दो परिशिष्टो मे इस ग्रन्थ मे सकलित महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक रचनाओ की सूची व शुद्धि—पत्र दिया गया है।

ग्रन्थ-सूची के निर्माण मे ज्ञान-भडार के कार्यकर्ता श्री मोतीलाल गाधी व प० ईश्वरी प्रसाद ने जो सहयोग दिया उसे विस्मृत नही किया जा सकता। प्रेस कॉपी बनाने, अनुक्रमणिका तैयार करने व प्रशस्तियो के प्रतिलेखन आदि मे सहधर्मिणी स्नेहमयी शान्ता भानावत, एम. ए. ने जो सहयोग दिया, उसके लिए धन्य-वाद देकर मैं उनके गौरव को कम नही करना चाहता।

राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष डा० सत्येन्द्र तथा प्राचीन भाषा और साहित्य के गवेषक विद्वान श्री अगरचन्द नाहटा ने प्रस्तावना व भूमिका लिखकर ग्रथ का जो गौरव और महत्त्व बढ़ाया है, एतदर्थ हम उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। श्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमलजी म सा. ने प्राक्कथन के रूप मे जो अपना शुभाशीर्वाद दिया है, उसके लिए हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं। उन्ही की सतत प्रेरणा से ज्ञान भडार निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है। ग्रन्थ को इस रूप मे प्रकाशित करने का श्रेय ज्ञान भडार के उत्साही व्यवस्थापक श्री सोहनमल कोठारी को है। उनकी लगन और सेवा भावना को देखते हुए लगता है कि हम ग्रन्थ सूचियो के अन्य भाग भी शीघ्र ही विद्वानो की सेवा मे प्रस्तुत कर सकेंगे।

आशा है, यह ग्रन्थ-सूची विद्वानो, शोधार्थियो और साहित्य-प्रेमियो के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी ।

यदि इसके माध्यम से साहित्य—जगत् की किंचित् भी श्री वृद्धि हुई तो मैं अपने परिश्रम को सार्थक समझूंगा ।

डॉ० नरेन्द्र भानावत, एम.ए., पी एच डी.
मानद निर्देशक
आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भंडार, जयपुर
तथा
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

शान्तायन
सी—२३५ ए, तिलकनगर,
जयपुर—४
२६ जनवरी, १९६९

प्रस्तावना

कर्नल टॉड ने 'ट्रेविल्स इन वेस्टर्न इण्डिया' मे 'अरगहिलवाड़ा' के वर्णन मे पोथीखाने के सम्बन्ध मे लिखा है—

"अब हम दूसरे विषय पर आते हैं-वह है पोथी-भण्डार अथवा पुस्तकालय, जिसकी स्थिति, मैंने उसका निरीक्षण किया उस समय तक, बिल्कुल अज्ञात थी। यह भण्डार नए नगर के उस भाग मे तहखानो मे स्थित है जिसको सही रूप में अरगहिलवाडा का नाम प्राप्त हुआ है। इसकी स्थिति के कारण ही यह अल्ला (उद्दीन) की गिद्ध दृष्टि से बचकर रह गया अन्यथा उसने तो इस प्राचीन अरवार मे सभी कुछ नष्ट कर दिया था। यह सग्रह खरतरगच्छ की सम्पत्ति है, जिसमे आम्र और हेम 'श्रीपूज' थे। • मेरी यात्रा से कितने ही वर्षों पूर्व मुझे इस भण्डार की स्थिति का पता मेरे गुरुजी से लग चुका था और वे भी मेरे ही समान अपने सशय का दूर करने के लिए उत्सुक थे। वहाँ पहुँचते ही सब से पहले वे 'भण्डार की पूजा' करने के लिए जा पहुँचे। यद्यपि उनकी सम्मान पूर्ण उपस्थिति ही कुलूफ (मोहर) तो उनके लिए पर्याप्त थी परन्तु नगर सेठ के आज्ञा- पत्र बिना कुछ नही हो सकता था। पचायत बुलायी गयी और उसके समक्ष मेरे यति ने अपनी पत्रावली (पट्टावली ?) अथवा हेमचन्द्र की आध्यात्मिक शिष्य परम्परा मे होने का वशवृक्ष उपस्थित किया, जिसको देखते ही उन लोगो पर जादू का सा असर हुआ और उन्होने गुरुजी को तहखाने मे उतर कर युगो पुराने भण्डार की पूजा करने के लिए आमंत्रित किया। सूची की एक वडी पोथी है और इसको देखकर इन कमरो मे भरे हुए ग्रन्थो की सख्या का जो अनुमान मुझे उन्होने बताया उसे प्रकट करने मे मुझे अपनी एव मेरे गुरु की सत्य-शीलता को सदेह मे डालने का भय लगता है।

ये ग्रथ सावधानी से सदूको मे रखे हुए हैं जो मुग्द अथवा कग्गर की लकडी (Caggarwood) के बुरादे से भरे हुए हैं। यह मुग्द का बुरादा कीटाणुओ से रक्षा करने का अचूक उपाय है। भण्डार को देखकर जब वृद्ध गुरु मेरे पास वापिस आए तो उनके आनन्द की कोई सीमा न थी। परन्तु सूची मे और सदूको की सामग्री मे बहुत अन्तर था" ....

टॉड ने आगे कहा है—

"जब तक अरगहिलवाडा के भूगर्भ स्थित 'भण्डार' मे हमारी कुछ गति न हो जाय, जैसलमेर के ओसवालो के विषय मे विशेष ज्ञान एव वहाँ के ग्रथ भण्डार मे जहाँ पट्टरग के भण्डार जितनी ही सख्या मे और सम्भवत. अधिक महत्त्वपूर्ण ग्रथ विद्यमान है, हमारी पहुँच न हो जाय, और सबसे वडी वात यह कि

जब तक जनमत के बडे-बडे आदमियो एव ग्र थपालो मे हमारा कुछ परिचय न हो जाय तब तक हम इस स्थिति मे नही पहुँच सकते कि जैनो की बौद्धिक सपदा के विषय मे कोई प्रशसा कर सकें।" पृ० २४६-२४८।

टॉड ने इससे पहले लिखा है—

"मै फिर कहूँगा कि इस प्रकार के अर्थहीन अनुमान (कि हिन्दुओ के यहाँ इतिहास की पुस्तकें नही) लगाने मे प्रवृत्त होने से पहले हमे जैसलमेर और अणहिलवाडा के जैन ग्र थ भण्डारो और राजपूताना के राजाओ तथा ठिकानेदारो के अनेक निजी सग्रहो का अवलोकन कर लेना चाहिए।" पृ० १६०

टॉड ने जैसलमेर के संबध मे आगे बताया है—

"लोगो को परिश्रम के लिए प्रोत्साहित करने के निमित्त मै एक बात फिर कह दू, जो साधारणतया बारबार नही कही जा सकती, कि मैने जैसलमेर से कागज और ताडपत्र की कितनी ही प्रतियाँ प्राप्त करली थी, ताडपत्र की प्रतियाँ तो तीन, पाँच और आठ शताब्दियो तक पुरानी हैं, जो रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय की आलमारियो मे अछेड पडी हुई अब भी शोभा बढा रही हैं।" पृ० २४६

टॉड महोदय ने आगे खम्भात के प्रसग मे यह भी कहा है—

"जिस प्रकार अन्यत्र जहाँ-जहाँ जैनो की जनसख्या अधिक होती है वहाँ ग्र थ भण्डार होते हैं, इसी प्रकार यहाँ भी इस जाति का एक महत्त्वपूर्ण ग्र थ भण्डार है।" पृ० २६४

टॉड ने खभात मे जिस जैन ग्र थ-भंडार का उल्लेख किया है वह "शान्तिनाथ ग्र थ भडार" है। राजशेखर सूरि ने अपने प्रबध मे लिखा है कि इस भडार की स्थापना करने मे तत्कालीन महामान्य वस्तुपाल तेजपाल ने ३००,०००द्रव्य व्यय किया था। इस भण्डार मे 'धर्माभ्युदय काव्य' की एक ताडपत्रीय प्रति है जिस पर स्वय वस्तुपाल के हस्ताक्षर मौजूद हैं। इस भडार के ग्र थो की एक सूची पीटर्सन ने तैयार करके १८२२–२३ ई० मे प्रकाशित की थी। तदनन्तर ज्ञान-भण्डार के मन्त्रियो की ओर से एक सूची १६४२ ई० मे निकली और गायकवाड ओरियण्टल सीरीज मे लिस्ट का प्रथम भाग १६६१ ई० मे प्रकट हुआ है। इनमे कहा गया है कि पीटर्सन के अनुसार बहुत से ग्र थ अब नही मिल रहे हैं।

कर्नल टॉड के उक्त कथनो से हमे स्पष्ट विदित होता है कि १८२२–२३ मे आज से १४५ वर्ष पूर्व कर्नल टॉड को जैसलमेर तथा पाटन के कुछ जैन ग्र थ भडारो का पता लगा था, उसे यह भी विदित था कि राजाओ और ठिकानेदारो के भी अपने ग्र थ भडार हैं। वस्तुत जैन ग्र थ-भडारो से वह बहुत प्रभावित हुआ था। पाटन का ग्र थ भडार जो टॉड के गुरु यति ज्ञानचद्र ने देखा था। यह एक विशाल ग्र थ भडार था। यह भूगर्भ-स्थित था और इसी कारण अलाउद्दीन के आक्रमण के समय नष्ट भ्रष्ट होने से बच गया था। टॉड की सम्मति मे जैसलमेर का जैन भडार पाटन से भी बडा था।

पाटण के ग्रथ भंडार मे ग्र थो की सूची थी। यति जी ने टॉड साहब को यह सूचना दी कि

सूची मे दिये सभी ग्र थ भडार मे नही थे । खम्भात के ग्र थागार के सम्बन्ध मे भी २० वी शती मे यह बताया गया कि पहले पीटर्सन ने जो सूची छपवायी थी, उसकी सभी पुस्तके दूसरी सूची बनाते समय प्राप्त नही थी। इन दोनो घटनाओ से यही विदित होता है कि इन भडारो से पुस्तको की चोरी होती रहती थी ।

फिर भी इसमे कोई सदेह नही कि सन् १८२२–२३ के आसपास इन भडारो की सुरक्षा के भी कडे प्रबध थे । इनका खुलना भी सरल नही था, और पुस्तक मिलना भी कठिन ही था ।

कर्नल टॉड को यह भी विदित था कि जहाँ भी जैनियो की सख्या कुछ अधिक रही है, वही ग्र थागार स्थापित किये गये थे ।

टॉड के समय मे साहित्य-इतिहास सम्बन्धी जागरण की एक लहर चली थी, और उसी में कितने ही विदेशी विद्वानो ने जैनियो के गुप्त भडारो से कुछेक ग्र थ बाहर निकाले, एक-दो भडारो की सूचियाँ भी बनायी ।

मुनि पुण्यविजय जी लिखित 'भारतीय जैन श्रमण सस्कृति अने लेखनकला' नाम की गुजराती पुस्तक से हमे विदित होता है कि जैनियो मे समझदार बुद्धिमान लोगो की यह प्रवृत्ति थी कि वे प्राचीन आचार्यो की कृतियो का पठन पाठन करना चाहते थे, वे शास्त्रो को पढना-समझना चाहते थे, ज्ञान भक्ति का रहस्य जानना चाहते थे और इस निमित्त ग्र थ भडारो की स्थापना भी करना चाहते रहे थे । इस प्रवृत्ति के निमित्त पुस्तक-लेखन को भी महत्त्व मिल गया था । इस सबध मे श्रीमान सूराचार्य ने 'दानादि प्रकरण' मे पाचवे 'अवसर' मे पुस्तक-लेखक के सबध मे जो लिखा वह दृष्टव्य है—

"ये लेखयन्ति सकल सुधियोऽनुयोग शब्दानुशासनम शेष मल कृतीश्च ।
छन्दासि शास्त्रामपट च परोपकारसम्पादनैक निपुणा पुरुषोत्तमास्ते ॥६४॥
किं कितैर्न कृत ?न कि विवपित ? दान प्रदत्तं न कि ?
केवाऽऽपन्न निवारिता तनुमतां मोहार्णवे मज्जताम् ॥६५॥
नो पुण्य किमुपार्जितं ? किमु यशस्तारं न विस्तारित ?
तत्कल्याण कलापकारणमिदं यै शासनम् लखितम् ॥६६॥

पुस्तक-लेखन तथा पुस्तक लिखवाने दोनो का महत्त्व बढा, साथ ही पुस्तके लेने या खरीदने को भी महत्त्वपूर्ण माना गया । पुस्तक लिखने, लिखवाने तथा सग्रहालयो की स्थापना से नाना प्रकार से यश और नाम भी होता ही था ।

जैन धर्म मे तो श्रावको के लिए पुस्तक लिखना नित्य कर्मो मे भी सम्मिलित कर दिया गया था ।

११ वी शती के लगभग से तो हमे जैन ग्र थागारो की स्थापना के लिए महत् प्रयत्न होते मिलते हैं। 'प्रभावक चरित्र हेमचन्द्र प्रबध' मे इस बात का उल्लेख है—

राज्ञ पुर. पुरोगैश्च विद्वद्भिर्वाचित तत
चक्रे वर्षत्रय वर्ष (यावत्), राज्ञा पुस्तक लेखने ।।१०३

राजा देशान्तियुक्तैश्च, सर्वस्थानेभ्य उद्यतै
तदा चाहूय सच्चक्रं, लेखकाना शतत्रयम् ।।१०४।।

पुस्तका समलेखन्त, सर्व दर्शनिनातत ।
प्रत्येक मेवादीयन्ताध्ये तृणामुद्यमस्पृशाम् ।।१०५।।

इसमे स्पष्ट कथन है कि सिद्धराज जयसिंह ने तीन सौ लेखक नियुक्त करके प्रचुर साहित्य की प्रतिलिपियाँ कराके राजकीय ग्रंथागार स्थापित किया था। कुमारपाल के समय मे भी प्रचुर लखन कार्य हुआ ।

राजाओ को ही नही, कुछेक मन्त्रियो को भी इस काल मे पुस्तके लिखवाने तथा ग्रथागार स्थापित कराने का शौक था । वस्तुपाल तेजपाल ने खभात मे विशाल ग्रथागार स्थापित कराया था ।

इसी प्रकार धनी श्रेष्ठियो ने भी घरो मे ग्रंथागार स्थापित किये थे। उस समय से आज तक ऐसे ही प्रयत्न होते मिलते हैं । प्राचीन भडार तो चले ही आ रहे हैं, नये और स्थापित हुए हैं और हो रहे हैं।

टॉड के समय मे हमे जो जागरण मिलता है, वह शीघ्र ही मन्द पड गया था ।

द्वितीय नव जागरण हम उन प्रयत्नो से मान सकते हैं जिनसे सिद्धो और उनके साहित्य का उद्धार हुआ । हिन्दी मे यह लहर राहुल सास्कृत्यायन की तिब्बत यात्रा के उपरात आरभ हुई । और इसके बाद नाथो और जैनो के साहित्य भडारो की ओर पुन दृष्टि गयी । स्वयभू के 'पउमचरिउ' और पुष्पदन्त की कृतियो के प्रकाश मे आने से साहित्य के इतिहास का रूप ही बदलने लगा । इसी समय के लगभग 'साहित्य सदेश' ने अपने सपादकीय मे 'जैसलमेर' के ज्ञान भडार पर जो टिप्पणी दी थी उसे उद्धृत करना समीचीन होगा—

"साहित्य सरक्षण श्रमण सस्कृति मे अत्यन्त आवश्यक माना गया है। विश्व ज्ञान प्राप्ति के समस्त ग्रन्थ परिश्रम पूर्वक श्रमणो ने लिखे, लिखवाये । ऐसे भण्डारो की सख्या यो तो कम नही है, परन्तु प्राचीन सग्रहालयो मे जैसलमेर का सग्रह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है । इसकी स्थापना खरतरगच्छीय आचार्य श्री जिनभद्र सूरिजी ने १६ वी शताब्दी मे की थी । यहाँ हजारो की सख्या मे तो केवल ताडपत्र पर लिखे हुए ग्रन्थ ही हैं । इनमे से अधिकतर स्वर्णाक्षरो से लिखे व चित्रित किये गये हैं । कागजो पर लिखे हुये ग्रन्थो की सख्या अपरिमित है । भारतीय चित्रकला की, राजपूत–पूर्वकालीन विकसित ढङ्ग पर प्रकाश डालनेवाली प्राचीन व मौलिक सामग्री अद्यावधि वहाँ पर सुरक्षित है । कुछ ग्रन्थ चर्म पर भी पाये गये हैं । श्रद्धाजीवी श्रावको की सज्जनता का लाभ अन्वेषण के बहाने मुनियो ने भली भाँति उठाया, जिसके फलस्वरूप यहाँ की सुन्दर कृतियाँ आज गुजरात के सरकारी एव गैर सरकारी सग्रहालयो की शोभा बढा रहे हैं ।

आज से २४ वर्ष पूर्व आचार्य श्री जिनकृपाचन्द्र सूरिजीने अपने सुयोग्य शिष्य उपाध्याय मुनि सुखसागर जी आदि मुनिराजो की सहायता से, दो वर्ष जैसलमेर मे रहकर अस्त-व्यस्त प्रतियो की व्यवस्था एव जीर्णप्राय ग्र थो का पुनर्लेखन करवाया था तथा सर्वथा नष्टप्राय ग्र थो के फोटो भी उतरवाये थे। १५ लिपिको के बावजूद भी दो वर्षों मे कुछ ही काम हुआ। तदनन्तर पुरातत्वाचार्य श्री जिनविजयजी विद्वन्मण्डलयुक्त छह मास तक वही रहे। आपने बहुसख्यक अमूल्य कृतियाँ एव भारतीय मध्यकालीन इतिहास पट पर प्रकाश डालनेवाली सहस्रो पुष्पिकाएँ सग्रहीत की। वर्तमान में, जैन साहित्य के अनन्य अन्वेषक मुनि श्री पुण्यविजयजी कई विद्वानो के साथ वहाँ सूक्ष्म अवलोकन कर रहे हैं। आपके सद् प्रयत्नो द्वारा कुछेक भण्डार सर्व प्रथम खोले गये। समाचार पत्रो से एव वैयक्तिक सूत्रो से ज्ञात हुआ है कि मुनिजी को जैन साहित्य की शोभा बढ़ाने वाले बहुत से नवीन व महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ मिले हैं। प्राप्त वैदिक ग्रन्थ भी कुछ ऐसे मिले हैं जिनसे सशोधन की नई दिशा का सूत्रपात होता है।

जैन भण्डारो के महत्त्व को अभी तक विद्वत् समाज ठीक से नही समझ पाया। आशिक दोष समाज का भी है। आज के वैज्ञानिक युग मे भी महत्त्वपूर्ण ज्ञान भण्डारो को इस प्रकार बचाया जा रहा है कि अन्वेषक की दृष्टि उन पर न पडे। यह बडे खेद की बात है। हम अत्यन्त विनम्रता के साथ सकीर्ण विचारवाले व्यवस्थापको की सेवामे निवेदन कर देना चाहते हैं कि अधिकृत ज्ञान-भण्डारो को खुलवाकर जैसलमेर के समान ही ऐतिहासिक दृष्टि से छान-बीन करवावें।"

इस टिप्पणी मे जैन भण्डारो के सम्बन्ध मे जो विचार व्यक्त किये गये हैं वे उस काल के सामान्य विचारो के प्रतिनिधि हैं। कितने ही जैन भण्डार इस समय से खुलने लगे। जयपुर से जैन शास्त्र भण्डारो के सूचीपत्र निकाले जाने लगे। इन सूचीपत्रो को तैयार करते समय १४११ के लगभग के एक ग्रन्थ 'प्रद्युम्न चरित' का भी प्रकाशन किया गया और इससे भी प्राचीन 'जिणदत्त चरित' भी जयपुर के आमेर शास्त्र भण्डार से प्रकाशित हुआ। इसने जैन भण्डारो के भीतर झाकने की सुविधा विद्वानो को प्रदान की। मुनि जिनविजयजी, मुनि पुण्यविजय जी सदृश कितने ही विद्वान जैन भण्डारो से सामग्री निकाल-निकाल कर प्रकाश मे लाने लगे। गुजरात और गुजराती मे बडे वेग से यह काय होने लगा। डॉ० भोगीलाल साडेसरा तथा डॉ० हरिवल्लभ चुन्नीलाल भायाणी इसमे प्रवृत्त हुए। हिन्दी क्षेत्र मे श्री अगरचन्द नाहटा ने तो व्रत ही कर लिया कि जो भी प्रसग मिलेगा वे तद्विषयक हस्तलेखो पर प्रकाश डालेंगे। विविध ग्रन्थागारो का स्वय निरीक्षण कर कई ग्रन्थ उन्होने प्राप्त किये। साहित्य के इतिहासो पर नये उद्धरणो के आधार पर नया प्रकाश डालना आरम्भ किया। अधिकाश जैन भण्डारो और जैन विद्वानो से उन्होने सम्पर्क स्थापित किया और छोटे-बडे निबन्ध लिखकर उन पर प्रकाश डाला। इससे एक नयी चेतना जागृत हुई।

बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और गुजरात मे हस्तलेखो की खोज हुई उनके विवरण छपे। इस प्रकार घर-घर मे विद्यमान साहित्य तथा ग्रन्थागारो मे विद्यमान साहित्य प्रकाश मे आया। साहित्य का एक अजस्र स्रोत ही खुल गया। जिन ग्रन्थो और लेखको के नाम भी नही सुने थे वे प्रकाश मे आने लगे। यह अत्यन्त शुभ चेतना है। किन्तु ऐसा नही समझ लेना चाहिये कि आज सभी भण्डारो का पता

हमे चल गया है। हाँ, प्रयत्न यह होना चाहिए कि सभी का पता हमे चल जाय। उनकी सुरक्षा का प्रवन्ध भी तुरन्त ही किया जाना चाहिये। मेरा अपना विचार यह है कि पुरातात्त्विक स्थानो की सुरक्षा से भी अधिक सुरक्षा इनकी होनी चाहिये और वह भी राष्ट्रीय स्तर पर।

कितने महत्त्वपूर्ण हस्तलेख देश से वाहर वहुत पहले ही अ गरेजो के राज्यकाल मे जा चुके थे। ब्रिटेन के वृद्ध सरकारी सग्रहालयो मे इन ग्र थो की सख्या ही इसका पर्याप्त प्रमाण है। फिर फ्रास और जर्मनी मे भी इनकी कमी नहीं है।

स्वतन्त्रता के उपरात एक महान परिवर्तन यह हुआ कि राजा-महाराजा समाप्त हो गये, वडे जमीदार चले गये। इनके पास जो ग्र थ भडार थे वे चोरी छिपे वाहर जाने लगे। राजस्थान से वृहद् सख्या मे ग्र थ इस काल मे वाहर गये, क्योकि इन ग्र थो का भी एक वाजार वन गया है।

राजस्थान हस्तलेखो के भडारो के सवध मे वहुत समृद्ध है।

मुनि श्री पुण्यविजय जी ने 'भारतीय जैन श्रमण सस्कृति अने लेखनकला' मे उन प्राचीन ग्र थागारो का उल्लेख किया है जिनका उन्हे पता था। उनकी सूची इस प्रकार है—

(१) **गुजरात**—पाटण, पालनपुर, राधनपुर, अहमदावाद, खेडा, खमात, छाणी, वडोदरा, पादरा, दरापरा, डभोई, सिनोर, भरूच, सुरत, मवइ, वगैरा।

(२ **काठियावाड़**—भावनगर, घोघा, पालीताणा, लिवडी, वढवाण कैम्प, जामनगर, मागरोल वगैरा।

(३) **कच्छ**—कोडाय।

(४) **मारवाड़**—वीकानेर, जैसलमेर, वाडमेर, नागौर, पाली, जालोर, मु डारा, आहोर वगैरा।

(५) **मेवाड़**—उदयपुर।

(६) **मालवा**—रतलाम।

(७) **पंजाब**—गुजरानवाला, होशियारपुर, झडियाला वगैरा।

(८) **युक्तप्रान्त**—आगरा, शिवपुरी (?) काशी वगैरा।

(९) **बगाल**—वालुचर, कलकत्ता वगैरा।

किन्तु राजस्थान मे और भी कई प्राचीन जैन भडार हैं, जिनका कुछ विस्तृत विवरण हमें डॉ० कस्तूरचन्द कासलीवाल के शोध प्रवन्ध 'जैन ग्र थ भण्डार्स इन राजस्थान' से मिल जाता है।

जैन भण्डारो की इसी दीर्घ परम्परा मे 'आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भडार' की स्थापना हुई। इस भडार के योग्य कार्यकर्त्ताओ ने अपने भडार की सूची का एक भाग भी आज प्रकाशित कर दिया है।

ये भडार ज्ञान की महत परम्परा को सुरक्षित रखते है, इन्ही मे हमारी युग-युग से सचित ज्ञानराशि

का सचित कोश आज भी उपलब्ध होता है। प्रत्येक ग्रथागार शोध का एक केन्द्र होता है। पर अभी हमारे यहाँ शतश ऐसे भडार हैं जिनके द्वार सदा बद रहते हैं, और जिनके ग्रथो पर धूल के पर्त-पर पर्त चढे रहते हैं, ग्रथ जीर्ण-शीर्ण होते जाते हैं। आज यह स्थिति अवाच्छनीय प्रतीत होती है। अत. आज प्रथम आवश्यकता यह है कि प्रत्येक ग्रंथागार की सूची प्रकाशित की जाय। इस दृष्टि से आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार के कार्यकर्त्ता प्रशसा के योग्य हैं। उन्होने आज की आवश्यकता के अनुरूप यह सूची प्रकाशित करा दी है। शोध-कर्त्ताओ को तो इससे बहुत सहायता मिलती है, साहित्य मे रुचि रखने वाले अन्य महानुभावो को भी इससे सुविधा होगी।

यह सूचीपत्र तैयार करने मे डॉ० नरेन्द्र भानावत ने पर्याप्त परिश्रम किया है। सभी ज्ञातव्य सूचना पहले तो तालिका बद्ध रूप मे दे दी गयी है। विषयो के अनुसार ग्रथो को विभाजित किया गया है तथा प्रत्येक विषय मे अकारादि क्रम से ग्रथ सूची दी गयी है। अन्त मे दिये गये परिशिष्टो से सोने मे सुहागा मिल गया है। पहला परिशिष्ट अकारादि क्रम से ग्रथकारो के नाम देता है, दूसरा परिशिष्ट लिपिकारो के नाम देता है। तीसरे-चौथे परिशिष्ट से ग्रथो के रचना-स्थलो व लिपि करने के स्थानो का पता चलता है। पाचवे परिशिष्ट मे ग्रंथो की पुष्पिकाएँ तथा प्रशस्तियाँ दी गयी हैं। इस परिशिष्ट से कितनी ही ऐतिहासिक बातो का पता चल सकता है। स्पष्ट है कि इस सूची के सम्पादक डॉ० भानावत की दृष्टि इस सूची को अधिकाधिक उपयोगी बनाने की रही है।

मैं हस्तलेखो की सूची के इस महत्त्वपूर्ण प्रकाशन पर ज्ञान भडार के व्यवस्थापको को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि वे हस्तलेखो की अन्य सूचियाँ भी शीघ्र ही प्रकाशित करायेंगे।

—डॉ० सत्येन्द्र
एम० ए०, पी–एच० डी, डी० लिट
आचार्य एव अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

५ जनवरी, १९६६

भूमिका

मानव मस्तिष्क ने जो अनेक तरह के आविष्कार किये उनमे भाषा और लिपि का आविष्कार सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हुआ। पशु-पक्षी सकेत और ध्वनियों से अपने भावो को प्रकट करते है अत. बहुत ही सीमित भावो का प्रकटन हो पाता है, और उससे लाभ तो और भी कम व्यक्ति उठा पाते हैं। पर मनुष्य ने अनन्त शब्दो का गठन किया। ध्वनियो और सकेतो को भी एक व्यवस्थित रूप दिया जिससे भावो के प्रकटन का एक महान् द्वार खुल गया। अनेक प्रकार की बोलिया विकसित हुई। व्याकरण के द्वारा शब्द-व्यवहार को व्यवस्थित ढाचे मे डाला गया। शब्दकोश मे शब्दो का सग्रह किया गया। इस तरह के प्रयत्न ने मानव-समाज को बहुत लाभ पहुँचाया, और आज भी पहुच रहा है।

भाषा की तरह लिपि के आविष्कार ने भी ज्ञान-विज्ञान के प्रसार मे बहुत बडा योग दिया। सबसे बडा कार्य लिपि के द्वारा यह हुआ कि साहित्य को स्थायित्व मिला, विचारो का मौखिक रूप से आदान-प्रदान थोडे समय के लिये और सीमित व्यक्तियो के लिये ही लाभप्रद होता है जबकि वे ही विचार लिपिबद्ध हो जाने के बाद शताब्दियो तक असख्य व्यक्तियो को शिक्षा और प्रेरणा देते रहते हैं। प्रगति मे इससे बडी सहायता मिलती है। हजारो-लाखो वर्ष पहले जो महान् व्यक्ति हो चुके हैं उनके विचार लिपिबद्ध होगए तो आज भी हम उनसे लाभ उठा सकते हैं। थोडे से अक्षरो मे सारा ज्ञान विज्ञान लिपि द्वारा समेट लिया गया है।

जैन धर्म भारत का प्राचीनतम धर्म है। परम्परा से तो वह अनादि काल से चला आ रहा है। पर इस अवसर्पिणी काल मे जैन धर्म का प्रवर्तन भगवान ऋषभदेव द्वारा हुआ। इसीलिये वे प्रथम तीर्थंकर कहे जाते है। जैन-आगमादि प्राचीन ग्रन्थो के अनुसार लिपि और अको का आविष्कार भी भगवान ऋषभदेव ने ही किया। उन्होने अपनी ब्राह्मी नामक पुत्री को जो लिपि सिखाई वह उसी के नाम से भारत की प्राचीनतम लिपि ब्राह्मी के रूप मे प्रसिद्ध है। उसमे समय-समय पर परिवर्तन होता रहा है। परवर्ती प्रायः सभी लिपियो का विकास इसी से हुआ है। वैसे जैन आगमो मे १८ प्रकार की लिपियो का उल्लेख है और उनकी २-३ तरह की नामावलिया मिलती हैं। भगवान महावीर के समय भारत मे १८ लिपियाँ प्रचलित और प्रसिद्ध थी, इसी तरह १८ भाषायें भी।

ऋषभदेव ने अपनी दूसरी पुत्री सुन्दरी को अक विद्या सिखाई। अन्य पुत्र-पौत्रादि एव जन-साधारण को पुरुषो की ७२ और स्त्रियो की ६४ कलायें या विद्यायें भी भगवान ऋषभदेव ने प्रकट की।

लिपि का आविष्कार इतना प्राचीन होने पर भी इतने प्राचीन समय के लिखे हुए कोई शिलालेख व ग्रन्थादि नही मिलते । इसका प्रधान कारण यह बतलाया जाता है कि लोगो की स्मृति बडी तेज थी। वेदादि ग्रन्थ और जैनागम आदि लाखो श्लोक परिमित ग्रन्थ कंठस्थ कर लिये जाते थे । शिष्य-प्रशिष्यादि परम्परा से सैकडो-हजारो वर्षो तक यह प्राचीन साहित्य मौखिक रूप मे जीवित रहा ।

जैन ग्रन्थो के अनुसार "पूर्व" नामक विशाल ज्ञान-विज्ञान के आकर ग्रन्थ १४ थे । सम्भव है वे महावीर से पहले के हो । महावीर की वाणी १२ अग-सूत्रो मे गणधरो ने व्यवस्थित व ग्रथित करदी और १४ पूर्वो का समावेश १२ वें दृष्टिवाद अगसूत्र मे कर लिया गया । द्वादशागि का ग्रन्थ परिमाण बहुत बडा है । क्रमश स्मृति की क्षीणता और दुष्काल आदि के कारण वह विशाल ज्ञान क्षीण होता गया । भगवान महावीर के ९८० वर्ष बाद जब वल्लभी मे देवर्धिगणि क्षमाश्रमण ने बचे हुए आगमो को अन्तिम रूप लेकर लिपिबद्ध करवाया तब तक अनेको ग्रन्थ तो लुप्त हो चुके थे और कई ग्रन्थो का थोडा अश ही बच पाया था । खेद की बात है कि उस समय की लिखी हुई प्रतियाँ भी शताब्दियो पहले नष्ट हो चुकी । इसलिये ६ठी से ८ वी शताब्दी मे जो आगमो की निर्युक्तियाँ, चूर्णियां, भाष्य और टीकादि ग्रन्थ लिखे गये उनमे भी कही भी ऐसा उल्लेख नही है कि उन्होने देवर्धिगणि की लिखाई हुई प्रतियाँ देखी हो या उनका उपयोग किया हो । १२ वी शताब्दी के समर्थ टीकाकार अभयदेव सूरि जी ने तो अपनी टीकाओ की प्रशस्तियो मे स्पष्ट रूप से लिखा है कि प्राप्त प्रतियाँ बहुत कुछ अस्त व्यस्त हैं, पाठ-भेद भी बहुत हो गये हैं, अथ की आमनायें भी बहुत कुछ विस्मृत और लुप्त हो गई । वर्तमान मे जैन आगमादि की जो हस्तलिखित प्रतिया प्राप्त हैं उनमे सबसे प्राचीन विशेष आवश्यक भाष्य की जैसलमेर मे प्राप्त ताडपत्रीय प्रति १० वी शताब्दी की मुनि पुण्य विजयजी ने मानी है । अन्य आगमो की तो १२ वी शताब्दी से ही प्रतियाँ मिलने लगती है ।

लिपि का आविष्कार काफी पहिले हो गया पर शिलालेख या ग्रन्थ प्राचीन काल मे बहुत कम लिखे गये । जब लिखे गये तब भी लिखने के उपादान और साधन भी इतने अच्छे नही थे कि लम्बे समय तक टिक सकें । इसीलिए कुछ शिलालेख तो जरूर प्राचीन मिलते हैं पर ताडपत्रीय प्रतिया इतनी प्राचीन नही मिलती, क्योकि जिस समय ताडपत्र पर ग्रथ लिखे गये उनपर वैसी घुटाई नही हुई और न वे ताडपत्रादि उच्चकोटि के थे । अत जल्दी ही टूट फूट कर चूरे बन गये । मनीषियो ने उनके जल्दी नष्ट होने के कारणो पर चिन्तन किया और कागज, स्याही, लिपि, ग्रथो के सरक्षण की विधियो आदि के सम्बन्ध मे नये-नये आविष्कार किये । इसी का परिणाम है कि आज हजार वर्ष पुरानी ताडपत्रीय प्रति और ८०० वर्ष पुरानी कागज की प्रति जैन ज्ञान भण्डारो मे उपलब्ध है ।

प्राचीन काल मे ग्रंथो का प्रचार श्रवण के द्वारा होता था, इसीलिए उनका नाम श्रुत या श्रुति पाया जाता है । जब ये लिपिबद्ध पुस्तक के रूप मे तैयार हो गये तो उनका नाम ग्रन्थ पड गया । जैन धर्म मे ज्ञान के ५ प्रकार बतलाये गये हैं । उनमे अवधि, मनपर्यय और केवल ज्ञान तो विच्छेद हो गये । मति और श्रुत दो ज्ञान ही अब रहे हैं । इन दोनो मे भी श्रुत ज्ञान को बहुत अधिक महत्व दिया गया है । श्रुत ज्ञान जैन शासन का आधार स्तम्भ माना गया है । इसकी आराधना के लिए ज्ञान पंचमी या श्रुतपचमी पर्व का प्रवर्तन हुआ । दिगम्बर समाज मे ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को श्रुत पचमी

कहा जाता है और श्वेताम्बर समाज मे कार्तिक शुक्ला पचमी को ज्ञान पचमी कहा जाता है। श्रुत या ज्ञान-पचमी के माहात्म्य सम्बन्धी कई कथा ग्रन्थ और पर्व-व्याख्यान दोनो सम्प्रदायो मे प्रसिद्ध है। स्वाध्याय और तपादि द्वारा इस पर्व की आराधना की जाती है।

आगमादि ग्रन्थो को दीर्घकाल तक बनाये रखने के लिए उनकी प्रतिया लिखने और लिखवाने पर बहुत जोर दिया गया है। शास्त्रो मे इसका बहुत बडा फल बतलाया गया है। साधु-साध्वियो ने स्वय इन ग्रन्थो की प्रतिलिपिया कीं और श्रावक-श्राविकाओ को उपदेश और प्रेरणा देकर लाखो प्रतिया लिखवाई गई। वर्तमान मुद्रण युग मे जैसे एक साथ हजारो व लाखो प्रतियाँ छप सकती हैं वैसी सुविधा मुद्रण युग से पहले नही थी। एक-एक प्रति को तैयार करने मे बडा समय, श्रम और अर्थ-व्यय होता था। इसके लिए उनकी सुरक्षा के सम्बन्ध मे प्रति-लेखको ने जो ग्रन्थ के अन्त मे श्लोक एव दोहे आदि लिखे हैं, वे बडे ही मार्मिक हैं—

'भग्न पृष्ठि कटि ग्रीवा, वक्र दृष्टिरधोमुखम्।
कष्टेन लिखित शास्त्र, यत्नेन परिपालयेत्॥'

'बद्ध मुष्टि कटि ग्रीवा, मदद्दष्टिरधोमुखम्।
कष्टेन लिख्यते शास्त्र, यत्नेन परिपालयेत्॥'

जैन-सघ द्वारा ग्रन्थो की प्रतिलिपियाँ निरन्तर करवाई जाती रही। कई आचार्यों और श्रावको ने अनेक स्थानो मे बडे-बडे ज्ञान भण्डार स्थापित किये। इसी का परिणाम है कि आज भारत के कोने-कोने मे जैन ज्ञान भण्डार सैकडो की सख्या मे पाये जाते है। उनमे तथा देश-विदेश के अन्य ग्रन्थ भंडारो मे जैनो द्वारा लिखी और लिखवाई हुई लाखो प्रतियाँ सुरक्षित हैं।

जैन श्रमणो का जीवन बहुत ही सयम और तपमय रहा है। उनके जीवन की आवश्यकताएँ अत्यन्त सीमित रही हैं। श्रावक-श्राविकाओ द्वारा वे सहज ही पूरी होती रही हैं। इसलिये वे अपना अधिकाश समय ग्रन्थो के पठन-पाठन, लेखन, सशोधन और रचनादि मे लगाते रहे। ज्ञान के क्षेत्र मे वे सदा उदार हृदय और विशाल दृष्टि वाले रहे। इसलिये जैन ग्रन्थ भडारो मे केवल जैनो के ही ग्रन्थ नही हैं वरन् हजारो जैनेतर ग्रथ भी सुरक्षित हैं। इनमे से बौद्ध और वैदिक परम्परा के कई ऐसे ग्रथ भी है जिनकी प्रतियाँ अन्यत्र कही नही मिलती। इतना ही नही उन्होने जैनेतर ग्रन्थो का स्वय गम्भीर अध्ययन किया और उन पर सस्कृत एव लोक भाषाओ मे बहुत ही महत्त्वपूर्ण और उपयोगी टीका-टिप्पण और विवेचन लिखे जिससे उन ग्रन्थो के प्रचार और उपयोग मे बहुत बडी सहायता मिली। बहुत से नष्ट होते हुये ग्रन्थ उन्होने बचा लिये। सस्कृत के ही नही हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषाओ के अनेको काव्यादि ग्रन्थ हैं जिनको यदि जैन विद्वान् लिखकर अपने भडारो मे सुरक्षित नही रखते तो वे सदा के लिये नामशेष हो जाते।

भारतीय श्रमण सस्कृति ने लेखन कला के विकास और ग्रन्थो के सरक्षण मे जो महत्त्वपूर्ण योग दिया है वह चिरस्मरणीय और स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है। अब से ३३ वर्ष पूर्व आगम प्रभाकर मुनि श्री पुण्य

विजयजी ने 'भारतीय जैन श्रमण सम्कृति ग्रने लेखनकला' नामक महत्त्वपूर्ण ग्रौर सचित्र निवन्ध तैयार किया था। वह साराभाई नवाव ने 'जैन चित्र कल्प द्रुम' मे ग्रौर स्वतन्त्र रूप मे भी प्रकाशित किया। ग्रपने विषय का वह एक ही सागोपाग निवन्ध है जिस पर जैन समाज गौरव कर सकती है। जैन समाज की श्रुत-सेवा बहुत ही ग्रसाधारण ग्रौर उल्लेखनीय रही है। इसकी कुछ झाकी उपर्युक्त निवन्ध मे सर्वप्रथम प्रकाश मे ग्राई। इसके लेखक मुनि श्री पुण्यविजयजी ने तो ग्रपना सारा जीवन ज्ञानोपासना मे ही लगा दिया। ग्रनेक स्थानो के जैन ज्ञान-भण्डारो का उन्होने विशिष्ट उद्धार किया। जगह-जगह घूमकर लाखो प्रतियो को देखा, उनकी सूची वनाई ग्रौर उनके सरक्षण तथा सुव्यवस्था मे कोई कमी नही उठा रखी। पाटण ग्रौर जैसलमेर के ख्यातिप्राप्त विश्व विश्रुत जैन ज्ञान भण्डारो का एकत्रीकरण, संरक्षण ग्रौर सुव्यवस्था उन्होने जिस रूप मे की है, ग्रौर कोई भी व्यक्ति नही कर सका है।

जैन ज्ञान भण्डारो की शोध का कार्य सबसे पहले मूर्तिपूजक श्वेताम्बर जैन समाज द्वारा हुग्रा। उसके वाद दिगम्बर सम्प्रदाय के शास्त्र-भण्डारो की खोज ग्रौर उनकी सूची-प्रकाशन का विशिष्ट कार्य जयपुर की महावीर जी तीर्थ क्षेत्र कमेटी ग्रादि के द्वारा हुग्रा। ग्रव तक स्थानकवासी समाज के शास्त्र-भण्डारो के एकत्री-करण, सूची-निर्माण ग्रौर सुव्यवस्था का कार्य नही हो पाया था। वह ग्राचार्य श्री हस्तीमलजी ने इधर कुछ वर्षो मे ग्रारम्भ किया है। इसे देखकर मुझे वडी प्रसन्नता होती है, क्योंकि गत ४० वर्षो से मेरी शोध प्रवृत्ति दिनो दिन वढती रही है। हस्तलिखित प्रतियो की खोज ग्रौर उनमें प्राप्त महत्त्वपूर्ण रचनाग्रो के परिचय-विवरण प्रकाशित करने मे मेरी ग्रत्यधिक रुचि रही है। मैने ग्रपने जीवन का ग्रधिकाश समय इसी प्रशस्त कार्य मे लगाया ग्रौर लगा रखा है। इसलिये इधर जो स्थानकवासी सम्प्रदाय के साहित्य ग्रौर इतिहास का कार्य हो रहा है उससे मुझे वहुत ही हर्ष होता है।

कुछ वर्ष पूर्व जयपुर जाने पर मुझे ग्राचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार के स्थापित होने की सूचना मिली। इसके सेवाभावी, उत्साही कार्यकर्त्ता श्री सोहनमलजी कोठारी ने मुझे वडे प्रेम ग्रौर ग्राग्रह से यह भण्डार दिखाया तो मुझे ग्रौर भी ग्रधिक प्रसन्नता हुई ग्रौर उसके उज्ज्वल भविष्य की ग्राशाकिरण फूटी। सुयोग से डॉ० नरेन्द्र भानावत जैसे विद्वान् ग्रौर उत्साही व्यक्ति इस भण्डार की सेवा करने को उद्यत हो गये। ग्रत जिस प्रकार श्री सोहनमलजी ने ज्ञान भण्डार की ग्रभिवृद्धि ग्रौर सुव्यवस्था मे उल्लेखनीय सेवा भाव दिखाया है उसी तरह डॉ०भानावत ने इस भण्डार के हस्तलिखित ग्रथो की सूची वनवाने तथा उसे सम्पादित कर प्रकाशित करने मे ग्रपना महत्त्वपूर्ण योग दिया है। इससे इस ज्ञान भण्डार के महत्त्व ग्रौर उपयोग मे ग्राशातीत वृद्धि हुई है।

प्रस्तुत सूचीपत्र मे करीव ३७०० रचनाग्रो की विषय-विभाग करके सूची प्रकाशित की गई है। ज्ञान भण्डार की प्रतियो की विशाल सख्या को देखते हुए इसके ग्रौर भी कई भाग प्रकाशित होंगे। महत्त्वपूर्ण रचनाग्रो के प्रकाशन की भी व्यवस्था होगी। इससे भविष्य मे यह ज्ञान भण्डार एक ग्रच्छा शोध-केन्द्र वन जायगा। स्थानकवासी समाज का सहयोग ग्रौर ग्राचार्य श्री हस्तीमलजी म० का ग्राशीर्वाद ग्रवश्य ही इसे एक वहुत उपयोगी सस्था वनने का गौरव प्रदान करेगा।

प्रस्तुत सूची भाग १ का सम्पादन डॉ० मानावत ने वडी लगन और श्रम से किया है । फिर भी लिपिभ्रम और अशुद्ध पाठ के कारण ग्रंथ के नाम, कर्त्ता एव रचनाकाल संबधी कई भूल-भ्रान्तियां और अशुद्धिया रह गई हैं। प्रतियो को स्वयं देखे विना उन भूल-भ्रान्तियो का पूर्ण सशोधन सम्भव नही । फिर भी मैंने कुछ समय और श्रम लगाकर अपनी जानकारी की महत्त्वपूर्ण भूल-भ्रन्तियो सवधी एक सूची पत्र तैयार कर दिया है जिमसे भूलो की परम्परा आगे न वढे । इस सूची का उपयोग करने वालो को शुद्धिपत्र का उपयोग अवश्य कर लेना चाहिये ।

आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार स्थानकवामी समाज मे तो सवसे वडा, महत्त्वपूर्ण, और उपयोगी सग्रहालय है । इसमे सग्रहीत सामग्री अनेक दृष्टियो से वडी उपयोगी है । अनेको ऐतिहासिक रचनायें, कुछ अन्यत्र अप्राप्य ग्रन्थ, सचित्र ग्रन्थ, यन्त्र, पट्ट आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । प्रस्तुत सूची भाग १ में आई हुई ऐतिहासिक रचनाओ की एक सूची भी मैने तैयार कर दी है । कई रचनाओ को तो स्वय देखे बिना निश्चय पूर्वक कुछ कहा नही जा सकता और सव प्रतियो को स्वय देख पाना सम्भव भी नहीं इसलिये मेरा यह प्रयत्न काम चलाऊ ही समझना चाहिये । सूचित सशोधनो के अतिरिक्त और भी होगे । इसी तरह ऐतिहासिक रचनाओ की सूची मे भी कुछ नाम छूट गये होंगे।

स्थानकवासी सम्प्रदाय के ज्ञान भण्डार अनेक स्थानो मे है और उनमे हस्तलिखित प्रतियो का बहुत बडा सग्रह है । कुछ ज्ञान भण्डारो की सूची आचार्य श्री हस्तीमल जी म० ने बनवाई भी है । स्थानकवासी कान्फ्रेंस ने भी इस दिशा मे कुछ कार्य किया है पर वह प्रकाश मे नही आया । अभी बहुत से ज्ञान भण्डार तो अज्ञात अवस्था मे पडे हैं । समाज के साधु-साध्वी और श्रावको का यह प्रथम और आवश्यक कर्तव्य है कि वे उनकी सूची बनाकर प्रकाश मे लावें ।

प्रत्येक धर्म सम्प्रदाय का अधिकाश साहित्य उन्ही के ज्ञान-भण्डारो मे अधिक रूप मे पाया जाता है । अत स्थानकवासी इतिहास और साहित्य सम्बन्धी सम्यक् जानकारी, इस सम्प्रदाय के ज्ञान भण्डारो की सूची वनाये और प्रकाशन किये विना सम्भव नही है । श्री हस्तीमल जी म० ने जैन इतिहास के निर्माण और प्रकाशन का कार्य भी हाथ मे लिया है और 'पट्टावली प्रवन्ध सग्रह' नामक ग्रन्थ प्रकाशित करके सराहनीय कार्य किया है । प० मुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी म० ने स्थानकवासी सम्प्रदाय के अनेक कवियो और साधु-साध्वियो सम्बन्धी ऐतिहासिक और साहित्यिक लेख प्रकाशित किये हैं । इसका अनुकरण अन्य साधु-साध्वी भी करें तो वहुत शीघ्र ही इस सम्प्रदाय और साहित्य का इतिहास तैयार हो सकता है ।

स्थानकवासी सम्प्रदाय के कई ज्ञान भण्डार श्रावको के हाथ मे हैं, पर उनकी अधिकाश सामग्री मुनियो के नेश्राय से ही प्राप्त हुई है । अतः श्रावक उन मुनियो की आज्ञा के विना यह सामग्री किसी को दिखाते नही और वे स्वय उसके वारे मे कुछ अधिक समझते नही । ऐसे कई ज्ञान भण्डार मेरे ध्यान मे है जिनको प्रयत्न करने पर भी मै नही देख सका । जब तक उनकी व्यवस्थित सूची नही वन पाती उन भण्डारो मे क्या २ अज्ञात और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं उनका पता नही चल सकता । इस युग मे इस तरह हमारे ज्ञान भण्डार अज्ञात अवस्था मे पडे रहें, यह बहुत ही अखरने वाली बात है ।

आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार का द्वार सब शोधार्थियो के लिए खुला है, यह बहुत ही हर्ष की बात है। उसका सूचीपत्र पूरा प्रकाशित होजाने पर अवश्य ही अनेक शोधार्थी उससे लाभ उठायेंगे और ज्ञान भण्डारो का वास्तविक उपयोग भी यही है। ज्ञान का प्रचार जितना अधिक हो सके, अच्छा है। हम जैनो ने तीर्थङ्करो की वाणी और आचार्यों के ग्रन्थो को अपने तक ही सीमित कर रखा है, इसीसे जैन धर्म और जैन साहित्य के सम्बन्ध मे बहुत कम जानकारी प्रकाश मे आ सकी है। जैनधर्म और जैन साहित्य के सम्बन्ध मे जो अनेक भ्रान्तियाँ प्रचलित हैं उनका निराकरण भी हमारे ग्रन्थो के प्रचार और प्रकाशन पर ही अधिक निर्भर है।

प्रस्तुत सूचीपत्र प्रकाशित करके ज्ञान भण्डार के व्यवस्थापको ने स्थानकवासी समाज के सामने बहुत हीं अच्छा आदर्श उपस्थित किया है। आवश्यकता है छोटे-छोटे भण्डार या व्यक्तिगत हस्तलिखित सग्रहो की प्रतियाँ इस भण्डार मे सम्मिलित करली जाए और अन्य भण्डारों के सूचियो की नकल करवा के यहाँ रखी जाए, जिससे जिज्ञासु अधिकाधिक लाभ उठा सकें। डा० भानावत और कोठारी जी के प्रयास की जितनी प्रशसा की जाय थोडी है।

—श्री अगरचन्द नाहटा

अध्यक्ष

सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर

आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान-भंडार

(शोध प्रतिष्ठान)

ग्रंथ-सूची

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ–नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
१	१५४२/१	३९/३२	अगली चौवीसी	जयमल	
२	१५५३/३	४०/३	अजित जिणद स्तवन		१८६३ चौमामा
३	१५७३/२	४१/३	अजित जिन गीतम्		
४	११३८/५	३३/२३	अजित जिन स्तुति	जिनलाभ	
५	६११/१	१९/४३	अजितनाथ गीत	ऋषभसागर	
६	१८९२/५	४७/२२	अजितनाथ गीतम्	जिनरतनसूरि	
७	९९१/२	३०/९	अजितनाथ स्तवन	विनयचद्र (श्रावक)	
८	१३२७/४	३६/५७	अजितनाथ स्तवन	सुबुद्धविजय	
९	१७५४/२	४४/२४	अजितनाथ स्तवन	आसकरण	१८७१ चौमामा
१०	७१५६/१	५५/३०	अजितनाथ स्तवन	छीतरमल	१६८१ आसोज
११	२३७०/२	९२/४२	अजितनाथ स्तवन	शान्तिसूरि	
१२	७०३/४	२१/२०	अजितनाथ स्तोत्र		
१३	३९५	१५/११	अजित शान्ति जिन स्तोत्र		
१४	९८८	२१/५	अजित शान्ति स्तवन (टव्वा सहित)		
१५	२१४९	५५/२३	अनत चौवीसी		
१६	१५५३/१५	४०/३	अनतनाथ का स्तवन		
१७	३७४/२	१४/२७	अनतनाथजी का स्तवन		१८९३
१८	२६६/१	१३/२५	अनाथी ऋषि स्वाध्याय	मुनिराम	
१९	२८०/१	१३/३९	अनाथी की सिज्झाय	समयसुन्दर	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र स० १३	आकार १४
			डेह	हिन्दी-राज०	११		२५.२×११ ६ १६—३१
जोधपुर				”	७		२५ २×१२ ० २०—४३
				”	४		२१ ४×११.६ १७—५४
				”	४		२४.०×११.० ११—४४
किशनगढ				”	५		२५ ०×९ ३ १०—३६
				”	४		२५ ०×१० ८ २२—५२
				”	८		२०.७×११ ३ १३—४०
				”	६		२५ ३×११.१ १७—४३
जयपुर				”	१०		१७.८×१०.२ १७—३२
अलवर				”	१९		२५ २×११ ० १७—४१
				”	५		२१ ७×१०.२ १६—३४
				प्राकृत	४३		२९ ०×१४ २ १२—४१
				प्राकृत	४०	३	२७ ०×११ ८ १२—४०
	लक्ष्मीशिव		वृद्धनगर	प्राकृत, टब्बा-सस्कृत	४०	३	२५ ५×११ ० २४—५५
				हिन्दी-राज०		१	२० ४×१० ८ १४—३९
				”	५		२५ २×१२.० २०—४३
लूणसर				”	१४		२४ ८×११ ४ १८—३३
				”	३०		२४ ७×१०.९ १२—४५
				”	९		२१.१×१० १ १२—३१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७४२	१०१	७/३	संथारा पइन्ना टब्बा		
७४३	७७०	२४/३७	संथारा बालावबोध		
७४४	३१०	१३/६६	संथारा विधि		
७४५	२१५४	५५/२८	सलेपणा का पाठ पडिक्कमण		
७४६	८८४/१	२७/१६	सलेपणा शान्ति स्तवन		
७४७	७६५	२५/२	सत्ताईस बोल		
७४८	१२७१	३६/१	सत्ताईस बोल का थोकडा		
७४९	२३०४	६०	सत्तावन बोल का वासठिया थोकडा		
७५०	४६७	१६/७३	सत्तावन बोल का बाँसठिया थोकडा		
७५१	४२९/१	१६/३४	सत्तावन हेतु		
७५२	२३९१/१	६२/६२	सन्नीबाई का २६ भागा		
७५३	७५४/२	२४/२१	सप्तनाथ विचार		
७५४	२३६६/२	६२/३८	सप्त सती नाम		
७५५	३९९/१	१६/४	सप्रदेशी अप्रदेशी थोकडा		
७५६	३९९/२	१६/४	सप्रदेशी अप्रदेशी थोकडा		
७५७	५२९	१७/५६	समकित का ६७ बोल		
७५८	८६८/१	२७/३	समकित का ६७ बोल		
७५९	२४५३/३	६३/४७	समकित का ६७ बोल		
७६०	३२६/१	१३/८५	समकित की आलोयणा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-सख्या १२	पत्र स० १३	आकार १४
		१९३२ चैत वद ८		प्राकृत	गाथा १२२	२१	२४४×११५ १७—२९
		१६२६ वै० शु० २ रवि०	कांटा के दशपुर मे	हिन्दी-राज०	गद्य	३०	२५४×११५ १७—४०
				”	गद्य	१	१८३×८५ १३—१८
	आर्या लाछा	१८५६ फा० सु० १	जयपुर	प्राकृत	गद्य	१	२२८×१०० १७—३८
				हिन्दी-राज०	गद्य		२३८×११० ९—२१
				”	गद्य	६	२७०×१२८ १०—३६
				”	गद्य	४	२२९×१४० १६—३१
	आर्या उदाजी	१९२२ फा० सु० ३	बीकानेर	”	गद्य	५	२६७×१२·९ १६—३६
				”	सारिणी		२४४×१०८ ५४—२१
				”	गद्य		२५७×१११ १४—४८
				”	गद्य		२२०×८४ ३४—१६
				”	गद्य		२४६×११५ १०—३६
				”	गद्य		२४४×१०३ १५—४७
	रिख गमीर			”	गद्य		२६५×१२० २३—६५
				”	गद्य		२३६×११४ १२—३७
				”	गद्य	१	२६२×११८ १८—५६
				”	गद्य		२१·३×१०२ १६—३७
				”	गद्य		२४·४×१०५ १८—४४
				”	गद्य		१९८×१०६ १२—३३

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
प्र०७६१	१५५०	३६/४०	समकित की सज्झाय	कवि नेत प्र०	१७५२ जेठ सु० ५
७६२	५३७/१	१७/६४	समकित के ६७ वोल		
७६३	६४६/२	२८/४५	समकित ना १३ वोल		
७६४	६४६/१	२८/४५	समकित रा ६७ वोल		
७६५	१५८७	४१/१७	समकित विवरण ६७ वोल	अमर	१८०० आश्विन सु० १०
७६६	१६८३/१	४६/३३	समकित स्तवन	जयमल	१८३५
७६७	१२६	८/८	समाधि मरण रूप		
७६८	१२८६	३६/१६	समुच्चय जीव का वासठिया		
७६९	१२६६/१	३६/२६	समुच्चय जीव मार्गण के ६२ बोल		
७७०	१७१८	४३/४८	समुद्र घात विचार		
७७१	१७७२	४५/२	समेगी प्रतिक्रमण विधि		
७७२	१२००	३४/२०	समोसरण थोकड़ा यत्र		
७७३	५६९	१६/१	समोसरण विचार		
७७४	१६०	१२/१६	सम्यक्त्व के वोल		
७७५	२०७१	५३/८	सम्यक्त्व कौमुदी टब्बा		
७७६	८३८	२६/६	सर्व वध देश वध का थोकडा		
७७७	४३७	१६/४२	सर्व वध देश वध थोकडा		
७७८	१७०१	४३/३१	सर्व वध देश वव थोकड़ा		
७७९	१६६७	५०/७	सर्व वध देश वध		

चना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
		१८१५ चैं० सु० १० शनि०	जयपुर	हिन्दी-राज०	पद्य ३०	४	२१ ६×११ ० / १४—२२
				”	गद्य		२७·२×१२ ८ / १५—४४
				”	गद्य		२२·६×१०·६ / १४—३०
				”	गद्य		२२ ६×१० ६ / १४—३०
				”	गद्य	७	२५·०×१० २ / ११—४६
				”	पद्य १५		२४ ५×१० ६ / २०—४४
				”	गद्य	३४ १८वा नहीं	२० ६×१० ६ / ८—२५
				”	सारिणी	१	२४·८×११·२ / २३—१३
				”	गद्य		२१ ५×११·२ / ४२—२६
	यति छगनलाल			”	गद्य	१	२३·७×११ १ / ८—२५
				”	गद्य	२	२६ ३×१२ ५ / २३—१२
	नन्दलाल	१९७८ आषाढ़ सु० ५ शनि०		”	यंत्र	४ से ११	२५ २×११ ३ / ४५—३३
				”	गद्य	६	२५·३×१२·५ / २३—१४
				”	गद्य	३	२२·७×१०·८ / १९—३६
	अनूप विजय	१८५० आश्विन शु० ११		संस्कृत		७३	२३ ६×१०·२ / १६—४४
	आर्या नथा		नागौर	हिन्दी-राज	गद्य	४	२१ ३×१० ५ / १७—४१
				”	गद्य	४	२५ ४×११ ० / १३—३८
				”	गद्य	२	२५ ८×१० ३ / ३४—३०
				”	गद्य	३	२५ ६×११ ३ / ३६—२०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७८०	१४१७/२	३१/६७	सलेषण की पाटी		
७८१	१७६४	४४/३४	सात नय का संक्षिप्त विचार		
७८२	१४४०/५	३८/१०	सात नय के नाम		
७८३	२११/८	१२/४०	सात वर्गणा के नाम		
७८४	९४३/२	२८/४२	साध का दस लक्षण		
७८५	१८७/३	१२/४६	साधना आचार		
७८६	५९७/१३	१९/२९	सावना के ४२ दोष		
७८७	९५५	२८/५४	साधु आचार का वोल		
७८८	१५५३/८५	४०/३	साधु आचार पर ढाल		१८९५ चौमासा
७८९	८२५	२५/३२	साधु उपमा		
७९०	१९८	१२/२०	साधु कर्तव्य की ढाल	सवलदास	१९६८ मार्गशीर्ष शु० ..
७९१	२४८४/३	६३/८७	साधु गुण	अजितदेव सूरि	
७९२	१९७४/२	४९/२४	साधु को वारह मास का सुख		
७९३	२०९/५	१२/३८	साधुजी अहेतु समर्पण		
७९४	११४८	३३/३३	साधुजी का ५२ अनाचार		
७९५	११११/३	३२/६८	साधुजी के सवला के दोप का २१ वोल		
७९६	२१५५/२	५५/२९	साधुजी के सुख की ढाल	रिख सवलदास	१८९४ चौमासे
७९७	२०९/४	१२/३८	साधुजी ना समाचारी		
७९८	१५५३/७७	४०/३	साधु मर्यादा ढाल		१९१२ जे० सु० ..

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-मंवत् ६	लिपि-स्थल १०	भापा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		२५ ८×११ ० १६—३८
				"	गद्य	१	१० ६×२३ ७ ४३—२३
				"	गद्य		२६ ३×११·७ २०—५०
				"	गद्य		२६ ३×१२ ७ १०—४१
				"	पद्य ११		२१ ६×१० ८ २०—३६
	जीउ			"	गद्य		२१ ६×१२ २ २४—४६
				"	गद्य		२५ २×११ ४ ३२—४८
	सगई वोसवास	१६०७ मा० कृ० ८		"	गद्य	१८	२० १×१० ४ ७—२५
नागोर				"	पद्य १४		२५·२×१२ ० २०—४३
				"	गद्य	१	२५ ७×११ ३ २०—३६
खीचन्द	ताराचन्द	१८७८		"	पद्य १५	१	१२ ४×१० ४ १५—२२
				"	१६		२५ ६×१० ६ १३—३८
				"	गद्य		२५ ४×११ ६ १३—४३
				"	गद्य		२५ १×१२ ० १७—४२
				"	गद्य	१	२१ २×६ ८ १५—३२
				"	गद्य		२४ ३×१० ३ १६—३४
नागोर				"	पद्य २०		२४ ७×१० ० १७—५४
				"	गद्य		२५ १×१२ ० १६—४२
कुचेरा				"	पद्य ११		२५ २×१२ ७ २० ४३

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ–नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
७९९	२० ४	५० / १४	साधु समाचारी कथानक (समय सुन्दर कल्पलता से)	समयसुन्दर	
८००	१२५७	३५ / ५१	साधु समाचारी के ९६ वोल		
८०१	१८८४	४७ / १४	सामायिक करण की ढाल	रिख कुशालचन्द	
८०२	१३५७ / १	३७ / ७	सामायिक का पाठ		
८०३	११७३ / ७	३३ / ५८	सामायिक का ३२ दोष		
८०४	१७७१	४५ / १	सामायिक की ३६ दोष की सज्भाय	विनयचन्द	
८०५	१५५३ / ६८	४० / ३	सामायिक की ढाल		१८६४ चौमासा
८०६	१९९	१२ / २८	सामायिक की सज्भाय	कुशालचन्द	१८६४ चौमासा
८०७	१४३९	३८ / ९	सामायिक के पाठ		
८०८	३४३	१३ / १०१	सामायिक के पाठ टव्वा		
८०९	३४२	१३ / १०२	सामायिक के पाठ सार्थ		
८१०	२३५६ / २	६२ / २८	सामायिक पौषध फल कुलक		
८११	६१९ / २	१९ / ५१	सामायिक रा दोष सज्भाय		
८१२	१३२३	३६ / ५३	सामायिक सूत्र		
८१३	१३४०	३६ / ७०	सामायिक सूत्र		
८१४	११५२ / १	३३ / ३७	सामायिक सूत्र		
८१५	७५९ / ३	२४ / २६	सायवल के नौ काल		
८१६	५४७	१७ / ७४	सावद भाषा और निरवद भाषा पर ढाल	सरूपचन्द	
८१७	२३९७	६६ / ६९	सांस उसास		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
		१७९९ भा० व० ७ बुध०		संस्कृत	गद्य	१३	२६०×११० / ११—३५
				हिन्दी-राज०	गद्य	५	२३३×११० / १९—३९
				„	पद्य १६	१	२४७×१२४ / १७—३३
				प्राकृत	गद्य-पद्य		२५१×११० / १७—५१
				हिन्दी-राज०	गद्य		२२७×११·५ / १७—३६
				„	पद्य १४	१	२६३×१२७ / १५—३६
करडा				„	पद्य २९		२५२×१२० / २०—४३
करडा				„	पद्य १९	१	२६६×११७ / १४—३४
	साहेबराम	१८५०	जोबनेर	प्राकृत	गद्य	१	२५३×११३ / १६—५८
				„	गद्य	५	२४८×११२ / १८—२७
	भोजराम		अलवर	„	गद्य	३	२५२×११·४ / २१—४०
				„	पद्य १६		२५५×११८ / १३—४६
				हिन्दी-राज०	पद्य १४		२१२×९८ / १८—३५
				प्राकृत	गद्य	२	२५०×११० / ११—२८
				„	गद्य	२	२५२—११५ / १४—३३
	मानाजी	१९०६ भा० सु० ५ गुरु०	अजमेर	„	गद्य		२८६×१४२ / १४—३२
				„	गद्य		२५८×११७ / १४—४१
	दौलतराम	१८७० मा० कृ० १४	अजमेर	हिन्दी-राज०	ढाल २	१	२५२×११५ / २०—४७
	आर्या लाछा	१८६९ जे० व० ७ सोम०	सवाई जयपुर	„	गद्य	१	१७३×१०४ / १६—२२

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
८१८	१८३२	४६/२	सास उसास का थोकडा		
८१९	१७६५	४४/३५	सास उसास का थोकडा		
८२०	११११/९	३२/६८	सास उसास सख्या		
८२१	५००	१७/२७	सिद्ध पाउडानी गाथा		
८२२	४५३	१६/५८	सिद्धान्त प्रश्न		
८२३	७५४/१	२४/२१	सिद्धान्त वोल		
८२४	५५	४/१५	सिद्धान्त समुच्चय सार		
८२५	२४९८/४	६३/९२	सिद्धान्त सार रा ६९ वोल		
८२६	१९२	१२/२१	सिद्धान्त सारोद्धार		
८२७	२४४३	६३/३७	सिद्धो के ३१ अतिशय		
८२८	१२२४	३५/३६	सीमन्दर स्वामी और जीवाजी के दो पत्र		
८२९	१६२८	४१/५८	सीमन्दर स्वामी की चिट्ठी		
८३०	१५५४/१७	४०/४	सूक्ष्म छत्तीसी	उदय रिख	
८३१	८६८/२	२७/३	सूत्रवादी का २५ वोल		
८३२	९५१	२८/	सूयग मागच्छ अध्ययनम्		
८३३	२९२	१३/५१	सैतालीस दोष टब्बा		
८३४	१६७७	४३/७	सोभाग्यमलजी ग ह के प्रश्नो के पूज्य हीराचन्दजी महाराज के दिये उत्तर		
८३५	१५३०	३९/२०	सौ वोल का वासठिया		
८३६	१५३१	३९/२१	सौ वोल का वासठिया		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य	३	२० ३ × १३ ० / १४—२५
		१९९३ भा० सुद ११		,,	गद्य	१	२५ ४ × ११ ६ / १७—५२
				,,	गद्य ५		२४ ३ × १० ३ / १६—३४
				प्राकृत	गद्य ४	१	२५ ४ × ११ ७ / २०—४८
				हिन्दी-राज०	गद्य	१	२६ ० × ११·० / १५—४०
	मुनि पोहकर			,,	गद्य		२४ ६ × ११ ५ / १०—३६
				,,	गद्य-पद्य	२३	२५ ५ × १० ६ / १६—५१
				,,	गद्य		२१ ६ × ११ ७ / १३—४३
				,,	गद्य	५	२६ ० × ११ ५ / २२—५०
				,,	गद्य	१	२४ ७ × १० ७ / १६—४५
				,,	गद्य	४	२५ २ × ११ ८ / १३—३९
				,,	ग्र०ग्र० १०० गद्य	३	२० ० × १० ० / १८—३५
औरंगाबाद				,,	पद्य ४		२६ ० × ११ ७ / १९—४३
				,,	गद्य		२१ ३ × १० २ / १६—३७
				,,	गाथा ३९	१	२५ ६ × १० ८ / १४—४९
	तखतमल	१९३८भाद्रपद वद १ बुध०		,,	गद्य	१	२५ ३ × १२ ३ / २४—४२
				,,	गद्य	२	२५ ० × ११·२ / १४—३७
				,,	गद्य सारिणी	६	२२ ६ × १२ ३ / २४—२४
				,,	सारिणी	२	२६ ८ × ११ ९ / ३९—३०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
८३७	१४३७	३८/७	सौ बोल का बासठिया थोकड़ा		
८३८	१७६७	४४/३७	स्त्री वेद का अल्पबहुत्व का विचार		
८३९	१७४६	४४/१६	स्थविरावली विवरण (मूल प्राकृत, टीका संस्कृत)		
८४०	१२५१	३५/४५	स्थानाग सूत्र, चतुर्थ स्थान के बोल		
८४१	६५६	२८/५५	स्याद्वाद मत मतंतर कथनम्		
८४२	२३३०	६२/२	स्वार्थ सिद्ध विमान की सज्झाय	रिख रतिराम	
८२३	१८८८	४७/१८	ह्याली सज्झाय सार्थ	कवि देवपाल	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	सारिणी	३	२६ ० × ११ ५ / ८६—२८
				”	सारिणी	२	११ ० × २५ ७ / ६४—२१
				प्राकृत सस्कृत	पद्य ५०	५	२५ ३ × ११ ० / १६—२८
				हिन्दी-राज०	ग्र०ग्रं० १५६ गद्य	७	२५ १ × ११ २ / १६—४२
	भूरेलाव			”	२०	७	२० ० × १०·३ / ४—१७
				”	पद्य १३	१	२४ २ × १२·५ / १३—३३
	मुनि शिवराम			”			२५ ८ × १०·८ / १६—५०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	३५६ / १	१४ / ६	अनानुपूर्वी यंत्र और फल		
२	२०६३	५४ / १०	गोपाल मंत्र राज प्रयोग		
३	१३८६ / २	३७ / ३६	घंटाकर्ण महामंत्र स्तोत्र		
४	२६७ / २	१३ / ५६	घटाकर्ण स्तोत्र		
५	१००२	३० / २०	घटाकर्ण स्तोत्र		
६	१६४६ / २	४२ / १६	घटाकर्ण स्तोत्र		
७	१५३६ / ३	३६ / २६	मणिभद्र यंत्र सविधि		
८	२४८८	६२ / ८२	सिद्ध दण्डि की गाथा व यंत्र		

रचना स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		२३·९ × १०·८ / १७—४३
				सस्कृत	गद्य-पद्य	९	२४ ० × ११ ५ / ७—१९
				”	४		२०·७ × १०·९ / १२—२६
				”	४		२१ ० × १० ९ / १७—२७
				”	४	१	२१ २ × ११ ४ / ७—२३
				”	४		१९ ८ × १० ४ / १३—३३
				हिन्दी-राज०	गद्य		२५ ६ × १२ ५ / १९—३७
				प्राकृत	१३	१	२६ १ × ११ ० / १२—४९

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	१८८६/३	४७/१६	अग्निवास		
२	२२०३	५६/२०	अट्ठारहवी सदी का फलादेश		
३	२०४९	५१/३९	अट्ठावीस नक्षत्र सज्झाय	ऋषभदास	
४	१८७०	४६/४०	अट्ठावीस नक्षत्रो के तारे और आकृति		
५	३८	३/१९	करण कतूहल मूल	भास्कराचार्य	
६	१४०१	३७/५१	गोरख पत्रा		
७	२२२०	५७/११	ग्रह लाघव करण अन्वय दीपिका सहित	व्याख्याकार जीवनाथ सूरि	
८	१८७४	४७/४	चन्द्र और सूर्य संख्या का विचार		
९	१५४०	३९/३	चन्द्रगुप्त राजा का सोलह स्वप्ना	रायचन्द	१८६४
१०	२३४३	६२/१५	चन्द्रगुप्त राजा के सोलह स्वप्न	जयमल	
११	१५०७	३८/७७	चन्द्रगुप्त राजा के सोलह स्वप्न की सज्झाय	जयमल	
१२	२४१३/१	६३/७	चन्द्रगुप्त र.जा के सोलह स्वप्नो का वर्णन	जयमल	
१३	२०११	५१/१	चमत्कार चिन्तामणि	नारायण	
१४	४८३	१७/१०	चमत्कार चिन्तामणि	नारायण	
१५	६१९/१	१९/५१	चवदा स्वप्ना		
१६	६२५	१९/५७	चौघडिया		
१७	४४३	१६/४८	चौदह सुपना	चन्द्रवल राणी	
१८	१८२३	४५/५३	चौदह स्वप्नो की ढाल		
१९	४५५	१६/३०	चौदह स्वप्नो की सज्झाय		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				संस्कृत	३		२५ ० × ११ ५ / १५—३३
				हिन्दी-राज०	गद्य	७	२५ ९ × १० ७ / १८—५५
	गणि अमी कुशलजी	शनिवार		"	१२	१	२० ७ × ९ ६ / ९—३०
				"		१	२५ ३ × ११ ० / १३—२८
				संस्कृत	अध्याय १०	१२	२४ ५ × ११ ६ / ९—३३
				हिन्दी-राज०	सारिणी	१	१८ ० × ९ २ / १५—३६
				"		३२	२३ ५ × १०·४ / ९—२७
	चतुर्भुज		नोगावा	"	सारिणी	१	२५ ५ × १० ६ / २८—१५
फलोदी				"	५५	९	२४ ४ × १३·९ / १८—१६
				"	४८	१	२५ ७ × ११ ८ / १६—३३
				"	४२	१	२३ ३ × १०·५ / १६—११
				"	५२		२५ ३ × १२ ० / २१—४४
		१९५३ श्रा० सु० ६	सिरियारी	संस्कृत	५२	११	२३ ६ × ११ २ / ११—२३
				"	५२	६	२५ ४ × १२ १ / १४—३७
				हिन्दी-राज०	२		२१ २ × ९ ८ / १८—३५
				"	सारिणी	१	२४ ० × ११ ८ / १०—८
				"	७	१	२० ६ × १० ९ / १२—२७
	आर्या पन्ना			"	ढाल ४	२	२२·० × ९ ९ / १४—३२
				"	२१	१	२० ३ × ११ २ / १६—३७

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
२०	१४६१	३८/३१	चौदह स्वप्नो की सज्झाय	सेवक	
२१	४६३	१६/६८	ज्योतिद्वार (जोति चक्र)		
२२	१०६०/३	३२/४७	ज्योतिषी के नाम		
२३	२१६०	५६/७	ज्योर्निमणिमाला	केशवाचार्य	
२४	३३३	१३/६२	तापक्षेत्र यत्रम्		
२५	१८६५	४६/३५	दस स्वप्न	रिख रायचन्द	
२६	२६१/३	१३/५०	दस स्वप्ना की सज्झाय	रिख रायचन्द	१८३३
२७	४४६/१	१६/५४	दस स्वप्नो की सज्झाय	रिख रायचन्द	१८३३ चौमासे
२८	२३४०	६२/१२	पचाग शुद्धि (चन्द्रा की वृत्ति सहित सोदाहरण)	दिनकर मौढ	
२९	६०८	१६/४०	प्रश्न मनोरमा		
३०	२११०/२	५४/२७	फल विधि		
३१	११३६	३३/२४	वहत्तर स्वप्ना फल सहित		
३२	६१७	१६/४६	वहत्तर स्वप्ना को विचार		
३३	१५६१	४१/२१	महादेवी सूत्र		
३४	४७६/२	१७/६	महावीर स्वामी का १४ स्वप्न		
३५	३३६	२०/३	मुहूर्त और रात के नक्षत्र		
३६	४२८	१६/३३	योग मुहूर्त आदि		
३७	३७६	१४/२६	योगायोग विचार		
३८	१२२७	३५/२१	वर्ष ज्ञान पर भड्डली के दोहे		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भापा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	ढाल २ पद्य १६		२४ ३×१२ ० / २१—४८
	महात्मा पन्नालाल		नागौर	„	गद्य	३	२४ ५×१२ ० / १५—३८
				„	गद्य		२७ २×१२ ८ / १२—४०
				संस्कृत	स्तवक १४	२ से ३०	१६ १×१० ९ / १५—४८
				„		१	२५ ५×१० ७
				हिन्दी राज०	१३	१	२४ ७×१० ३ / १२—३९
मेडता				„	१५		२५ ३×११ २ / २२—४१
मेडता				„	१५		२१ ०×११ २ / ११—३९
	परमानन्द	१८५३ सु० ७	विक्रमशहरे	संस्कृत	गद्य पद्य	९	२५ ५×११ ७ / १४—३६
				„	गद्य	६	२५ ३×११ ५ / २४—४८
	कल्याण	१८५६आश्विन शु० १०	कुचामण	हिन्दी-राज०	गद्य		२५ ५×११ २ / १८—५०
				„	गद्य	३	२५ २×१० ६ / १४—४०
				„	गद्य	१	२४ ४×१० ४ / ३२—३०
				संस्कृत	४३	१	२५ २×११ २ / १९—४९
				हिन्दी-राज०	१३		२३ ०×१०·५ / १७—३९
				„	गद्य	१	२६ ०×११ ५ / १२—४१
				„	गद्य	१	२७ ७×१२·६ / १६—४
				„	गद्य	१	२५ ०×१० ९ / १०—५४
				„	पद्य	६	२५·८×११ ६ / २१—४८

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३९	१८५३	४६/२३	वर्ष मास काढणी		
४०	१८७१	४७/१	विवाह वृन्दावन सटीक		
४१	३३२	१३/६१	शकुनावली		
४२	१४८९	३८/१९	शकुनावली (अवयव केवली)		
४३	२०१२	५१/२	शकुनावली के दोहे		
४४	७०३/८	२१/२०	शनि गुरु मंगल स्तोत्र		
४५	१६०९	४१/३९	शिवा गोरख पत्र चौघडिया		
४६	१४०९	३७/५९	सत्तावीस नक्षत्र फल		
४७	४०२/६	१६/७	सात वार ना फल		
४८	७८२	२४/९	सामुद्रिक		
४९	१८८६/४	४७/१६	सिद्ध योग		
५०	१९३८	४८/२८	सूर्य मंडल की परिधि		
५१	१३७०	४२/४०	सूर्यांश मारिणी		
५२	१४७/१	९/१२	सोलह सुपना	जयमल	
५३	११११/८	३७/६८	सौ वर्ष की दिन घडी		
५४	१[illegible]७५/१	४३/८१	स्वप्न विचार		
५५	२२१०	५७/१	होरा प्रदीप	दामोदर	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
		१९४८ चै० व० ४	जतारण	हिन्दी—राज०	सारिणी	१	२२ ६×१३ ० / १४—३८
	जोशी महेशदास	१६०४ जे० ब० १ गुरु०	आगरा	सस्कृत	१६ अध्याय	५३ २रा नही	२६ ७×१२ २ / १२—३९
				हिन्दी-राज०	सारिणी	४	२५ ७×११ ६ / १६—४५
				"		६	२४·४×१० ७ / १२—३८
		१८२३ वै० शु० १३	विजयनगर	"	२८	१	२५ ६×१३ ४ / १६—३३
				सस्कृत	पद्य २०		२६ ५×१४ २ / १२—४१
				हिन्दी-राज०	सारिणी	१	२४ ०×१० ५ / २०—४५
				"	गद्य	१	२५ ०×१२ ० / २७—१७
				"	पद्य ७		२६ ५×११ ८ / २७—५३
	रामरतन ब्राह्मण	१८७४	राजगढ	प्राकृत	पद्य २२९ भाग ३	७	२५ ५×११·९ / १२—४५
				हिन्दी-राज०	पद्य ३		२५ ०×११ ५ / १५—३३
				"	यत्र	१	१४ ७×९ ८ / १२—१८
				"	सारिणी	१	२७ ७×१२ ० / २२—६०
	पीरचन्द	१८७६ चै० ब० ३ शुक्र०		"	ढाल १		२५ ०×११ ६ / १५—४३
				"	गद्य		२४ ३×१० ३ / १६—३४
				"	पद्य ७		२२ ०×१० ४ / १२—२८
				"	अध्याय ९३	५२ १३वा नही	२० २×११ १ / ११—३२

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	१५४	१६/५६	काल तथा द्वीप वर्णन		
२	१६८६	४३/१६	कालोदधि समुद्र की परिधि आदि विचार		
३	५३०	१७/५७	क्षेत्र समास टव्वा (सचित्र)		
४	६८६	२१/३	क्षेत्र समास टव्वा (सचित्र)		
५	९७४	२९/१	क्षेत्र समास टव्वा सहित		
६	११८२	३४/२	क्षेत्र समास टव्वा सहित	टव्वाकार पासचन्द सूरि	
७	२०८२	५३/१९	क्षेत्र समास टव्वा सहित यंत्र सहित		
८	१०३	७/५	क्षेत्र समास प्रकरण टव्वा		
९	१०९०/५	३२/४०	छत्तीस देवलोक के नाम		
१०	१०९०/७	३२/४१	छप्पन अन्तर द्वीप के नाम		
११	१३८५	३७/३५	जम्बू द्वीप के खण्ड विचार		
१२	२०८४	५४/१	जम्बूद्वीप को विवरण		
१३	१९६/३	१२/२५	जम्बूद्वीप जन्म माहात्म्य और दृष्टान्त संग्रह	कुशल	
१४	१८७२	४७/२	जम्बूद्वीप संघयण सूत्र		
१५	२०९२	५४/९	त्रिलोकसार		
१६	४६०	१६/६५	भवणो ग्राहणाय पुत्र		
१७	७८	५/१६	लोक नाल		
१८	११९९	३४/१९	लोकनाली सूत्र टव्वा सहित		
१९	६४३	२०/१०	सोढ़ पच्चीस आरज देश		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-सख्या १२	पत्र स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य	१	२५ ० × १० ८ / १५—४०
				"	सारिणी	१	२५ ५ × १० ७ / १९—४६
	शिवराज			प्राकृत	गाथा २४४	६२	२५ ५ × १० ७ / ६—३१
	पं० हरचन्द	१६६४ आषाढ ब० ३	बीकानेर	"	गाथा २६४ ग्र ग्र १२२५	३ से ४२	२५ २ × ११·५ / १३—२०
				"		१०	२५ ५ × १२ ० / १४—५२
	ऋषि रामनाथ	१९०९ जे० सु० ४ रवि०	वाराणसी	"	गाथा २६४	४४	२७ ३ × १२ ९ / २०—३८
	लाछाजी	१८३०	जयपुर	"		६२	२६ ० × ११ २ / १३—३७
	गुणविजय	१९०९ भा० व० १० मगल०	नागौर	"		२ से ३९	२८ १ × १२ ८ / १६—३९
				हिन्दी-राज०	गद्य		२७ २ × १२ ८ / १२—४०
				"	गद्य		२७ २ × १२ ८ / १२—४०
				"	गद्य	१	२५ ७ × ११·५ / १५—३७
				"	गद्य	२१	२६ ३ × १२ १ / ९—२८
				"	१२		२५ ८ × ११ ९ / ११—३७
			बीकानेर	प्राकृत	सूक्त ३०	१	२५ ५ × १० २ / १२—५०
				हिन्दी-राज०	गद्य	२ से ३९	२४ ६ × ११ २ / १३—४१
				प्राकृत	पद्य ७८	८	२६ ० × १३ २ / ११—३२
	ऋषि माईदास			"		३	२७ १ × १२ ० / १७—४२
				"		४	२५ ७ × १० ८ / १३—३७
				हिन्दी-राज०	गद्य	१	२५ ४ × १० ३ / १४—४३

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	१२३१ / ३	३५ / २५	अक्षौहिणी प्रमाण		
२	२१७७	५५ / ५१	गांगेय अधिकार		
३	१८३१	४६ / १	गांगेय पृच्छा भंग प्रकरण	पद्मविजय	
४	२३२८	६१ / २३	पहाडा वड़ी इग्यारह तक		
५	२३३२	६२ / ४	प्रस्तार गणना		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	४		२५ ६×१२ १ / २२—५१
	विद्याविशाल	१७९८	चन्द्रपुर	प्र कृत	२५?	२	२५ ८×१० ९ / २१—७५
				"	४१	२	२६ ७×१३ ० / १६—४०
				हिन्दी-राज०	सारिणी	१	४३ २×२८ ५
	लब्धिचन्द		बीकानेर	संस्कृत	सारिणी पद्य ९	२	२६ ७×२६·२

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	२४६८ / ३	६३ / ६२	अट्ठारह देशो के राजाओ का विचार		
२	१७१४	४३ / ४४	अतीत वर्तमान चौबासी नाम		
३	११४०	३३ / २५	चौवीस तीर्थ कर का लेखा		
४	१४४५	३८ / १५	चौवीस तीर्थ कर की आयु		
५	१२६	८ / ११	चौवीस तीर्थंकर को लेखो		
६	५८३	१६ / १५	चौवीस तीर्थ कर को लेखो		
७	१०७१	३२ / २८	चौबीस तीर्थ कर को लेखो		
८	१६५५	४२ / २५	चौवीस तीर्थंकर को लेखो		
९	१०६६	३२ / २६	चौवीस तीर्थ कर नो लेखो		
१०	१४६३	३८ / ३३	चौवीस तीर्थ करो का आतरा	आसकरण	१८५१ चौमासा
११	१३५०	३६ / ८०	चौवीस तीर्थ करो का २२ बोल का लेखा		
१२	११०८	३२ / ६५	चौवीस तीर्थ करो का लेखा		
१३	१६५६	४२ / २६	चौवीस तीर्थ करो का लेखा		
१४	२२३६	५८ / १६	चौवीस तीर्थ करो का लेखा (सत्तर सउवाण यत्र)		
१५	१४०६ / २	३७ / ५६	चौरासी गच्छ के नाम		
१६	२४६६ / १	६३ / ६३	तीर्थ कर चौवीस का अन्तरा		
१७	१७१०	४३ / ४०	तीर्थ कर नो आतरो		
१८	२३४	१२ / ६३	तीर्थ कर विह नाम और साधु साध्वियो के नाम सटिप्पण		
१९	३१६ / २	१३ / ७५	दस श्रावको को लेखो		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		२६ ०×११ ४ / २८—२१
				"	सारिणी	१	२२·६×१० ७ / २६—९
				"	गद्य	६	२४·२×११ ४ / १३—३५
				"	सारिणी	१	२४ ५×१०·३ / ३२—१८
		१९४४ पौ० सु० ८ गुरु०		"		७	२६·१×११ १ / १३—४०
				"	सारिणी	६	२७ १×११ ५ / १६—२०
	आर्या ज्ञान		जयपुर	"	गद्य	४	२३ ५×११ ० / १९—३८
				"	गद्य	२ से ५	२४·६×१२·० / १९—३७
	आर्या ज्ञानाजी		अलवर	"	गद्य	३	२५ २×११ ० / १७—३५
बीकानेर				"	गद्य	१	२२ ५×११ ७ / १३—२९
				"	गद्य	८	२० ५×१० ९ / १५—३७
				"	गद्य	६	२० ०×११ २ / १६—३२
				"	सारिणी	१	६७ ०×४२·५ / २६—१०४
				"	सारिणी	५२	२४·६×१०·७ / ८—३५
				"	गद्य		२५ ३×१०·८ / २१—५१
				"	गद्य		२६ ०×११ ४ / २८—२१
				"	गद्य	१	२४ ५×११ ० / ४७—३८
				"	गद्य	२	२६ ६×१२ ५ / ३०—३१
				"	गद्य		२२ ७×१० १ / १३—३३

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२०	९७३	२८/७२	पट्टावली		
२१	१६९५	४३/२५	पट्टावली		
२२	५९७/१८	१९/२९	वाइस टोलो के नाम		
२३	१४०६/३	३७/५६	वारह मत का नाम		
२४	१६३८/२	४२/८	बीकानेर की निशानी		१९२० आषाढ
२५	१९४३	४८/३३	महावीर पछाली पट्टावली		
२६	१५८६	४१/१६	लेखा, जिन चक्री और वासुदेवो का		
२७	२४९९/३	६३/९३	वर्तमान जिनभव		
२८	१६५४	४२/२४	विनति पत्र		
२९	१६६६	४२/३६	विनति पत्र	मद्रासी साधर्मी	
३०	१४०६/४	३७/५६	विभिन्न गच्छो की उत्पत्ति		
३१	१५१८	३९/८	साधुमार्गीय सम्प्रदाय पट्टावली		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य	२	२४०×११८ / २४—४४
				”	गद्य	३	२६·२×१११ / १४—४४
				”	गद्य		२५ २×११४ / ३२—४८
				”	गद्य		२५·३×१०८ / २१—५१
				”	१५		२७·०×१२५ / १२—६१
				”	गद्य	१	२५ २×१०७ / १६—५१
	बुद्धमल	१९२३ चैं० शु० १२	नागौर	”	सारिणी	१	२५·५×१०·५ / १६—४१
		१८५५ आषाढ शु० १		”	गद्य		२६ ०×११·४ / २८—२१
				”	गद्य	३	३४ २×११६ / ३८—३२
	मद्रासी साधर्मी		मद्रास	”	गद्य	१	८३०×१६८ / ७७—१८
				”	गद्य		२५·३×१०८ / २१—५१
				”	गद्य	१७ १,११,१३ नहीं	१५ ८×१२५ / १४—२०

क्रमाक १	ग्रन्याक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ–नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
१	२३०५	६०/३	चरक सहिता	चरकाचार्यं	
२	२३०३	६०/१	माधव निदान	माधवाचार्य	
३	२४५४	६३/४	रोगापहार स्तोत्र	मनीराम	
४	५३३/२	१७/६०	रोगी परीक्षा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
		१७०९ फा० ब० ४	जयपुर	सस्कृत		१७३	२२ ९×१३ २ / ११—२३
	रिख अनूपचन्द	१९२० श्रा० कृ० ५		”		८६	२७ ८×१३ ३ / ६—५२
				हिन्दी-राज०	पद्य १५	१	२४ ६×१०·५ / १४—३५
				”	पद्य ५	१	१७ ८×११ २ / १५—३१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	२०२४	५१ / १४	उपमा पत्र		
२	२०४१ / १	५१ / ३१	भमक बध चद (चित्र काव्य)		
३	५६७ / १५	१६ / २६	तीस साधुओं की उपमा		
४	१८११	४५ / ४१	बत्तीस उपमा		
५	४३२ / २	१६ / ३७	वत्तीस शील की उपमा		
६	३८४	१४ / ३७	रस मञ्जरी	भानुदत्त	
७	२४४६ / २	६३ / ५०	शील की उपमा		
८	६४० / १	२० / ७	शील की बत्तीस उपमा		
९	११११ / ४	३२ / ६८	शील की बत्तीस उपमा		
१०	२३२७	६१ / २२	शील की बत्तीस उपमा		
११	६६८ / १६	१६ / २६	शील की बत्तीस उपमा		
१२	५६७ / १७	१६ / २६	शील की सोलह उपमा		
१३	८२५	२५ / २२	साधु उपमा		
१४	२३४४	६२ / १६	साधु की चौप्रन उपमा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
					गद्य	३	२६ ८×११ ० १३—३७
						७	२६ ३×११ ८ ११—३३
					गद्य		२५ २×११ ४ ३२—४८
	आर्या पन्ना			हिन्दी-राज०	पद्य ३२	१	२४ १×१० ६ १६—३८
				,,	गद्य	२	२५ ० ×११ ५ १६—४६
मिथिला				संस्कृत	पद्य १३८	२०	३०.० ×१० ५ ८—४१
				हिन्दी-राज०	गद्य		२२ ४×१० ८ १३—३८
	आर्या लाछा	१८४०	किशनगढ	,,	गद्य		२५ ४×१० ४ १७—३८
				,,	गद्य		२३ ३×१० ३ १६—३४
				,,	गद्य		२४ ९×१० ६ १५—३८
				,,	पद्य ३२		२६ ७×१०.४ १९—४६
				,,	गद्य		२५ २×१० ४ ३२—४८
				,,	गद्य	१	२५ ७×११ ३ २०—३९
				,,	गद्य	१	२६ ३×११ ५ १६—४७

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	१२२५	३५/१६	अनेकार्थ माला भाषा	नन्ददास	
२	८	१/८	अभिधान चिन्तामणि न ममाला (अपूर्ण)	हेमचन्द्राचार्य	
३	३८२	१४/३५	अभिधान चिन्तामणि नाममाला	हेमचन्द्राचार्य	
४	७३२	२३/७	अभिधान चिन्तामणि नाममाला टीका	हेमचन्द्राचार्य	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ६	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र स० १३	आकार १४
		१८०० फा० सु० ४		हिन्दी ब्रज	१२२	४	२०० × ११४ / १६—४५
				सस्कृत	काड ३	५४	२६८ × ११८ / १३—४१
		१६७८आसोज सु०१० शनि०		”	काड ६	४४	२६२ × १११ / १५—४६
	प० भाना	१६५५		”	काड ६ ग्र १००००	१७२ १२०, १४१ नहीं	२६६ × ११० / १७—५७

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
१	२१८३	५५/५७	धातु पाठ		
२	१६६४	४६/१४	मातृका पद		
३	८१	६/२	संज्ञा व पच सधि प्रकरण		
४	१२२०	३५/१४	सारस्वत अवचूर्णि		
५	२४१	१२/७०	सारस्वत पच सधि		
६	२१३६	५५/१३	सारस्वत पत्र सधि प्रकरण		
७	२३२४	६१/१६	सारस्वत प्रक्रिया तद्धित प्रक्रियान्त	मदनभूति स्वरूपाचार्य	
८	८१५	२५/२२	सारस्वत व्याकरण पच सधि प्रकरण पर्यन्त		
९	३२१	१३/८०	सारस्वत सज्ञा प्रकरण टब्बा		
१०	६६१	२१/८	सारस्वत सूत्र मूल		
११	२१७२	५३/६	हेम चन्द्रिका बालावबोधिनी टीका सहित पुल्लिग व्यञ्जनात		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
	त्र्यबक	१६७२ का० सुद २ बुध०		सस्कृत	गद्य	१९	२१ ५×१० ० / १२—३०
				"	गद्य	१	२४ ५×११ ५ / १७—४४
				"	गद्य	९	२४ ४×११ ४ / १०—२९
	मुनि कर्पूरविजय			"	गद्य	७	२५ ३×१० ९ / २०—५५
				"	गद्य	१७	२९ १×१४·० / १२—३८
	महात्मा पूनमचन्द	१९१४ पो० ब० ९	नागोर	"	गद्य	४	२४ ८×११ ९ / १५—३९
		१८६८	देशनोक	"	गद्य	२०	२५ ५×११ ५ / १३—४७
	जिनरग सूरि	१७४९ माघ शु० १	किशनगढ	"	गद्य	२६	२५ ६×१० ८ / १३—४२
				"	गद्य	६	२० ३×११ ० / १४—३१
				"	सूत्र	८	२७ ७×१० ६ / ८—१३
				"	गद्य	९	२३ ४×११ २ / १२—२०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	६४४ / ११	२० / ११	अनु दे दो मेरी माय	किशनलाल	
२	६४४ / १	२० / ११	अनुमति दे दो मेरी माय	किशनलाल	
३	२३४१	६७ / १३	आसिक पच्चीसी		
४	२३७३	६२ / ४५	ऋषभदेव को वारामासियो	मूलचन्द	
५	२४७ / ११	१३ / ६	कठिन लगन की पीड रे		
६	२४६१	६३ / २५	कुदणाजी आर्या की पोथो की सूची		
७	२२१७	५७ / ८	कुलार्णव महारहस्य		
८	२०३३	५१ / २३	कृष्ण को वारामासो		
९	२२९८	५९ / ४६	कृष्णजी को कामण		
१०	१४९९ / ५	३८ / ६९	कृष्णदान लीला		
११	२०४५ / १	५१ / ३५	गूजरी की सज्झाय		
१२	१४९५	३८ / ३५	गौतम से एवता की विनती	लिखमीरतन	
१३	६३६ / १	२० / ३	चार प्रकार की स्त्रियो के लक्षण		
१४	१६०१	४७ / ४१	जोतक री ढाल		
१५	१६३१	४२ / १	तर्क सग्रह आशिक टिप्पणी	अनन्तभट्ट	
१६	१२२६	३५ / २०	दर्शन विचार		
१७	१८४३	४६ / १३	नेमजी का वारामासा	लिखा कुशालचन्द्र	चौमासे
१८	५२३ / २	१७ / ५०	नेमजी का स्तवन		
१९	१५५३ / ३६	४० / ३	नेमजी की ढाल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	१३		२५·८×११ ५ / १५—३५
				”	११		२५ ८×११ ५ / १५ ३५
				”	२५	१	२५ ३×११ ५ / १७—६१
	उमेदविजय	१९०२ पौ० सु० ११	मेडता	”	१५	१	२४ ६×११·० / १०—२६
				”			२५ ६×१२·० / १५—४१
				”	गद्य	१	१६ ९×१० ३ / ३६—२१
		१७७३ मगसर बद ६ गुरु०	जोधपुर	सस्कृत	अध्याय १७	२ से ५०	२६ ५×१० ८ / १५—५२
				हिन्दी-राज०	१४	१	२४ ८×१०·८ / १६—३३
				”	१६	२	२१ ४×१४ ४ / ११—३०
				”	४३		२१·२×११·६ / १९—३२
	पन्ना आर्या			”	७	१	२४ ५×१० २ / १०—३३
				”	१७	२	२५ ३×९ ६ / १२—३७
				सस्कृत	१४		२१·७×१०·५ / ९—३४
				हिन्दी-राज०	ढाल ३	२	२४ २×१० ८ / १४—४६
				सस्कृत		७	२७·५×१२ ८ / १२—३०
				”	गद्य	४	२६ ८×११ ८ / १२—४१
सोजत				हिन्दी-राज०	१७	१	२१ ५×११ ४ / १५—२४
				”	५		२६·४×१०·७ / ३५—२०
				”	५		२५ २×१२ ० / २०—४३

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत ६
२०	५९४ / २	१९ / २६	नेमजी की विनती (नेमजी को वारामासो)		
२१	२०४७	५१ / ३७	नेमजी को वारामासियो		
२२	२४६६	६३ / ६०	नेमनाथजी की जान		
२३	७४६	१४ / १३	नेमनाथजी रो वारामासियो		
२४	२११४ / २	५४ / ३१	नेमनाथ राजमति वारामासियो	विनयचन्द	
२५	८०६ / २	२५ / १३	नेम वारहमासा	ऋषि सुजानमल	१९५२ वै० शु०
२६	२१८५ / २	५६ / २	नेम वारामासिया	रिख सुजानमल	१९५८ वै० सु ३
२७	१५९	११ / १	नेम राजमती का वारामासा		
२८	१२६१	३५ / ५५	नेम राजमती का वारामासा		
२९	१२६३ / १	३५ / ५७	नेम राजमती वारामासा	लाल विनोद	
३०	२२६०	५९ / ८	नेम राजमतो वारामासा	रूपविजय	
३१	१०९ / १	७ / ११	नेम राजल चौमासो	चन्द जिनन्द	
३२	६२२	२८ / ११	नेम राजल वारामासिया		
३३	३६२	१४ / १५	पद (भजन)	रतनचन्द	
३४	१६०८ / ५	४१ / ३८	पद (भजन)		
३५	२०३८	५१ / २८	पद (भजन)		
३६	२२६२ / ३	५९ / ४०	पद (भजन)	जिनचन्द्र	
३७	१७४१ / २	४४ / ११	पद गर्भ सम्बन्धो	प्रेमसुख भोजक	
३८	२८१ / २	१३ / ४०	पद्य सग्रह		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भापा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	१४		२४०×१०६ / १६—४०
				"	९	१	२५२×१०२ / १३—२८
				"	गद्य	१	१९९×१०·२ / ११—३२
				"	४०	२	२५८×१२५ / १३—३९
रामनगरे				"	पद्य २३	४	१९८×१०४ / १५—३४
				"	पद्य १३	६	२७२×१२८ / १५—५७
अजमेर				"	१३		२७१×१२७ / १३—४९
				"	१४	१	२५८×१०३ / १२—३२
				"	२९	१	२४६×१०७ / १५—४१
					२९		२५१×१०५ / १९—४७
				"	२५	१	२४३×११० / १९—४८
				"	८		२३५×१०३ / १९—३९
				"	१४	३	२४८×१०८ / ८—३६
				"	९	१	२४७×१२८ / २१—४.
				"	२८	२	२४४×११३ / १९—३८
		१९०९-वै० वद ९		"	१३	१	४१८×१०३ / २८—१७
				"	पद्य ४	१	२९३×११५ / १९—३१
				"	पद्य ९		९५५×३३१ / ४—११८
				"	पद्य १७		२९८×१०८ / १२—६१

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३९	११५९	३४ / ४४	पुरुष की ७२ कला		
४०	१२३३	३५ / २७	पेट के रोग का मत्र		
४१	८९६	२७ / १	प्रमेय कमल मार्तंड परीक्षा मुखालंकार	प्रभाचन्द	
४२	१४९२	३८ / ६२	फुटकर कवित्त	विनोदीलाल	
४३	१४९९ / २	३८ / ६९	फुटकर पद		
४४	१७९४ / २	४५ / २४	फुटकर पद		
४५	५८२ / २	१९ / १४	फुटकर पद		
४६	१३९३	३७ / ४३	फुटकर पद		
४७	१४४१	३८ / ११	फुटकर पद सग्रह	जिनहर्ष,केशवदास	
४८	२३९५	६२ / ६७	फुटकर पद	सुनर कवि	
४९	२५०	१३ / ९	फुटकर सवैया	धर्मसी	
५०	१०९ / २	७ / ११	वटाऊ के गीत	श्याम	
५१	१५९८ / १	४० / १८	वारहमास को स्तवन		
५२	१७४१ / १	४४ / ११	वारामासा	हीराचन्द सोनी	
५३	१७४१ / ६	४४ / ११	वारामासा		
५४	३४१	१३ / १००	वारामासिया दो	हर्षकीर्ति, ऋषभसुन्दर	
५५	१९७३ / १	४९ / २३	वारामासियो		
५६	५२१ / २	१७ / ४८	वारामासियो		
५७	५४९	१७ / ४६	वारामासियो	रतनचन्द	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
		१८८३ आसोज सुद १३		हिन्दी-राज०	गद्य	१	२३ ८×११ ० / ३३—२४
				”	गद्य	१	२४ ७×११ ४ / १४—४१
	महात्मा शभुराम	१८८४ सा० शु० १४ सोम.	जयपुर	सस्कृत	परि० ६	४०७	२८ ३×१२·६ / १०—४०
				हिन्दी-राज०	पद्य ६	१	२२ २×१० ५ / १७—३५
	आर्या फूलांजी	१९०७ पो० बद २	गढखेडा	”	१४		२१ २×११ ६ / १४—३२
				”	पद्य ३४		२५ ०×११ ० / १७—४८
				”	पद्य ५		२५ ३×११ ४ / १२—४१
				”	२८	१	२५ २×११·० / १६—४१
नागौर				”	२४	१	२५ ८×११ ६ / १८—४७
				”	४	१	२१ ८×१० ३ / ११—२७
		१९४२ आषाढ सु० ९		”	२४	१	२५ ६×११ ७ / २२—६०
				”	११		२२ ५×१० ० / १६—३९
				”	१३		२४ ८×१० ३ / १७—४०
				”	१२		६५ ५×३३ ५ / ४६—११४
				”	१३		६५ ५×३३ ५ / ४६—११४
				”	पद्य २३+१३	१	२५ ०×११ ० / १९—५१
				”	पद्य १३		२४ ७×११ ७ / १४—३०
				”	१४		१८ १×९·३ / १५—३७
	सगरू	१९०७ सा० कृ० ५	अलवर	”	१३	३	२६ ०×११ ० / ८—३६

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
५८	६७८ / १	२० / ४५	बारामासियो स्तवन	रगवल्लभ	९२ .. फा०सु०१४
५९	१९५६ / २	४६ / २	बारामासियो		
६०	१५५४ / ४०	४० / ३	बारामासी सज्झाय	- -	-
६१	९९० / २	३० / ८	बारामासो	मगलदास	
६२	१७४१ / ४	४४ / ११	बारामासो	जालीराम	सावण सु १३ सोमवार
६३	२४७ / १	१३ / ६	बीत दिना की प्रीत	रिख जसरूप	
६४	३६२ / २	१४ / १५	ब्राह्मण के पाच लक्षण		
६५	११५	७ / १७	महावीर दसूटन विधि		
६६	२४७ / १२	१३ / ६	मानो की उनगाज कुमारी		
६७	४७५	१७ / २	मूर्ख का ९० बोल		
६८	१४८४	३८ / ५४	मूर्ख के ८४ लक्षण		
६९	२०२२ / २	५१ / १२	मेघकुमार को बारामासो		
७०	२४८१	६३ / ७५	मेडतिया श्री सघ की विनती	खुशालसुन्दर	१८३२ मगसर सु० २
७१	२४७ / ८	१३ / ४	मै वारी हो नेमजी	रूपचन्द	
७२	१६४४	४८ / ३४	राखडी		
७३	१५००	३८ / ७०	राखडी का पद		
७४	१३७८ / १	१७ / २८	राजमती का वैराग्य गीत		
७५	१५५३ / ३२	४० / ३	राजमती की अरज		
७६	१५५३ / ३३	४० / ३	राजमती की अरज		

रचना स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	पन्ना आर्या			हिन्दी-राज०	१५		२५ ६ × १० ९ / १७—५५
				,,	१३		२५ ५ × १०·१ / १४—२३
				,,	पद्य १५		२६ ० — ११ ७ / १९—४५
				,,	पद्य ६		२९ ० × ११ २ / १८—४०
				,,	पद्य १३		६५ ५ × ३३ ५ / ४६—११४
				,,	पद्य ४		२५ ९ × १२ ० / १५—४१
				संस्कृत	५		२४ ७ × १२·८ / २१—४९
	जोशी देवकृष्ण	१९३९ आसोज बद ८	जयपुर	हिन्दी-राज०		३	२४ ५ × १० २ / ११—४९
				,,	पद्य ६		२५ ६ × १२ ० / १५—४१
	आर्या पन्ना	१८९८	अलवर	,,	गद्य	२	२३ ० × ११ ० / १५—३२
				,,	गद्य	२	२२ ४ × ११ १ / ११ —३४
				,,	पद्य १४		२५ ० × १० ८ / १०—३९
				,,	पद्य ११	१	२५ ३ × १० ७ / १२—४८
				,,	पद्य ५		२५ ५ × १२ ० / १५—४९
	आर्या छगना		निराटिया	,,	पद्य १९	१	२५ ९ × १० ८ / १९—३९
				,,	पद्य १९	१	१७ ५ × ११ ३ / २१—२३
				,,	पद्य १७		२६ १ × ११ ९ / १२—३३
				,,	पद्य १६		२५ २ × १२·० / २०—[illegible]
				,,	पद्य ५		२५ २ × १२ ० / २०—३

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७७	१५५३/३४	४०/३	राजमती की अरज		
७८	१५५३/३५	४०/३	राजमती की अरज		
७९	१६२६/१	४८/१४	राजमती को बारामासियो		
८०	१६२६/७	४८/१६	राजमती को बारामासियो		
८१	४८१/२	१७/८	राजल बारामासियो		
८२	१४२२	३७/७२	राजुल नेमनाथ का बारहमासा		
८३	१६१	११/८	राजुल सम्बन्धी पद		
८४	४७७/२	१७/४	राधा बोलना अमृतवाणी		
८५	१२३१/४	३५/२५	राम कटक		
८६	११६	७/१८	राम सीता वियोग ढाल		
८७	१३०७	३६/३७	रिसालू का दोहा		
८८	१७८२	४५/१२	रुक्मणी को चूड़लो		
८९	१६०६/४	४८/६	रूपटा	हेमराज	१७१२
९०	११५१	३३/३६	लघु चरणायका		
९१	२०१६/२	५१/६	लावणी		
९२	६४४/१४	२०/११	वामानन्दा राख हमारी लाज	किशनलाल	
९३	४०२	१६/७	विभिन्न फुटकर पद		
९४	१६३३/७	४२/२	विभिन्न फुटकर पद		
९५	१६३२/५	४२/२	विभिन्न फुटकर पद		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-संख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी—राज०	पद्य ५		२५ २×१२ ० / २०—४०
				"	५		२५ २×१२·० / २०—४३
				"	पद्य २५		२२ ७×११ ३ / १७—३०
				"	पद्य १८		२४ ७×११ ४ / २०—४८
				"	पद्य २०		२३ ७×१० ५ / १६—४५
	आर्या लाछा	१८७३ मिगसर व० ५ रवि०	जयपुर	"	१८	१	२५·२×१०·६ / १८—४६
				"	१५	१	२४ ८×११ ८ / १६—४०
				"	पद्य १५		२४ ५×१० ८ / २०—३७
				"	पद्य २१		२५ ६×१२ १ / २२—५१
				"	१९	१	२५ २×११·२ / १५—३८
				"	६५	४	२६ ४×१२ ६ / १४—३१
				"	१५	१	२५ ८×१२ ३ / २१—४२
अलवर				"	७		२६ २×१३ ० / १६—५३
	मन्नूलाल			"	पद्य १३	४	२६ ०×११ ४ / ९—२२
				"	९		२५ ६×१०·७ / १४—४०
				"	७		२५ ८×११ ५ / १५—३५
				"	विभिन्न		२५ ५×११ ८ / २७—५३
				"	पद्य २५		२५ ५×१३ ४ / १९—४७
				"	पद्य ९९		२५ ५×१३ ४ / १९—४७

क्रमाँक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत ६
९६	१६२२ / ६	८२ / २	विभिन्न फुटकर पद		
९७	१९९६	५० / ६	विविध पद	कबीर, रतनचन्द आदि	
९८	२४७७	६३ / ७१	विविध पद	मूनो केशोराम	
९९	४०२ / १-२०	१६ / ७	विविध स्तवन सज्भाय सग्रह	रेखजी, देवीदास जेठो आदि	
१००	२४६३ / १	६३ / ५७	वीर के अभिग्रह की सज्भाय	रिख दुर्गादास	
१०१	२३३६	६२ / ८	वीर पारणा	मुनि भाल	
१०२	४२२	१६ / ६७	व्रजवासी ल्यायो घूंघरा		
१०३	१७०२	४३ / ३२	वृद्धि शान्ति		
१०४	३५३	१८ / ६	शत पचासनिका सग्रह टब्बा		१९६६ चै० सु० १३
१०५	१३३२ / २	३६ / ६३	श्रेणिक तीर्थंकर पद पासी सज्भाय	रिख रायचन्द	१८३६ चौ०
१०६	१३६२ / १	३७ / ४२	श्रेणिक नृप तीर्थंकर पद पासी स्तवन	रायचन्द	
१०७	१४८० / २	३८ / ५०	श्लोक		
१०८	१७३७ / २	४४ / ७	श्लोक		
१०९	१२३७	३५ / ३१	श्लोक फुटकर		
११०	१३६० / २	३७ / ४०	सज्भाय	रिख रायचन्द	
१११	१६५२ / १	४२ / २२	सज्भाय	पदम उदय	
११२	१८०९ / ७	४५ / ३९	सज्भाय	समय सुन्दर	
११३	२२०४ / ५	५६ / २१	समस्त चैत्र पवाड़ी गीत	लाभ उदय	
११४	१८८	१२ / १७	सवइया	विभिन्न कवि	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	पद्य ५२		२५ ५×१३ ४ १६—४७
				,,		१	२८ ७×११ २ १७—५८
				,,	७	१	२४ ६×१० २ १४—४६
				,,		६	२६ ५×११ ८ २३—५५
				,,	पद्य १४		२२ ०×१० २ १४—३३
				,,	पद्य २६	२	१६ ७×१२ ५ ११—२८
				,,	६	१	२० २×६·५ १४—३१
				,,	गद्य-पद्य	१	२५ ६×१० ३ १०—३२
	सावतजी	१७७१ आसोज सु० २ बुध०	स्यालकोट	प्राकृत		२ से १६	२५ ०×१० ७ १७—४०
मेडता				हिन्दी-राज०	पद्य १६		२३ ६×१० ६ १७—४०
				,,	पद्य १४		२५ २×११ ० १६—६१
				,,	पद्य १		२५·५×११ ४ १५—४२
				,,	पद्य ११		२४ ३×११ ० १६—४१
				संस्कृत		१	२६ १×११ ७ १६—४१
				हिन्दी-राज०	१७		२५ ५×११ ८ २०—४६
				,,	पद्य ५		२५ २×११ ५ १६—३७
महदापुरनगरी				,,	पद्य ८		१६ ०×१० ५ १८—३६
				,,	पद्य १४		२५ ७×११ ० १८—३६
				,,	गद्य	२	२८ २×११ ३ १६—३१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
११५	२११/५	१२/४०	सवैया		
११६	२६७/२	१३/३६	सवैया		
११७	२७४	१३/३३	सवैया	बालचन्द	
११८	२६२/४	१४/१५	सवैया	ब्रह्म हरलाल	
११९	१८७/३	६/१२	सवैया		
१२०	१२५०	३५/४४	सवैया		
१२१	१३४६	३६/७६	सवैया		
१२२	१६७१	४१/५१	सवैया	केशवदास	
१२३	१४७७	३८/४७	सवैया कुण्डलिया	कुशालचन्द	
१२४	३२५/७	१३/८४	सवैया दोहा		
१२५	२१६४	५५/३८	सवैया व छप्पय	राम, सुन्दर, जिनचन्द माहण	
१२६	३६८/२	१४/२१	सवैया व दोहा	लालचन्द	
१२७	२४५०	६३/४४	सवैया स्तवन	ज्ञान सुन्दर	
१२८	५३४	१७/६१	सवैया कवित्त फुटकर		
१२९	१७४/३	१२/३	सिझाय		
१३०	१५०९/५	४५/३६	सिझाय		
१३१	१८२७/१	४५/५७	सिलोक		
१३२	२४६०	६३/५४	सीधोवरण व बारा अक्षरी		
१३३	१६८१	४६/३१	सिधोवरणा पाटी २ प्रति		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	पद्य ३		२६ ३ × १२ ७ १०—४१
				”	पद्य ५		२६ ० × ११ ३ १९—५३
				”	पद्य ३२	३	२५ ७ × ११ ८ १८—३८
				”	पद्य २		२४·७ × १२ ८ २१—४६
				”	पद्य १		२५ ० × ११ ६ १५—४३
				”	पद्य ९	१	२० ६ × ११ ० १०—३५
	पीरचन्द	१८८५ चै० सु० ११	जयपुर	”	पद्य ५	१	१४ ४ × १० २ १३—२३
				”	पद्य ९	१	२४ ० × १० ० १७—४१
	छोगालाल	१९३३ भा० सु० ७	पाली	”	पद्य ११	१	२५ ७ × १२ ० १७—५१
				”	पद्य ४		२३ ६ × ११ २ १३—४७
				”	पद्य ११	१	२२ ५ × १० ४ १४—४१
				”	पद्य ५		१९ ७ × १० ६ १७—३२
	बुद्धमल	१९०६ वै० बद ४	जयपुर	”	१०	१	२२ ६ × १० ७ १०—२८
				”	३	१	१७ ३ × ११ ९ १८—१९
				”	पद्य २५		२५ २ × १० ८ २१—४७
				”	७		२६ ० × १० ५ १८—३९
				”	४		२२ ८ × ९ ५ १४—३०
				”	गद्य	१	२०·८ × १०·३ १४—२७
				”	गद्य	२	२१ २ × १० ७ ८—२०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१३४	२१५८	५५/३२	सुहागण की सज्झाय	कुशल	
१३५	३२५/१३	१३/८४	सोकडली को साल		
१३६	३००/२	१३/५६	सोकडली री सिज्झाय		
१३७	१५८३/८८	४०/३	सोकडली री साल (सुमत कुमत की ढाल)		
१३८	६४२/२	२०/६	सोचकर १० बोल		
१३९	६४२/३	२०/६	सोचकर १० बोल		
१४०	१४२५/२	३७/७२	सोलह सिंगार		
१४१	२३३३	६२/५	सोळी ढाल	रिख चन्द्रभाण	१८६४ काती सु० ४
१४२	२४५६/१	६३/५३	स्त्री का १४ ठिकाणा		
१४३	२४०५	६२/७७	स्थूलभद्र मुनि बारामासिया		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिदी-राज०	पद्य २०	१	२४·६×१०·७ / १८--४८
				"	पद्य ६		२३ ६×११ २ / १३—४०
				"	पद्य ६		२५·२×१० ७ / १५—४५
				"	पद्य ८		२५ २×१२ ० / २०—४३
				"	गद्य		२५·०×१२ ० / २०—४३
				"	गद्य		२५ ०×१० ६ / १६—४२
				"	गद्य		२२ ८×१० ७ / १९—४१
बीदासर				"	पद्य १६	१	२७ ३×१३·३ / १३—२९
				"	गद्य		२५ ३×१० ३ / १३—२९
				"	१७	२	२३ ४×११ ६ / १८—४३

परिशिष्ट–१

ग्रन्थकार

परिशिष्ट-२

लिपिकार

रचना-स्थल

परिशिष्ट—४

लिपि-स्थल

परिशिष्ट—५

प्रशस्तियाँ

स्तुति-स्तोत्र-वन्दनादि

(१) **गौतम रासो** :—क्रमांक १६७, ग्रंथांक १८६८, पृष्ठांक ४६/३६, लिपिकार रामजी की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति :—इति श्री गौतम रासो सपुरणम पुजजी श्री कल्याणजी तत सीप श्री रामजी ।

(२) **शंखेश्वर पार्श्वनाथजी रो छन्द** :—क्रमांक ७०२, ग्र० १८४१/४, पु० ४६/११ ग्रंथकार विजय की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति :—वुधकुंअर विजय सीष्य गुंणगाया ।

(३) **सीमंधर स्वामी को स्तवन** :—क्र. ८३२, ग्रं० ५४१, पु० १७/६८ लिपिकार पुण्यसार मुनि की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति :—इति श्री सीमंधर स्वामि स्तवन वाचनाचार्य श्री श्री श्री उदयप्रमोदगणि शिष्य पं० पुण्यसार गणि लिष ।

कथा-काव्य-चरितादि

(४) **अंजना ने हनुमानजी नी चौपई (हनुमंत चरित्र)** :—क्र० ३, ग्र० २८, पु० ३/६, ग्रंथकार भुवनकीर्ति व लिपिकार भुवनसागर की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) इयां तणी करणी आदरतां छतां रे, फल थायो असमांन ।। १ ।।
महावीर राजान तणै पट्टाक्रमेरे, वैरी शाषि प्रसिद्ध ।
कोटिक गण कुलचंद कलानिलोरे, खरतर गछ विसुद्ध ।। २ ।।
श्री जिनराज सूरीसर पाटइं दिनकरु रे, आगम अरथ निधान ।
श्री जिनरंग सूरीसर मतिवारसै रे, जांणे संघ विधान ।। ३ ।।
तस आदेसै संवत सतरे छडोतरे रे, उदयपुरइ चौमासि ।
जगत सिंघ श्री रांण गाजै जिहां किणइरे, हिंदू पति जसवासि ।। ४ ।।
जांबवती जस माता जग मै परगडी रे, तेह तणा परधान ।
केसरि मंत्र तणा सुत सांचा केसरी रे, जिहां तिहां लहता मान ।। ५ ।।
देव भगत गुरु भगतयथी संगति करी रे, गछ दीपावणहार ।
मंत्रीसर मन मोटें हां सो मांनीयैरे, तस बंध जगधीर ।। ६ ।।

त्याग भोग सोभाग गुणै करि आगलो रे, गुणरागी नितमेव ।
श्री सुपाल जिणिंद तणी ए किणिएगइ रे, सारइ नन सुधि सेव ।। ७।।

जावक भमर भमे जसु, पाषलैरे, मौज लिये मकरन्द ।
भागचंद वडभागी विकसित मुषि सदारे, निरुपम जे अरविंद ।। ८ ।।

तारक धनि सुदि माघतणी तृतीया दिने रे, सुभ जोगे गुरुवारि ।
अछइ नवै रस इणि मै लेजो जोइनइ, अधिकार अधिकार ।। ९ ।।

खरतर गच्छ सदाई सूरतरु सारिषो रे, साषि वडी षेम साखि ।
फल सरिखा गुरु हुआ इणिमइ वडवडारे, मोठा ह्रीयडे राखि ।। १० ।।

हेमसोम गुरुराय सु सीस तीयाँ तणा रे, वाचक पदवीधार ।
ग्याननंदि गुरुराज तणै सुपसाउ ले रे, जयउतो परिवार ।। ११ ।।
इम श्री भुवनकीरति भावधरी घणउरे, गुरुज्ञानो जलवास ।
अधिको उछउ इहां किणि जेह कह्यउ हुवै रे, मिच्छा दुक्कड तास।। १२।।
सील प्रभावे समकित गुण नै धारिवइरे, दिन प्रति कोडि कल्याण ।
तिणि ए भणता गुणता सुणतां चोपई रे, जाविन जनम प्रमाण ।।१३।।

(ग) सर्वगाथा २५३।। अधिकार २ वयस्य सर्वगाथा दूहा ७०७ । प्रमाणमिति छंद ।। ढाल बयालीस नवली जावेनिरय ।। सवत् १७४९ वर्षे द्वितीय भाद्रवदे श्री किसनगढ मध्ये पूर्णमासी तिथौ यु० भट्टारक श्री जिनरंग सूरि राजा ना शिष्य पडित नयनविशाल तत्शिष्य पडित भुवनसागर लिपि कृतम् । शुभ भूयात् । यादृश पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिखित मया । यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयता ।। श्रेयस्तात् ।

(५) अजयराज री चौपई :—क्र २३, ग्र. २४, पु ३/५ ग्र यकार पात्रसोर व लिपिकार कालूहर की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) सवत् सतर छवीस सै, आसु मास ऊदारो रे ।
सुकल पक्ष दसमी दिनै, ए ग्रथ कीयो सुखकारो रे ।।
खरतर गछ महिम निलो, जुगवर श्री जिनराजो रे ।
वादी गज घट भाजणो, सकल गछा सिरताजोरे ।।
बौहि वसै बोदीत समो, तिण सम कोन विग्यानी रे ।
परतिष दीठो पारषो, जिण वाचि लिपिय वाणीरे ।।
साहसीक जिनराज सो, ओर न कोइ हूयो रे ।
साह जहांन सराहीयो, इण समो को सिद्धि न दूजो रे ।।
धारलदे धन जनमीयो, धरमसी साह मलारो रे ।
ऊपगारचा सिर सेहरो, पर दुख खंडणहारो रे ।।

तासु सीस सोभा घणी, विद्या वुद्धि वखांणो रे ।
भावविजय गणीवर भला, सकल कला गुण जांणो रे ।।
शिष्य रतन जस गुण भर्यो, पंडित बहु चतुराइरे ।
गुरु श्री भावविनय गुणी, सयल जीवां सुखदाइ रे ।।
तासु सीस पाठक कहै, गणि भावप्रमोद मतिसारे रे ।
अधिको ओछो नवि कह्यु, शास्त्र तणे आधार रे ।।
बीकानेर संघ गहगहै, जिहां चोवीस टोलिन राजो रे ।
तेह तणें परसाद थी, मन वंछित सीझै काजो रे ।।

गुरु रालीयो जुग प्रधान गुरु चदो रे ।
चोपड़ा वसे रवि समो, चिरजीवो जां मेरु दिनंदोरे ।।
सुधे मन ए चोपइ सुंणे, जिकै चित लाइ रे ।
तिहां घरि रिध सिध विस्तरे, दिन दिन सोभ सवाई रे ।।
भणतां ने गुणतां थकां, लहीयै लील विलासो रे ।
आरत दूरे अपहरे, पूरे मन तणी आसोरे ।।
अ दृष्टांत सोहामणो, सुणतां नव निधि थाय रे ।
भावप्रमोद पाठक कहै, श्री संघ कुं सुखदाई रे ।।

(ख) इति श्री अजयराजा री चौपइ सपूर्ण । स० १६४० वर्षे पोष सुदि ५ लि । प. । कालुहसेन पत्रा रू० चक्रे ।। श्री नयानगर मध्ये समाप्त भूत । ग्रथाग्रथ ११२५ ।। श्रीरस्तु ।। लेखक पाठकयो चिर । श्री शातिनाथ जी शक्रु ।।

(६) **अमरसेन वयरसेन चरित्र :**—क्र. २८, ग्र ० १२४, पु० ८/६, ग्रथकार जीवसागर व लिपिकार आर्या मया की प्र० ।

प्रशस्ति (क) पातसाह प्रतिबोधक सुन्दर, सोहम गुरु अवतार रे ।
हीरविजय सूर हीरो साचो, जैन तणो शिणगार रे ।। ३ ।।
पट धोरि तेहनो सुख कारक, कुमति मंत गज सीहरे ।
शुद्धाचार गुरु सुद्ध पुरूपक, श्री बिजनय ना री हरे ।। ४ ।।
तास पटोधर प्रबर प्रभाकर, ज्ञान तणो भंडार रे ।
विजयदेव सूरी गछ धुरधर, सकल लोक हितकार रे ।। ५ ।।
गुण निधि गछधि पति मति सागर, भविक मनोकज भाण रे ।
तास पटोधर महिमा मंडीत, श्री विजयप्रभ जाण रे ।। ६ ।।
तास पट उदयाचल भास्करः सनिभः सनिभः ज्ञान निवास रे ।
परवाद मातग बिदारण कर्वर वज सवास रे ।। ७ ।।

सकल गछइ सिरदार तप गछ तखते, बषत दिणंद रे ।
रत्नसमो वड चडते दिवाजे रे, श्री विजयरत्न सूरिसरे ॥ ८ ॥
वाचक चक्र चक्रधर उपम, तप गछ सोभाकार रे ।
सर्व सास्त्र महारथ भाषक, उपसम रस भण्डार रे ॥ ९ ॥
गुण रयण यर विद्या सायर कु, सागर गुरु राज रे ।
वड वखती सोभागी सुन्दर, साचो धरम जिहाज रे ॥१०॥
तास सीस पंडित गुण पंडित, पाप रहित शुभ गात रे ।
हीरसागर गुरु हीरा सारिषो, जस पसरि जग ख्यात रे ॥११॥
तास सीस तत्पद पंकज मधुकर, पंडित मे सिरिताज रे ।
श्री गंग सागर शुभ मति आगर, माने जस नर राज रे ॥१२॥
परतष तेह तणो सुपसाई, मन वछित फल थाय रे ।
शांतिनाथ जगनाथ ब्रह्म ये, कथा सरस कहवायइ रे ॥१३॥
भवत्यष्ट तीरथ वरस जाणो, मास श्रावण चंग रे ।
वदि चोथि भृगुवार जाणो, कह्यो प्रवन्ध अभगरे ॥१४॥
जे कांई मिथ्या मे प्रकास्यु, आपमति अनुसार रे ।
ते सवे मिथ्या दुक्कडे सू, ऊषां मुनिवर धीर रे ॥१५॥
ए षंड त्रीजे ढालवारे, सकल पूगी आस रे ।
कवि जीवसागर इम जपे, धरमथी जय वास रे ॥१६॥

(ख) इति श्री अमरसेन वयरसेन चरित्रे पितृ मेलण पूर्व भव कथा श्रवण दान देव पूजा करण दीक्षा ग्रहण । पचम देवलोका गमन शीव गमन लक्षणो नाम तृतीय खड सम्पूरण । मिति जेठ वदे ९ सवत् १८६५ का लिपतइ सवाइ जयपुर मध्ये श्री श्री श्री श्री एक सो आठ श्री श्री माहामत्या जी श्री श्री लाछा जी मोटी सती छ, गुणवन छ, गुणा का भडार छ प्रनकाभइ की छ, पेम्या का आगर, गुण का गार, मतोपवत धीरजवत गजहस्ती नी परे विचरो, सूर्य जमा तेजवत, भवइ, जीवा ना तारणहार, गुरणी जी री सेवाग, आज्ञाकारी गगाजी मया लीपत, सभव कल्लामसतु श्री ।

(७) आनद श्रावक संधि —क्र ५१, ग्र० ७४९, पु० २४/१६ ग्रथकार श्रीसार तथा लिपिकार ऋषि टीकम की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) पुहकरणी नयरी अति दीपता, श्रावक चतुर सुजाण ।
आदीसर जिणवर सु पसाउ लै, राज प्रजा कल्याण ॥
४ ८ ६ १ = १६८४
संवत दिसा सिधि रस ससि तिपुरी मे कीधो चोमास ।
ए सम्बन्ध कीयो रलायामणौ, सूणता थाय उलास ॥

रतनहरष वाचक गुरू साहरो, हेमनंदन सुपकार ।
हेमकीरत गुरू बांधव नें कहनें, पभणें मुनि श्रीसार ।।

इति श्री आणद श्रावक सधि ।। सम्पूर्ण ।।

(ख) ऋ० टीकमदास रायपुर मध्ये । सवत १८ ।। सामीजी श्री श्री १०८ श्री श्री धीरजमलजी सामीजी श्री श्री १०८ श्री श्री मोजीरामजी तत सीप ऋप टीकमदास रायपुर मध्ये ।। सवत् १८८१ काती वद १३।। बुधवार छै ।। कीलयाणमस्तु ।।छ श्री।।

(८) आषाढ भूति जी री चौपई :—क्र. ५७, ग्रं० २५६, पु० १३/१५, ग्रथकार ज्ञानसागर की प्र० ।

प्रशस्ति :—अचल गछ गिरुआ गछनायक, श्री गुणरतन सूरिंदो रे ।
तास पाट आचार सूरीवर, श्री क्षिमासागर मुणिंदो रे ।। ६ ।।
श्री गजसागर सुरि तणा शिष्य, ललित सागर वृद्धि सोहे रे ।
तास सीस मुनि माणिक्यसागर, मुझ गुरु भवि मन मोहे रे ।। ७ ।।
एते गुरू नो सुपसाय लही नें, आषाढभूति ऋषि गायो रे ।
ऋषभदेव ने सघ ने सांनिधि, सरस संबध स थायो रे ।। ८ ।।
श्री वक्तापुरी गांम मा, सवत सतर चउवीसै रे ।
पोष कृष्ण द्वितीया पुष्यारक, सिद्धि योगसु जगीसेरे ।। ९ ।।
कीधो प्रत्यक्षर गणि, ग्रंथागर नो मानो रे ।
एकावन त्रिणसै लषयो, चित राषीया तोरे ।। १० ।।
सोलमी ढाल धन्यासीइं, पूरण चढी प्रमाणो रे ।
न्यानसागर कहे संघ ने, नित होज्यो परम कल्याणो रे ।। ११ ।।
इति आषाढ भूत चोपइ सपूरण । लीपत उदी, समत १६ साल वीस की ।।

(९) उत्तमकंवर की चौपई :—क्र० ६४, ग्र० २७, पु० ३/८, ग्रथकार तत्त्वहंस व लिपिकार छगना की प्र० ।

प्रशस्ति (क) समत सतर इगतीसा नो काती, सुद तेरस दिन सार रे ।
सिद्धि जोग कीयो रास सपूरण, सुभ नषतर दिन बार रे ।। १६ ।।
मटांहुडनर मा सरस संबधए, तत्त्वहंस कह्यो मन रगै ।
धन्यासी री मां ढाल एकावनमी, सुणज्यो सऊ मन रंगै रै ।। १७ ।।
सरव गाथा १२४४ । गरथागरथ सलोक सख्या १६३६ । इति श्री उत्तमकुमर ऋप चोपइ समापत ।

(ख) समत उगणीस सातरा, मीगसर सुद बीज बीसपतवार मासत्याजी महाराज श्री श्री श्री १००८ श्री श्री कुंनणाजी मासत्याजी री तत सीपणी श्री श्री १०८ श्री श्री दलुजी मासत्याजी री तत सिपणी छगनाजी कीसनगढ़ मध्ये सपूरण । श्री रसतु कल्याणमसतु ।

गुणवंता ना गुण भणतां सुणता रिध सीद्धी घरे थाय रे ।। ११ ।।
मतिनाथ सवामी मु पमाई ।।

(१०) ऋषभ चरित्र :—क्रमाक ८१, ग्र० ४४, पु० ४/४, ग्रथकार रायचन्द तथा लिपिकार नगाजी की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति :—(क) पूज जैमल जी रे प्रसाद थी रेला, चीरत किधो रिष रायचंद ।
सेतालिसमी ढाल सुहावणी रेला, सम्पूर्ण हुवी सरव सम्बन्ध ।। १३ ।।
समत अठारे चालिस मे रेला, ए कीधो आसोज मास अभास ।
सुद्ध पाचम सम्पूर्ण कीयो रेला, पून्य जोग पीपाड़ चोमास ।। १४ ।।
रिषभ चोरत्र चित नोरमल रेला, सुणजो मन हुलास ।
सुष सपत साता उपजै रेला, पामै इवचल लील वीलास ।। १५ ।।

कलस लिषते —श्री नाभ नंनण, जगत वदण, सोवन वरण सुहावणो ।
नैण दीठो लाग मिठो, प्रभू सदा भाग सुहावणो ।। १ ।।
श्री आदेसर जपै कर्म कपै, निरित रहे नित रग रली ।
प्रभू आणद पूरै, धिता चूरै, जाण मन मान्या या साठली ।। २ ।।
ए रिषभ चीत्र कीधो, मै इमरत पीधो, मुज हीवडो ।
हरषो अंतघणो ।। ३ ।।
तंन मन मोनै, सुणियां कांनै, सषरी संतालिसमी ढाल ए ।
मूझ बुद्ध प्रमाण ग्रिथ गुथौ, रिषभ चरत्र टंकसाल ए ।। ४ ।।

(ख) श्री श्री श्री समत १८ स ४२ का लिखतु महासत्याजी श्री श्री श्री श्री चत्राजी की तत शिषणी श्री श्री श्री चनणाजी श्री श्री महासत्याजी कै श्री चत्राजी की तत सीषणी नगा लिषतू जपूर मधे ।।

(११) ऋषिदत्ता रास :—क ८२, ग्र० १०२५, पु० ३१/८, ग्रथकार जयवतसूरि की प्र० ।

प्रशस्ति :—वड तप गछि साह करुहा, श्री विनयमंडन गुरुराय ।
रत्न त्रय आराधताहा, जजगि धरम सुहाय ।।
जजगि धरम सहाय गुण कर, सुविहि तनइ धुर कीध ।
तस सीस गुण सोभाग सुनामई, जयवत सूर प्रसिद्ध ।।
तणइं रसिक जनाग्रह जाणी, विरच्युं सती सु चरित्र ।
उत्तम जन गुण सुणतां भणता, हुई जनम पवित्र ।।
सवत् सोल माहा मण हो, त्रितालु उदार ।
मगसिर सुदि चौदसि दिनि, इंहा दीपतु रविवार ।।
दीपतु रविवार सुराहिणि, ससि वरतइ वष रासिइं ।
ए ऋषिदत्ता चरित्र वषाणिइ, जयवंत उल्हासि ।।

न्यून अधिक ज हूई आगम थी, मिछा दुक्कड ताम ।
कविता वक्ता श्रोता जननी, फलज्या दिनि दिनि आस ।।
इति श्री ऋषिदत्ता रासि सपूर्णम् ।

(१२) कानड कठियारा चरित्र :—क्र० १०६, ग्र० २४६४, पु० ६३/८८, ग्रन्थकार मानसागर की प्र० ।

प्रशस्ति :—सतरै सै सैतालीये समै, तीहां कीधी चोमास ।
सदगुरु ना प्रसाद थी, पूगी मन नी आस ।। ८ ।।
श्री तपगछ गुराजीयो, श्री विजैय प्रभु सुरिंद ।
तस पट्ट गगन दिवाकरु, श्री विजयरतन गुणिंद ।। ६ ।।
तस गछ मे महिमानिलो, श्री जयसागर उवझाय ।
तास सीस सोभा करू, जीतसागर गणि राय ।। १० ।।
मानसागर सुख संपदा, जीतसागर ण सीस ।
साधु तणा गावतां, पूगी मनह जगीस ।। ११ ।।
नवमी ढाल सुंहामणी, गोडी राग सुरग ।
मानसागर कहै साभलौ, दिन दिन वधतै रग ।। १२ ।।

इति श्री सील विपय कानड कठीया रा री चउपई सपूर्ण ।।

(१३) क्षुल्लकुमार की चौपई :—क्र० १४५, ग्र० ५८८/१, पु० १६/२० ग्रंथकार जयसोम की प्र० ।

६ ४ ६ १
प्रशस्ति :—रस वारिधि रस ससिहर वरसइ ।
वीकानयर नयर मन हरसइ ।।
श्री जिनचंद्र सूरि गुरू राजइ ।
एहवि चार भण्यो हित काजइ ।। ७१ ।।
प्रमोदमाणिक्य गणि सहगुरू सीस ।
गणि जयसोम कहइ सु जगीस ।।
आदीसर सुर तरु सुपसाइं ।
एह भणंता सवि सुष थाइ ।। ७२ ।।

(१४) गुणकरंड गुणावली :—क्र० १७६, ग्र० ४१, पु० ४/१, ग्रंथकार ऋषि दीप की प्र० ।

प्रशस्ति :—सवत सत्रसतावन वरसै, दूसरा वार दिवसैजी ।
सरस समंध कह्यो मन सरसै, सूंणियां भविजन हरसैजी ।। ६ ।।
गिरुउ गछ गुजरातो गाजै, वसुधा पीठ दिराजै जी ।
धर सगली जांणै धनराजै, इधकी जस आवाजै जी ।।१०।।

तस पाटे श्री पूज्य चितामण दीपे, जेहो दिनमणी जी ।
आचार्य उदवंत षेमकरणजी, दोलित ह्वैत स दरसणजो ।। ११ ।।
साषा ताम तणी जिहां सुन्दर, बड़ साषा जिम विसतरैं जी ।
मोटा गुण आगर बहु मुनिवर, रिथ चितना निगधेवरजी ।। १२ ।।
निरमल गुंण भरिया बहु ग्यान, मुनिवर श्री व्रधमान जी ।
शिष तेहना ऋषि दीप सुं ग्यान, धरै सदा गुण ध्यान जी ।। १३ ।।
गुण गिरूवा राजे इम गावै, पग २ नव निध पावै जी ।
अवर लब्धुध त्या घट मै आवै, थिर सपत जस थावै जी ।। १४ ।।

गुण करड गुणावलि गाया । सर्व गाथा ६०३।। इति श्री गुण करड गुणावली सम्पूर्ण ।।

(१५) गुणावली चउपई :—क्र. १०७,ग्र० ३५, पु० ३/१६, ग्रथकार ऋषि दीप की प्र० ।

प्रशस्ति (क) :—सवत सतरे सतावन वरसे, दसराहा रै दिवसै जी ।
सरस सम्बन्ध कह्यो मन सरसै, सुणीयां भविजन हरसेजी ।। ६ ।।
गिरूवो गछ गुजराती गाजै, बसुधा पीठ विराजे जी ।
घर सगली जाणें धरराज, इधकी जस आवाज जी ।। १० ।।
तस पाटै श्री पूज्य चितामण दीपै, जेहो दिनमण जी ।
आचार्यज उदयवंत षेमकर्ण, दौलत दैत सुदरसणजी ।। ११ ।।
शाषा तांस तणी जिहां सुन्दर, वड शाखा जिम विस्तरजी ।
मोटा गुण आगर बहू मुनिवर, थिर चित्तनां नग थिवर जी ।। १२ ।।
निरमल गुण भरीया बहू ग्यानें, मुनिवर श्री वृद्धमानें जी ।
शिष्य तेहना ऋषि दीप सुग्यांन, धरै सदा गुणध्यान जी ।। १३ ।।
गुण गिरूवां राजे इम गावे, पग २ नवनिध पावै जी ।
अविरल बुध तां घट मे आवै, थिर संपत जस थावै जी ।। १४ ।।

(ख) इति श्री गुणावली चउपई सपूर्णम् । सवत् १६३६ मिति ज्येष्ठ कृष्णा द्वितीया २ तिथो । लिपित ऋषि चुन्नीलालेन । ग्राम आवोरी, दक्षण देशे । स्वात्माय वाचनार्थं लिषनीय ।।श्री।।

(१६) चदचरित्र :—क्र० १६१, ग्र० १७, पु० २/७, ग्रथकार मोहनविजय व लिपिकार मुनि फतेचन्द की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) तप गछ नायक गुण गण नायक, विजय सेन सुरिंदा जी ।
प्रतिवोध्यो जिणै दिल्ली पति, अकबर साह भूमिंदा जी ।। १६ ।।

तास चरण सुत पत्र सु मधुकर, कीर्तिविजय उवभाया जी ।
तास सीस कविकुलमुख मंडण, मानविजये कविराया जी ।। १७ ।।

तस पद सेवक मति श्रुति सागर, लब्धि प्रतिष्ठ कहाया जी ।
पडित रूपविजय गणि गिरुश्रा, दिन दिन सुजस सवाया जी ।। १८ ।।

तेहनै वालकै मोहन विजयै, अठोत्तर सौ ढाले जी ।
गायौ चद चरित्र सुरगो, चरित्र वचन परनाले जी ।। १९ ।।

३ ८ १७ = १७८३

कीधौ चोथौ उल्लास सम्पूरण, गुण वसु संयम वर्षेजी ।
पौष मास सीत पचमी दीवसै, तेणीज वारै हर्षे जी ।। २० ।।

राजनगरे चोमासौ करि नै, गायो चद चरित्र जी ।
श्रवण देई श्रोता सांभलिस्यै, थास्यै तेह पवित्र जी ।। २१ ।।

जो कोइ भण सै गुण सै सुण सै, तस घर मगल माला जी ।
दिन दिन वधते २ थास्यै, निर्मल कीर्ति विसाला जी ।। २२ ।।

अधिको उछुं जेह कहवाणुं, मिछामि दुक्कड तैहे जी ।
ध्रुव जिम अचल होज्यौ धरणीतल, चद तणा गुण एहैजी ।। २३ ।।

कलश :—ए चरित्र सागर हुति निपि जतन सुर गिरि आचरचो ।
चंद नृप सम्बन्ध शशी जिम, अति प्रभाकर उद्धरचौ ।।
श्री विजयक्षेम सुरिंद राजै, करि परम गुरु वदना ।
कवि रूपसेवक मोहनविजयै, वर्णव्या गुण चंदना ।। १ ।।

(ख) इति श्री मोहन विजय विरचिने चद चरित्रे प्राकृत प्रबंधे चद प्रकट ।।१।। वीरमति वध आभागमन २।। सयम ग्रहण ३।। शिवपद प्राप्ति ।।४।। रूपाभि वस्तुभि कलाभि समर्थोय इय चतुर्थोल्लास सम्पूर्णम् ।। स. १८७१ मीती मीघसर सुद प्रतिपदाय सोमवासरे लि० फतेचद गुजराति लुकागछे प्रवर्ते प्रेमचदजी को सीष्य फतेचद लिपिकृता कृष्णगढ नगरे । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।।श्री गणेशायनम , श्री गुरुभ्योनम. । ग्रथाग्रथ हजार ४०० ।

(१७) चन्द चरित्रं :—क्र० १९२, ग्रं ४९, पु० ४/९, ग्रथकार मोहनविजय व लिपिकार रूपविजय की प्र० ।

प्रशस्ति (क) तपगछ नायक गुण गण वायक, श्री विजैसेन सूरिंदाजी ।
प्रतिबोध्यो जिणै दिल्लीपति, अकबर साह भूमींदाजी ।। १६ ।।

तास चरण शत पत्र मधुकर, कीर्ति विजय उवभाया जी ।
तास सीस कवि कुल मुख मंडन, मानविजय कविराया जी ।। १७ ।।

तस पद सेवक मति श्रुति सागर, लब्ध प्रतिष्ठ कहाया जी ।
पडित रूपविजय गणि गिरुश्रा, दिन दिन सुयस सवायाजी ।। १८ ।।

तेहनै बालकै मोहन विजयै, अठोत्तर सो ढालैजी ।
गायो चद चरित्र सुरंगो, चरित्र वचन परिमैलैजी ।। १९ ।।

कीधो चोथऊ उल्लास सम्पूरण, गुण वसु सयम वर्षे जी ।
पोस मास शित पचमी दिवसै, तरणीज वारै हर्षे जी ।। २० ।।

राजनगरै चोमासु करिने, गायो चद चरित्रोजी ।
श्रवण देईन श्रोता साभलस्यै, थास्यै तेह पवित्रोजी ।। २१ ।।

श्रधिको उछुं जेह कहवाणु, मिछामदुक्कड होज्योजी ।
ध्रुव जिम श्रचल होज्यो धरणी, चंद तणा गुण कहज्योजी ।। २२ ।।

कलश : ए चरित्र सागर हुती निरखी यतनै सुरगिरि श्रावस्यो ।
चद नृपति संबंध शशी जिम, श्रति प्रभाकर उद्वस्यो ।।
श्री विजयक्षमा सूरिंद राजे, परम गुरू नै वदना ।
कवि रूपसेवक मोहनविजयै, वर्णव्या गुण चदना ।।

(ख) इति श्री मोहना विजय विरचिते चद चरित्रे प्राकृत वधे चद प्रकटन ।।१।। वीरमती वधा श्रागमन २, मयम ग्रहण ३, शिव पद प्राप्ति रूपाभि ४ श्चउभि कलाभि समद्यो चतुर्थेल्लाम सपूर्ण ।।श्री।। सवत् १८५८ । वर्षे शाके १७२३ प्र० मीति वैशाष सुध पचमीनी ५ सनीवासरे दीवसे । लीपत रूपविजे जनगर मध ।

(१८) चन्द्रलेहा चतुष्पदी :—क्र० २११, ग्र० १३८, पु० ६/३ ग्रथकार मतिकुशल की प्र० ।

प्रशस्ति :—सवत १७२८ सिधी वर मुनिससीजी, वदो श्रासू दशम रविवार ।
श्री पचीयाक मे श्रूपस्यू जी, एह भण्यो श्रधिकार ।। १२ ।।
खरतर गछ पति सुख करु जी, श्री जिनचद सूरिद ।
वड जिम वधती साषा षेममैजी, जानू रजनोस दिणद ।। १३ ।।
सुगुण थी श्री सुगुण कीरति गुणो जी, वाचक पदवी धरत ।
श्रतेवासीय चिर जुरै जयोजी, मतिवल्लभ महत ।। १४ ।।

प्रथम तसु सीस श्रति प्रेमस्युं जी, मतिकुशल कहै एम ।
सामायक मन सुद्ध करो जी, जय वरो चदलेहा जेम ।। १५ ।।
रतनवलभ गुरू सानिधैजी, ए कीयो प्रथम श्रभ्यास ।
छसै चउवीस गाहा श्रछे जी, इगुणत्रीस ढाल रसाल ।। १६ ।।
भणै गुणै सुणै भाव सु जी, गिरुश्रा तणा गुण जेह ।
मन सुधी जिन धर्म जे करे जी, त्रीभुवन पति हुवै तेह ।। १७ ।।

इति श्री चदलेहा सामायक विपय चदलेहा चतुष्पदी सम्पूर्ण । १७४६ वा जेठ वः तेरस शुक्रवार लिक्षतु नगा जेपुर मधे ।

(१६) चम्पक चरित्र :—क० २१७, ग्र० ७४८, पु० २४/१५ ग्रथकार चौथमल व लिपिकार रतनकुवर की प्र० ।

प्रशस्ति (क) गणनायक हुकमीचद मूनीसर, किरत जगमे जहारी ।
वेल वेल किया पारना, सूरविर आचारी ॥ २५४ ॥

तस पाटानूपाट सोभता, तीजे पद गूण घारी ।
मन्नालाल जी नाम आपका, सीतल ससी अनुहारी ॥ २५५ ॥

तस आज्ञापालक गुरुवर्य मम, हीरालाल जी गूण किना ।
होई मेहर माता केसर की, जव गरु संजम दीना ॥ २५६ ॥

सालडी वयासी सहर सादड़ी, मारवाड के माईं ।
चौथमल ने जोड ढाल यहो, सरवण मास मे गाई ॥ २५७ ॥

(ख) इति चपक चरीत्र समाप्ता । स० १६८६ का साल । लखी रतनकुवरजी । जनतकुवर जी के नेसराई की पडत छती ई । समत १६८६ की साल गढी टोक मधे ॥

(२०) चारुई प्रतिवोध्या नी चौपी :—क० २२५, ग्रं० ४०, पु० ३/२१, ग्रथकार समयसुन्दर व लिपिकार आर्या छगना की प्र० ।

प्रशस्ति (क) सोलसे पेसठ समे ए, जेठ मास म दिन सार ।
चोथो खड पुरो थयो ए, आगरा नगर मझार ॥ ४ ॥

वीमल नाव सुपसोलै, सालीध कुसल सुरींद ।
च्यार खड पुरा थया ए, पाम्यो प्रमाणंद ॥ ५ ॥

देस प्रदेस दीपताए, नागड गोतर सीणगार ।
श्री सघ भार धुरधरू ए, उदयवत प्रीवार ॥ ६ ॥

सारू साह गुणे भला ए, सघनायक सु बीचार ।
तेह तणो आगार करी ए, कीधो ग्रथ अपार ॥ ७ ॥
श्री षरत्र गछै राजीयाए, जुगे प्रधांन जीणेचद ।
श्री जीनसंघ सरूपसुरी ए, चीर प्रतमो रविचंद ॥ ८ ॥

प्रथम सीष्य श्रीपुजनाए, सकलचद गुणींद ।
तास सीष्य वाचक भणेए, समयसुन्दर अणंद ॥ ६ ॥
च्यारे प्रतेक बुधना ए, ए च्यार ही खड ।
च्यार खड बिसतरो ए, ज्यां रवि तेज अखड ॥ १० ॥

सांभलता सुख सदा ए, भणता अधिक ऊलास ।
गीरवां रा गुण गावता ए, आण'द लील वीलास ॥ ११ ॥

(ख) इति श्री च्यारुड प्रतवोध्यानी चोपी सपुरण । समत् १६०० वरस १२ का काती वदी ७ वीसपतवार मासत्याजी श्री श्री १०८ श्री श्री दलुजी नाराज प्रसादे लीपतु छगना कीसनगढ मधे

(२१) चित्रसेन पद्मावती कथा ।—क्र० २२८, ग्र० १५६१, पु० ४०/११, लिपिकार हृदयराम की प्र० ।

प्रशस्ति :—इति श्री चित्रासन पद्मावती कथा सम्पूर्ण । सवत १७६६ वर्षे शाके १६३४ प्रवर्त्तमाने माद्रपद माहे सुभे कृष्ण पक्षे ६ तिथौ गुरुवासरे मृगसिर नक्षित्रे । योगे श्री विजयगछे श्री पुज श्री १०८ कल्याणसागर सूरजी ऋषि श्री वछराज जी तत् शिष्य ऋषि श्री गोविन्दजी तत् शिष्य ऋषि हरदयराम । इद पुस्तक लिपत ।। श्रीरस्तु ।। कल्याणमस्तु ।। श्री श्री । श्री । श्री । श्री उदयपुर नग्रात् ।

(२२) चित्रसेन पद्मावती चतुष्पद —क्र० २२६, ग्र०. ६२, पु० ४/२२, ग्रथकार रामविजय व लिपिकार उमा की प्र० ।

प्रशस्ति (क) अट्ठारह सौ उपरि वरसे, चवदौतर वहंत ।
पोस मास सुदी दसमि तर्ण दिन, रास रच्यौ मनषतै ।। ४ ।।
श्री जिन लाभ सूरीसर राजै, षरतर गछ वड भागी ।
पेम साष श्री शातिहरष सिष, श्री जिनहरष वैरागी ।। ५ ।।
तास सीस वाचक सुषवरधन, कलानिधान कहीया ।
तास सीस वर्णारसपदधर, श्री दयासिंघ मुनिराया ।। ६ ।।
तासु चरण रजकण सुपासाये, सरसति सु निजरि पाई ।
रामविजै उवभाय ए चोपई, वीकानेर वर्णाई ।। ७ ।।
पंडित चतुर साधुजण पेरण, ए उद्यम उपजायौ ।
ए संबंध सुणावौ, गावौ, ल्यौ सोभाग सवायौ ।। ८ ।।

सर्वगाथा ४६५ । इति श्री दानवर्मनुमोदनाधिकारि चित्रसेण पद्मावती चतुपदी समाप्ता ।'

(ख) सवत १८ वरस तेतरे ७३ आसोज वद इग्यारस दिन वार शुकरवार आरज्याजी श्री श्री माहमत्याजी श्री १०८ श्री ग्यानाजी री ततसीषणी उमा लिख्यता ।

(२३) चित्रसेण पद्मावती चरित्रः— क्र० २३१, ग्र० १०४२ पु० ३१/२५, ग्रथकार रामविजय व लिपिकार पन्नाजी आर्या की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) अठारह सौ ऊपरि वरसे, चवदोतर वहन ।
पोस मासु सुदै दसमि तरौ दिन, रास रच्यो मन घनै ॥ ४ ॥
श्री जिनलाभ सुरासर राजै, षरतरगछ वडभागी ।
षेम साष श्रीसांति हरष सिष्य, श्री जिन हरष विरागी ॥ ५ ॥
तास सीस वाचक सुषवरधन, कला निधान कहीया ।
तास सीस वरण रस पद धर, श्री दियासिंघ मुनिराया ॥ ६ ॥
तासु चरण रज कण सुपासाथै, सरमति सुनिजरि पाई ।
रामविजै उवझाय ए चौपई, बीकानेर वणाइ ॥ ७ ॥
पंडित चतुर साधु जण पेरण, ए उद्यम उजायौ ।
ए सवध सुणावौ गावौ, लहौ सौभाग सवायौ ॥ ८ ॥

(ख) सरव गाथा ॥४६५॥ इति श्री दानधरमानुमोदनाविचार त्रिजनेण पदमाव ी सपूरण ।
काती बुद नौ । समत १८६८ कातीग बु नोमी वार बीसपतवार । लीपतु आरज्या जी
श्री श्री श्री श्री सतोषा जी की चेली पना आरज्या । अलवर मराज वगतावरसिंघ जी
को छ जी लिपतु अलवर मजी वाचवा वाला चरजीरवो करो जी क ।

(२४) जामवती की चौपई —कु. २७८, ग्र० १८६६, पु० ४६/३६ लि० रतना की प्रग० ।
प्रशस्ति :—इति श्री जामवती चोपई समातो १८५२ मारोट म लीपतु श्री श्री आरजाजी बालाजी
श्री श्री महसत्यजी श्री लाछा जी की तत सीषणी रतना लीपतु ।

(२५) झाझरिया मुनि की सज्झाय :—क्र. २६४, ग्र. १८६४, पु० ४६/३४ ग्रथकार भावरतन व
लिपिकार शिव रतन जी की प्र० ।

प्रशस्ति क) संवत्सर छपन्नां केरी, आषाढ वदि बीज सोहै ।
सोमवार समझाय ए कीधी, सांभलतां मन मोहै ॥ १० ॥
श्री पूनिमगच्छराज विराजै, महिमाप्रभ सूरिंद ।
भावरतन सीस भणै इम, सांभलतां आणंद ॥ ११ ॥

(ख) इति श्री झाझरिया रिष नी सिझाय सपूर्णम् । स १८७२ शाके १७३७ प्रवर्त्तमाने
मिति वैशाष वदि ४ गुरुवारे लिखि रतनचद्रेण मुनि ना श्री कृष्णगढ मध्ये सु पभूया
सू आर्या पठनार्थम् ।

(२६) ढालसागर (हरिवंश प्रबन्ध) —क्र० २६८, ग्र० १८, पु० २/८ ग्रंथकार गुणसागर व लिपिकार
आर्या छगना की प्र० ।

प्रशस्ति (क) गछी सब गछी प्रगमसु रे, वीजयवंत वीसेस ।
श्री वीजय गछ राजीया कांइ दिपै रे, गुर धरम सनेह ॥ १२ ॥
विजय रिख विद्या वलै रे, धरमदास मुनीस ।

षिम्या सागर षेम जी कांइ तेह ने रे, जग मांहि जगीस ॥ १३ ॥
पदम सागर सुर सुरजी रे, सुजस जस भरपुर ।
पाय परणमी प्रभू तणा काइ एम भणै रे, गुंण सागर सुर ॥ १४ ॥
सवछर छिहंतरै रे, मास सांवण सुध ।
तीथ सोम समुंतरा कांइ, वारस रे वारूं अविरुध ॥ १५ ॥
कुरकटेसवर नगर मै रे, पास सांम पसाय ।
संघ नै ओछक पणै कांइ, रचीयो रे चरित सुभाय ॥ १६ ॥
ढाल सागर नांम श्री, श्री हरीवंस नो वीसतार ।
सु पर भावे जे साभलै काइ पांम रे सुख सपत सार ॥ १७ ॥
एक सो एककावनेरे, ढाल सो सो भाग ।
आदि तो आसावरी काइ, अत रै रे धन्यासी राग ॥ १८ ॥
जव लगै गिर मेर जी रे, सगला गीरवर इस ।
तव लगे हरीवंस ए काइ, थाज्योरे थीर वीसवावीस ॥ १९ ॥

कलस :—हरी वंस गायो, सुजस पायो, ज्ञान बुध परकास नो ।
पाप त्राठो, गयो नाठो, पुन्य आयो आसनो ॥ २० ॥
करण पुत्र कलत्र कमला, पढत सुंणत सोहांमणो ।
पूज्य श्री गुंण सुरी जंपै, संघ रंग बधामणो ॥ २१ ॥

(ख) इती श्री ढालमागर हरीवस परवधे नवमोधिकार सपुरण ॥ ९ ॥ गरथागरथ सलोकाक्षर प्रमाण ५७९१ जेय ॥ श्री रसतु: सुभ भवतु॰ आरज्याजी माराज श्री श्री १००८ श्री श्री कुनणा जी महाराज री तत सीपणी दलुजी मासत्याजी तत सीषणी लीपतु **छगना** समत १९ वरस ६ असाढ वद ४ अदीतवार लीपतु कीसनगढ मधै रामचदरस्य हेत वै लेखक पाठक चीरजीयात् सुभ श्रेयण परत जयणा सू वाचज्यो इती सपुरण कीधी ।

(२७) ढाल सागर (हरिवंश)—क्र० २९९, ग्र. ११९, पु० ८/१, ग्रथकार गुणसूरिसागर की प्र० ।

प्रशस्ति :–गछ खछ प्रणांम सूं रे, विजयवंत विसेस ।
श्री विजय गछ राजीया, कांई दीपै रे गुरू धर्म नरेस ॥ २५ ॥
विजय ऋषि विद्या वली रे, धर्मदाम मुनीस ।
क्षिमा सागर षेमजी कांई, जेह नी रे जग मांहि जगीस ॥ २६ ॥
पद्म सागर सूरिजीरे, सुयश जस भरपूर ।
पाय प्रणामी प्रभु तणा, कांई प्रभणइ रे गुणसागर सूरि ॥ २७ ॥
संवछर छहतरै रै, मास सावण सुद तीज ।

सोम समुत्तरा कांई वासर रे, वारू अविरुध ॥ २८ ॥

कुरकटेश्वर नगर मइरे, पास स्वामि पसायें ।
सघ नइ उछक पगइ, कांइ, रचीयोरे मइ चरित सुभायें ॥ २९ ॥

ढाल सागर नांम, श्री हरिवंश नो विस्तार ।
सुघ भावइ सांभलइ, कांई, पामइ रे सुख संपत्ति सार ॥ ३० ॥

एक सौ एकावनइरे, ढालनो सोभाग ।
आदि तो आशावरी कांई, अंतइरे धन्यासी राग ॥ ३१ ॥

लव लगइ गिरि मेरू जी रे, सकल गिरवर इस ।
तव लगइ हरिवंश ए, कांइ, थाज्यो रे थिर विस्वावीस ॥ ३२ ॥

कलस :—हरवंस गायो सुख पाया, ज्ञान वृधि प्रकाशनउ ।
पाप त्राठो गयो नाठउ, पुन्य आयो आसनउ ॥
करण पुत्र कलत्र कमला, पढ़त सुणत सुहामणउ ।
पूज्य श्री गुण सूरि जपइ, संघ रग वधामणउ ॥ ३३ ॥

इति श्री गुण सूरि सागर कृत ढाल सागर समाप्तः सवत १८६३ मिति वैसाख वदि ७ वीसपतवार लि० ।

(२८) देवराज वछराज की चौपाई —क्र० ३५०, ग्र० १६६ पु०११/८ ग्रन्थकार सुमतिवल्लभ की प्र० ।

प्रशस्ति —सवत सतरै गुणतीसै गुरुवार रे, मासी काती मन रंग ।
रतन वद्दत भ गुरू सांनिधकारी कीधी चौपई रे, दीवाली दिन रंग ॥
राजे श्री जिनचंद सूर सूरि सरै रे, खरतर गछ सुर वृक्ष सोहै ।
तेहनी मोटी साखा खेमनी रे, पुण्य फल देण प्रतक्ष ।
सुगुण कीरति कीरति सुगुणां मुख जगत मैं रे, वाचक पदवी धार ।
मतिवलभ गणि सिष्य सुमतिवलभयौरे, गुण त्रय रतन मंभार ॥
अंतेवासी तासु उछ कथइ व छनौरे, एह रच्यौ अधिकार ।
मतकुसल गुरुआं गुण मन रंगसु रे, जपतां जय जयकार ॥
पास जिणंद तणै सुपसायैं, रच्यो रे, तलवाडै ए चरित्र ।
भणंता गुणता सुणतां भाव सूं रे, मानव जनम पवित्र ॥
चमतकार तणी चतुरा चौपई रे, पैंतालीस ढाल प्रधान ।
नवसै चौसठ गाहा छै इण चौपीयै रे, सुणतां सदा छै कल्याण ।
घन घन सूधौ साधु नमो वछराजजी रे ॥

इति श्री वछराज रिपि चौपई समाप्त ॥

(२९) धन्ना जी की सज्झाय —क्र० ३७८, ग्र० १४५३, पु० ३८/२३, ग्रन्थकार रिख विनयचन्द की प्र० ।

प्रशस्ति :—मन होत घर बहू दुष निकंदू, अनोपचंद गुर राया।
धन धनो मुनिवर सदा सुष कर, विनयेचंद गुण गाया।
इति धना की गिझाय सपूर्णः सम्वत् १८६२ आसोज सुद १

(३०) धर्मबुद्धि चतुष्पदी :—क्र० ३६२, ग्र० ४६, पु० ४/६, ग्रन्थकार लाभवर्धन की प्रश०।

प्रशस्ति :—सवत सतरै बैतीलीसै, सरसै हरकरी।
गुणतालीस कही गुणवंती, सरस ढाल सुथरी ।।४।।
श्री जिनचद सुरस्वरक, षरतर गछपति।
तासु विजय राजै ए चौपइ, ढाल कही निरती ।।५।।
श्री खेमसाखै गुणवर धन गणि, जाणे सकल जती।
वचन सिद्ध गुणवर वणारसी, माने छत्रपती ।।६।।
सिप्य तासु श्री सोमवणा रस, सोभागी सो सती।
तास विनय श्री सातिहरष गणि, वाचक वड वषती ।।७।।
तास सीस नामै लाभवरधन, एह प्रबध कहै।
निरस छै तो पिण गुणियण जना हित, कर तुरत ग्रहै ।।८।।
भणै भणावै गाइ सुणावै, कहिवा मन उमाहै।
लालचंद नवनिधि रिधितसु गृह, सिव सुखसुजस लहै ।।६।।
सर्वगाथा ५३५ ।। इति धरम विषये धर्म बुद्धि चतुर्पदी समाप्त ।सवत १६३२ मित मगसर बुदी ११ मगलवार । श्री श्री

(३१) धर्मसेन चोपाई :—क्र० ३६६, ग्र० १०३६, पु० ३१/२२, ग्रन्थकार यशोलाभ व लिपिकार ज्ञानाजी आर्या की प्रशस्ति।

प्रशस्ति (क) संवत सतरह सै चालीसै, जठ सुदि तेरस दिवसै।
सुपास तणौ दिव्या दिन उछव, सुरनर करे महोछवे।
तापासर जिन भुवन विराजे, अजित साति जिनराजै।
षरतरगछ सुरतरु सम सोहै, दांन अमृत फल मोहै ।।६।।
गछ चौरासी सिर रवि छाजै, सुरि जिनचद बिराजै।
तसु राजै मई चरित्र ए रचियौ, साधु गुणे मन मचीयो ।।७।।
सागर चन्द्रनी साष उदारा, साधु बड़ा गुण धारावै।
वाचक पदवी पाट विराजइ, समयकलस गुरु छाजै ।।८।।
सुष निधान वाचक पद धारा, गुणमणी रतन भंडारा।
तास सीस गुणे करि सोहै, भविक जीव पडिवोहै ।।६।।

श्री गुणसेन विद्या भंडारा, पर उपगारी उदारा।
तास सीस चरित ए भाष्यो, जादव हीड मैं दाष्यो ॥१०॥

नेमिसर नै माधव पुछयो, भणतां गुणता सव सुख पावै।
आलिय विघन दूरि जावै ॥११॥

यसो लाभ साधु गुण गावइं, मन वंछित फल पावै।
सकल सघ ने आणंद कारी, मंगल माला जयकारी ॥१२॥

(ख) इति श्री दानाधिकारे धरमसेण चोपई संपुरण: संवत १८ स तेरमेट को फगण व्रुधि तेरसे वार सुकरवार जपुर मध्य श्री श्री महासती श्री श्री जैतां जी को तत सीषणी श्री संतोषा जी की तत सिषणी लिपतं ज्ञाना अरज्या। सुभ मुभ वाचण वाला चेर जीवा जो।

(३२) नरमदा सती नी चौपाई : क्र० ४१६ ग्रं १४६, पु ६/१४ ग्रंथकार रायचन्द व लिपिकार नगाजी की प्रशस्ति।

प्रशस्ति (क) सील उपदेस माला ग्रिंथ में ए, तिण माहे वीसतारज भाषक।
रिख रायचन्दजी जोडी जुगतेसु ए, लेइ ग्रीथ नी साषेक ॥६॥

पूज बूधर जी हूवा दीपता ए, जांरे पूज जेमलजी हूवा पाट।
तिके पूं उपगारी पुन्य आतमीए, जा कीया उपगार रा ठाट ॥१०॥

ए नरवदा सती नी चोपइ ऐ, मे जोडी जांरे प्रसाद।
गुण गुण्यासी भराए, सुगतां लागै स्वाद ॥११॥

ए अठावीसमी ढाल सुहावणी ए, सुमूहूतो सम्पूर्ण सबंध।
सील थकी सुष सासता ए, सीले सदा आणंद ॥१२॥
सम्त अठारे इगतालीसमे स, सैर जोधपुर चोमास।
मास मीगश्र मैं सम्पूर्ण करी ए, चित चोषै लील विलास ॥१३॥
इति नरवदा सती नी चोपइ ढाला २६ स॥

(ख) श्री श्री श्री श्री आरज्यां जी म्हासत्या जी श्री श्री श्री श्री १०८ श्री नंदाजी तत सीषणी नगा लिषतु १८ स ४६ क म लिपतुं जपुर मधे॥

(३३) नल दमयन्ती चौपाई.—क्र० ४२०, ग्रं० १४०, पु० ६/५, ग्रंथकार समयसुन्दर व लिपिकार रत्नशील गणि की प्र०।

प्रशस्ति (क) सुधरम सामि परंपरा, चंद कुल वडरी साष।
कोटिक गण गछ खरतरउं, भटार कीया सुभाष॥
सुभाष युग प्रधान जिणचंद, प्रथम शिष्य शिरोमणी।

जसु गोत्र रीहड नाम पंडित, सकलचंद प्रसिद्धि धणी ।
तसु शिष्य पभणइ समय सुंदर, उपाध्याय इसीपरइं ।
वाचनाचार्य हरषनंदन प्रमुख शिष्य नइं आदरइं ।।

गोत्र गलोछा गहइगहइ, मेड़ता नगर मझारि ।
दिन दिन संघ मांहि दीपता, खरतर गछ सिणगार ।।

सिणगार धर्म तणा धुरंधर, देव गुरु रागी घणुं ।
रायमल पुत्र रतन्न अमीपाल, षेतसी नेतसी भणुं ।।

राजसी ता सुभ त्री ज तिहां कणि, नेतसी आग्रह करी ।
चउपाई कीधी समयसुदर नल दवदंती चरित री ।।

संवत सोलतिहु तूरि, मास वसंत आणंद ।
नगर मनोहर मेड़तउ, जिहां वास पूज्य जिणंद ।

वासपूज्य तीर्थंकर प्रसाद हूँ, गछ खरतर गहइ ।
गछराय जुग परधान जिन संघ, सूरि, सदगुरु जस लहइ ।।

उवझाय इम कहइ समय सुंदर, कीयउ आग्रह नेतसी ।
चउपई नल दवदंती केरी, चतुर माणस चित्त वसी ।।

(ख) सर्व गाथा २०५ । ढाल १० ।। इति नलदवदंती चउपई सम्पूर्ण । तउ प्रथम खंडे ढाल ७।। गाथा १७१ ।। द्वितीय खडे ढाल ५।। गाथा १३५।। तृतीय खडे ढाल ५ ।। गाथा १०१।। चतुर्थ खडे ढाल ६ ।। गाथा १२४ ।। पंचम खंडे ढाल ५ ।। गाथा १७६ ।। पष्ट खडे ढाल १० गाथा २०५ ।। सर्व ढाल ३८ ।। सर्व गाथा ६६१३ ।। सर्व छ खड ग्रथाग्रंथ १३५० ।। सम्वत १६६७ वर्षे ।। वैशाख शुदि ४ मगलवासरे ।। श्री अचले गछे ।। पूज्य श्री ४ श्री कल्याणसागर सूरिश्वर विजयराज्ये पं० श्री पू० श्री मुनिशील गणि तत शिष्य मु० रत्नसील गणि शिष्यणी साध्वी बाहला पठनार्थं । लिखित आगरा मध्ये ।। छ ।। श्री ।। शुमस्याता लेखक पाठकयो रित्या शार्व चोवितरण ।। यादृश पुस्तके दृष्ट तादृशं लिखित मया ।। यदि शुद्दमशुद्धवा । मम दोषो न दीयात ।। १ ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।।

(३४) नेम नाथ रास :—क्र० ४५७, ग्र० ५८६, पु० १६/२१, ग्रन्थकार कनककीर्ति की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति —संवत सोलै बाणुवइ, सुदि माह पांचमि जाणि ।
वडनगर बीकानेर मै, रास चढ्यउ परमाण ।।३२।।
दीपतउ गछ खरतर तणउ, जिहां नाम जींद सुरिंद ।
जिनदत्त युगवर सारिषा, श्री जिनकुशल मुणिंद ।।३३।।
अनुक्रमइ पाट परम्परा, जिणचंद सूरि सुजाण ।
पद दीयउ युगनर जेह ने, अकबर नृप सुरताण ।।३४।।

जिणि टेक राषी जैन की, जिनचंद सूरि दयाल ।
जांहगीर भूपत रंजीयउ, षटदरसण प्रतिपाल ।।३५।।
तसु पाटि परगट गुण निलउ, जिनसिंह सूरि प्रधान ।
जिण कुमती गज भंजिया, साचउ सिंघ समान ।।३६।।
तसु पाटि सूरिज सारिषा, पाय नमइ जसु नर राज ।
गछराज मांहे दीपता, चिर जीवउ जिनराज ।।३७।।
जिनचंद सूरि सूरिंदजी, तसु नय कमल सुसीस ।
तसु सीस जय मंदिर जयउ, पूरवइ मनह जगीस ।।३८।।
तसु सीस पभणइ भावस्युं, ए नेमि रास रसाल ।
कनक कीरति वाचक कहै, फलै मनोरथ माल ।।३९।।
कल्याण कमला सुख लहै, मन तणी पूरै आस ।
ए रास जे नर सांभ लै, पामै लील विलास ।।४०।।
चउवीस जिनवर ध्यावतां, थाय सदा जयकार ।
जिनराज सूरि प्रसाद थी, दिन दिन मंगल चार ।।४१।।
साहिब नेमिजी तोरी करणी सार ।।

इति नेमिनाथ रास ।।

(३५) नेम राजमती रास —क्र० ४६७, ग्र० २३८१, पु० ६२/५३ मुनि पुण्यरत्न की प्र० १

प्रशस्ति --संवत पनर छियासियइ, रास रच्वऊं मनि आंणि भाय ।
राज गछ मंडण तिलउ, गुरु श्री नंदि वरहन सुरी सुप्रसाय ।।६७।।
समुदविजइ ततु गुण निलउ, सेव करइ जस सुर नर वृंद ।
पुन्य रतन मुनिवर भणइं, श्री संघ सुप्रसन्न नेम जिणंद ।।६८।।

इन श्री नेमनाथ राजमती रास समाप्त ।।

(३६) परेवा की सज्झाय (मेघरथ राजा की सज्झाय) —क्र० ४९३, ग्र० २००७/१, पु० ५०/१७, लिपिकार आर्या मया की प्र० ।

प्रशस्ति --सवत १९ स ५२ मती वमाख वदे पाचम वीसपतवार कीशन पक्ष कीशनगढ मध्य । लीखत श्री श्री श्री श्रो श्री श्री १००८ श्री श्री आरज्या जी श्री श्री श्री श्री बालाजी श्री श्री १००५ श्री श्री माहासत्या जी श्री श्री श्री श्री लाछा जी माहा मोती सेती छ जी बालबीरतचारी छजी । सताइस गुण करी सहेत जी । माहा भररीक छ जी, उतम छ जी, वेरागी छ जी । गुण का आगल छ जी सुत्रराका भणनहार छ जी । सतरे भेदे सजम करीन सहित छ जी । दसवेद जती धरभ धारी छ जी । आपम गुण वणा । मारी वुध थोडी छ जी । श्री श्री बाला जी की तत सीष्यणी मया लीपत सभवत्य कल्याण मस्तु ।

(३७) पांडवा री चौपी —क्र० ५०१, ग्र० ४८, पु० ४/८, ग्रन्थकार लाभवर्धन व लिपिकार आर्या छगना की प्र० ।

प्रशस्ति (क):—समत सतरसै तेसट समेजी, बीलह्राबीस मझार ।
तीहां करी संपुरण चोपईजी, सीष्य या ग्रह मन धार ॥११॥
तीन हजार ने सातसेजी, सलोक सताणवै जांण ।
माहाजने सेवण गरंथ नेजी, एह कीयो प्रीमांण ॥१२॥
षंड तीनां तांइ कही जी, पाचमी ढाल ।
राग कालहरा मे सोभतीजी, नवी नवी देसी मे चाल ॥१३॥
श्री षरत्रगछै गहेजी, श्री जीनसुष सुरिंद ।
खेम साखा तिहा दीपतीजी, सुजस बोलै नरवीरंद ॥१४॥
श्री साधुरंग पाठक भलाजी, धरम सुंदर तसु सीष्य ।
गणि कमल सोम सिष्य तेहनाजी, नरपरणमे केई लख्य ॥१५॥
दानवीनय वाचक भलाजी, अतेबासी तास ।
गुणबरधन गणि दीपताजी, परसिध पुरं पुर जसवास ॥१६॥
श्री सोम सीष्य तसुं सुंदरुजी, सातिहरष तसुं सिष्य ।
सोमवदन सोभा घणीजी, धरम ना धोरी परतष ॥१७॥
ते सतगुरु सुपसायलेजी, कीधी मे चोपइ एह ।
सुत्र बीरुधजी को कहौजी, मीछांमै दुकड तेह ॥१८॥
साधुना सुध गुण गावतां जी, सही ए होवै नीसतार ।
इम जांणीनै मे वरणव्योजी, पाडव नो अधिकार ॥१९॥
करणी नही तीसी मांहरी जी, तेहवो नही तप धरम ।
पीणे गुण गावतां साधुना जी, कटसी असुभ मुझ करम ॥२०॥
लीषे लीषावै धरम जांणनेजी, सुणे सुणावै जस लेह ।
लाभवरधन पाठक कहे जी, ग्यांन नीरमल लहे तेह ॥२१॥
इति श्री पाडवां री चोपी संपूर्ण । षट खडे सपूर्णम्

(ख) समत १९ वरस १३ जेठ सुधै सातम दुजी मंगलवार । मासत्यांजी माराज १००८ श्री श्री कुनणाजी माराज री तत सीषणी श्री श्री १०८ श्री श्री दलुजी म.सत्यां । जारी तत सीषणी छगना लीषंतु कीसनगढ सहर मधै सपुरण कीधी छै ॥

(३८) पार्श्व चरित्र :—क्र० ५०२, ग्र० १२०, पु० ८/२, ग्रन्थकार आसकरण व लिपिकार महात्मा जगदेव की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) —धर्मदास नै धनराज जी रे, बुधरजी जैमलजी जाण ।
ज्यारा प्राटवी रायचदजी, हरी कैसरी सीर सिवांण ॥८॥

ज्यां पुरसां रे प्रसाद थी, रीष आसकर्ण कहै एम ।
पास चिरत गुण गावीया, दीठा ग्रंथ मै जेम ।।९।।

ओछो इधको कथौ दुवै तो, मिछाम दुकडं मोय ।
अलप बुध छै माहरी, प्रभू दोष मलम जो कोय ।।१०।।

पारस पारस सार से, तूत्र भवन केरो नाथ ।
मन मै ओछव अत घणो, जाणू भजन करूं दिनरात ।।११।।

समत अठारै सैतालीस गै, सहर जोधोणे सुभ ठांम ।
वैसाख व्रद बीज रै दीनै, कीया पास तणा गुण ग्राम ।।१२।।

(ख) इति पार्स चरित्र सपूर्ण. । सवत १८७१ का शाके १७३६ मीती आसोज वदि ८ लिपतं माहात्मा जयदेव वासी जोवनेर का लापी जैपूर मे : ।।

(३९) **पार्श्वनाथजी की निसाणी** —क्र० ५१०, ग्र० १३३१, पु० ३६/६१, लिपिकार आर्या सरसा की प्र०

प्रशस्ति :— श्री १०८ चनणाजी श्री १०८ नानगाजी मोटी सत्या छे। गुण का भडार छे। परतक का भेदरीक छे। उत्तम छे। वेरागो छे। आपमे गुण घणा। मारी जीभ एक छे। आप मे गुण हनेक छे। श्री श्री १०८ श्री नानगाजी की तत सपणी सरसा लिखतु ।

(४०) **पुण्य सार चरित्र** :—क्र० ५१७. ग्र० १८१३, पु० ४५/४३ ग्रन्थकार पुण्यकीर्ति की प्र० ।

प्रशस्ति — षरतर गछ म्हाये चीरंजीयो, युगवर धीन जीनचद ।
आचारज महीमागार मुनीवर, श्रीजीनसाहृ सुरींद ।।४।।
श्री जीनकुसल सु रास प्रपरा, मुनीवर महीमावत ।
म्हीमा मेरु मुनी मोटा जती, क्रीयाबत गुणवंत ।।५।।
हरषचंदर गणि हरष हीत करु, बाचक हरष प्रमोद ।
तास सीष पुन्य कीरती, इमभण, मन धरि हरष प्रमोद ।।६।।
सवत सोल सछासठी समें, बीजयदसमी गुरुवार ।
सांगानेर नगर रलीयामणो, पभण्यौ एह बीचार ।।७।।
एह चीत्र भवियण ज्ये सांभल्यो, भणे गुण नर जेहे ।
दान दान उदय अधीक नीत होबे, नव नधि होय सगेह ।।८।।
इति श्री पुण्यसार चरित्र संपूर्णम् ।

(४१) **पुण्यसार रास** —क्र० ५१८, ग्र० ४७ पु० ४/७ ग्रन्थकार मुनिपद्‌म व लिपिकार वल्लभ विजय की प्र० ।

प्रशस्ति (क) :—सकल गछ सिरेतिलो, तपगछ गुणनिलो । दीपतो दिन मणि तेज तोलें ।
वीर पाटें प्रभु हीर विजयो जयो, जग गुरु अकबर साह बोलें ।।९८।।

तस पटे श्री विजय सेन सूरि अभिनवो । वादी करी केसरी जे विराजे ।
वादविवाद करी विविध विद्या बलें । जगत सवाई गुरु बिरुद बाजे ।।६६।।
तस पट प्र वरे तरणी तप तेज थी । धना अणगार समोवडि कहावे ।
श्री विजयदेव सुरिंद गोयम समो । सोहम जबू उपम सोहावे ।।७००।।
तेहना राज मा साधु गुणे सोभतो पडित मडली मां विराजे ।
चरित्र चोखो तप जप क्रीया साधतो । पण्डित श्री शुभविजय राजे ।।७०१।।
तस पद कज सेवा रसिक मधुकर जस्यो, कहे मुनि पद्म ए रास रगें ।
ढाल पात्रीस करी प्रमाद परिहरि, पुण्यसार रास रच्यो पुण्य प्रसगें ।।७०२।।
कुकण देस मां नययो महकावती, रहीअ चोमासु गुरु भाइ भेला ।
प डित लालविजय तणा कहेंण थी, राम आरभीउ शुभ वेला ।।७०३।।
तिहा जिन शांति पसाउलें बऊ थयो, आवतां अष्टमी माहि कीधो ।
नयरी चपावती धर्म जिनदरिस नें, रास पूरण थयो काज सीधो ।।७०४।।
चद्र ऋषि अंबर नद संवशरें, वार मसी पंचमी माघ मासि ।
गाइऊ रास उज्जल पषि उलटें, साभलो श्री सघ मन उलासि ।।७०५।।
एह सुणता थका सपदा बऊ मिले, भाव बिभय टलें भवह फेरा ।
पुत्र कलत्रादिक ऋद्धि परिवार सुख, पामीइ जाणि फल पुन्य केरा ।।७०६।।
भोग सयोग पुन्यसार परिपामीइं रतन चतुर दस नवह नीधी ।
पुन्य पसाउ ले मगलमालिका, होय जयकार वली सकल सीधी ।।७०७।।

(ख) इति श्री अष्ट प्रवचन माता पालण फल विषये पुण्यसार रास सम्पूर्ण ।। श्री दरागारा नगरे । प० श्री वल्लभविजयेन यादृश पुस्तके दृष्ट तादृश लिखितम् मया । यदि शुधमशुधवा मम दोषो न दीयते । सवत १८३२ ना वर्षे वेशाख मासे सितेतर पक्षे सप्तमी तीथौ शनिवासरे लि० । शुभमस्तु ।।

(४२) बच्छराज रिषी चौपई--क्र० ५२६, ग्र० १२२, पु० ८/४, ग्रथकार सुमतिवल्लभ व लिपिकार नैणचद की प्र० ।

प्रशस्ति (क) सवत सतरै गुणतीसै गुरुवार परे मास कातो मन रग ।
रतन वद्दतम गुरू सांनिधकारी कीधी चौपई रे दीवाली दिन रग ।।६।।
राजै श्री जिनचद सूरसुरीसरै रे, खरतर गछ सुर वृक्ष ।
सोहै तेहनी मोटी साषा षेमनी रे, पुन्य फल देण प्रतक्ष ।।७।।
सुगुणकीरति कीरति सुगुणां मुष जगत मै रे, वाचक पदवी धार ।
मतिवलभ गणि सिष्य सुमति वल्लभयौरे, गुण त्रय रतन भडार ।।८।।
अ ते वासी तासु उछ कथइ वछनौरे, एह रच्यो अधिकार ।
मतकुसल गुरुआं गुण नन रगसु रे, जपना जय जयकार ।।६।।

पास जिणदन रणं सु पसायै, रच्यौरे. तलवाडे ए चरित्र ।
भणतां गुणता सुणता भावसु रे, मानव जनम पवित्र ॥१०॥
चमतकार तणो चतुरा चौपई रे, पंतालीस ढाल प्रधान ।
नव सै चौसठ गाहा छै, इन चौपोयै रे, सुणता सदा हुवै कल्याण ।
धन धन सूधौ साधु नमो वछराजो रे ॥११॥

(ख) इति श्री वछराज रिपि चौपई समाप्त ॥ संवत १८६२ का कार्तिक शुक्ल पक्षे पुण्य तिथो १२ चन्द्रवासरे । लिपिकृत श्वेतांबर नेणचंद जयपुर मध्ये । शुभमस्तु ॥

(४३) मगल कलश चौपई —क्र० ५५५, ग्र० १६८, पु० ११/१०, ग्रन्थकार मुनि लक्ष्मीहर्ष व लिपिकार कालूहंस की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) सवत सतरे उगणोसमैरे, माघ मास सुभ एह ।
सुद पक्ष तिथि एकादसी रे, गुरुवार नै दिन तेह ॥२॥
छत्रपति गछपति राजीयारे, विजयरत्न सुरि आणंद ।
तप गछै गछ मांहै सीरे रे, अधिक प्रताप दिणद ॥ ३ ॥
तस सेवक नित्य हर्ष गणि रे, सदा मन आणंद ।
तत शिष्य लक्ष्मी हर्ष कहे रे, सेवे नरना वृंद ॥ ४ ॥
सहर काकदी नगर भलो रे, रह्या तिहा चोमास ।
श्रावक सदा सुखीया वसेरे, पुन्ये करी जस वास ॥ ५ ॥
ढाल थइस सावीसमीरे दान तणो अधिकार ।
ए सांभलता सुख ऊपजे रैं, कहीयो छै च्यार प्रकार ॥ ६ ॥
ढाल सुं ऊंच दूरे करी रे, साभलजे चितलाय ।
तस दुख दोहग दूरे गमें रे, इम पभणे मुंनी राय ॥ ७ ॥
सांभलिवो करिवो भाव सुं रे, मन मे आणी विनोद ।
धर्म करे ते सुख लहै रे, उछै एह प्रमोद ॥ ८ ॥

(ख) इति श्री मगल कलस चउपई समाप्त । संवत १९४० वर्षे । माघ वद १॥ समाप्त भवतु ।१॥ लि०। प । कालुहंसेन पत्रारूढ चक्रे॥ श्री नवानगर मध्ये ॥ श्री शांतिनाथ जी शुभ मम करू ॥श्री॥श्री॥

(४४) मछोदर चौपई —क्र० ५५६, ग्र० ५३ पु० ४/१३, ग्रन्थकार जिनहर्ष की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति—गिरी ससि भोजन वछरं, ए भाद्रव सुदि सुविचार ।
संपूरण चौपई ए आठमि, तिथि कविवार ॥ २० ॥
श्री जिन चद्र सूरि सिरजयौ, ए खरतर गछ सिणगार ।
सुगरु सुपसाउ लै, ए बाहडमेड मझार ॥ २१ ॥
श्री गुण वर्द्ध नगणि वरु ए, वाचक पदवी धार ।
वणारस परगडाए, श्री श्री सोम सुखकार ॥ २२ ॥

तास सीस रलीयामणा ए, सालि हरष गुण जांण ।
कहै जिनहरष सु ए, तेत्रीस ढाल बषांण ॥ २३ ॥

इति श्री धर्म विषये मछोदर चौपई सपूर्ण ॥ सवत् १८४६ र। चैत्र सुदि ७ दिने लि० न्याय विसालेन ॥ ग्रथाग्रथ १००१॥

(४५) मल्लिनाथ स्तवन—क्र० ५६५, ग्र० ५०२, पु १७/२६, ग्रथकार नयरसुन्दर की प्र० ।

प्रशस्ति—सवत सोलै उण्यासी या निधि, दीवाली दिनकार ए ।
शृ गार नर धर नयर सुंदर, बीकानेर मंभार ए ॥ १ ॥
श्री सघ वीनती सरस जांणी, कीधो तवन उदार ए ।
श्री मल्लि जिणेसर सेवक जिन नै, सादा सिव सुषकार ए ॥ २ ॥

इति श्री मल्लिनाथ जिन स्तवन सपूर्ण समाप्त श्री रस्तु सुभ भयात् लेषक पाठकयो ।

चदणवाल समो चडै राजैमती सम जेह ।
चौथे जुग री करणी करे, कलि जुग मांहि एह ॥
सो माहरै श्रमाभयण, तीरथ भूल समान ।
तास सुसिष्याणी कारणै, लिख्यौ तवन परधानं ॥

इति सपूर्ण ॥

(४६) महाबल मलयसुन्दरी राणी की चौपई—क्र० ५६६, ग्र० ४२, पु० ४/२, ग्रथकार जिनहर्ष की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति—श्री जयतिलक सूरीसरु, आगमीया गछ नै पटधार ।
मलय सुन्दरी नौ रच्यौ, ए चरित्र जोई श्रीकार ॥ १७ ॥
सतरे सै एकात्रनै, आसू सुदि पडिवा ससीवार ।
रास कीयौ रलीयामणौ, पाटण मै सुणतां सुषकार ॥ १८ ॥
चौथौ प्रस्ताव पूरो थयौ ढाल एहनी अडतालीस ।
तेरै रै चालीस श्लोक नी, सख्या प्रमांणै कही जास ॥ १९ ॥
श्री जिन चंद सूरी सरु षरतर गछनायक गुणधार ।
वाचक शांतिहर्ष तणौ, सीस पभणै जिन हर्ष विचार ॥ २० ॥

इति श्री मलय सुदरी चरित्रे मीलावदात पूर्व भव वर्णनो नाम चतुर्थ प्रस्ताव ४ । इति श्री महावल राजा मलय सुन्दरी राणी की चौपई समाप्तम् ।

(४७) महिपाल नरे द्र चतुष्पादिका क्र० ५३८, ग्र० १७०, पु० ११/१२, ग्रथकार विनयचन्द्र व लिपिकार व्यास बालावक्स की प्र० ।

प्रशस्ति (क) धन गुरु है धनराज जी, धर्म बतायो जेण ।
क्षत्री कुल मे क्षमा करी, दुक्कर परीसह रे सहिया बहुतेण ॥ १७ ॥

तास शिष्य धनराम जी, राखी रूडी रीति ।
साध क्रिया शुभ साधवी, प्रभु ने वचनें रे पूरी परतीत ॥ १८ ॥
श्यामाचारज सुख करू, सकल शास्त्र ना जाण ।
ज्ञान क्रियाधर मुनिवरु, तिण नाम थी रे वरतें कल्याण ॥ १९ ॥
ताराचद जी तेहना. शिष्य भला सु विनीत ।
अनूपचद जी तेहना, शिष्य साचा रे, पूरण तास प्रतीत ॥ २० ॥
तास प्रसादें विद्या लही, विनय अरु विनाण ।
श्री सतगुरुयें कृपा करी, मुज दीनो रे चारित्र ने नाण ॥ २१ ॥
श्री सदगुरु सुपसाउ लें, गुंथ्यो एह गिरय ।
विनयचद नित्य भाव सुं भवि नमीये रे, निशि दिन निगरय ॥ २२ ॥
सव्वत हय वसु वसुध ए (१८८७) कार्तिक मास सुमास ।
पूर्वे वाहया सो लूणीयें. वली करीये रे आगली शाखनी आस ॥ २३ ॥
धन तेरस सवदि मे वदे, धर्म तें होत है धन ।
दीसें पर्व दीवाली मे. घर घर मे रे सवही राजी मन ॥ २४ ॥
वाहादरपुर मेवात मे, सहिर, भलो सुख वास ।
अलवर गढ नो परगनो, तिहा वसियो रे आनद चौमास ॥ १५ ॥
केसरपोलि नें ऊपरे, बिब भलो श्रेयास सोहन ।
इग्यारमा जिनवर तणो, जयकार रे, जिनवर जसवत ॥ २६ ॥
पोलि ने वाहिर गुमटहे, बावा नो विश्राम ।
श्रावक जन मानें सही, आलसीयां रे छै सुख नो धाम ॥ २७ ॥
कोइ कहे नामहि ग्रथ मे, गुंथे ते कर है गुमान ।
भोला मन समझे नही, इण माहि रे केहवो अभिमान ॥ २८ ॥
विगर नाम कवि ना कथे, विगर बाप नो पूत ।
विन व्यवहारे वाणीयो, रजगुण विण रे एंणो रजपूत ॥ २९ ॥
नाम थी श्राद्धा नी पडे, चवर पेंला नें मन ।
सहिनाणी विण गांठडी, कुण जाणे रे केहनो छे धन ॥ ३० ॥
नाम आपणो नविक है, कथनी तो कथ जाय ।
जैसे अलगो उपर है, केइ कुमति रे निज कुबुद्धि चलाय ॥ ३१ ॥
कहै केवलीयें नहीं कह्यो, सिद्धान्ते निज नाम ।
या कुंडी साहूकारनी इण माहिं रें, कैसो नाम नो काम ॥ ३२ ॥
कागद मे नाम न विग्रहै, लिखें है सब समाचार ।
स्यावासी तें तु ऊभो कहो कहियेंरे, केहनें घर द्वार ॥ ३३ ॥

सावद्य वचन जे विरचीयो, तेहनो पश्चाताप ।
करऊ मन वच काय सुं, मिथ्या दुकृत रे नासें सहूपाय ।। ३४ ।।
धर्म वषाण्यो जे मुखे, तेह तणो फल होय ।
पुण्य बंध ने निर्जरा, इम समझोर श्रोता सब कोय ।। ३५ ।।
आदित्य तेज जिम अधिकहि, सागर वर गभीर ।
अविचल वायक सुख दोयें, मतिदाय करे मुझने मुझ महावीर ।। ३६ ।।
चोथो खंड वषाखीयो, थइ चोत्रीसमी ढाल ।
विनयचंद जिन वचन थी, सदा वरतोरे शुभ मगल माल ।। ३७ ।।

कलश– श्री चन्द्र गछै सुजस अछै, देवभद्र सूरोश्वरु ।
तास शिष्यहि सिद्धिसेन सूरि, मुनि चद्रहि हित धुरु ।
तास शिष्य वीरदेव गणीये, रच्यो ग्रंथ निरमलो ।।
महीपाल चरित्रहि पद्य बंधे, मागध भाषायें भलो ।। १ ।।
जयो जगत जीवराज गुरुवर, केवली धर्म प्रकासीयो ।
धनराज धन सुभ राम रिषिवर, श्याम आगम भासीयो ।
ताराचद अनूप मुनिवर, शिष्य विनय या भणी ।
चउपई महीपाल मुनि नी, श्री सघ रग वधामणी ।। २ ।।

(ख) सर्व सख्या ११४६०।। इति श्री श्रीमन्महीपाल चरित्रे प्राकृत बधे महीपालस्य रत्न सचय पुर राज्य समर्पण ।। १ ।। धर्म घोष सूरिणोपदेश द नेन चतुष्कषाय करण फल कथा कथन ।।२।। चतुर्भार्या सहित महीपालेन शिक्षा ग्रहण ।।३।। महोग्र तपसा केवल प्राप्ति ना निर्वाण गमन एभिश्चतुर्भि कलाभिः समर्थितोय चतुर्थि खड ।४।।

इति श्री श्रीमन्महीपाल नरेन्द्र चतुष्पदिका सपूर्ण ।। प्रथम खडे ढाल । २७। द्वितीय खडे ढाल ३१ । तृतीय खडे ढाल ।।३१।। चतुर्थ खडे ढाल ।३४। सव सख्या ।।१३३।। सर्व ग्र थाग्र थ सख्या ४०५६ । सवाई जयपुर । सवत १९४३ मार्गशीर्ष शुक्ल २ लिप्यकृत बालवकस व्यास ।

(४८) मानातु ग मानवती—कथा प्रबन्ध—क्र० ५८१, ग्र १२११ पु० ३५/५, लिपिकार ज्ञानाजी की प्र० ।

**प्रशस्ति—अनुपचन्दजी गुर प्रसादै सुकल मास तेरस सही ।
बरस अठारा सयसितरै, जयनगरे ए कही ।।**

इति श्री मानतुग मानवती कथा प्रबन्ध सम्पूर्ण । मिती काति वदे तेरेस लषन ग्यांनाजी, हीराजी, पाराजी, की चेली । जयनगर मध्ये । सतन्न की साल म १८७७ का । श्री । श्री । श्री ।

(४९) मुनिपति चरित्र—क्र० ५८७, ग्र० १६९, पु० ११/११, ग्र थक र धर्ममन्दिर व लिपिकार की प्रश० ।

प्रशस्ति (क)- श्री जीनधरम सुरीसरु, जसु दरसण हिवडौ हीसंरे।
तसु राजइ सवध रतन, संवत सतरै सै पचीसै रे ॥६॥
पाटण माहि परगडो, सीरी सांमी पास विराजै रे।
तसु सानिध चउपई रची, चतुरां नै कठै छाजैरे ॥७॥
श्री परतर गछे परगडो, जुग प्रधांन श्री जीनचंदो रे।
तास सीष भवनमेरु, पण्डित जनम आंणदो रे ॥८॥
वाचनाचारज गुणनिलौ, श्री पुन्यरतन कहीजै रे।
तास सीस वाचक वरु, दया कुसल लहीजै रे ॥६॥
तास सीस पण्डितवरु, मुनि धरममींदर हुलासो रे।
कीधी चउपई चाह थी, वांचतां लील विलासो रे ॥१०॥
च्यार षड नी ए चउपई, पैसठ ढाल प्रधाने रे।
जय समुंद्र नी हुससुं, मुनी गुण गुणतां नवै निधांनो रे ॥११॥

(ख) इति श्री मुनीपति चरितर मपूरण। श्री श्री श्री १००८ श्री दलुजी री तत सीषणी लीपनु ॥ समत १६ सै नमा रा काती वद १२ सोमवार रे दिन सपुरण सुभ भवतु कीलयाण गमतु ॥ कीसनगढ मध्ये जाणवा ॥

(५०) रतनपाल चरित्र—क्र० ६५६, ग्र० ३०, पु० ३/११ ग्रंथकार सूरविजय व लिपिकार छगना की प्रश०।

प्रशस्ति (क) समत सतरवतीस वरस, सुभ मोरत सुभ वार रे।
सुर वीजय सपुरण कीधो, तीजो षंड उदार रे ॥१०॥
वीनती करू तुमने कर जोडी, कोइ वीध चोरत मन धरीयो रे।
असुध होय तो तूमे सोधज्यो, पीण हासी मत करीयो रे ॥११॥
गुणता ने वले सांभलतां, भणंता हरष अपार रे।
गुण गावतां वले गुणवत केरा, वरते जय जयकार रे ॥१२॥

(ख) इति श्री रतनपाल चरित्र सपुरण। समत १६ वरस तेरा का वेसाप वद ७ अदीतवार मामत्या जी माराज श्री श्री १०००८ श्री श्री दलु जी री तत सीषणी लीपतु छगना कीसनगढ मधे सपुरण कीवी छै।
भणज्यो गुणज्यो सीषज्यौ, हीतकर दीज्यो दांन।
पोथी जतनां राखज्यो, जुं पावो सुनमांन ॥

(५१) रत्नचूड की चौपाई—क्र० ६५७, ग्र० १३६, पु० ६/१, ग्रंथकार अमरसागर की प्र०।

प्रशस्ति—उपदेस रत्नाकर थकी, नै जोई ए सबंध।
एकसठ ढाल दूहें करी, लोकभाष्यांइ रच्यो एह सम्बन्ध ॥६६॥
बीस सहस सप्त सत उपरि, सतसठि श्लोक जांण।
ग्रंथ ग्रंथ चौपई तणो गणी, कीधो रे एह संख्या प्रमाण ॥६७॥

वसु[८] वेद[४] सागर[७] सुरपति[१] ए (१७४८) संवत सख्या जांण।
मधु मास सित दसमी दिने, गुरुवारें रे चोपई चउठो प्रमाण ॥९८॥
मालव देस मां अति भलु, खलचीपुर पुण्यवास।
सिष्य तणा आदर थकी कीधो, चोपई तिहा रहो चौमास ॥९९॥
अमीय रसायण सारषी, कवियण वाणी देष।
नीरस वाणी जाणी माहरी, मोटा मुनिवर मति मूको उवेष ॥१००॥
पण्डितनी जोडि आगले, किहा आगे छ माहरी जोड।
जिम मेरु गिरवर आगलें, किम होये नान्हो परवत जोड ॥१॥
कवियण नी वुद्धि आगलें, ए माहिरी कही कुण वुध।
खोटी होइ ते षरी करो, तुम वाचज्यो जी मुनिवर मन सुध कीध्र ॥२॥
सकल भटारक सामती तस, भाल तिलक समांन।
श्री विजयदेव सुरगुरु, गिरुआ गछपति रे हुआ युग प्रधान ॥३॥
तस पाट उदयाचल प्रभाति, उदयो अभिनवो सुरीस।
तपागछ तखत विराजतो, जयवतारे श्री विजयप्रभ सुरीस ॥४॥
तस पट प्रभावक अति भलो, जस वदन विराजे चद।
सुविहित सुरी शिरोमणी, आचार्य रे विजयवत सुरीद ॥५॥
वाचक चक्र चूडामणी, श्री धर्मसागर उवझाइ।
कलिकाल मांहि जेणी कह्यो, जीनसासन रे उद्योत सवाइ ॥६॥
तस सीस पणयालीस आगम, सूत्र अरथ भडार।
पडत गुणसागर गुरू जे जग माहे रे, कवि कुल सिणगार ॥७॥
तस सीस साधु सिरोमणि, श्री भाग्यसागर गुरुराय।
वालकपणे व्रत आदरी जिणी कीधा रे, घणा धर्म ना काज ॥८॥
तस सेवक वली सहोदर, पुण्यसागर गणिराय।
अति भई भावी पुण्य प्रभावी गुण गिरुआरे, तप निरमल काय ॥९॥
तस चरण पंकज रसग मधुकर, अमर सागर सीस।
सिष्य तणें हिति कारणें कीधी चोपी रे, पूगी मनह जगीस ॥१०॥

इति श्री रत्नचूड नी चौपई सपूर्णमस्तु। सदा लेखक पाठकयो कल्याणरस्तु।

(५२) रत्नपाल ऋषि चरित्र :—क्र० ६५६, ग्र० ५४, पु० ४/१६, ग्रथकार मोहनविजय की प्र०।

प्रशस्ति—सवत ख्याग संजम करी जाणो, मगसर मास सुहायो जी।
तीथ पंचमी गुरवार तणें दीन, विजय महुरत मिन भायो जी ॥ २३ ॥
तप गछ मडण कुमती नो षडण, वीजय रत्न गुरू राजे जी।
जा सदी वाजें पीशुण तणा मद, सहसा दूरें भाजे जी ॥ २४ ॥

वाचक कीर्तवीजेंय सेवक, मांनवी जै कवीराया जी ।
ता सीस बुध रूपवीजय गुरु, तेहना प्रणमी पाया जी ॥ २५ ॥
मोहनवीजये रास ए गायो, पूरव रतन माहे जी ।
रत्नपाल मुनी राय तरणा गुरण, च्यारे खडे आया जी ॥ २६ ॥
चौथो खंड अठारे ढालें, पुरो थयो सुवीसाल जी ।
च्यारे खडे शुपरे गंली, नोतन छासठी ढालें जी ॥ २७ ॥
वर्णवीने जो कहेशि पवित्र भा, हीत करी श्रोता सुरणशे जी ।
तो उपजस्यै रस सही जन नें, दूष दोहग अवगरणशे जी ॥ २८ ॥
होस्यें घर घर मगल माला, साभलतां ए रसाला जी ।
धरण कण कचरण लीलालवी, मोहनवीजय विलास जी ॥ २९ ॥

एती श्री रत्नपाल ऋपि चरित्रे चतुखड समाप्त ग्र थाग्र थ श्लोक ॥२१०१॥
सवत १८७० का मिती माघ सुदि ३ लिपापित आर्या जी श्री चनरणा जी तत् शिष्यरणी आर्ज्याजी नानगाजी पठनार्थ ।

(५३) राम यशौ रसायन —क्र० ६६४, ग्र० १२३, पु० ८/५, ग्रथकार केशराज व लिपिकार आर्या उमा की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) संवत सोलै आसीइरे, आछो आसो मास ।
तिथ तेरसि अंतरमुग्पुर माहि, आरणी अति उल्हास ॥ ४४ ॥
बिजय गछ नायक गिरूउ, गोयम नउं अवतार ।
बिययवत वियय ऋष राजा, कीधो धरम्म नुं धार ॥ ५० ॥
धरम्म मुनी धर्म्म जन नुं धारी, धरम तरणौ भंडार ।
षिमा दया गुण केरो सागर, सागर षेम उदार ॥ ५१ ॥
श्री गुर पदम मुनिसर मोटौ, मोटो जेहनौ वस ।
चउरासी गछ मइ जांणी तौ, प्रघट परणै परसस ॥ ५२ ॥
तस पाटोधर गुरण करि गाजै, गुरण सागर जयवत ।
कड़ु सुतन कलप तरु कलिम, सुर सिरोमरण सत ॥ ५३ ॥
ए गुर देव तणइ सु पसाइं, ग्रथ चढउं सु प्रमाणि ।
ग्रथ गुरणे गिर मेरु सरीषो, नदरस मांहि बखाणि ॥ ५४ ॥
एवं वासठि ढाल सुधारी, बचन रचन सुनिसाल ।
राम यसो रे रसायरण नामा, ग्रंथ रच्यौ सु रसाल ॥ ५५ ॥
कविजन तो कर जोडि करइरे, पडत सुं अरदास ।
पंचा आगे तो बाचेवड, जो होवै अभ्यास ॥ ५६ ॥

अषर भंगइ ढाल ज भगै, राग ज भगै जोय ।
वाचता रे बचन इन भगै, रस नहीं उपजै कोइ ॥ ५७ ॥
अक्षर जांणी ढाल ज जाणो, राग ज जाणी एह ।
पचा आगइं वाचता थी, उपजिसिइ अति नेह ॥ ५८ ॥
जव लग सायरै नौ जल गाजइं जब लगि सुरज चंद ।
केसराज कहै तव लगए, ग्रथ करो आनद ॥ ५९ ॥

कलस राम लक्ष्मण अनइ रांवण, सती सीता नी चरी ।
कही भाषी चरित साषी वचन रचन करी षरी ॥
सग रग विनोद भक्ता अने श्रोता सुख भणी ।
केसराज मुनिद जपइं, सदा हरिख बधामणी ॥ ६० ॥

(ख) इति श्री ढाल द्वापाष्टा रामयसो रमायने चतुरथो अधिकार समाप्त । सवत १८ वर्षे ७२ जठ सुदि तेरस दीन शुकल पक्षे सोमवारे विकानेर मध्ये पुज श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री १००० श्रीमन जी तत सिष्य पुज जी श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री १००० श्री नाथुराम जी तत सिष्य पुज श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री १००० श्री लिषमीचद जी तत् सिष्यणी आरज्या जी श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री १००० इडा जी जेठा जी तत सिष्यणी आरज्या जी श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री रूपा जी री तत् सिष्यणी श्री श्री १००० श्री आरज्या जी श्री सुपाजी तत् सिष्याणी श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री १००० श्री अजवाजी, षेमा जी, मीठु जी री तत् सिष्यणी श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री १००० श्री आरज्या जी श्री ग्याना जी री तत सीष्यणी लिपत उमा आत्मा अर्थे ॥

रामचीरत सट वट कीयो उमा जीता रामरासो जीता रो छै दावउ वेदावउ करवाया वै नही ।

(५४) **रिसालूराय की बात**— क्र० ६९९, ग्र० २६, पु० ३/७, लिपिकार आर्या उदी की प्र० ।

प्रशस्ति—इति रीसालुराय की वारता सपुरण । आरज्या जी श्री श्री १००८ श्री मासात्याजी श्री सीरकवर जी श्री नाथाजी की तत सीषणी लीपत उदी जयपुर मधे समत १३ चेत सुध पाचम वार बुधवार सपुरण ।

(५५) **रूपसेन चरित्र चौपई**—क्र० ७०७, ग्र. ५०, पु० ४/१०, ग्र थकार रूप ऋषि व लिपिकार वीर ऋषि की प्र० ।

प्रशस्ति (क) गुजराती लौंकागछ भला, पक्ष कह्या धनराजो रे ।
सोहम स्वामी परपरा, गछपति श्री मेघराजो रे ॥ ६ ॥
थेवर श्री सिंघराज जी, थेवर श्री गुरूदासो रे ।
थेवर श्री मानसिंघ जी, प्रेम ऋषी गुण वासो रे ॥ ७ ॥

बंग देस मांहे भलो, मक्सूदाबाद अजी मगल जानो रे ।
गुजराती लौकागच्छ तणी, तिहा पोसाल प्रमांनो रे ॥ ८ ॥
सवत अठारा अठन्तरे, श्रावण सुदि चौथ गुरुवार रे।
ऋषि श्री कृष्ण जी कृपा थकी, एह रच्यौ अधिकारो रे ॥ ९ ॥
अधिको उछो पद हुवै, ते पंडित शुध धरिज्योरे ।
मुझ कविताई देखि ने, हांसी कोई मति करिज्योरे ॥ १० ॥
ग्यानावरणी कर्म थकी, भूल चूक जे होई रे ।
मिछामि दुक्कड मे दिउं, सघ आगल इहा जोई रे ॥ ११ ॥
एह चरित्र सूणी करी, कोईयक नेम करीजो रे ।
रूपसेन जिम सुख लह्या, तिम शिव रमणी वरीजो रे ॥ १२ ॥
श्री जिन धर्म प्रसाद थी, एह सुगम करी ढाल रे ।
जिन बांनी मुझ मन वसी, पालो नेम रसाल रे ॥ १३ ॥
चौतीस अतिसय प्रभु तणी, तिम ए चौतीस ढाल रे ।
रूप ऋषी कहै होइज्यौ, श्री सघ मंगलमाल रे ॥ १४ ॥
इति श्री रूपसेन चरित्र चोपई, चोतीसे ढालै सवध : समाप्त- ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥

(ख) दूहा—गछ गुजराती रूपरिषि सभा चातुरी जाण ।
ता अर्थे पोथी लिखी, विर रिषी मन आंण ॥
सवत १८७९ रा वर्षे मिती भादवा सुद अष्टमी दिने । सैहर मक्सूदाबाद मध्ये लिखी॥

(५६) लीलावती महासती की चतुष्पदी —न० ७१६ ग्र० १३७, पु० ६/२, ग्रथकार लाभवर्द्धन व लिपिकार आर्या नगा की प्र० ।

प्रशस्ति (क) श्री षरतर गछ गहगहेरे, श्री जिनचद सूरिंद ।
चतुर चोपडा वश मे, प्रतपे जांणि दिणद ॥ ४ ॥
श्री षेम साखे प्रगडा, वणारस वरीयाम ।
श्री गुण वर्धन गुण वरु, तसो नांम तिसो प्रणांम ॥ ५ ॥
शिष तेहना सूष करु, वणारस श्री सोम ।
साधु गुणे की सोभता, सु प्रसन्न मुष जाणि के सोम ॥ ६ ॥
शांतिहर्ष शिष तेहना, वाचक पदवी सुपसाउ ले, ए सरस रच्यौ अधिकार ।
इण कलि काले जोवता, ए तो गोतम अवतार ॥ ७ ॥
संवत सतरसो गया वली, उपरि अठावीस ।
काती सुदि चवदिस दिनें, ए संपूर्ण सु जगीस ॥ ८ ॥
सहिर सेत्रावे सोभती, भला वसे म्हाजन वृंद ।
खरत्रगगछ रागी घणु, जिन धर्म धरे आणंद ॥ १० ॥

चोमासो सुख सू रह्या, श्री सघ तणो सूपसाय ।
धर्मी श्रावक श्राविका, दिन दिन अधिके होज भाव ।। ११ ।।
ति ठां ए कीधी चौपइ, गाथा छ से प्रीणाम ।
तीस ढाल गुणै भरी, सुणंता हर्ष सुजाण ।। १२ ।।
सुणै भणै जे भाव सूं, ए स्त्री तणो अधिकार ।
कहे राजवरधन तेहने, रिद्धि सिद्धि सदा सुखकार ।। १३ ।।

(ख) इति श्री लीलावती ना नाम्या महामत्याश्चतुष्पदी सपूर्णा ना मग मून । समत् १८ म ४७ का किस्न पक्ष वार विमप्तवार दिन १४ म लिपतु आरज्या जी श्री श्री श्री श्री श्री श्री चनणा जी लिपतु नगा विकानेर मध्ये ।

(५७) विक्रमसेन कुमार की चौपई :—क्र० ७२० ग्र० २५ पु० ३/६, ग्रंथकार मानसागर व लिपिकार आर्या छगना की प्र० ।

प्रशस्ति (क) स्तर से चोइस वरस जाणो, काती मास बाणी जी ।
कडे नगर रे गुणखाणा, गरथ चढीयो परीमांण जी ।। ४ ।।
तपे गछपति विजदेव सुरिंदा, दीप्प हे तेज दिणंदाजी ।
तस पाट श्री वीजयपरभ मुणीदा, पर तपो जा रवि चंदा जी ।। ५ ।।
तस गच्छ माहे पाठक पुरन्दर, श्री विद्यासागर ने गुण सुन्दर जी ।
तस सीषह जसा सागर गुण मंदीर, सेवे सुर नर भुंधरेजी ।। ६ ।।
तस पाटै वाचक वड वयरागी, सुंदर भुप सौभागी जी ।
श्री जयसागर जीनगुण रागी, महिल महिमा जागी जी ।। ७ ।।
नाम लहीये अधीक जगीस, गुण री वीस्वावीस जी ।
तस पाट जीतसागर गणि इस, जीव ज्यो कोडै बरीस जी ।। ८ ।।
तस सीषइ मानसागर मती सारै, भवीयण ने हितकार जी ।
रास रच्यौ मे पर उपगारै, भणतां जय जयकार जी ।। ९ ।।
थीर होरे वो ए गरथ वीचारी, ज्या लगे धुरनी तारी जी ।
कठ करी ने गासी नर नारी, साभलता सुषकारी जी ।।१०।।
विक्रम चरीत्र नै ए चोपइ, गरथ रच्यौ मे जोइ जी ।
अधीको उंछो भाख्यो सोई, मिच्छामदुकड होइ जी ।।११।।
भाव करी ने जे नर भणैसी, ते नर सीव रमणी वरसी जी ।
एह संबध सदा सांभल सी, तास मनोरथ फलसी जी ।।१२।।
ढाल बावनमी जि मै गाइ, मानसागर सुषदाई जी ।
दिन २ चढ़ते तेज सवाई, दिन दिन दौलतै पाई जी ।।१३।।

सरव गाथा १०८८ । इति विक्रमादीत नो वीक्रमसेन कुमार नी चोपइ सपुरणम् ।

(ख) इती श्री सपुरण मामत्याजी माहाराज श्री श्री १०८ श्री श्री दनु जी री तन गोमगो लीपतु छगना । समत १६ म वरस १२ माहामुद वीान पाच अदीतवार, कोमनगढ मधे जांणवा ।

कम्या करीयां ने वांकड़ी, नीचा कर दोय नयण ।
इण कष्टे पुस्तक लीख्यो, जतना राषज्यो सयण ।।

(५८) विक्रमादित्य चरित्रम्—क० ७२२, ग० १३६, पु० ६/४ ग्रंथकार मानविजय की प्र० ।

प्रशस्ति—सवत १७२९ ज कर गुणनि, वर्ष तणो परिमांणो जी ।
पोस शुक्ल तिथि अष्टमि दिवसै, बुध वासर गुण षाणो जी ।। २२ ।।
ढाल बाण सव संख्याइ जांणो, महद धम तणा धारि जी ।
अठ विस तेने उपर पालठ गाथा, दुहा युत सारि जी ।। २३ ।।
श्री विजय संघ सुरि तप गछ दीयो, महिमडल मणि धारि जी ।
तस सिस पाठक पद जयवतो, देव विजय सुखकारि जी ।। २४ ।।
तस सिस ज्ञाने गोतम जेहवो, ज्ञान विजय रीषि राया जी ।
तस सिस पडित रत्न वषाणु, दस विध धर्म सोहाया जी ।। २५ ।।
तस सिस मानविजय कवि भाण्यो, विक्रम महिपति रासो जी ।
जो भवि भावे भणस्यै सुणसै, तस मदिर लछि वासोजी ।। २६ ।।
श्री जय धर्म सुरिसर राजे, गाम खेमतें गुण गायो जी ।
श्री संघ केरो वयण सुणि नै, मालवपति हुलरायो जी ।। २७ ।।
अधिको उछौ भाण्यु जे होवै, वक्ता सुधारि सुध करज्यो जी ।
विक्रम नृप जीम महितल मोटो, तिम तमे श्रोता सत धरज्यो जी ।। २८ ।।
ध्रु जीम अवचल रहै ज्यौ महि तल, एह सबध गुणमालो जी ।
मो मन वछित पुर्ण उदीयो, गाता रा रास रसालो जी ।। २९ ।।

इति श्री कलियुगे कर्णावतारे महादाता रे श्री विक्रमादित्य चरित्रे प्राकृत प्रवधे पच पड छत्रोत्पति प्रवधे पष्टमो उलास सपुर्णम् । स १८८४ ना प्रवर्तमाने कृष्ण पक्षे सु० श्रा । व । ६ दिने श्री हरिदुर्ग मध्यै श्री रस्तु । श्री ग्रथाग्रथ सख्या ४००० हजार नी छै । सख्या ३०००७०००७५ ।

(५९) शालिभद्र धन्ना अधिकार छैढालिया —क० ७५५, ग्र० ३४६, पु० १३/१०५, ग्रंथकार रामचद्र की प्र० ।

प्रशस्ति—स्वामी वृद्धिचदजी गुरुप्रतापे, षटढाल एक दिन रची ।
उगणीसे इकतीस अहिपुर, जो उ चक नीचक कही कच्चि ।।

तेहनो मुज पातक वृथा, होवो, भगवत शाखसूं ।
जाव जीवहु श्रद्धा साची, भगवत वचने राषसूं ॥३॥

इति शालिभद्र धन्नाधिकारे पढ्ढालियो संपूर्णम् ।

(६०) श्रीपाल महाराय चौपई– क्र० ७७५, ग्रं० १२१, पु० ८।३, ग्रंथकार जिनहर्षकी प्र० ।

प्रशस्ति— सवत सतरं से चालीसे, चैत्रादिक सुजगीसैजी ।
सातम सोमवार सुभ दिवसे, पाटण विसवावीसैजी ॥९॥
श्री खरतर गछ महिमा वधारो, जिनचन्द्र सूर पटधारी जी ।
शातहरष वाचक सुषकारी, तास सीस सुविचारी जी ॥१०॥
कहै जिनहरष भविक नर सुणिज्यो, नवपद महिमा थुणज्यो जी ।
उगुण प चाले ढाले गुणज्यो, निज पातक वन लुणज्यो जी ॥११॥

इति श्री सिधचक्र महातम श्री श्रीपाल महाराय चौपइ सम्पूर्णम ॥ सवत १९४६ मार्गशीर्ष कृ० ९ ।

(६१) श्रेणिक राजा चौपई क्र० ७८३ ग्रं० ५७/२ पु० ४/१७ ग्रंथकार जयसार व लिपिकार आनन्दरूप की प्र० ।

प्रशस्ति (क) संवत नयण शैल गज भू वरसे, फागुण सत्तमि हिरसै जी ।
शुक्ल पक्ष बुधवारै कीधी, गुरुमुख थी बुध लीधी जी ॥९॥
वड खरतर गछ जग जै च्यार, साप जसु कहीयै जी ।
कुसल सूर साषा वडदावै, क्षेत्र धाड कहावै जी ॥१०॥
पाठक सहिज की रस वडदावै, गयगज विरुद धरावै जी ।
पुन्यसार वाचक ज धारी कनक साणक्य सुखकारी जी ॥११॥
पाठक रत्न से पर पदधारी, दीप कुंजर जसधारी जी ।
हर्स्त रत्न वाचक पद सोहैं, युक्तमेन मन मोहै जी ॥१२॥
तासु सीस वाचक जयसारै, चरित रच्यौ हितकारै जी ।
श्री जिनहर्ष सूरि सुपसायै, जसु सुनि नर सुखदाय जी ॥१३॥
दानवत गुणवत भलेरा, श्रावक गुणे स नूंरा जी ।
तिमही श्राविक जिन धर्म धारी, श्रमकी सो भवधारी जी ॥१४॥
तसु आग्रह चौपी ए कीधी, देशी गुरु मुख लीधी जी ।
हरष घणौ मन मांहे धारी, चारु विषय निवारी जी ॥१५॥
जेसलमेर चौमास एं कीधी, अधिकी सोभा लीधी जी ।
श्री चिंतामण पास पसाये, दिन दिन साता थायै जी ॥१६॥
एह सबंध सुणौ भव प्राणी, आसति अधिकी आणी जी ।
अठ सिध नवि निध अधिक वीशाला, वधज्यो मगलमाला जी ॥१७॥

(ख) सर्वगाथा ५६८ श्लोक सख्या ८०१। सवत १८७५ एवा जयमार जी गणि तत शिष्य प श्री अमरचन्द जी तत भ्रात्र प प्रर्महिमा रतनजी शिष्य प. अगादा लिपी कृत पाली नगरे मगलवारे मिति आसु सुदि ७ दिने।

(६२)--सुदर्शन कथा भाषा बन्ध — क्र० ८२०, ग्र० ६१, पु० ४/२१, ग्रन्थकार विमलसिंह की प्र०।

प्रशस्ति — गछ उतपत गुजरात, काह लुंकौ वड श्रावक।
जिन मारग रो जाण, परम जिन धर्म प्रभावक।।
उण रै मूष उपदेस, सुणे नर नार अकोमल।
समकत किधी सुध, मूल मथ्यात तजे मल।।
भाण नूण जगमाल भण, सजन तयं पाटण सहिर।
परवरै साध पूर प्रवल, गरजे गछ लुंकौ गहिर।।१६।।
प्रथम रूप रिष पाट, थाट जिवागिर थभण।
दोय वरसघ दुजल सघ, जसवत जिण सासण।
रूपसिह गछराज, दाषवड लाज दमोदर।
धर्मलिन धनराज, सकल चितामण सद्गुर।
श्री पूज क्षेमकरण गुण समद, तेज पूज तिणरै तषत।
धर्मसीह गुर प्रतपे धरा, विमल सूजस चटत वषत।।२०।।
कीध सुदरसण कथा, जथा मै गुर भूप जाणी।
आणी मन उछाह, वदीमत सार वाणी।
सिल सिरोमण सेठ, प्रगट जीम उतम प्राणि।
उणरी कथा अनूप, सकल भविजन सुषदाणी।
पूंजाण आण मन आसत, सूणजो नर भण जौ सके।
धीर जपो रिदै जिनवर धरम, त्रिभुवन मै तारक तकौ।।२१।।

इति सुदरसण कथा भाषा वध सम्पूर्ण।

सम्वत १६४३ काती सुदि १२ सोमवार। लीषत लीछमी नारायण बृहमण सवाइ जनगर मधे।

(६३) सुभद्राजी को पचढालियो .—क्र० ८३८, ग्र० ११८६/१, पु० ३४/६, ग्रथकार विनयचन्द की प्रश०।

प्रशस्ति: कलस—गुण गुणी लकत हरन दरे मेत, श्री आचारज स्वाम जी।
तीस चरण सवत ताराचंदजी, करि अति अभिराम जी।।
अनोपचंद जी तास सिष्य, आदरी आदर धरी।
तास चरण सेवक विनेचदज, ढाल पाचु करी।।१।।
गगन हरहीव वसु धरा वरषै (१८७०) पोस मे सित धादसी।

जैपुर जिन पद पुरो मथ मै, अखड चद कला जोसी ॥२॥

इति सुभद्राजी को पचढालो संपुरण ।

(६४) हसराज बछराज नो चौपई —क्र० ८६६, ग्र० ७६४, पु० २५/१, ग्रंथकार जिनोदयसूरि व लिपिकार ऋप गुकना की प्र० ।

प्रशस्ति (क) हस प्रबन्ध सूहामनो, कहे श्री जिनोदय सूरि ।
भणें गुणे श्रवणें सुणे, तिहा घरि आणद राज ॥९७॥
च्यार खड चौपइ करी, श्री सघ सूणवा काज ।
पुन्य घणो विसेषे पामीई रे, हस अने बछराज ॥९८॥

(ख) इति श्री हच बछराज चोपई सम्पूर्ण । सम्वत १९१-(?) वर्षे मास क—आसाढ वीद ४ दीने वार मगल । सामी जी श्री श्री श्री श्री श्री पंडितराज जी श्री ज्ञान का सागर श्रीमत महाराज श्री मेत्तमजी महाराज तत् सिष सामीजी महाराज श्री मेघराज जी तत् सिष चरण का चाकर समीपे का वसनवाला न फेर ऋष सूकला का दसकत छे । जाजपूर्मधे ॥ श्री योरस्तु, कल्याणमस्तु, शुभ भवतु ॥

(६५) हरिवश ढाल सागर —क्र० ८७४, ग्र० ५६६, पु० १८/२, ग्र थकार गुण सूरि की प्र० ।

प्रशस्ति—गछ स्वछ प्रणामसुरे, विजयवत विसेष ।
श्री विजयगछ राजीया, कांई दीपइ रे गुरु धर्म नरेस ॥८०॥
विजय ऋषि विद्यावलारे, धर्मदास मुनीश ।
क्षिमासागर षेम जीहनीर, जग माहि जगीस ॥८१॥
पद्म सागर सुरिजीरे जोरे, सुयश जस भरपूरि ।
पाय प्रणामी प्रभु तणां, कांई पभणइ रे गुण सागर सुरि ॥८२॥
सवछरछह तरई रे, मास सावण सुद्ध ।
तीज सोमुत्तरा काइ, बासररे वारु अविरुद्ध ॥८३॥
कुर्कटेश्वर नगर मइ रे, पास स्वामि पसाय ।
सघनइ उछक पणइं काई, रचायो रे मइ चरित सुभाय ॥८४॥
ढाल सागर नाम श्री हरिवश नो विस्तार ।
सुद्ध भावइं सांभलई काइ, पामइ रे सुख सपति सार ॥८५॥
एकसउ एकावनइ रे, ढाल नो सोभाग ।
आदि तो आसावरी कांई, अ तइ रे धन्यासी राग ॥८६॥
जब लगइ गिरि मेरुजोरे, सकल गिरवर ईस ।
तव लगई हरिवश ए, कांई थाज्यै रे थिर विस्वादीस ॥८७॥

कलश —हरिवश गायो, सुयश पायो, ज्ञान वुद्धि प्रकाशनउ ।
पाप त्रोठउ गयो नाठउ, पुन्य आयो आसनउ ।
करण पुत्र कलीत्र कमला, पद्धत सुहाणउ ।
पूज्य श्री गुणसुरि जपइ सघि रग वधामणउ ।।
इति श्री ढाल गा०

उपदेश-नीति-वैराग्यादि

(६६) उपदेश बावनी :—अ०५६, ग्र० ६०, पु० ४/२०, ग्र थकार किसनदासजी की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति.—श्री जयसिघराज लु कागछ सिरताज ।
अज तिनकी कृपाल, कविताइ पाइ पावनी ।।
संवत सतर सतसठें विजें दसमी को ।
ग्र थ की समापती भइ हे मन भावनी ।।
साधनी सग्यान माइ, जाइ श्री रतनबाई ।
तज्यौ देह तापें एह, रची परचावनी ।।
मत की न मनि जीनी, तत्वही कु रुचि दीनी ।
बाचक किसन कीनी, उपदेश बावनो ।।६२।।
इति वाचक किसनदास कृत बावनी समाप्त: लि० देवकृष्ण ।

उपदेशात्मक दूहे:—क्र० ६६, ग्र० १८५१/१ पु० ४५/४५ लिपिकार रायकवरी को प्र० ।।

प्रशस्ति:—आरज्याजी श्री श्री माहाकवरि जी तत सिषणी लिखत ।
रायकवर आरज्या ।। ढुढाण देस । चोरू नगर लीखी ।।

(६८) क्षमा छत्तीसी:—क्र० २१६, ग्र० २१५ पु० १२/४४, ग्र थकार समयसुन्दर की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति:—नगर माहि नागोर नगीनौ, जिहां जिनवर सादजी ।
श्रावक लोक वसे अति सुषीया, धर्म तणइ प्रसादजी ।।३४।।
खिमा छत्तीसी खातइ कीधी, आतम पर उपगारजी ।
श्रावकपणि साँमलता समज्या, उपसम धरयो अपारजी ।।३५।।
जुग प्रधान जिनचंद सूरीसर, सकलचद तस सीसजी ।
समयसुन्दर तस सीस पयंपइ, चतुर्विध संघ जगीसजी ।।३६।।
इति क्षमाछतीसी सपूर्ण ।।

(६९) दिवाली को स्तवन:—क्र०३३५ ग्र० ३६० पु० १४/१३, लिपिकार हमीरमल की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति —इति श्री समत १८६६ विरषे मीति वेसाख सुद ८ पुज्य श्री १००८ श्री गुमनचदजी । श्री दुरगदास जी सामी जी श्री रत्नचद जी तत्र सिष्य हमीरमल नागोर मध्ये । श्री । श्री । श्री ।

(७०) **बालचंद बत्तीसी** —क्र० ४२४, ग्रं० ५३५,पु० १७/६२, ग्रंथकार बालचंद की प्रशस्ति ।

प्रशस्तिः—महा सूषकंद रूपचंद जांणीये ।
श्री रूप जीव गणी कुयर श्री मूल मूंनी ।।
रतनसिंह जस धणी, त्रिभोवन मांनीइं ।
विमल जास जसवास, मूनी श्री गंगदास ।।
हसंत दीषत तास, बत्रीसी वषांणीए ।
बाण[५] वसू[८] रस[६] चंद[१], दीवाली मंगलचंद ।।
आइमदावाद इंद, रग मंन आणीइं ।
इति श्री वालचद वत्रीसी सपूर्ण ।। ऋप दानाजी सामीजो । ऋष पेमचदजीन लीषछे ।

जैनागम

(७१) **अनुत्तरोववाई सूत्र टब्बा** —क्र० ६, ग्र० ७४७, पु० २४/१४, लिपिकार तिलोक ऋषि की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति :—इति अणुत्तरोववाइय सुत्र ।। नवम अग सम्मत्त ।। सवत १६३० वर्पे फाल्गुण मासे ।। कृष्ण पक्षे ।। अष्टमि त्तिथौ ।। चद्रवासरे ।। ग्र थाग्र थ १६२ ।। लिपिकृत पुज्य श्री १००८ कान्ह जी ऋप जी । तत शिप पुज्य श्री १००७ तारा ऋष जी तत शिष पुज्य श्री १००६ काला ऋष जी । तत शिप पुज्य श्री १००५ श्री वगसु ऋप जी । तत् शिष पुज्य श्री १०८श्री धन जी ऋप जी । तत् शिप स्वामि जी श्री गुरदयाल श्री १०८ श्री एवताऋष जी ।। तत् शिष । लिपिकृत । तिलोक ऋप । देश मालवो । कसवे ग्राम मउ मध्ये । श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु । श्री श्री ।। जो वाचो सो । जण्णा कर्के वाचजो । सुद्ध परूपजो । नहि माने जिनकु आप आपणा इष्ट की आण हे । ज्ञान, ध्यान, तप, जप, की वृद्धि करजो सो सिघ्र मोक्ष पावोगा ।। ए हमारी आसीस हे भव्य प्रते श्री ऐ ना ।।

(७२) **आचारग सूत्र प्रथमांग** :—क्र० १५, ग्र. १५२, पु० १०/२
सवत १६६३ वरषे श्री जिनचद सूरि विजय राज्ये श्री ज्ञान सा महोपाध्याया नां शिष्य प हेम हस मुनि एण विनय हर्ष मुनिभ्यः सा० नाना भार्या काली तत्पुत्र सा० वर्द्धमानेन् पुत्रसिंह जी सहितेन प्रदत्ता प्रतिनिय ।।

(७३) **चउसरण प्रकरण** :—क्र० ६०, ग्र० २६७/१, पु० १३/५६ लिपिकार रिख शोभाचन्द की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति :—इति श्री चउसरणपइन्न सपूर्ण । पूजनीय महाज श्री श्री श्री श्री विनेचद जी महाराज तत् प्रमादात् लिपिकृत ऋष सोवाचद्रेण । श्री हरषचद वाचनार्थ ।

(७४) **नन्दी सूत्र टब्बा** —क्र० ६६, ग्र० ३४८, पु० १४/१, लिपिकार किशोरसागर की प्र० ।

प्रशस्ति —सवत् १८३३ रा मिती चैत्र सुदि १० दिने लिपत पं० किसौर सागरेण ।। श्री वडलु ग्रामे लिपि कृता ।। श्रीरस्तु ।। कल्याणमरस्तु ।। श्री चिंतामण जी प्रसादेन ।। श्री अजीतनाथ जी सत्य छै ।

जैन प्रकरण

(७५) **आलोयणा पद** :—क्र० ८६, ग्र० २०७, पु० १२/३६, ग्रंथकार व लिपिकार पेमराज की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) उगणीस छतीस का, धुलिया स्हर मझारो रे ।
कीस्न गुरु प्रभाव थी, पेमराज मंगलाचारो रे ।। ६० ।।
प्राणी तैं पाप कीया घणा, आतमदोष अनेक है सो जीन आपसीकारी रे ।
ओगण म्हारा मत लेषवो, श्री जिन मुझ ने तारो रे ।। ६१ ।।
प्राणी तैं पाप कीया घणा इति ।। ६७ ।।

(ख) पुज जी श्री श्री १०८ श्री धनजी जी । पुज जी श्री १००८ श्री वीह्लु जी । पुज श्री १००८ श्री नथमल जी पुज श्री १००८ श्री भोजराज जी । पुज श्री १०८ श्री किल्याण जी । स्वामी जी श्री १०८ ज्ञान जी स्वामी जी श्री १०५ श्री कीसन जी । तेहनो सीष पेमराज । सवत १९३६ माह सुदि १५ सोमवार ।

(७६) **गुण ठाणा ना द्वार** :—क्र० १८१, ग्र० १८० पु० १२/६, लिपिकार चतराजी की प्र० ।

प्रशस्ति :—श्री आगर माहि लिपतं आरज्या जी गोला जी री तत सिषणी कूमला लिखत कातिग वदि वीज लिखतम् कूसला । ३१ दवार । श्री लिषमा जी आरजा जी की सिषणी तत फूला जी चतराजीन इकीस दवार दीयाछई । श्री गोरधजी चोमासो कियो जदि लिपछइ जी ।

(७७) **गुण ठाणा पर इक्कीस द्वार का थोकड़ा** :—क्र० १८२ ग्र० १२१५, पु० ३५/६, आर्या नथूजी की प्र० ।

प्रशस्ति :—समत १८ से ५१ वर्षे मीती चत्रवदी ६ वार सनीसर सुभ भवती सपूर्ण । लिपतू आर्य्या जी श्री श्री श्री १०८ श्री षेमाजी तत सीषणी लीषतू श्री श्री श्री १०८ श्री श्री माहासती जी वीना जी तत सीषणी लीषतू नथो दीली मध्ये ।

(७८) **द्रव्य प्रकाश भाषा बंध** :—क्र० ३६६, ग्रं० १२५, पु० ८/७. ग्रंथकार देवचन्द गणि की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति :—**संवत-कथन :**

दूहा —**विक्रम संवत मास यह, भय लेश्या के भेद ।**
सुध संयम अनुमोदिकै, करि आश्रव को छेद ।। १६२ ।।
ता दिन या पोथी रची, वध्यौ अधिक संतोष ।
सुभ वासर पूरन भई, प्रथम जिनेसर मोष ।। १६३ ।।
अथ ग्रंथ महिमा :

सवैयो ३१ : गुण कौ निधान है कि मानौं निरवांन है कि,
साची जिनवानिय में अधिक उदार है ।
मांनी मद भजन है, मिथ्या मति भंजन है,
ज्ञान दृष्टि अंजन शिलाका सुखकार है ।
रांम कौ रमन है कि दुष्ट को दमन है कि,
पर कौ वमन है, अपार पारावार है ।
संत कौ सवाद है कि शुद्ध स्यादवाद या मैं,
और कौ विषाद नांहि ग्यांनी उर हार है ।। १६४ ।।

दूहा :—स्यादवाद युत द्रव्य षट, जहां वर्षा ने ठीक ।
नांमै द्रव्य प्रकासयौ, ग्यान ग्रंथ तहकीक ।। १६५ ।।
पुनः ग्रंथ महिमा :

सवैयो ३१ —परसूं प्रतीति नांहि, पुन्य पाप भीति नांहि,
राग दोष रीति नांहि, आतम विलास है ।
साधक कौं सिद्धि है कि बुझिवै कौं बुद्धि है कि,
रीझिवै कौं रिधि ग्यांन भांन कौ विकास है ।
सज्जन सुहाव, दूज चंद ज्यूं चढ़ाव है कि,
उपसम भाव यामै, अधिक उलास है ।।
अन्य मत सौ अकंद, वंदत है, देवचद,
ऐसे जैन आगम मै द्रव्य कौ प्रकाश है ।। १६६ ।।

दूहा :—ग्यांन ध्यांन सुष थांन यह, यही मुकति कौ पंथ,
जीव द्वार पूरन भयै, पूरन भयौ गरंथ ।। १६७ ।।
इति श्री द्रव्य प्रकास भाषा बध ग्रथे पडित देवचद गणि विरचिते तृतीयौ जीवद्वार समाप्त ।।
लि० । प० मेरूदास ।

(७९) पंच समवाय स्तवन :— क्र० ४७२, ग० ५८१/१, पु० १९/१३, ग्रंथकार कीर्तिविजय की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति कलस :—ईम धर्मनायक मुक्तिदायक, वीर जीनवर संथुणो ।
सये सतर संवत बह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणों ।।
श्री वीजेयदेव सुरिंद पटधर, वीजेय प्रभु मुणिंद ए ।
किर्तिविजेय वाचक सीस, इणि परिवीनेय कहे आणंद ए।।५८।।
इति श्री पच समवाय स्तवन सपूर्णम् । स० १९४२ चैत्र सुदी १४ नं ।।

(८०) वनस्पति सत्तरिका मूल :—क्र० ६८२ ग्र० ३५७/१, पु० १४/१०, लिपिकार मुनि गजसुकुमाल की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति —इति बनस्पति सरिका सूत्र समाप्त । सवत १६१० वर्षे कार्तिग वदि ११ एकादशी तिथौ । खरतरगछे उ० श्री पू विनयकीर्ति मिश्रानू तच्छिष्येन लि० वा० गयसुकमाल मुनि ना । श्रु श्राविका बाई अछा पठनार्थे । श्री आगरा नगरे । सलेमसाहि विजय माणे । श्री मांगल्य ददानु । शुभ ।

(८१) श्रावक सूत्र टब्बार्थ :—क्र० ७२२, ग्र० १३५, पु० ८/१७, लिपिकार छगनचन्द्र की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति —पुज्य जी श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री रुगनाथ जी तीत पाट पूज्य जी श्री माहाराज श्री श्री १०८ श्री श्री टोडरमल जी तीत पाट पूज्य जी श्री श्री १०८ श्री मेरू दास जी त्यागी वेरागी माहाराज जी तीत शिष्य स्वामी जी श्री १०८ श्री लीखमिचद जी तीत शीष स्वामी जी श्री १०८ श्री जीलमफोज तत सीष्य सामी जी श्री १०८ श्री तीत सीस ५० श्री छगनश्चन्देण हस्त दिक्षित् ··· गुण रो भाजन स० १६३६ वे सु ५ जोधपुर मध्ये ।

(८२) सजया का थोकड़ा —क्र० ७३८, ग्र० ६०३, पु० १६/३५ लिपिकार रायकुवर की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति :—समत १८६० वर्षे फागुण मास का सुकल पषे पुरण मासी तिथि मगलवार । फागइ मध्ये । आरज्या जी श्री श्री दीपा जी तत सीषणी आरज्या जी श्री दुरगा जी तत सीषणी आरज्या जी श्री श्री श्री माहाकवर जी आतमा अर्थे तत सीसणी लीपत रायकुवर आरज्या की छै । सुभ भवतु कल्याणमस्तु । छ छ

(८३) समकित की सज्भाय —क्र. ७६१, ग्र० १५५०, पु० ३६/४० ग्रथकार कवि नेत की प्रश० ।

प्रशस्ति :—**संवत सतरे सै बावने, जेठ सुकला सातिम सुभ दिनै ।**
सुगुरु श्री धनराज पसाय, नेत कहे बहु आणंद थाय ॥ ३० ॥
इति श्री समकत नी सभाय सपूर्ण । स० १८१५ वर्षे चैत मास सुकल पाष वार सनीसर वर दसमी ।

परिशिष्ट—६

ग्रंथकार-प्रशस्तियाँ

परिशिष्ट—७

लिपिकार-प्रशस्तियाँ

परिशिष्ट—८

ऐतिहासिक रचनाओं की सूची

पृष्ठ सख्या	क्रमाक	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थकार	छद-सख्या
		स्तुति-स्तोत्र-वन्दनादि		
८	७१	आसकरणजी गच्छपति	—	६
८	७२	आसकरणजी महाराज के गुण	सवलदास	३३
८	७३-७४	इस्या गुरुदेव हमारा	किशनलाल	७-७
१२	११३	कनीरामजी महाराज के गुण (र. १९३६)	चन्दनमल	ढाल ४
१४	१२९	कुशलाजी की सज्भाय	—	३४
१६	१३७	गुरुणी का गुण	—	१३
१६	१३८	गुरुणी की सज्भाय	रायचन्द	२०
१६	१३९	गुरुणी की स्तुति चौमासा	बाई सरूपा	१५
१६	१४०-४१	गुरुणी जी के गुण (स १८३९)	रायचन्द	२२
१६	१४२	गुरु गुण की महिमा	आसकरण	५
१६	१४३	गुरु गुण गाथा ढाल	—	१६
१६	१४४	गुरु गुण ग्राम (स १८६५)	—	९
१६	१४५	गुरु गुण ग्राम ढाल	रायचन्द	२०
		(१८०४ होली चौमासा)		
१६	१४६	गुरु गुण ग्राम पर ढाल (स० १८८८)	—	७
१६	१४७	गुरु गुण ग्राम पर ढाल (१८७६ आषाढ)	—	१२
१६	१४८	गुरु गुण ग्राम स्तवन	—	९
		(१८९९ होली चौमासा)		
१६	१४९	गुरु गुण ग्राम स्तवन	आसकरण	५
१६	१५०	गुरु गुण महिमा स्तवन	गुणसागर	२१
१६	१५१	गुरु गुण माला (१८८२ चौमासा)	रिख भगवानदास	१४

१६	१५२	गुरुजीरी सज्झाय (स० १८४२)	रायचन्द	१३
१८	१५३	गुरु महिमा	—	१०
१८	१५४	गुरु महिमा	—	३
१८	१५५	गुरु महिमा (स १६०५ चौमासा)	—	७
१८	१५६	गुरु महिमा	—	१२
१८	१५७	गुरु महिमा स्तवन (स० १८७७ जेठ २)	मबलदास	१४
१८	१५८	गुरु स्तवन (१८६३ का व. ५)	रायचन्द	१०
१८	१५६	गुरु स्तवन	रतनचद	२३
२२	१६६	चुन्नीलाल जी म० का गुणगान (स० १६५४)	गुलाबाजी	११
२६	२४३-४४	जीतमलजी म० का स्तवन	—	७-७
२६	२४५-४७	जीतमलजी म० का स्तवन (स० १६१२)		६-६
२६	२४६	जीतमल जी म० का स्तवन (स० १६००)	गुलहजारीजी	२५
२८	२४८	जीतमल जी म० का स्तवन	—	५
२८	२४६	जीतमलजी म० के गुणगान (स० १६१३)	—	७
२८	२५२	जयमलजी के गुणो की प्रथम टाल	—	२०
२८	२५३	जयमलजी म० के गुण (स० १८६१)	रिख भगवानदास	१८
२८	२५४	जयमल जी म० का स्तवन	मुनिराम	१०
२८	२५५ ५६	जयमल जी री गुणमाला (स० १८५३)	रायचन्द	ढाल ३
५०	४६७	पूज्य गुणमाला सं १६२२	रिख कस्तूरचंद	७
५०	४६८	प्रताप अभिधान (सवाई प्रतापसिंह की प्रशस्ति)	—	१६७
६२	५८८	रतनचद जी म० रा गुण (स. १६०७)	विनयचव	१७
६२	५८६	रतनचदजी म० रा, गुण (स० १८६२)	रिख हमीरमल	६
६४	५६०	रतनचद जी म० का स्तवन	शभूनाथ	२६
६६	६१८	रामचन्द्र जी म० रा गुण	—	८

६८	६४२-४३	विनयचद जी के गुणगान (स० १९६२-६५)	मुनि सुजानमल	१०
७०	६४९	विरधमानजी तपसी की ढाल	—	९
७४	७०३	शत्रुंजय उद्धार गाथा	—	१३
८२	७७९	सवलदास जी म० के गुण (१९०४)	रिख रायचन्द	११
८४	७८९	साधुजी रा गुणगान (१८६३)	रिख चद्रभाण	१६
९४	८९३	स्वामीजी म० की विनती	रायचन्द	११
९६	८९६	हेमऋषि स्तवन	—	९
९६	८९८	हेमचन्द मुनि सज्झाय	मुनि गुलाब	९
९६	८९९	हेम महामुनिराज स्तवन (१९०६)	—	२६
९६	९००	हेमराज जी स्वामी का गुण (१९०६)	स्वामी करमचद	९
९६	९०१	हेमराज जी स्वामी रा गुण (१९०६)	—	९

कथा-काव्य-चरितादि

१००	२९	अमीचन्द ऋषि की ढाल (१८९६)	—	१७
१००	३०	अमीचन्द जी की ढाल (१८९६)	—	७
११२	१३६	केदारजी तपसी की ढाल	—	८
११२	१३७	केदारजी तपसी की ढाल (१८९६)	—	१३
१२०	२२७	चित्रगुप्त कथा (कायस्थ उत्पत्ति)	—	श्लो० ७५
१२६	२८२	जिनदत्त की सज्झाय (१७९७)	—	१०
१३०	३१०	तेरापथी जीतमल जी (१९११)	रिख करमचद	१३
१४८	४८४	पद्मिनी चरित्र	लब्धोदय	खण्ड ३
१४८	४८५	पद्मिनी चरित्र	लब्धोदय	खण्ड ३
१५२	५१५	पुण्य रतन सूरि गुरु फाग	—	२४
१५२	५२५	प्रागदास जी म० के संथारा की सज्झाय	—	२९
१६४	६४३	मोती जी स्वामी की ढाल (१८९७)	—	९
१६६	६४९-५३	रतन गुरु की सज्झाय	—	४२
१६६	६५०-५४	रतन गुरु की सज्झाय	—	५६
१६६	६५१	रतन गुरु की सज्झाय	—	४९
१६६	६५२	रतन गुरु की सज्झाय	—	३४

१६६	६५५	रतनचद जी म० के गुणों का चौढालिया	हमीरमल	ढाल ४
१८८	८७०	हरजी की सज्झाय	जिनसागर	१६

इतिहास

३८०	१	अट्ठारह देशो के राजाओ का विचार	—	गद्य
३८०	१५	चौरासी गच्छ के नाम	—	गद्य
३८०	१८	साधु-साध्वियो के नाम सटिप्पण	—	गद्य
३८२	२०	पट्टावली		,,
३८२	२१	पट्टावली		,,
३८२	२२	बाइस टोलो के नाम		,,
३८२	२३	बारह मत का नाम		,,
३८२	२४	बीकानेर की निशानी (१६२०)		१५
३८२	२५	महावीर पछाली पट्टावली		गद्य
३८२	३०	विभिन्न गच्छो की उत्पत्ति		गद्य
३८२	३१	साधुमार्गीय सम्प्रदाय पट्टावली		गद्य

प्रकीर्णक

३६२	६	कुनणाजी आर्या की पोथी की सूची		गद्य
३६८	७०	मेडतिया श्री सघ की विनति	खुशालसुन्दर (१८३२)	११
४०२	११३	समस्त चैत्य पवाड़ी गीत	लाभ उदय	१४

परिशिष्ट—९

शुद्धि-पत्र

पृ. स./क्रमाक	अशुद्ध	शुद्ध
	स्तुति-स्तोत्र-वन्दनादि	
१२/१०२	ज्ञानसागर	ज्ञानसार
२०/१८८	३६/१५, ज्ञानसागर	५६/१५, ज्ञानसार
२०/१९०	ज्ञानसागर	ज्ञानसार
३८/३४३	लावण्य विजय	लावण्य समुद्र
४८/४४४	१९७५	—
५२/४९०	श्रीहर्ष	भगवानदास
	·· ····१८ पौ० क्र० ९, जयपुर	१८८१, कटालिया
	—	लिपि स० १८८५ पौ० क्र० ९, जयपुर
५२/४९१	ज्ञानसागर	ज्ञानसार
६२/५८१	रामचन्द	रायचन्द
६२/५८४	हरष	—
६६/६२२	देवसूरि	मानदेव सूरि
७४/७०१	व्याख्यात पूर्व	जिन शासन स्तुति
७४/७०२	विजय	बुधकुअर
७८/७३४	शान्तिनाज	शान्तिनाथ
८४/७८३	एक पार्श्वनाथ मत्र	उपसग्गहर स्तोत्र
८४/७८६	मुनि ज्ञानचन्द	देवमुनि
८६/८०४	जयलम	जयमल
८६/८०९	१६५२	१६५१
९०/८३८	सवलदाल	सवलदास
९४/८८२	१७७०	१७७७
	कथा-काव्य-चरितादि	
१००/२०	अखण्ड	अम्बड
१००/२८	जीवसार	जीवसागर
१०२/४५	८२३	१८२३

पृ स./क्र	अशुद्ध	शुद्ध
१०२/५२	१८१८	१६८४
१०४/६१	लब्ध	लब्धिविजय
१०४/६६	तत्वहस	तत्त्वहस
१०४/७३	उदयी	उदायी
१०६/८२	१७३१	१७४१
१०८/६६	—	जिनहर्ष
१०८/१०५	जयरगमणि, १७३१	जयरंग गणि, १७२१
११२/१३६	—	जयरग
११२/१४५	जिनचन्द	पदमराज
११४/१६०	कुशालचन्द	चौथमल
११८/१६३	चन्दन चरित्र	चन्द चरित्र
१२०/२२५	१८६५	१६६५
१२८/२६४	१६५६,१७१७	१७५६,१८७२
१२८/२६८	गुण सारग	गुणसागर
१२८/२६६	सूरि सागर	गुणसागर सूरि
१३०/३०६	तेरह ढाल,	साधुवन्दना की तेरह ढाल
१३०/३२१	रिखजी	कुशलसिंह
१३२/३३२	दिवाली काव्य	दिवाली कल्पनो अधिकार
१३४/३५०	सुम्मतिवल्लभ	मतिकुशल
१३६/३६८	१७८७	१७७७
१४२/४२१	सयय सुन्दर	समय सुन्दर
१४४/४४७	दिवीनोलाल	विनोदीलाल
१४६/४७१	रत्न मुनि	पुण्यरत्न
१४८/४८४	वल्लोल गणि, रायचन्द्र	लव्धोदय, रामचन्द्र
१४८/४८५	ज्ञानसमुद्र	लव्वोदय
१५०/५००	हरिविजय सूरि	सेवक
१५२/५१६	१६२६	१६६६
१५२/५१६	सालदेव	मालदेव
१५२/५२६	सुमतिवल्लभ	मतिकुशल
१५४/५४४	१८३	१८३५
१५६/५६०	जयनलक सूरि	जिनहर्ष
१५८/५७४	१८८६	१८३६

पृ सं /क्र.	अशुद्ध	शुद्ध
१५८/५७६	१६३६	१८३६
१५८/५८० से ५८३	अनूपचन्द	विनयचन्द
१६४/६२६	१८७	१८७०
१६६/६५६	सूरज विजय	सूर विजय
१६६/६५६	१७१२	१७६०
१७०/६८७	धर्म सुन्दर	धर्मसमुद्र
१७४/७२५	घाणल	थाणल
१७४/७२६	उअई	कुडई
१७६/७४३	१६५२	१८५२
१७६/७४६,४७,४८, ५१,५२,५६ ५७,५८,५६	मतिसार	जिनराज सूरि
१८२/८१४	अषि	ऋषि
१८४/८२२	विमल बुकागछ	दीप
१८४/८२३	धर्मसिंह	दीप
१८४/८२६	विभव सुजस	दीप
१८६/८४८	विनयचन्द	धर्मवर्द्धन
१८८/८६६	जिनचन्द्र सूरि	जिनोदयसूरि

उपदेश-नीति-वैराग्यादि

१६२/१३	पद्यावलि	पदावली
१६४/३०	ऋषभदेव	विभिन्न कवि
२१४/२१६	सममसुन्दर	समयसुन्दर
२१६/२४१	ज्ञानसागर	ज्ञानसार
२१८/२६२	तणा	तणा सम्वाद
२२२/२८६	सुन्दरदास	भूधरदास
२२२/२६२	सेवक, १८२८	मनोहरदास, १७२८
२२२/२६३	१७२२	१७२८
२२२/२६६	चन्द्रभाग	चन्द्रभाण
२३०/३६३	ज्ञानसार	बनारसीदास
२३४/४०१	परिग्रह की चौपाई	परिसह की चौपाई
२३४/४१०	ज्ञानसागर	ज्ञानसार
२३४/४१८	जिनचन्द, १६७६	जयसोम, १६४६

पृ.स./क.	अशुद्ध	शुद्ध
२३८/४४०	वल्लभगरिण	लक्ष्मीवल्लभ गरिण
२५२/५७७	विजयसेन	सोमप्रभ
२५२/५८०	सिसु जो पितु	सिख सुणौ प्रीउ माहरी रे

जैन प्रकरण

पृ.स./क.	अशुद्ध	शुद्ध
२८२/४६,४७	ज्ञानसागर	ज्ञानसार
२८६/८६	आवली	आवती
२८८/६६	टीकाकार	मूल रचयिता
३०६/२६६	३२/७ चौरानवे	३२/७०, चौरासी
३०८/२८७	जीवचार	जीववार
३१४/३५८	१६३१	१७३१
३१८/३८२	८३	८४
३१८/३६६	भाण	भाषा
३२६/४७२	१७/८८, कीर्ति विजय	१६/१३, विनय विजय
३३०/५१२	वोल	वेलि
३३८/५७५	५७/१५ माण्डली	३७/१५ माडनी
३४४/६३६	ज्ञानसागर	ज्ञानसार
३५४/७३७	१७६७	१४६७
३६६/८४३	देवपाल	देपाल

भूगोल-खगोलादि

पृ.स./क.	अशुद्ध	शुद्ध
३७६/१६	सोढ	साढा

इतिहास

पृ.स./क.	अशुद्ध	शुद्ध
३८०/१४	(सतर सवायण यत्र)	(सत्तरसउ ठाणा)
३८०/१८	विहमान	विहरमान

व्याकरण

पृ.स./क.	अशुद्ध	शुद्ध
३६०/७	मदनभूति	अनुभूति

प्रकीर्णक

पृ.स./क.	अशुद्ध	शुद्ध
४००/८६	रुपटा	सेहरा
४०४/१२३	कुणलिया	कुण्डलिया

प्रशस्तियाँ

पृ० स०	पक्ति स०	अशुद्ध	शुद्ध
४३०	२५	विजनय नारीहरे	विजयसेन सूरिह रे
४३२	१४	वक्तापुरि	वक्रापुरि
४३४	८	गुराजियो	गुरु राजियो
४३४	१२	ए	गणि
४३४	१३	तणा	तणा गुण
४३४	२७	दूसरा वार	दसराहार
४३५	२	ह्वै त स दरसण जी	ह्वं तस दरसण जी
४३५	४	चितना निग	चित नानिग
४३५	८	अवरलबुध	अविरल वुध
४३५	१४	धरराज	धनराज
४३५	१६	देत सुदरसण जी	ह्वै तसु दरसण जी
४३५	१८	चितना नग	चिन, नानग
४३६	१	सुत पत्र	शतपत्र
४३६	८	तेणीज	तरणिज
४३६	१५	निपि	निरषि
४३८	११	सालडी क्यासी	साल इक्यासी
४३८	१६	नाव सुपसोलै	नाथ सुपसाव ले
४३९	८	चित्रासन	चित्रसेन
४४१	२३	गुण सूरि सागर	गुणसागर सूरि
४४२	१६	सुम्मतिवल्लभ	मतिकुशल
४४७	४	या ग्रह	आग्रह
४४८	१७	जीनसाह	जिर्नासह
४४९	९	नयई	नयरी
४४९	२३	सुमतिवल्लभ	मतिकुशल
४४९	२६	वददतम	वल्लभ
४४९	३१	उछ कथई	उछक थइ
४५०	१	जिणदनणौ	जिणद तणौ
४५०	३१	गुणवईतगणि	गुणवर्द्धन गणि
४५१	९	सादा	सदा
४५१	११	चैङ्	वडै
४५२	११	वसुव ए	वसु धरा

पृ स	प.स.	अशुद्ध	शुद्ध
४५५	३२	जा सदी वाजे	जास दीवाजे
४५६	१	मानवी जै	मानविजै
४५६	२	ता	ताम
४५६	३	पूरव रतन	पुरपत्तन
४६१	१९	सहिज की रस	सहजकीर्ति
४६१	२०	ज धारी	जस धारी
४६१	२१	रत्न से पर	रत्नशेखर
४६२	४	विमलसिंह	दीप
४६२	६	काह	साह
४६२	८	मूष	मुख
४६२	१७	चटत	चढत
४६२	१८	भूष	भुख
४६२	२०	सिल	सील
४६५	८	इद	द्र गे
४६७	२४	कीर्ति विजय	विनय विजय

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना संवत् ६
२४८	५०५	१७/३२	जम्बूकुंवर की सज्झाय	कुशालचन्द	१८७० आषाढ कृ० १
२४९	११७१/२	३३/५६	जम्बूकुंवर की सज्झाय		
२५०	१७९३/२	४५/२३	जम्बूकुंवर की सज्झाय		
२५१	१८२२/२	४५/५२	जम्बू कुंवर की सज्झाय		
२५२	११०१/२	३२/५८	जम्बू कुंवर को चौढालियो	जयमल	१८२३ का० सु० १५
२५३	१५५३/५९	४०/३	जम्बूकुमार की ढाल		१८७० आषाढ
२५४	१४२१/२	१३/७१	जम्बूकुमार की सज्झाय		
२५५	३४५	१३/१०४	जम्बूकुमार की सज्झाय	कनीराम	१८८१
२५६	१५३३/२	३९/२३	जम्बूकुमार की सज्झाय	कनीराम	१८९८
२५७	१८१२	४५/४२	जम्बूकुमार की सज्झाय	हर्ष कुशल	
२५८	१८२१	४५/५१	जम्बूकुमार की सज्झाय		
२५९	१९२८	४८/१८	जम्बूकुमार की सज्झाय		
२६०	१९२७	४८/१७	जम्बूकुमार चरित		
२६१	१६७	११/९	जम्बू चरित्र	पू० लालचन्द	
२६२	७१४	२२/५	जम्बू चरित्र (टब्बा सहित)		
२६३	२४६४	६३/५८	जम्बूजी की ढाल	रिख दुर्गादास	१८४३
२६४	३२५/१६	१३/८४	जम्बूजी की सज्झाय	दुर्गादास	१८४३ चौमासा
२६५	१००१	३०/१९	जम्बूवती की ढाल	सूरसागर	
२६६	१००३	३०/२१	जम्बूवती की ढाल	सूरसागर	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
पीपाड	रिख शिवदास	१८८५ मार्गशीर्ष १४	जयपुर	हिन्दी-राज०	१६	१	२३ ५×१० ४ / १४—५२
				”	१३		२३·५×१२ ० / १९—४०
				”	१६		२५·३×११·४ / १५—३३
				”	१४		२५·७×९·७ / १५—३५
				”	ढाल४		२५ ०×११·८ / १९—३३
पीपाड				”	१६		२२·५×१२·० / २०—४३
				”	१६		२२·९×१० ८ / १६—५१
बिरादिया	रिख शिवदास	१८८२ मा० सु० ११	सोजत	”	२०	१	२५·०×११ ५ / १६—३८
अहिपुर	रिख कनीराम			”	१३		२६ ५×११·० / २१—५६
				”	११	१	२०·०×१०·६ / १५—३०
				”	१९	१	२२·८×९ ८ / १३—३०
				”	२०	२	२४ ७×११·२ / ११—३७
	माहू आर्या			”	कथा२०	८	२५ ६×११ २ / १९—५५
	ब्राह्मण मागीराम	१९१३ जेठ वद२ मगल०	जयपुर	”	ढाल ४३	३२	२७ ०×१३ ० / १८—४३
		१८७० का० सु० ११		प्राकृत	गद्य उद्देश्य २१	४१	२६ ०×१२ ८ / १८—४
	आर्या ज्ञाना	१८५१	किशनगढ	हिन्दी-राज०	१३	१	२३·६×१०·४ / १६—३०
नागौर				”	१३		२३ ६×११ २ / १३—४७
	आर्या फता	१८४६		”	ढाल ९	८	२२ ०×११·० / १५—४०
	ज्ञाना आर्या	१८४६		”	९	६	२२ ५×१० ९ / २१—४२

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना संवत् ६
२६७	५५५ / २	१७ / ८२	जम्बू स्वामी की सज्झाय	चौथमल	१८५८ फा० कृ० ३
२६८	१०४४ / १	३२ / १	जम्बू स्वामी को चौढालियो		
२६९	८२०	२५ / २७	जम्बू स्वामी चरित्र		
२७०	१०३६	३१ / १६	जम्बू स्वामी चरित्र	पद्मचन्द्र	१८२१ जेठ वद ३०
२७१	६८०	२० / ४७	जम्बू स्वामी सज्झाय	पूनो	
२७२	१५५३ / ६२	४० / ३	जयन्ती श्राविका की ढाल		१८६७ चौमासा
२७३	१७६२	४४ / ३२	जयन्ती श्राविका को सज्झाय	रतनचन्द	चौमासा
२७४	१५३६ / ७	३९ / २६	जयवन्ती नो प्रश्न विलास	रतनचन्द	१८८२ चौमासा
२७५	११० / २	७ / १२	जयवन्ती मृगावती का प्रश्न	चौथमल	का सु० ३
२७६	३५२	१४ / ५	जामवती की चौपई	उदयसागर सूरि	
२७७	३६४	१५ / १०	जामवती की चौपई	सुरीसागर	
२७८	१८६९	४६ / ३९	जामवती की चौपई	सुरीसागर	
२७९	२३२२	६१ / १७	जामवती की चौपई	उदयसागर सूरि	
२८०	८१४	२५ / २१	जामवती की ढाल		
२८१	२१४१	५५ / १५	जामवती की सज्झाय		
२८२	२२५५	५९ / ३	जिनदत्त की सज्झाय		१७९७ आषाढ वद १४ गुरुवार
२८३	१२१७ / ३	३५ / ११	जिनदास की कथा (नवकार पर पंच परमेष्ठी प्रभाव की तीसरी कथा)		
२८४	१२६०	३५ / ५४	जिनपाल जिनरिख का चौढालिया		
२८५	१०९३	३२ / ५०	जिनपाल जिनरिख को चौढालियो		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
पाली				हिन्दी-राज०	३१		२०५×११.१ २२—४५
	पन्नाजी आर्या			”	ढाल ४		२५७×१३४ १५—३४
	आर्या जेताजी	१८१८ चै० वद १३	सोपुर	”	गद्य	७	२४८×११० २०—५७
	पन्न	१८६६ श्रा० कृ० १२		”	ढाल २६	२५	२४०×११० १५—३३
				”	२०	१	२५८×११५ ११—३६
पाली				”	६		२५२×१२० २०—४३
जोधपुर				”	६	१	१८८×८२ ३१—१८
जोधपुर				”	६	-	२४.६×११५ १८—४०
बगडी				”	ढाल ७		२४६×११.० २२—७७
	रायकवरी	१८३१ मि० सु० ११सोम०	धाकडखेडी	”	ढाल १२	६	२४५×१०७ १६—४७
	आर्या लाछा			”	ढाल १२	८	२६.०×१२० १७—४५
	रतनाजी	१८५२	मारोठ	”	ढाल ११	६	२५.५×११.० १७—४४
	प्र० आर्या नन्द		जयपुर	”	टाल ६	६	२५५×११७ २८—३५
				”	ढाल १३	८	२४८×१०८ १४—४६
	आर्या पद्मा			”	ढाल ११	४	२२६×११.६ १६—३०
करनाल				”	१०	१	२३.४×१०.५ १४—२८
				”	गद्य		२४५×१११ २२—४६
	आर्या पन्नाजी			”	ढाल ४	३	२४०×११० १६—२७
				”	ढाल ४	३	२४०×११६ १५—३७

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२८६	१०९४	३२/५१	जिनपाल जिनरिख चौढालियो		
२८७	२७२	१३/३१	जिनपाल जिनरिख चौढालियो		
२८८	७४४	२४/११	जिनपाल जिनरिख चौढालियो	धर्मदेव	
२८९	१०९५	३२/२२	जिनपाल जिनरिख नो चौढालियो		
२९०	१७८	१२/७	जिनपाल जिनरिख नो चौढालियो	धर्मदेव	
२९१	८३१	२६/२	जीरण सेठ की सज्झाय		
२९२	२४८५	६३/७९	जीरण सेठ की सज्झाय	मुनि माल	
२९३	७३९	२४/६	झांझरिया मुनि की ढाल	भावरतन	१७५६ आषाढ वद२
प्र०२९४	१८६४	४६/३४	झांझरिया मुनि की सज्झाय	भावरतन	१६५६ आषाढ वद २ सोमवार
२९५	९३७/२	२८/३६	झांझरिया मुनि रो चौढालियो	प्र०	१७५६ आषाढ वद २ सोमवार
२९६	२६४/१	१३/२३	झूठल सेठ नो अधिकार	रामचन्द्र	१९१२ चौमासा
२९७	१२१६/३	३५/१०	ढ ढण रिख की सज्झाय	जनहर्ष	
प्र०२९८	१८	२/८	ढाल सागर (हरिवंश प्रबन्ध)	गुणसागर	. ७६ भा० सु०१२ सोमवार
२९९	११९	८/१	ढाल सागर (हरिवंश)	सूरिसागर	. ७६ सा० ०सु३ सोमवार
३००	३३९	१३/९८	ढाल सागर की देसिया		
३०१	२४०	१२/६९	तामली चरित्र	रिख चौथमल	....भा० सु० ८
३०२	४६४	१६/६९	तामली तापस की चौपई	सबलदास	१८७३
३०३	६९५	२१/१२	तामली तापस की ढाल	चौथमल	
३०४	८४८	२६/१९	तामली तापस रो चरित		१८४९ आश्विन कृ० ५ बुधवार

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	ढाल ४	३	२६ १ × ११ ८ १४—२८
	उदेचन्द	१८९४ पो० व०४	विक्रमपुर	"	ढाल ४	३	२४ ५ × ११ ३ १८—४८
				"	ढाल ४	४	२६ ३ × १२ ७ १५—३२
	जैताजी	१८३७ फा० वद २	बीकानेर	"	ढाल ४	२	२४.१ × १०.८ २१—४२
	पन्ना आर्या	१८७२ जेठ वद ४		"	ढाल ४	२	२५ ६ × ११.४ १६—४७
				"	ढाल २	१	२२ ८ × १० ० २०—४७
	आर्या चुहडी			"	३०	१	२४ ७ × ११ ० १६—३९
				"	११	१	२४ ४ × ११.० १२—४२
	रिख रतनजी	१७१७ वै० व०४	कृष्णगढ	"	ढाल ४	१	२५ ५ × ११ ४ १८—४५
				"	ढाल ४		२३ ३ × ११ ३ १३—३९
जोधपुर				"	ढाल ५		२६ ५ × १३ २ २८ –५२
				"	९		२५ ० × ११ २ २१—४०
कुरकुटेश्वर	आर्या छगना प्र०	१९०६ आषाढ व०४ रवि०	किशनगढ	"	ढाल १५९ अधिकार ९	१०६	२५ ५ × ११ ६ २१--३९
कुरकुटेश्वर		१८६३ वै० वद ७ गुरुवार		"	ढाल १५९	१५६	२५ ० × १२ २ १३--४२
				"	१४८	२	२४ २ × १० ८ १६—३९
जैतारण				"	ढाल ९	५	२६ ५ × १२ २ १४—३१
ढीकाई	आर्या छगना	१८९९ मा० शु०४	सोजत	"	ढाल १२	४	२३ ८ × १२ ० १५—३८
		१९१६ का० सु० ७ बुध०	जैतारण	"	ढाल ६	३	२६ ० × १२ ८ १८--३५
केलवा				"	ढाल ७	१०	२६ २ × १२ ७ ११—३८

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३०५	३७२/२	१४/२५	तुंगिया के श्रावक की सज्झाय	कनीराम	. ९७ माघ कृ० ..
३०६	११२८	३३/१३	तेतली पुत्र चौढालियो	जयमल	
३०७	३२३	१३/८२	तेंतलीपुत्र पंचढालियो	जयमल	
३०८	२२०५	५६/२२	तेतलीपुत्र पंचढालियो	जयमल	
३०९	६६	५/४	तेरह ढाल	देवमुनि	
३१०	१७४३/१	४४/१३	तेरापंथी जीतमलजी	रिख करमचन्द	१९११ चौमासा
३११	२३/२	३/१४	त्रिलोक सुन्दरी नी ढाल	सवलदास	१८९२ चौमासा
३१२	११२५	३३/१०	थावच्चाजो को चौढालियो	रिख तेजसी	
३१३	८८३	२७/१८	थावच्चा पुत्र का चौढालियो	विनयचन्द्र	१८८५ जेठ वद ५
३१४	२४१५	६३/९	थावच्चा पुत्र की सज्झाय	रिख तेजसी	
३१५	१४५७	३८/२७	थावरचा पुत्र को चौढालियो		
३१६	२३१७	६१/१२	थावरचा पुत्र संधि	श्री देव (समय सुजान)	१७४९ भा० सु० ७ बुधवार
३१७	१७३७/१	४४/७	थावरचा सुकुमार चौढालिया	रिख तेजसी	
३१८	२१११	५४/२८	थावरचा सुत साधु चौपाई	समयसुन्दर	१६९१ का० व० ३
३१९	७५	५/१३	थूलभद्र नो नवरासो	उदयरतन	१७५९ मि० ११
३२०	१८७/१	१२/१६	थूलभद्र मुनि और कोस्या की ढाल	मुनि लालचन्द	
३२१	११२६/२	३३/११	दशारणभद्र का चौढालिया	रिखजी	१७८६
३२२	२०१९	५१/९	दशारणभद्र का दूहा		१८३३
३२३	९४४/१	२८/४३	दशारणभद्र की ऋद्धि		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
हरसौर				हिन्दी-राज०	१७		२४ ३ × ११ ८ / २५—४४
				,,	ढाल ५		२३ ८ × ११ ४ / १६—४८
	जयदेव			,,	ढाल ५	५	२२ ० × १० १ / १६—४६
	महात्मा आर्या लाछा	१८६३ चै० सु० १ शुक्र०	सवाई जयपुर	,,	ढाल ५	६	२२ २ × १०·७ / १७—३७
				,,	ढाल १३	६	२५ ६ × १२ ३ / १५—४५
उज्जैन				,,	१३		२१ ५ × १०·२ / १२—३४
फलौदी	आर्या छगना	१९१३ चै० वद ७ बुधवार	किशनगढ	,,	ढाल १२		८ १ × ४ १ / १७—२७
				,,	ढाल ४	२	२७ ४ × १० ९ / १०—३६
		१९२६ जेठ सु० ६ मंगल०		,,	ढाल ४	४	२५ ० × ११·५ / १३—३५
				,,	ढाल ३	१	२६ २ × ११ ३ / १५—४३
	रिख ज्ञानचंद	१८८८ चै० सु० ३	अलवर	,,	पद्य २४ ढाल ४	२	२५·५ × १२·० / २०—४३
जैसलमेर				,,	ढाल २२ गा० ४०१८	१०	२६ ५ × १२ २ / २२—४१
				,,	ढाल ४		२४ ३ × १०·० / १६—४१
खंभात				,,	ढाल १०+१०	१८	२५ ५ × ११ ० / १३—४४
उनाउ	आर्या नगा	१८६५ वै० सु० १५ मंगल०	जयपुर	,,	ढाल ९	४	२७ ४ × १२ १ / १६—४६
	जीउ			,,	११		२१ ६ × १२ २ / २४—४६
सोजत				,,	ढाल ४		२४ ३ × १० ४ / १५—३७
कोटा चौमासा				,,	१०	१	२१ २ × ११·३ / १५—३१
				,,	२६		२३ ३ × १० ५ / १५—३६

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना संवत् ६
३२४	२३६८	६२/४०	दशारणभद्र की सज्झाय	लालविजय	
३२५	३०३	१३/६२	दशारणभद्र को चौढालियो	कुशलसी	१७४६
३२६	११२३	३३/८	दशारणभद्र राजा की कथा		
३२७	२३८५	६२/५७	दशारणभद्र राजा की सज्झाय	हीरानन्द सूरि	
३२८	२३७९	६२/५१	दशारणभद्र राजा को चौढालियो	कुशल	१७८६
३२९	२१६२/१	५५/३६	दस श्रावक की सज्झाय	रिख रायचन्द	१८२९ चौमासा
३३०	१३६७/१	३७/१७	दस श्रावको की सज्झाय	रिख रायचन्द	१८२९ चौमासा
३३१	१२५६	३५/५०	दस श्रावको के गीत	जैतसी	
३३२	१५३९/१	३९/२९	दिवाली काव्य अधिकार कथा		
३३३	४७८/१	१७/५	दिशारणभद्र को चौढालियो	रिख रायचन्द	१८७६
३३४	१०६७	३२/४	दीपायन तपसी की ढाल		
३३५	१९९४/१	५०/४	देवकी का छहो पुत्रो की ढाल		
३३६	२२३	१२/५२	देवकी की ढाल		
३३७	५८५	१९/१७	देवकी की ढाल	रिख चौथमल	
३३८	६८९/१	२१/६	देवकी की ढाल		
३३९	८५७	२६/२८	देवकी की ढाल	लवणकीर्ति	
३४०	१०६६	३२/२३	देवकी की ढाल	लूणकरण	
३४१	१०६८	३२/२५	देवकी की ढाल	लूणकरण	
३४२	११२४	३३/९	देवकी की ढाल	लूणकरण	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	९	१	२५ १×१० ८ / १५—३६
सोजत				,,	ढाल ४	२	२४ ९×१० ९ / १३—३७
				,,	गद्य	३	२५ ६×११ १ / १४—३७
				,,	३१	२	२२ ७×९ ५ / १३—४०
सोजत				,,	ढाल ४	२	२५ १×१० ९ / १२—४०
पीपाड				,,	१७		२४ ८×१० ६ / १२—४१
पीपाड				,,	१७		२२ २×११ ७ / १६—२८
				,,	१०	६	२४ ८×१० ७ / १८—३७
		१९१४ का० मु० १२शनि०	किशनगढ	,,	गद्य	१	२५ ६×१२ ५ / १९—२७
सोजत				,,	१७		२४ ८×११·८ / २०—३७
	पन्नाजी			,,	३	३	२३ १×१० ९ / १५—३४
	आर्या मार्न	१९०८ मा० सु० १२	मेडता	,,	६	[illegible]	२२ ७×११ ५ / १३—२७
			फागी	,,	१०	[illegible]	२५ २×१०·७ / १४—४४
				,,	२०	९	२५ ५×११ ० / १७—४३
				,,	६		२२ २—१० ५ / १६—३०
				,,		५	२५ ४×१२·० / १२—४५
	ज्ञाना आर्या	१८६८		,,	९	३	२३ ७×१० ५ / १९—२५
	पन्नाजी आर्या	१९६४ आ० कृ० ४	अलवर	,,	९	४	२५ ८×११ ३ / १४—४४
				,,	९	५	२२ ३×१० ४ / १५—३४

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३४३	११३३	३३/१८	देवकी की ढाल	लूणकरण	
३४४	१३१३	३६/४२	देवकी की ढाल	चौथमल	
३४५	११३४/१	३३/१९	देवकी की ढाला	लूणकरण	
३४६	८५३	२६/२८	देवकी गज सुखमाल की चौपाई		
३४७	१०९१/१	३२/४८	देवकीजी की ढाल	लूणकरण	
३४८	१७७	१२/६	देवको नी चौपाई		
३४९	३३०	१३/८९	देवदत्ता नी ढाला	जयमल	१८५० का० कृ० ३
प्र०३५०	१६६	११/८	देवराज वछराज ऋषि चौपाई	सुमतिवल्लभ प्र०	१७२९ का० वद गुरुवार दीपावली
३५१	६८५	२१/२	देवराज वछराज चौपई प्रवन्घ	ऋषि आनन्दनिधान	१७४८ वै० सुद..
३५२	१६३५	४२/५	देवसेना सती की ढाल	रिख कुशलचन्द	१८८८ चैत्र
३५३	११४४	३३/२९	द्वारिका दहन कृष्ण वलभद्रजी की ढाल		
३५४	२१२२	५५/३९	द्रौपदी की ढाल	जयमल	
३५५	११०३	३२/६०	द्रौपदी की सज्झाय	विनयचन्द	
३५६	७४	५/१२	द्रौपदी चोपी		
३५७	२३१४	६१/९	द्रौपदी सती की चौपई		..सावण सु० २
३५८	२४०२	६२/७४	द्रौपदी सती की सज्झाय		
३५९	१३३६/२	३६/६६	द्रौपदी हरण सज्झाय		
३६०	१४/१	२/४	धनदत्त धनवती चौपई	कुशलहरप	१७८८ आषाढ
३६१	१०२७	३१/१०	धनदत्त मुनि चौपई	समयसुन्दर	१६९६ आश्विन

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि सवत् ६	लिपि स्थल १०	भापा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	६	५	२५ ६×११·१ / ११—४५
	आर्या पन्ना			”		२ से ७	२६ ०×१०·८ / १७—४५
			कोटा	”	६		२६ ०×११ ५ / १७—४५
				”	१३	७	२५ १×११·५ / १६—३४
				”	६		२६·६×१२·७ / १३—३६
	रामाजी	१८४६ का० शु०		”	१७	७	२६·४×११ ४ / १६—४५
नागौर				”	६	४	२५·३×११ ३ / २०—४१
तवाडे				”	४५	२८	२५ ५×१२ ० / १८—४२
सोजत	आर्या रूपाजी	१८५० वै० सु० ७	फलोदी	”	ढाल ३४	२७	२५ २×११ ५ / १५—३८
सोजत				”	८	४	२५·५×१२ ५ / १८—३५
	आर्या ज्ञाना			”	१४	६	२३·८×११·० / २०—३६
	आर्या सूजा	१८४८	नागौर	”		६	२६ ०×१० ६ / १७—४६
				”	२	३	२५ ७×११ ५ / १४—३६
	आर्या छगना	१९११ चै० बद ३ मगलवार	किशनगढ	”	१८	५	२३ ८×११·८ / २०—३६
	वदनी		माधोपुर	”	११	८	२५ ८×१२ ५ / १७—४०
				”	२२	१	२५·०×११ १ / १६—३५
				”	१४		२३ ८×१० ८ / १७—४२
नागौर	सूजा आर्या	१८६२ सा० व० ४ सोमवार		”	३२		२५ ४×११ ५ / १७—४१
अहमदाबाद	प्रार्याज्ञानाजी	१८४४		”	७	५	२३·०×१२ ० / २३—३६

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३६२	८७६	२७/११	धनदत्त साधु की चौपई (व्यवहार शुद्धि पर)	समयसुन्दर	१६९६ आसोज
३६३	९४३/७	२८/४२	धन्ना अणगार की सज्झाय		
३६४	१८२२	४५/५२	धन्ना अणगार की सज्झाय	सेवक	
३६५	२५८	१३/१७	धन्नाजी अणगार	रतनचन्द	
३६६	१८७६	४७/६	धन्नाजी अणगार की सज्झाय	तिलोकसी प्रसाद	
३६७	७७२	२४/३९	धन्नाजी की चौपई	कमलहर्ष यतिराय	१७२५ आश्विन शु० ६
३६८	२३१९	६१/११	धन्नाजी की चौपई	दयातिलक	१७८७
३६९	१६३३/१	४२/३	धन्नाजी की ढाल		
३७०	१९१	१२/२०	धन्नाजी की ढाल	आसकरण	१८५९ वै० कृ०
३७१	७६२	२४/२९	धन्नाजी की ढाल	कुशल	
३७२	१२२३	३५/१७	धन्नाजी की लावणी	विनयचन्द	
३७३	२०२/१	१२/३१	धन्नाजी की सज्झाय		
३७४	१९३	११/५	धन्नाजी की सज्झाय		
३७५	६२०/२	१९/५२	धन्नाजी की सज्झाय		
३७६	२९८	१३/५७	धन्नाजी की सज्झाय		
३७७	६५२	२०/१९	धन्नाजी की सज्झाय	रतनचन्द	१८७८ चौमासा
प्र०३७८	१४५३	३८/२३	धन्नाजी की सज्झाय	रिख विनयचन्द प्र०	
३७९	१६०३	४१/३३	धन्नाजी की सज्झाय	विनयचन्द	
३८०	१६४२	४२/१२	धन्नाजी की सज्झाय	वीरचन्द	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
अहमदाबाद	आर्या राजकुवर	१८४४ फा० कृ० ३	जयपुर	हिन्दी-राज०	९	६	२४ २×१० ५ / १६—४८
				”	१४		२१ ९×१० ८ / २०—३६
				”	१५		२५ ७×९ ७ / १५—:५
		१९४१		”	१४	१	२५ ०×११ ८ / १२—३७
अकबराबाद				”	२२	१	२४ ५×१० ९ / ११—४०
सोजत	आर्या पन्नाजी	१८७७ जे० शु० ७ शनि०	जयपुर	”	३६	२९	२४ ८×१२·४ / १७—३६
	आर्या कृष्णाकवरी	१८६०		”	१७	९	२५ ०×११ ८ / १८—४९
				”	२२		२५ २×१२ ४ / १६—४०
वीमनपुर				”	७	४	२२ २×१० ७ / १३—४४
				”	१२	१	२४ ८×११ ४ / १४—३९
				”	१९	१	२१ ५×११ ५ / १९—४२
				”	१७		२३ ५×१२ २ / २०—५१
				”	१४	१	२३·५×१२ २ / २०—५१
				”	८		२० ३×१० २ / १३—३२
				”	२२	१	२५ ५×११ ९ / १४—३८
नागोर।				”	१७	१	२४ ७×११ ५ / १२—२३
		१८९२ आसोज सुद १		”	२०	२	२४ ९×१० ७ / १४—४७
झालावाड				”	२०	१	२६ ०×११ ० / १६—४२
				”	१९	१	२४ ४×११ ४ / १६—४३

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
३८१	१६६१	४२/३१	धन्नाजी की सज्झाय	विनयचन्द	
३८२	१५६६/२	४०/१६	धन्नाजी की सज्झाय	तिलोकसीप्रसाद	
३८३	१८७९/२	४७/९	धन्नाजी की सज्झाय	रिख कुशलजो	
३८४	१९५२	४९/२	धन्नाजी की सज्झाय	तिलोक	
३८५	१९८०	४९/३०	धन्नाजी की सज्झाय		
३८६	१६५	११/७	धन्नाजी री चोपी	सबलदास	१८६३ का० सु० ८ मगलवार
३८७	१३१२	३६/४२	धन्नाजी री सज्झाय	रतनचन्द	
३८८	१५५४/३३	४०/४	धन्नाजी री सज्झाय		
३८९	२४९५/१	६३/८९	धन्नाजी री सज्झाय	आर्या माना	१९०९ पो० सु० ६
३९०	२२९१	५९/३९	धन्ना मुनि की सज्झाय	तिलोकसीप्रसाद	
३९१	१५५१	४०/१	धन्यकुमार चरित्र		
३९२	४६	४/६	धर्मबुद्धि चतुष्पदी	लाभवर्धन	१७४२
३९३	८९६	२७/३१	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चउपदी	प्रीति सागर	१७६३ वै० कृ० ६ रविवार
३९४	३८८	१५/४	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	विजेराज	१८२९ जे० कृ० १४ रविवार
३९५	१२७४/१	३७/२४	धर्मरुचि अरणगार की सज्झाय	रतनचन्द्राचार्य	१८६५ चौमासा
प्र०३९६	१०३९	३१/२२	धर्मसेन चौपई	यशोलाभ प्र०	१७४० जेठ सु०१५
३९७	८६५	२६/३६	नदन मणिहार की चौपई		१८३४ आपाढ कृ० ८ गुरुवार
३९८	८८१	२७/१६	नन्दन मणिहार की ढाल	साधुदास	
३९९	११२२	३३/७	नन्दन मणिहार को चरित्र	जयमल	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	१९	१	६२ ३ × ११ ० / ५८—१५
अकबराबाद				"	२२		२२·७ × ११ ० / १६—३९
				"	१२		२५ ३ × १०·६ / १८—४३
				"	२९	१	२४ ७ × १२ ६ / १५—३४
	आर्या गुमानाजी			"	१२	१	१९ ९ × १०·६ / १३—२४
नागौर				"	६१	५५	२६ ५ × १२ २ / १२—५५
		१९०८ सा० ब०१ सोमवार	महेमर	"	१४	१	२५ ० × १० २ / १२—३२
				"	२२		२६ ० × ११·७ / १९—४३
मेडता				"	१२		२२ ० × ११ ३ / १२—२५
अकबराबाद	छोति आर्या			"	२२	१	२५ ६ × ११·३ / १६—३४
				सस्कृत	३८४	११	२६ ४ × १३ ६ / १४—५१
		१९३२ मि० सु० मगल०		हिन्दी-राज०	ढाल ३९ गाथा ५३५	१७	२३ ९ × १२·० / १६—४७
उदयपुर	देवीदास	१७७८ आषाढ कृ० ८	अरगलपुर	"	ढाल २८ गाथा ६१६	२५	२७ ० × १२ ० / १४—३६
				"	ढाल ३६ गाथा ५३२	२ से ११	२५ ७ × १० ४ / २२-४४
जोधपुर	रिख दौलतराम ज्ञानाजी	१८६९ चैं० सु० .	अरगलपुर	"	१८		२५ ० × १० २ / १६-३८
		१८६३ फा० कृ० १३	जयपुर	"	३६	२३	२४ ७ × ११·० / १८—४०
				"	४	७	२६ २ × १२ ८ / ११—३५
				"	४	४	२५ ० × १० ४ / १५—३५
				"	१२	४	२४ ८ × १० ७ / १८—४२

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्टाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
४००	१०४४/२	३२/१६	नन्दन मणिहार को चौढालियो		
४०१	७६०	२४/२६	नन्दन मणिहार को चौढालियो		
४०२	५३८	१७/६५	नन्द वहोत्तरी	जसराज	१७१४ कार्तिक
४०३	७५५	२४/२२	नन्दराय चरित्र	विनयचन्द	१८७९
४०४	३२८/२	१३/८७	नन्दीसेण की सज्झाय		
४०५	१०५६	३२/१३	नन्दीसेण चौढालिया		१८६४
४०६	३११	१३/७०	नन्दीसेण मुनि सज्झाय	मेरुविजय	
४०७	२०९९	५४/१६	नन्दीमेण रास	ज्ञानसागर	१७२५ का० व० ८
४०८	४१०	१६/१५	नमिराज की ढाल	ऋषि आसकरण	१८३९पौ० कृ० १३
४०९	१८५६/१	४६/२६	नमिराय ऋषि और इन्द्र परीक्षा		
४१०	२३५७	६२/२९	नमिराय ऋषि चौपई		
४११	११००	३२/५७	नमिराय की ढाल		
४१२	४३६/१	१६/४१	नमिराय की ढाल		
४१३	४५१/१	१६/५६	नमिराय की ढाला	रिख आसकरण	१८३९ पौ० कृ० १३
४१४	९२८	२८/२७	नमिराय नी सज्झाय	समय सुन्दर	
४१५	१०९६/२	३२/५३	नमिरायनी सज्झाय	समय सुन्दर	
४१६	१४९	९/१४	नरमदा सती नी चौपई	रायचन्द	१८४१ मिगसर
४१७	२४१७/१	६३/११	नरसीजी को मायरो		
४१८	२४१८/१	६३/१२	नल दमयन्ती की सज्झाय	समय सुन्दर	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी—राज०	४		२५ ७X१३ ४ / १५—३४
				”	४	३	२५ ३X११ ७ / २०—२९
विनावस	रिख हीराचन्द	१८७३ भा० शु० १४	मोजत	”	८१	२	२४ ४X१२ ३ / १७—४७
जयपुर	माना	१८९२ चै० कृ० १ शुक्रवार	धनेरा	”	७	२	२६ ७X११ ७ / २२—५१
				”	१०		२४ ८X१० ४ / १८—४७
अजमेर	आर्या केसर	१८७३ आ० वद ६ गुरु०		”	४	९	२३ १X१० ४ / ११—२८
				”	१३	१	२० २X१० ६ / १६—३९
राजनगर	शान्तिविजय		श्रीपत्तन	”	२८४	८	२५ ०X११ ५ / १६—५२
	नगाजी	१५५८ मा० शु० ३	पाली	”	७	२	२५·०X१० ८ / २१—५२
				”	ढाल २ पद्य ३९		२५ ८X११ ५ / २२—५०
				”	६२	२	२६ २X११ ५ / १६—४२
				”	१२		२१·६X११ ३ / १५—३०
				”	७		२० ७X११ २ / ७—२४
कुचेरा				”	६		२५ ४X११ ७ / ७—२४
				”	२९	१	२१ ४X१०·१ / १७—५३
				”	६		२४ ८X११ ३ / १४—३६
जोधपुर	नगाजी	१८४६	जयपुर	”	२८	९	२७ ७X१२ ४ / २०—५१
				”	२७		२२ ६X११·० / १६—४६
	चाहु			”			२१ ०X१२ ६ / १५—२७

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
४१९	२३	३ / ४	नलदमयन्ती चउपई	समय सुन्दर	१६७३ चैत्र
प्र०४२०	१४०	६ / ५	नलदमयन्ती चउपई	समय सुन्दर	१६७३ चैत्र
४२१	१६६८	४२ / ३८	नल दमयन्ती सज्झाय	सयय सुन्दर	
४२२	२०८५	५४ / २	नल दवदती सबध	समय सुन्दर	
४२३	३४९	१४ / २	नलोदय महाकाव्य सटीक	कालिदास टी० शिवदत्त	
४२४	१९११	४८ / १	नवकार माहात्म्य पर कुछ कथाए		
४२५	६४७ / ३	२० / १४	नागला स्तवन	रतनचन्द	१८७२ चौमासे
४२६	५३१	१७ / ५८	निर्मोही की ढाला	रतनचन्द	१८७४ चौमासा
४२७	१५८८	४१ / २८	निर्मोही की सज्झाय	भगवानदास	
४२८	३९८	१६ / ३	निर्मोही राजा की सज्झाय	राघवदोषी	
४२९	१६२६ / २	४१ / ५६	निर्मोही राजा की सज्झाय		
४३०	२१४६	५५ / २०	निर्मोही राजा की सज्झाय	श्रावकदास	
४३१	१६५८	४२ / २८	नीलकण्ठ राजा को व्यावलो		
४३२	२४४२	६३ / ३६	नीलकण्ठ राजा को विवाह		
४३३	८१३	२५ / २०	नेम चरित्र		
४३४	१०१९	३१ / २	नेम चरित्र		
४३५	१३७५ / १	३७ / २५	नेम चरित्र	जयमल	१८७४ फा० सु०५ शनिवार
४३६	१५६३	४० / १३	नेम चरित्र	जयमल	१८१४ भा० सु० ५
४३७	१८८३	४७ / १३	नेमजी की सज्झाय	तेजसी	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
मेडता		१८७० का० व०९सोमवार		हिन्दी-राज०	खढ६ ढाल३९ गाथा १३०५	४०	२५·६×१२ १ / १५—३५
मेडता	रत्नशील गणि प्र०	१६९७ वै० सु०४ मगल०	आगरा	”	खड६ ढाल३८ गाथा १३५०	४५	२८·१×११·० / १३—३६
				”	१२	१	१५ ६×८ ४ / १३—२८
				”	खड६ ढाल७६	३०	२६·३×१२ १ / ९—१८
	भगवानदास	१८४४ पौ० १ मगल०	नजीमाबाद	सस्कृत		२४	२८ ५×११ ७ / १८—६३
				हिन्दी-राज०		२२	२४ ०×१२·५ / ४—२२
देवगढ				”	२६		२३ ८×१२·० / १६—:०
			पाली	”	५	५	२४ ४×१२ ३ / ९—२५
				”	२९	१	२३·८×११ ३ / १६—३६
				”	३०	१	२३ २×२०·३ / १५—४३
				”	२९		२३ ५×१०·५ / १९—४४
				”	२९	१	२४ ४×११ ५ / १७—३५
	रिख परिचन्द	१८८५	जयपुर	”		१	१४ ४×११ ५ / १५—२२
		१८२८		”	गद्य	१	२३ ६×१० ९ / २७—१५
	जोशी देवकृष्ण	१९६०आपा० शु० ११	जयपुर	”	१५	७	२१ ०×११ ५ / १२—४५
				”	१७	५	२६·६×१२·३ / १८—४१
				”	५२		२५·४×११·० / १९—४०
	आर्याकुशला	१८२४ जे० वद	जयपुर	”	३९	३	२४ ५×१०·८ / १८—३५
				”	१८	१	२४ ०×११ ० / १२—३८

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना संवत् ६
४३८	१९४०	४८/३०	नेमजी की सज्झाय		
४३९	१०७७	३२/३४	नेमजी को व्यावलो	विनयचन्द	
४४०	१३८६	६२/५८	नेमनाथ का चौक	अमृतविजय	१८४० का० व० ५ रविवार
४४१	६६२	२०/२६	नेमनाथ का पद	रिख लालचन्द	
४४२	१४७६	३८/८६	नेमनाथ का फाग	राजहर्ष	
४४३	२४१४/२	६३/८	नेमनाथ की नवभव की सज्झाय		
४४४	२४८३	६३/७७	नेमनाथ के नवभव की सज्झाय		
४४५	१०७४	३२/३१	नेमनाथ चरित्र	जयमल	१८१४ फा० मु० ५
४४६	१३७७	३७/२७	नेमनाथ चरित्र	जयमल	१८१४ फा० सु० ५
४४७	६६२/१	२८/६१	नेमनाथजी का अष्टम गल	दिवीनो लाल	१७४४ फा०सु० ६
४४८	१४६०	३८/३०	नेमनाथजी का सिलोका	कुशल	
४४९	१३९७	३७/४७	नेमनाथजी की लावणी	विनयचन्द	
४५०	५५८	१७/८५	नेमनाथजी की सज्झाय	रिख चौथमल	चौमामा
४५१	१३०	८/१२	नेमनाथजी को व्यावलो		१८४३ मिगसर वद ७ सोमवार
४५२	११६८/२	३३/५३	नेमनाथजी को व्यावलो	रामकिशन	१८६६
४५३	१८४१/१	४६/११	नेमनाथ राजमती की लुहर	रिख हरण	
४५४	११३२/१	३२/१७	नेमनाथ राजमती राम	विजयदेव सूरि	
४५५	१७८२	४५/१३	नेमनाथ राजमती सज्झाय	मेवक	
४५६	६९४	२१/११	नेमनाथ रा भव		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	२३	१	२६०×११२ १५—३४
बीकावेर	पन्नाजी आर्या			”	५८	३	२४८×१०५ १४—४३
				”	२३	४	२६३—१०·४ १४—४०
				”	१७	१	२५३×११·४ १६—२७
	उदाजी	काती सोमवार	बीकानेर	”	३०	१	२४·८×११·० २१—२८
				”	२१		२६५×११·२ १८—४३
				”	२०	१	१७२×१०६ १३—३८
	ज्ञाना आर्या	१८७१ वै० सु० ५	नौ गाव	”	५२	४	२५२×१०६ १५—३५
				”	५२	४	२४·४×१११ १६—३८
सहजातपुर				”	मगल ८		२५·४×११३ २०—४०
				”	३७	१	२२७×१०४ १३—४६
	आर्या नगाजी	१८८० भा० वद २	जयपुर	”	४२	२	२५०×१०८ १५—३९
जैतारण				”	३५	२	२३२×१०५ ९—३२
सकूरावाद	आर्या रामा	१८९५ का० वद ३ सोम०	फीरोजपुर	”	१२५	६	२५·०×१२·२ १२—४६
रामपुर				”	४३		२४७×११८ १८—४५
				”	३२		२५·१×१२·० १८—४५
	जेता आर्या			”	७९		२५०×१०७ १५—३८
				”	१४	१	२४२×११० १५—४८
				”	गद्य	७	२३०×१०८ १३—३८

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना संवत् ६
प्र०४५७	५८६	१९/२१	नेमनाथ रास	कनककीर्ति प्र०	१६९२ माघ शु० ५
४५८	१३७०/२	३७/२०	नेमप्रभु की दया		
४५९	८०६/१	२५/१३	नेम बहोत्तरी	सुजानमल	१९५५ चौमासा
४६०	२१८५/१	५६/२	नेम बहोत्तरी	सुजानमल	१९५५ चौमासा
४६१	१५५३/२८	४०/३८	नेम राजमती की ढाल		१९०६ का० शु० ७
४६२	१५५३/२९	४०/३४	नेम राजमती की ढाल		कार्तिक
४६३	५५६	१७/८३	नेम राजमती की दस भव की सज्झाय		
४६४	१११३/२	३२/७०	नेम राजमती की सज्झाय		१८५१ चौमासा
४६५	१११८/२	३३/३	नेम राजमती की सज्झाय	रूपचन्द	
४६६	२३२६/२	६१/२१	नेम राजमती रास	विजयदेव सूरि	
प्र०४६७	२३८१	६२/५३	नेम राजमती रास	मुनि पुण्यरतन प्र०	१५८६
४६८	२२०८	५६/२५	नेमसर नो चरित्र	जयमल	१८०२ भा० शु० ५
४६९	१४७३/१	३८/४३	नेम से राणियो का आलाप		
४७०	९२१	२८/२०	नेमिदूत काव्य	विक्रम	
४७१	२११३	५४/३०	नेमिसर राजमती रास	रतन मुनि	
४७२	१२१७/१	३५/११	पच परमेष्ठी नमस्कार		
४७३	१८५	१२/१४	पथक की ढालों	चौथमल	१८५१ भाद्रपद
४७४	१५९६	४१/२६	पक्खी पोसा की ढाल (भानमती चौपई)		१९२७ चैं० शु० १५
४७५	१७८९/२	४५/१९	पदमोत्तर की ढाल	रिखजी	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
वडनगर				हिन्दी–राज०	१३	११	२५ ५×११·० / १५—४७
बीकानेर				,,	५		२५·२×११·५ / १४—४०
जोधपुर	देवकृष्ण	१९५९ सा० कृ० ८ सोम०		,,	७६		२७·२×१२·८ / १५—५७
जोधपुर	जोशी देवकृष्ण	१९५९ श्रा० वद १४ शनि०		,,	७३		२७ १×१२·७ / १३—४६
रायपुर				,,	१४		२५ २×१२ ० / २०—४३
जोधपुर				,,	१२		२५·२×१२·० / २०—४३
				,,	१९	२	२३·८×१०·८ / १६—३८
अलवर				,,	१२		२५ ५×११ २ / १५—२७
				,,	५		२४ २×११·५ / १४—२८
				,,	८०		२४·०×१०·४ / २४—४४
				,,	६८	३	२४ ८×१०·५ / १६—३९
	आर्या सतोषा	१८४५ वं० वद १०	रायपुर	,,	३९	३	२३·५×९ ९ / १५—४३
				,,	१७		२५·८×१२ २ / १४—३५
				सस्कृत	१२६	६	२६·४×११ ६ / १५—४८
	रिख ठाकुर	१७३७		हिन्दी-राज०	६२	३	२५·५×११·० / १३—४७
	आर्या जैताजी		मालपुरा	,,	गद्य	१	२५·५×११·१ / २२—४६
मेडता	छगनाजी	१९१८ जेठ कृ०११मंगल०	पाली	,,	५	३	२१ १×१०·२ / १७—३५
				,,	५	६	२४·०×२० ५ / १५—२७
				,,	१३		२२·३×११ ० / १८—३८

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचनासंवत् ६
४७६	१६६७ / १	४३ / २७	पद्मावती की आलोयणा	समयसुन्दर	
४७७	२३६६ / १	६२ / ३८	पद्मावती की आलोयणा	समयसुन्दर	
४७८	११६८ / १	३३ / ५३	पद्मावती की ढाल	समयसुन्दर	
४७९	१८१९	४५ / ४९	पद्मावती की ढाल		
४८०	२७०	१३ / २९	पद्मावती की सज्झाय		
४८१	३३४	१३ / ९३	पद्मावती की सज्झाय	समयसुन्दर	
४८२	५७० / १	१९ / २	पद्मावती खमावणा	समयसुन्दर	
४८३	१६४६	४५ / १६	पद्मावती जीव रास	समयसुन्दर	१८७० आसोजवद १४
४८४	२१७३	५५ / ४७	पद्मिनी चरित्र	वल्लोल गणि	
४८५	२३१९	६१ / १४	पद्मिनी चरित्र	ज्ञानसमुद्र	१७१४ मिगसर सुद ५ बुधवार
४८६	३६	३ / १७	परदेशी राजा की चौपई	जयमल	
४८७	९९४	३० / १२	परदेशी राजा की चौपई	जयमल	१८०७ आषाढ कृ० १३
४८८	२३२३	६१ / १८	परदेशी राजा की चौपई		
४८९	९९३	३० / ११	परदेशी राजा की चौपई		
४९०	९९५	३० / १३	परदेशी राजा की चौपई		
४९१	५२	४ / १२	परदेशी रायनी संधि	जयमल	१८७० आपाढ दूजा
४९२	२४२७	६२ / २१	परेवडा की सज्झाय		
प्र०४९३	२००७ / १	५० / १७	परेवा को सज्झाय (मेघरथ राजा की सज्झाय)		
४९४	२०७६	५३ / १३	पवनजय कुमार अंजना प्रबन्ध तृतीय खंड	पुण्यसागर	१६८९ श्रा० सु० ५

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	३४		२१ ०×११ ३ १४—२४
				,,	३५		२४·४×१० ३ १५—४७
	आर्या पन्नाजी			,,	५८		२४·७×११ ८ १८—४५
		१९३५ का० सु० २ रवि०	कृष्णगढ	,,	३८	२	२७ ३×१२ १ १२—३५
	आर्या सरसा			,,	५१	२	२४·७×११ २ १६—४३
				,,	४०	१	२४ ७×१०·२ १८—३९
				,,	३३	-	२५ ४×११ ७ १५—४७
				,,	३५	१	२६·३×१२ ० १६—५३
	रिख रायचन्द्र	१७६० चै० व० ७ शनि०	आकोला	,,	खड ३	१८	२६·०×११·७ १७—५६
उदयपुर				,,	ग्र०ग्र० ११५७ खड ३	२८	२४ ८×१२ ० १७—४२
				,,		१४	२६ ३×११ ७ १८—४३
		१८४९ माघ वदी ३		,,	२८	१६	२५·५×११ २ १८—४२
	आर्या रत्नाजी		जयपुर	,,		१४	२६ ०×११ ५ २२—४६
		१८४६ का० कृ० १२ गुरु०		,,	२०	१४	२४ ९×११·८ २०—५०
	आर्या ज्ञाना	१८४५	उगरियावास	,,	२२	१७	२२·७×११·० १९—४२
	आर्या मानी	१९१२ वै० वद ४	जयपुर	,,	२१	२६	२५ ६×१२·२ १५—३९
	कृपाराम	१८५१ आसो शु० ११ रवि०	उगरास	,,	२८	१	२५·७×११ ५ १८—४०
	मया प्र०	१८५२ वै० बद ५ गुरु०	किशनगढ	,,	३०		२४ ८×१० ५ २२—६२
	मानसिंघ	१७३७ सा० शु० १२		,,	खंड १	१४	२५ ५×१० ५ १७—६६

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
४९५	१०५५	३२ / १२	पांच पांडव द्रौपदी चरित्र	जयमल	
४९६	३०० / १	१३ / ५९	पांच पांडवां की सज्झाय		
४९७	१०९६ / ४	३२ / ५३	पांच पांडवां की सज्झाय		
४९८	९७८	२९ / ५	पांडव चरित्र	लाभवर्द्धन	१७६७
४९९	५१	४ / ११	पांडव पांच रो चिरत	जयमल	
५००	१९८७	४९ / ३७	पांडव सज्झाय	हरिविजय सूरि	
प्र०५०१	४८	४ / ८	पांडवां री चौपी	लाभवर्द्धन	१७६३
५०२	१२०	८ / २	पार्श्व चरित्र	प्र० आसकरण	१९४७ वै० वद २
५०३	१६१९	४१ / ४९	पार्श्व चरित्र		
५०४	२४०४	६२ / ७६	पार्श्वनाथ की निसानी		
५०५	२२२९ / १	५८ / ९	पार्श्वनाथ को चौढालियो	दौलत	
५०६	४७४ / १	१७ / १	पार्श्वनाथजी की निसाणी	जिनहर्ष	
५०७	४९४	१७ / २१	पार्श्वनाथजी की निसाणी	जिनहर्ष	
५०८	५९४ / १	१९ / ३६	पार्श्वनाथजी की निसाणी	जिनहर्ष	
५०९	१५६६ / १	४० / १६	पार्श्वनाथजी की निसाणी	जिनहर्ष	
प्र०५१०	१३३१	३६ / ६१	पार्श्वनाथजी की निसाणी	जिनहर्ष	
५११	२३२६ / ३	६१ / २१	पार्श्वनाथजी की निसाणी	जिनहर्ष	
५१२	४७९ / १	१७ / ६	पुंडरीक कुंडरीक की चौपई		
५१३	१६९२	४३ / २२	पुंडरीक कुंडरीक की ढाल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
	आर्या पन्नाजी	१८६६ सोमवार	अलवर	हिन्दी-राज०	८	७	२४ ३×१०.९ / २०—४५
				,,	१०		२५.२×१० ७ / १५—४५
				,,	१७		२४.८×११ ३ / १४—३६
विलावस	आर्या मानी	१९१८ चै० कृ० ७	जयनगर	,,	३७९७	११२	२५.४×११.२ / १५—२९
	आर्या नगा	१८४९आषाढ वद २	जयपुर	,,	८	७	२५.७×११.५ / १८—४८
	आर्या कुशला		वालद	,,	१८	१	१७ ६×१०.५ / २१—३७
वीलाहावीस	आर्या छगना	१९१३ जेठ सु० ७मगल०	किशनगढ	,,	खड ६ पद्य ३७९९	९१	२५.५×१२ ० / २०—२९
जोधपुर				,,	९८	३४	२६ १×११ २ / १४—४८
				,,	गद्य	१	२२ २×११.० / १९—४६
	आर्या पन्ना			,,	१०४	२	२६.२×११.८ / १६—४७
	वलदेव श्रीमाली	१८९६ फा० सु० २	भरतपुर	,,	४	२	२३.८×११ ८ / ११—३३
	अभयराज	१८९५ चैत्र कृ० १	अजयदुर्ग	,,	५५		२१.६×११.२ / १४—४३
			राई	,,	१०८	२	२६ ०×१२ ० / १६—३९
				,,	११०		२४ ०×१० ६ / १९—४०
	आर्या पन्नाजी			,,	१०४		२२ ७×११ ० / १९—३६
	आर्या सरसा प्र०			,,	१०९	२	२५.२×१०.७ / १६—४५
	आर्या रत्ना	१८३३ अधिक मास कृ०मगल		,,	१००		२४ ०×१० ४ / २४—४४
	आर्या लाछा		किशनगढ़	,,	२		२३ ०×१०.५ / १७—३९
				,,	२	१	२५ ०×१० ५ / १५—४८

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
५१४	१२४३	३५/३७	पुंडरीक कुंडरीक की सज्झाय		
५१५	६१३	१६/४५	पुण्यरतन सूरि गुरु फाग		
५१६	१६६५	५०/५	पुण्यसार कुमार चरित	पुण्यकीर्ति	१६२६ आसोज सु० १० गुरुवार
प्र०५१७	१८१३	४५/४३	पुण्यसार चरित्र	पुण्यकीर्ति प्र०	१६६६ आसोजसु०१०
५१८	४७	४/७	पुण्यसार रास	मुनि पद्म	१७०६ मा० सु० ५ सोमवार
५१६	१०३४	३१/१७	पुरन्दरकुमार चरित्र	रिख सालदेव	
५२०	३२४/२	१३/८२	पुण्यचूला साध्वी चरित्र	रायचन्द	१८४७ चौमामा
५२१	१७८६/१	४५/१६	प्रजन कवर की सज्झाय		
५२२	४४४	१६/४६	प्रत्येकवुध की चतुष्पदी	समयसुन्दर	१६६५ जे० सु० १५
५२३	४५	४/५	प्रत्येकवुध की चौपई	समयसुन्दर	१६६५ जे० सु० १५
५२४	१६८८	४३/१८	प्रत्येकवुध का पंचढालिया	समयसुन्दर	
५२५	५४०	१७/६७	प्रागदासजी महाराज का सन्थारा की सज्झाय		
५२६	११८	७/२०	प्रियमेलक चौपई	समयसुन्दर	१६७२
५२७	१०३८	३१/२१	प्रियमेलक सिंहलकुमार चौपई	समयसुन्दर	१६७२
५२८	१०२६	३१/१२	वकचूल की चौपई	मुनि तीकम	१७७४
५२६	१२२	८/४	वच्छराज रिषी चौपई	सुमतिवल्लभ	१७२६ का०वद ३० दीपावली गुरुवार
५३०	१७६४/२	४५/२४	वज्र दत भूपाल सज्झाय		
५३१	१४१२	३७/६२	वलभद्र मुनि की ढाला		
५३२	६३७/१	२८/३६	वलभद्र मुनि चरित्र	सवलदास	१८६०

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	२	१	२६ ०×११ ० १६—५६
				"	२४	२	२६ १×१० ८ १३—४०
सागानेर				"	७	९	२४·७×१० ४ १३—३८
सागानेर				"	९	२ से ७	२२·८×१० ५ १९—३७
चपावतीनगर	वल्लभविजय	१८३२ वै० सु० ७ शनि०	दारापारा	"	३५	३२	२६ ५×१२ ३ १४—४०
				"	३५७	११	२३·५×११ ० १९—४०
जोधपुर	छगनाजी	१९०५ फा० व०१४ बुध	किशनगढ	"	९		२३ ९×११ ७ २२—३८
				"	२७		२२ ३×११ ० १८—३८
आगरा	विमलगरिण	१७४६ का० शु० ६ बुध०	ऊठाला	"	खड ४ ग्र०ग्र०१३२९	२१	२६ ०×१० ७ १७—५३
आगरा	रामकुवर	पौ० सु०७मगल०	उज्जैन	"	खड ४ सर्वपद्य २५१	२४	२६·६×११·३ १६—४३
पाटरण	भागचन्द्र	१८०१ का० सु० ...	बीकानेर	"	५	२	२३ ५×१०·७ १६—३४
				"	२९	१	२५ ९×१२ ५ १६—४०
मेडता				"	ढाल १	१२	२४ ५×१०·७ १३—३५
मेडता	आर्या पन्नाज	१८९९		"	ढाल११	२१	२३ ७×१०·५ १४—३१
किशनगढ	आर्या पन्नार्ज	१८९९ १० रविवार		"	१७	८	२५ ८—११ ९ १९—४२
	नेनचन्द	१८६२ का० [०१२ सोम०	जयपुर	"	४५	४३	२५ ७×११·३ १२—४१
				"	६		२५ ३×११ ४ १५—३३
				"	२	१	२५ ५×११ ९ १२—३०
विसलपुर	जै गोपाल		नागौर	"	१२		२३ ३×११ ३ १३—३९

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
५३३	१९५४/१	४६/४	बाहुबली की सज्झाय	विमलविजय	१७७१ भादवा सुद १ रविवार
५३४	२३२६/४	६१/२१	बाहुबली गज थकी टाल	जिनहर्ष	
५३५	१००६	३०/२७	वेदरवी की चौपई	पेमराज	
५३६	१०१०	३०/२८	वेदरवी की चौपइ	पेमराज	
५३७	१०१	३०/२६	वेदरवी की चौपई	पेमराज	
५३८	१०८२	३२/३९	वैदर्भी की ढाल	पेमराज	
५३९	२४६९/१	६३/६३	ब्रह्मदत्त की सज्झाय		
५४०	२	१/२	भगवान नो विस्तार(गौतम स्वामी नो विस्तार)		
५४१	१९६१	४६/११	भरत की सज्झाय	तुलसीदास	
५४२	१९१६/३	४८/६	भरत चक्रवर्ती की ऋद्धि	आसकरण	१८३५ काती चौ०
५४३	६०५	१९/३७	भरतजी की ऋद्धि	आसकरण	१८३५ काती चौ०
५४४	१५७४	४१/४	भरतजी की ऋद्धि	आसकरण	१८३ काती चौ०
५४५	१३११/१	३६/४१	भरतजी की वैराग्य ढाल		
५४६	२००७/२	५०/१७	भरतजी की सज्झाय		
५४७	१७८१	४५/११	भरतजी की सज्झाय		
५४८	३१४	१३/७३	भरतजी रा वखाण		
५४९	१८९४	४७/२४	भवदत्त भवदेव की सज्झाय		
५५०	१४९८/५	३८/६८	भवदेव की सज्झाय	रतनचन्द्राचार्य	१८०९
५५१	२०८	१२/३७	भीली की सज्झाय		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	२		२५ ६ × ११ ७ १८—४०
				,,	७		२४ ० × ११·४ २४—४४
				,,	ढाल ७	७	२४ ८ × ११ ६ १६—३५
				,,	ढाल ७ ग्र०ग्र० २५०	६	२५ ० × ११·५ २१—४०
				,,	७	६	२५ ० × ११·५ १६—३५
				,,	६	५	२६ १ × १२ २ १९—३६
				,,	२३		२३ ६ × ९·८ १६—५८
	सती प्रेमाजी	१८३६ भा० सु० ११	मेडता	,,	गद्य प्रकरण ५	८	२४ ८ × ११ ७ ३२—५३
				,,	७	१	२४ ० × ११ २ १४—३०
तिवरी	चन्दन	१९४४		,,	२६		२६ २ × १३ ० १६—५३
तिवरी				,,	२६	२	२१ ८ × १० १ १३—३४
तिवरी				,,	२६	१	२४·५ × ११ ४ २२—५२
	भोजराज		आगरा	,,	११		२२ १ × १० ० १२—३९
				,,	२		२४ ८ × १०·५ २२—६२
				,,	ढाल २ पद्य २४	१	२६·० × ११·६ १८—४५
				,,	४	२	२३ ४ × १० १ १६—३९
				,,	३२	१	२५ ७ × ११·० १५—४०
देवगढ				,,	११		२१·१ × ११ ४ ९—२९
ज्ञानाजी				,,	२४	१	२५ ६ × ११ ० १४—३३

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
५५२	२०८७	५४/४	भृगु पुरोहित की ढाल	मुनि खेम	१७४७
५५३	११४७	३३/३२	भृगु पुरोहित को चौढालियो		
५५४	७४१	२४/८	भृगु पुरोहित को चौढालियो		
प्र०५५५	१६८	१०/११	मंगल कलश	मुनि लक्ष्मीहर्ष प्र०	१७१९ माघ सु० ११ गुरुवार
५५६	५३	४/१३	मछोदर चौपई	जिनहर्ष	१७१७ भादवा सुद ८ गुरुवार
५५७	१५०	९/१५	मदन कंवर की चौपी	सिवरतन	फागण सुद ७
५५८	२११३०	५५/४	मदन रेखा चरित्र	सेवक	
५५९	५५१/१	१७/७८	मनक पुत्र सज्भाय	लवघ	
५६०	२०६९	५३/६	मलयसुन्दरी चरित्र	जयतिलक सूरि	१७५१ आसोज सु० १
५६१	६३	५/१	मल्लिकुमारी नो चरित्र	रिख रायचन्द	१८२४ का० सु० १४ चौ०
५६२	१०४०	३१/२३	मल्लिकुमारी नो चरित्र	रिख रायचन्द	१८२४ का० सु० १४ चौ०
५६३	६७	५/५	मल्लि चरित्र	रिख रायचन्द	१८२४ का० सु० १४ चौ०
५६४	९२५	२८/२४	मल्लिनाथ त्ररित	रिख रायचन्द	१८२४ का० सुद १४
प्र०५६५	५०२	१७/२९	मल्लिनाथ स्तवन	नयरसुन्दर प्र०	१६७९ का० कृ० ३० अमावस्या
५६६	४२	४/२	महाबल मलयसुन्दरी राणी की चौपई	जिनहर्ष	१७५१ आश्विन शु० १ सोमवार
५६७	२१	३/२	महाबल मलियासुन्दरी चौपई	भगतविमल	१८५२ चौमासा
५६८	११२८/३	३३/१३	महावीर गौतम स्वामी चौढालियो	रायचन्द	१९३९
५६९	१४५०	३८/२०	महावीरजी की ढाल	रिख रायचन्द	१८३९ चौमासा
५७०	१२४७	३५/४१	महावीर भगवानके २७ भव		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि स्थल १०	भापा ११	छन्द-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
उदयपुर	आर्या लाछा	१८२८		हिन्दी-राज०		६	२५ ८×१२·३ / १५—४२
				”	४	३	२१७×१०४ / १२—३०
	मान मुनि	१८७८ वै०	जयपुर	”	८	२	२४०×११·३ / १८—४८
काकंदी	कालूहस	१९४० माह वद १	नयानगर	”	ढाल२७	२५	२०६×११.१ / १३—३९
वाड्मेर	न्याय विशाल	१८४६ चै० सु० ७		”	३३ ग्र०ग्र०१००१	६२	२०८×११३ / १०—२४
बीकानेर	आर्या कवरजी	१९१७आसोज वद ५	जयपुर	”	२७	२४	२६·२×१२·५ / १५—४६
		१८९०आसोज सु० ७	मेडता	”	११४	५	२६१×१२५ / १५—४६
	मनसाराम	१८४० जे० कृ० २ रवि०	गगराड़	”	१०		२६०×११·२ / २१—६९
	खीवसुन्दर	१८७८ का० शु० ३ सोम०		”	१४४	१२२	२५·०×११·५ / १३—३८
सोजत				”	२०	९	२५४×११·५ / १३—४७
सोजत		१८९७आपाढ़ सु० १०	अलवर	”	२०	९	२५·६×११ ५ / १५—४३
सोजत	आर्या छगना	१९०० फा० वद१२गुरुवार	किशनगढ	”	२०	८	२६·१×१२·२ / २०—३८
सोजत				”	२०	१५	२१७×१०·४ / १३—३४
बीकानेर				”	ढाल ४	३	२६०×१०७ / १२—४६
पाटण				”	ढाल १४३	१०३	२५·२×११५ / १६—३९
इन्द्रगढ	आर्या उदी	१९१७आषाढ वद ३	जयपुर	”	श्लोक ३८७५ खड ४	४७	२५१×११६ / १८—३३
				”	४		२२·८×११·४ / १९—४८
नागौर				”		२	२५·८×११·५ / १८—४२
	आर्या जेताजी	१८२४ चै० व० ३रवि०	जयपुर	”	७	४	२५४×११·२ / २२—४७

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ–नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
५७१	१५२९ / १	३९ / १९	महावीर स्वामी का चौढालिया	रिख रायचन्द	१८३९ काती वद ३०
५७२	४६२	१६ / ६७	महावीर स्वामी को चौटालियो	रिख रायचन्द	१८३९
५७३	१०५२	३२ / ९	महावीर स्वामी को चौढालियो	रायचन्द	१८३९ काती वद ३० चौमासा
५७४	१२०९	३५ / ३	महावीर स्वामी को चौढालियो	रिख रायचन्द	१८८६
५७५	११६७	३३ / ५२	महावीर स्वामी को सिलोको	आर्या जडावजी	१९६० श्रा० वद १३
५७६	२५५ / १	१३ / १४	महावीर स्वामी चौढालियो	रायचन्द	१९३९
५७७	२०१०	५० / २०	महासतीजी महाकु वरी की ढाल		
प्र०५७८	१७०	११ / १२	महिपाल नरेन्द्र चतुष्पदिका	विनयचन्द्र प्र०	१८८७ काती वद १३ चौमासा
५७९	५८०	१९ / १२	मागी तु गी की ढाल		
५८०	७०९	२१ / २६	मानतु ग मानवती कथा	अनूपचन्द	१८७० .. सु० १३
प्र०५८१	१२११	३५ / ५	मानतु ग मानवती कथा प्रवन्ध	अनूपचन्द	१८७०
५८२	२१८९	५६ / ६	मानतु ग मानवती की कथा	अनूपचन्द	१८३७ शु० १३
५८३	१००८ / १	३० / २६	मानतु ग मानवती की कथा	अनूपचन्द	१८७०माघ सु० १३
५८४	२२१२	५७ / ३	मानतु ग मानवती चरित्र	मोहनविजय	१७६० .. सुद ९
५८५	९९६	३० / १४	मानवती का रास	पूनमचन्द	१७८० का० सुद २ रविवार
५८६	९९७	३० / १५	मानवती को रास	पूनमचन्द	१७८० का० सु० २ रविवार
प्र०५८७	१९९	११ / ११	मुनिपति चरित्र	धर्म मन्दिर	१७२५
५८८	२२२२	५८ / २	मुनिपति चरित	प्र० धर्म मन्दिर	१७२५
५८९	१६	२ / ६	मृगलेखा चौपई	ऋषि रायचन्द	१८३८ मा०वद ११ चौमासा

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	४		२६·६×१२·९ १४—३६
	प० रूपचन्द	१८८८ आषाढ कृ० ८	जामनगर	"	४	४	२५ २×१२·५ १२—३३
नागौर	रिख रतनचन्द्र	१९५५ का० ब० १० बुध०	लश्कर	"	४	३	२५·१×१२ ३ १५—४१
				"	४	३	२४ ०×१२ ५ १६—३१
				"	१८४	४	२५·५×१२ ८ १४—५३
	मया			"	४		२४ ३×१०·८ २०—३६
	आर्या केसर			"	३९	३	२२·७×१०·२ ११—३०
बहादुरपुर	व्यास वालाबरूश	१९४३.... मु०२ मगल०		"	खड४ढाल१२३ ग्र ग्र०४०५६	१००	२५ ४×११·६ १५—६२
		१८४६	मारोठ	"	४५	२	२५·५×११·४ १७—४६
जयनगर	आर्या रखमाजी	१९२४	भरतपुर	"	७	६	२५ ५×१० ८ १६—४०
जयपुर	आर्या ज्ञाना	१८७७	जयपुर	"	९	५	२५ ४×११ ५ १६—४०
जयपुर	जयदेव	१८७१ वै० बद ६		"	७	६	२७ १×१२ १ १३—४६
जयपुर				"	८		२५ ९×१०·९ १६—४०
अणहिलपुर	स्वरूपकुशल	१८३४ मग० सुद १२	डूंगला	"	४७	४५	२६ ०×१० ८ १५—३६
लूणसर	आर्या पन्ना	१८७५		"	५०	३५	२५ ०×१२ ५ १७—३६
लूणसर		१८४९ का० सु०१५पूर्णिमा		"	५०	३२	२५ ३×१२ ५ १६—३६
पाटण	छगना	१९०९ का० ब० १२ सोम	किशनगढ	"	खंड४ ढाल६	३९	२५ २×१२·५ ०—३५
पाटण	आर्या राई	१८२६ जेठ वद १० रवि०	बीकानेर	"	खड४ ढाल६५	३४	२५ ८×११ ३ १६—५०
जोधपुर	आर्या दलूजी	१८९३ का० वद३ गुरुवार	उदयपुर	"	६२	३०	२४ ८×११ ४ १६—३१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
५६०	४०२/१४	१६/७	मृगापुत्र की ढाल		
५६१	७७७	२४/४	मृगापुत्र की सज्झाय		
५६२	८७८/१	२७/१३	मृगापुत्र की सज्झाय		
५६३	१८०४	४५/३४	मृगापुत्र की सज्झाय		
५६४	१८३६	४६/६	मृगापुत्र की सज्झाय		
५६५	२२३४/१	५८/१४	मृगापुत्र की सज्झाय		
५६६	२४३६/१	६३/३३	मृगापुत्र की सज्झाय		
५६७	१५४४	३६/३४	मृगापुत्र को चरित्र		
५६८	११२८/२	३३/१३	मृगापुत्र पटढालियो		
५६६	२३६	१२/६५	मृगालोढा का अधिकार	जयमल	१८०६ का० वद ८
६००	१०३२/१	३१/१५	मृगा लोढा चरित्र	जयमल	१८१२ का० वद ८
६०१	२१८६	५६/३	मृगावती को चरित्र	समयसुन्दर	१६६८
६०२	२३५६	६२/३१	मृगावती सती की सज्झाय	समयसुन्दर	
६०३	५१२	१७/३६	मेघकुंवर की ढाल		
६०४	१७७६	४५/६	मेघकुंवर की सज्झाय		
६०५	१६१७/१	४८/७	मेघकुंवर की सज्झाय	श्रीसार	
६०६	२०२२/१	५१/१२	मेघकुंवर की सज्झाय	पुनो	
६०७	२१५७/१	५५/३१	मेघकुंवर की सज्झाय		
६०८	२३७५	६२/४७	मेघकुंवर की सज्झाय	श्रीसार मुनि	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	२०		२६ ५×११'८ / १७—५३
				"	२९	१	२५'२×१० ५ / १५—४०
	रामधन			"	२५		२१'५×१०'० / १३—३५
				"	२५	१	२४'७×१० १ / १६—३५
	लाडाजी		अलवर	"	२७	१	२४'८×१२'० / १९—४०
	आर्या जेता			"	२६		२१ ६×१०'७ / २१—३८
				"	२६		२४ ८×१०'९ / १९—४१
	रिख सुखला	१९४०आसोज सुद २	आगरा	"	१०	५	२५'७×११'३ / १६—४४
		१८४४	मालपुरा	"	६		३३'८×११ ४ / १९—४८
				"	७	८	२६ ६×१३'० / १५—२६
				"	८		२६'२×११ ६ / २०—४४
	प० सुखचन्द	१७२३आसोज वद१०गुरुवार	कानपुर	"	खड३ ढाल३०	२१	२५ ९×१०'८ / १५—५६
				"	१४	१	२५ ५×११ ३ / १३—३५
	राजाराम		पहाडगज	"	२३	१	२४ ५×१०'७ / १५—४२
				"	२०	१	२३ ८×१२ १ / १८—३४
				"	१५		२५ ८×११'८ / १६—३६
				"	२१		२५'०×१० ८ / १०—३९
				"	१९		२४'२×११'० / १६—४३
				"	१४	१	२३ ७×११'२ / १२—३७

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
६०९	२३९४ / ३	६२ / ६६	मेघकुवर की सज्झाय	मादेव सेवक	
६१०	१८२६	४५ / ५६	मेघकुंवर को सतढालियो		
६११	१९२२	४८ / १२	मेघकुवर को सतढालियो		
६१२	२००६ / १	५० / १६	मेघकुवर को स्वाध्याय	कुशल मुनि	
६१३	६२२	१९ / ५४	मेघकुवर को स्वाध्याय		
६१४	१६८४	४३ / १४	मेघकुमार की ढाल		
६१५	१९५७	४८ / ७	मेघकुमार की ढाल	खुबो	
६१६	७८९	२४ / ५६	मेघकुमार की लावणी	रिख सिवचन्द	
६१७	२४३ / १	१३ / २	मेघकुमार की सज्झाय	यादव	
६१८	६७६	२० / ४३	मेघकुमार की सज्झाय	पुनो	
६१९	१६५२ / ४	४२ / २२	मेघकुमार की सज्झाय	प्रीतविजय	
६२०	१८४७	४६ / १७	मेघकुमार की सज्झाय		
६२१	२४६८	६३ / ६२	मेघकुमार की सज्झाय	मुनि श्रीसार	
६२२	१४६६	३८ / ३६	मेघकुमार को चौढालियो	रिख लालचन्द	
६२३	५४८ / १	१७ / ३५	मेघकुमार वैराग्य गीत		
६२४	३०४ / २	१३ / ६३	मेघकुमार सिज्झाय		
६२५	३०४ / १	१३ / ६३	मेघकुमार सज्झाय	पुनो	
६२६	२२०६ / १	५१ / १२	मेघकुमार सज्झाय	पुनो	
६२७	४२६	१६ / ३१	मेघरथ राजा की सज्झाय		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	१०		२०४×१०२ / १८—४३
				"	७	२	२५ ५×१२·१ / १८—४९
	आर्या अमर कवरजी	१९९३ भौ० शु० ७		"	७	२	२४ २×१२ ० / १५—५२
सोजत				"	१०		२२·३×१०·३ / ८—२२
				"	१४	१	२१·७×१०५ / १४—३५
		१६२१		"	९	१	२५ ८×१०७ / १३—४२
				"	२१	१	२१ ६×१२·२ / १६—३०
	ज्ञानचन्द्र	१८८६ पौ० कृ० १ रवि०	बीकानेर	"	१९	१	२५ ५×११·५ / १६—३६
				"	४		२६·०×११·५ / १५—४७
	आर्या गुमाना			"	२२	१	२४·९×११·३ / १६—३४
				"			२५·२×११ ५ / १६—३८
				"	२०	१	२५ ८×१२·० / १३—२८
				"	१४	१	२० २×१० ८ / १५—३८
				"	४	२	२५ ९×११ ७ / १९—४४
	पुरुषोत्तम			"	२२		२६·३×११ ७ / १०—३४
			जयपुर	"	१५		२४ २×१०·३ / १९—४२
				"	२२		२४ २×१० ३ / १९—४२
	आर्या लाछा	१८५३	जयपुर	"	२२		२४ २×१०·४ / १६—४६
	नानगराम		जत्रपुर	"	३१	१	२४·४×११ ० / १८—३९

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
६२८	२४५	१३/४	मेघरथ राजा रो बखाण		
६२९	२२४०	५८/२०	मेणरया चरित्र	रिख विनयचन्द	१८७०अधिक मास१३
६३०	१००८/२	३०/२६	मेणरेहा कथा	विनयचन्द	१८७०अधिक मास१३
६३१	१००७/१	३०/३५	मेणरेहा की चौपई		
६३२	१६२५	४८/१५	मेणरेहा की चौपई		
६३३	६८३	२०/५०	मेणरेहा की ढाल		
६३४	२१६७	५५/४१	मेतारज की चौपई		१८४९ आसोज १५ पूर्णिमा
६३५	३२५/१२	१३/८४	मेतारजजी की सज्झाय		
६३६	१२	२/२	मेतारज मुनि की चउपई	ऋषि रायचन्द	१८४९ आसोज सु० १५ चौमासा
६३७	७३६/२	२४/३	मेतारज मुनि की सज्झाय	कनक विजय	
६३८	११४१/१	३३/२६	मेतारज मुनि की सज्याय	समयसुन्दर	
६३९	२२६५	५९/१३	मेतारज मुनि की सज्झाय		
६४०	३९	३/२०	मेतारज मुनिराज नी चौपी	रायचन्द	१८४९ आसौज सु० १५ चौमासा
६४१	११३१/३	३३/१६	मेतारज मुनि सज्झाय	कनकविजय	
६४२	४८८/१	१७/१५	मैणरथ राजा की चौपई	हीरा सेवग	...१४ चौमासा
६४३	१७४३/१३	४४/१३	मोतीजी स्वामी की ढाल		१८६७
६४४	२९०/२	१३/४९	मोरादेवी की ढाल	रिख रायचन्द	
६४५	३३/१	३/१४	मोहन चेतन राजा ने चेतनराय नी चोपी		
६४६	१८३७	४६/७	मौन एकादश आख्यान		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	छगना	१९०६ वै० कृ० ६	किशनगढ़	हिन्दी-राज०	४	२	२३·२×११·० / १९—३५
जयपुर	रायकवरी	१९०० काती वद १२	शाहपुरा	"	६	५	२५·०×१२·० / १५—३३
जयपुर				"	६		२५·९×१०·९ / १७—४५
				"	१६०		२५·२×११·० / १७—४५
	जोशी जयदेव	१८७२ जेठ सु० ६		"	१५४	८	२६·४×११·३ / ११—४०
	रिख दौलतराम			"	१३२	४	२५·२×११·४ / १८—४९
नागौर	आर्या जतना	१८९४ आसोज व० ८	कोटा	"	१९	९	२८·७×१३·६ / १९—४१
				"	१३		२३·६×११·२ / १३—४७
नागौर	आर्या नगा	१८६७ जेठ सु० ९ सोम०	जयपुर	"	२०	७	२५·४×१०·७ / १७—५१
				"		१	२६·४×१२·० / १६—३८
				"	७		२३·४×११·० / १५—३०
				"	१४	१	२१·७×११·३ / १३—२९
नागौर	आर्या छगन	१९०६ का० वद ११	किशनगढ	"	२०	९	२४·२×११·८ / २१—३८
				"	१५ अ		२५·२×१०·६ / ११—४०
बडी				"	१८१		२५·७×१२·० / २०—४३
काकरोली				"	९		२१·५×१०·२ / १२—३४
			दिल्ली	"	१५		२४·८×११·५ / १५—३९
	आर्या छगना	१९१२ का० सु० ७	किशनगढ	"	१७		२०·८×१०·८ / १७—२७
				"	गद्य		२६·०×१२·२ / १४—४९

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
६४७	१८४४	४६/१४	मौन एकादशी सज्झाय	न्यायसागर	
६४८	२६६/१	१३/५८	रतनकुमार की सज्झाय		
६४९	१३४	८/१६	रतनगुरु की सज्झाय		
६५०	४२०	१६/२५	रतनगुरु की सज्झाय		
६५१	७८७	२४/५४	रतनगुरु की सज्झाय		
६५२	१२८०	३६/१०	रतनगुरु की सज्झाय		
६५३	१६८९	४३/१९	रतनगुरु की 'सज्झाय		
६५४	२२००	५७/१७	रतनगुरु की सज्झाय		
६५५	१४८१	३८/५१	रतनचन्दजी महाराज के गुणों का चौढालिया	हमीरमल्ल	
६५६	३०	३/११	रतनपाल चरित्र	सूरजविजय	१७३२
प्र०६५७	१३६	९/१	रत्न चूड की चौपई	अमरसागर प्र०	१७४८ चैत्र सु० १० गुरुवार
६५८	८८०	२७/१५	रत्नचूड को रास		१५७१ भा०कृ० २
प्र०६५९	५४	४/१६	रत्नपाल ऋषि चरित्र	मोहनविजय प्र०	१७१२ मार्ग शीर्ष ५ गुरुवार
६६०	१५४३	३९/३३	रथनेमि राजमति पचढालिया	रिख रायचन्द	१८५४ आसोज चौमासा
६६१	२४३२	६३/२६	राजमती इकवीसी	रिख चौथमल	१८५२ पांचम मगलवार
६६२	१५५३/२७	४०/३	राजमती की ढाल		१९०६ का० सु० ७
६६३	१८९७	४७/२७	राजमती की ढाल	रिख चौथमल	१८३६ चौमासा
६६४	२२०६	५६/२३	राजमती की सज्झाय	रिख रायचन्द	१८४६ चौमासा
६६५	५९३	१९/२५	राजमती नी सज्झाय	रिख चौथमल	१८५२ सा० सु०५ चौमासा

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भापा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	ढाल२	१	२३·७×११ ३ / १२—३४
	आर्या लाछा	१८५८ जे० सु० २	जयपुर	"	५८		२३ ५×११·० / २०—४४
				"	४२	२	२५·०×१२·३ / १२—३४
	आर्या नगा		लूणावा	"	५६	२	२४ २×१० ६ / १५—४०
				"	४९	२	२६·५×१०·८ / १५—३०
				"	३४	१	२१·०×१० ० / १८—३८
				"	४२	२	२३ ५×१०·८ / १७—३७
	आर्या लाछा	१८५८ वै० सु० ११	जयपुर	"	५६	२	२५·०×१० ९ / १६—४५
				"	४	२	२५·९×११·६ / १६—४३
बारानपुर	आर्या छगना	१९१३ वै० वद ७ रवि०	किशनगढ	"	३	२९	२०·८×१०·६ / १७—३०
खलचीपुर				"	६१	५३	२५ ९×११ ८ / १८—४४
				"	३०	१०	२६ ०×१०·८ / १७—५१
	चनणाजी	१८७० मा० सु० ३		"	६६	५५	२५ १×११ ० / १२—४५
जोधपुर				"	५	२	२३ ४×११ ३ / २१—३८
पाली				"	२१	१	२५ २×१० २ / १४—२१
रायपुर				"	९	२९	२५ २×१२ ० / २०—४१
मेडता				"	११	१	२५ ७×११ ० / १४—५०
मेडता	आर्या लाछा	१८५३	जयपुर	"	१५		२४·२×११ ४ / १६—४६
पीपाड		१८६५ फा० सु० १		"	२१	१	२६ ६×१२ ० / १७—३४

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचनासवत् ६
६६६	२२२८	५८ / ८	राजमती नेमनाथ विवाह		
६६७	१८१६	४५ / ४६	राजमती नेमनाथ सज्झाय	रिख रायचन्द	१८५५ चौ०
६६८	१८०६	४५ / ३६	राजमती रहनेमो की सज्झाय	रिख चौथमल	१८५२ सा०
६६९	२२६७	५९ / १५	राजमती रहनेमी को सज्झाय		
६७०	५१४ / १	१७ / ४१	राजमती रहनेमी नो शील पंचढालियो	रायचन्द	१८५४ आश्विन चौमासे
६७१	३९७	१६ / २	राजमती रहनेमी पचढालियो	रायचन्द	१८५४ आसोज चौ०
६७२	२४४०	६३ / ३४	राजमती रहनेमी सज्झाय	रिख चौथमल	१८५२ श्रावण
६७३	९३८	२८ / ३७	राजमती रहनेमी मज्झाय	लिखमीचन्द	
६७४	२०३६ / १	५१ / २६	राजमती रहनेमी सज्झाय	रिख चौथमल	१८५७ आषाढ
६७५	३२४ / १	१३ / ८६	राजसिंह रत्नावली चौपई	कुशलचन्द	१९०४ चौमासा
६७६	२४१२	६३ / ६	राजा भोज और माघ पंडित डोकरी से सवाद		
६७७	१२१४	३५ / ८	राजा राम की मूदडी		
६७८	११०६	३२ / ६३	राजुल का दशभव की सज्झाय		
६७९	१०८५ / २	३२ / ४२	राजुल पच्चीसी	लालचन्द	
६८०	१०५०	३२ / ७	राजुल पच्चीसी	रिख लालचन्द	
६८१	५५०	१७ / ७७	राजुल पच्चीसी	लालचन्द विनोद	
६८२	५६१	१७ / ८८	राजुल पच्चीमी	लालविनोदी पाडे	
६८३	१५९७	४१ / २७	राजुल पच्चीसी	लालचन्द विनोद	
६८४	१७७९	४५ / ९	राजुल पच्चीसी	लालचन्द विनोदी	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
	चपा आर्या	१९४० . चौथ		हिन्दी-राज०	१२०	८	२१ ५×११·३ १४—३०
मेडता	आर्या लाछा	१८६३आसोज सु० २ सोम०	जयपुर	”	१५	१	२४ ७×१० ६ १८—४४
पीपाड				”	२१	१	२४ ०×१०·८ १३—३७
	जोरावरमल श्रीमाल		जयपुर	”	२६	१	२५·४×११ ० १६—५१
जोधपुर	आर्या नगा	१८५६ वै० कृ० १२ बुध०	अजमेर	”	५		२० ०×१० ५ २२—४७
जोधपुर				”	५	४	२१ ८×१० ० १५—२२
पीपाड	रतनचद	१८७६ चै० व० १४	दिल्ली	”	२१	१	२५ ४×१० ८ १४—३३
				”	१७	१	२०·२×१० ७ १८—३२
पीपाड	आर्या लाछा	१८६६ फा० शु० ११ शुक्र०	सवाई जयपुर	”	२३		२४ २×१०·६ १८—४६
पाली	आर्या छगना	१९०५ फा० वद ४ रवि०	किशनगढ	”	ढाल २१		२३·९×११·७ २२—३८
				”	गद्य	१	२४ ७×१२ ० ११—२७
				”	२	२	२५ ४×११·० १४—३६
				”	१९	३	२६ २×१० ८ १०—३०
				”	२६		२५·८×१२ ४ १२—३५
	आर्या पन्ना			”	२६	३	२४ १×११ ० १६—३८
				”	२५	३	२५·६×१२·५ १४—३८
				”	२५	३	२५ ३×११ १ १३—३८
उगरियावास				”	२५	२	२३ ४×१०·८ २२—८५
	आर्या पन्ना			”	२५	४	२१·५×११ ५ १४—३०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
६८५	५०३/१	१७/३०	राणी चेलणा और वानाजी की ढाल		
६८६	८०८	२५/१५	राणी पद्मावती खमावण	समयसुन्दर	
६८७	५०१	१७/२८	रात्रि भोजन चउपई	धर्मसुन्दर	
६८८	९९२	३०/१०	रात्रि भोजन निपेध चोपई	कमलहर्ष	१७५० मार्गशीर्ष
६८९	९९	७/१	राम चरित्र	चौथमल	
६९०	१०२२	३१/५	राम चरित्र	केशराज	१६८० आश्विन १३
६९१	१०३०	३१/१३	राम चरित्र	केशराज	१६८० आश्विन .. १३
६९२	७३६/१	२४/३	रामजस सज्झाय	केशराज ऋषि	
६९३	१	१/१	रामयशो रसायन	केशराज	१६८० आसोज....१३
प्र०६९४	१२३	८/५	रामयशो रसायन	केशराज	१६८० आसोज ...१३
६९५	३८७	१५/३	रामयशो रशायन	प्र० केशराज	१६८० आश्विन १३
६९६	१०४३	३१/३६	राम रासो	समयसुन्दर	
६९७	२३३७	६२/९	राम सीता की ढाल	मुनि ज्ञानचन्द	१९२० वैशाख
६९८	२३३९	६२/११	रामायण की ढाल	केशराज	
प्र०६९९	२६	३/७	रिसालूराय की वात.	चारण नरवदो	
७००	२१८/१	१२/४७	रुक्मणी किशनजी को व्यावलो		
७०१	१०९८	३२/५५	रुक्मणी ढाल	गुणसागर	
७०२	१३४८	३६/७८	रुक्मणी की ढाल		
७०३	१७९९	४५/३९	रुक्मणी की सज्झाय		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	आर्या नगा	१८६७ आ० कृ० ८ रवि०		हिन्दी-राज०	१४		२५ ३×११ ३ / १६—४८
				”	३	२	२४ ३×११ ७ / १५—३८
प चाल	आर्या नगा	१८५८ सा० सु० २ मंगल०	जयपुर	”	२५८	८	२५ ४×११ ७ / २०—४८
लूणकरणसर	आर्या ज्ञाना	१८५५	फागी	”	२५	१५	२१ ६×११·० / १८—३५
				”	४	२	२५·०×११ ८ / १८—५४
	बोडा नरसिंहदास		जोधपुर	”	६२	५०	२६ ३×१२ ० / २१—७१
		१८७४ का० शु० ६ मगल०	अलवर	”	६२	८३	२६·२×११ ६ / १८—३५
				”	३		२६ ४×१२ ० / १६—३८
अ तरपुर	व्यास रताणी	१९२७ जे० व० १२ शुक्र०		”	ढाल ६२	९७	२५ ३×११ १ / १५—४८
अ तरपुर	उमाजी	१८७२ जे० शु० १३सोम०	बीकानेर	”	ढाल ६२	१०९	२५·७×११ २ / १८—३४
अ तरपुर				”	६२	१८[illegible]	२४·२×१० ७ / १२—३०
मेडता	आर्या ज्ञाना	१८५५ चै० शु० ५ गुरु०	जयपुर	”	नव खड	७३	२२ ३×१०·८ / १७—४१
जोबनेर				”	५	२	१७ ६×८ ८ / ६—३६
				”	५६	३	२ ५५×१२ ० / १६—३८
	आर्या उदी प्र०	१९१३ चै० सु० ५ बुध०	जयपुर	”	गद्य-पद्य	३७	२५ ३×११·८ / १५—३७
	आर्या नगा	१८५७	जयपुर	”	६		२६ ०×११ ३ / १७—४८
				”	३७	२	२४ ६×११·६ / १५—३६
				”	६	१	२०·५×१०.८ / १०—३३
				”	१७	१	२६·०×१०·७ / १३—३१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७०४	१०८४	३२/४१	रुक्मणी को व्यावलो	सूरदास	
७०५	१३४१/१	३६/७१	रुक्मणी को व्यावलो	सेवग	
७०६	५०९	१७/३६	रुक्मणी री सज्झाय	रूप विजय	
७०७	५०	४/१०	रूपसेन चरित्र चौपई	रूप ऋषि	१८७८ सा० सु० ४ गुरुवार
७०८	१०९६/६	३२/५३	रेवती की सज्झाय	कान्हाजी	
७०९	१५५३/६३	४०/३	रेवती श्राविका के पाक की ढाल		१८६८
७१०	२३५५	६२/२७	रोहिणी कथा महिमा	मुनि श्री सार	१७१० सा० सु० ४
७११	६२३	१९/५५	रोहिणी की ढाल	जेठमल	
७१२	१५२२	३९/१२	रोहिणी की ढाला	श्री सार	१७१० सा० सु० ४
७१३	१६३९	४२/९	रोहिणी स्तवन	श्रीसार	१७१० सा० सु० ४
७१४	४१७	१६/२२	ललिताग		
७१५	६८४	२१/१	लीलावती चरित्र		
७१६	१३७	९/२	लीलावती महासती की चतुष्पदी	लाभवर्द्धन	१७२८ का० सु० १४ चौमासे
७१७	२२२	१२/५१	वज्र पुरन्दर अष्टढालिया		
७१८	१७२	१२/१	वयरस्वामी की चौपई	ऋषि रायचन्द	१८५२ का० कृ० ७
७१९	३५१	१४/४	वयरस्वामी चरित्र	रायचन्द	१८५३ का० वद ७ चौमासे
प्र०७२०	२५	३/६	विक्रम सेन कुमार की चौपई	मानसागर	१७२४ काती
७२१	११२	७/१४	विक्रमादित्य खापरिया चोर संवाद चौपई	लाभवर्द्धन	१७२७ भाद्रपद सु० १३ बुधवार
प्र०७२२	१३९	९/४	विक्रमादित्य चरित्रम्	मानविजय प्र०	१७२९ पो० सु० ८ बुधवार

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ६	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
	आर्या लाछा			हिन्दी-राज०	६५	५	२६ ३×१२ ० / १६—३८
	आर्या लाछा	१८५६ फा० सु० १४	सवाई जयपुर	”	८		२० ३×११ १ / १८—३५
				”	१४	१	२० ०—११ ४ / १४—२१
मकसुदाबाद	वीर ऋषि	१८७६ भा० सु० ८		”	३४	१६	२७ ५×१२ ६ / १७—४०
				”	११		२४ ८×११ ३ / १४—३६
विसलपुर				”	६		२५·२×१२·० / २०—४३
				”	२५	३	२५ २×११ ६ / ६—३६
	आर्या प्रेमा			”	३	१	२५ ०×११ ५ / २५—४३
				”	२६	३	२५ ०×१२·६ / ११—३३
	आर्या लाछा			”	४	२	२४·०×१२·४ / १४—३५
				सस्कृत	२८२	८	२५ ०×१० ५ / १५—४२
	विप्र केसो	१६७६ भा० सु०१४मगल०	रामपुरा	हिन्दी-राज०	४४	५५	२५ ५×११·० / ६—३५
सेमावे	आर्या नगा	१७४७ बद. गुरु०	बीकानेर	”	ढाल २०	१७	२६ ३×११ ४ / १७—४४
	ऋषि छीतरमल			”	८	४	२१·२×११·६ / १३—२५
जोधपुर	आर्या नगा	१८५५ चै० शु० १२	किशनगढ	”	८	३	२२·३×१० ५ / १६—४६
जोधपुर	आर्या फता	१८५३ जे० सु० ७ रवि०	नागोर	”	८	२	२६ ०×११ ३ / १६—७३
कडानगरे (महाराष्ट्र)	आर्या छगना प्र०	१७२४ का० सु० ५ रवि०	किशनगढ	”	५२	३६	२१ ६×१० ४ / १८—३१
जैतारण		१६०३ का० सु० ११		”	२७	१७	२४ ०×११ ६ / १६—४७
		१८८४आषाढ बद ६	हरिदुर्ग	”	ढाल ६२	११३	२७ ४×१२ ३ / १५—३३

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७२३	१०२६	३१/९	विक्रमादित्य देवदमनी चोपई	लक्ष्मीवल्लभ गणी	
७२४	२०	३/१	विक्रमादित्य पंचदंड चउपई		
७२५	५७३	१९/५	विक्रमादित्य सम्बन्धी चतुष्पदी	कीर्ति सुन्दर	१७६२
७२६	२१८२	५५/५६	विक्रमादित्य सुत विक्रमसेनकुमार की चोपई	मानसागर	१७२४ काती
७२७	५०४	१७/३१	विजयकंवर की सज्झाय	रिख लालचन्द	१८६१
७२८	१५९०	४१/२०	विजयकुंवर रास	रिख लालचन्द	
७२९	१६२२	४१/५२	विजयकुमार का चौढालिया	रिख रामचन्द्र	१९१० फा० सु० १५
७३०	४९८/१	१७/२५	विजयकुमार का चौढालिया	रिख रामचन्द्र	१९१०फा० सु० १५
७३१	१७०७	४३/३७	विजयकुमार की ढाल	जिणदास	
७३२	४०२/३	१६/७	विजयकुमार गुणग्राम	दौलतराम	१८६१
७३३	७०२/१	२१/१९	विजयकुमार सुभद्रा ढाल		१८६३
७३४	८४१	२६/१२	विजयचन्द्र केवली चरित्र	चंदप्पह महयार	११२७
७३५	८३४/२	२६/५	विजयसेठ की सज्झाय	ऋषि लालचन्द	१८६१
७३६	२८५	१३/२४	विजयसेठ की सज्झाय	लालचन्द	१८६१
७३७	१७९१	४५/२१	विजयसेठ नो चौढालियो	हर्षकीर्ति	
७३८	२२८६	५९/३४	विजयसेठ विजया सेठानी की सज्झाय	कुशल	
७३९	२५९/२	१३/१८	विजयासेठ सेठानी की ढाल	मुनि मानसागर	१९११ फा० सु०
७४०	३२५/२	१३/८४	विजयसेठ सेठानी की सज्झाय	रतनचन्द	
७४१	२४५८/२	६३/५२	विजयासेठ सेठानी की सज्झाय	रतनचन्द	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिगि-स्थल १०	भाषा ११	छद सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
		१७२८ वै० सु० १३ गुरु०	बीकानेर	हिन्दी-राज०	१४६	८	२५·१×११·६ / १३—३३
				”	६	८०	२६ ४×१०·८ / १२—५१
घाणले				”		७	२५ ५×१० ६ / १६—४६
कुइई	महात्मा जयदेव	१७८० वै० सुद ५	जयपुर	”	५३	४३	२४·२×१०·३ / १२—४२
कोटा, रामपुरा				”	६५	३	२५ ०×१०·८ / १५—३६
	आर्या मैना		अजमेर	”	२८	३	२६ ०×१० ८ / १४—३७
नागौर	आर्या उदा	१९३९	पाली	”	४	३	२० ३×१०·६ / १५—३१
नागौर				”	ढाल ४		२१ २×११·२ / १५—३८
				”	ढाल २	२	२१ ५×११·० / १०—२४
कोटा, रामपुरा				”	१९		२६ ५×११·८ / २७—५३
कोटा		१९२२ चैत्र कृ० अमावस		”	१६		२० ५×१० ० / १०—४१
				प्राकृत	ग्र०ग्र०४९००	५०	२५·८×११ ३ / ११—३६
कोटा				हिन्दी-राज०	१६		२६ ०×११ ० / १५—४७
कोटा				”	१६	२	२२ ८×१० ६ / १६—३५
				”	४	१	२४ २×११·० / १९—४४
				”	२०	१	२३·४×११·३ / १५—३९
देवगढ		१९१२ आ० ब० १४ बुधवार	किशनगढ	”	७		२३·१×१०·५ / १५—४०
				”	१३		२२ ६×११·२ / १३—४७
				”	१४		२२·२×१० ३ / १२—३८

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७४२	१६०५	४७/३५	विष्णु कुमार चरित्र	रिख रामचन्द्र	
७४३	३२२	१३/८१	वेरस्वामी को ग्राठढालियो	रायचद	१६५२ काति व०७ चौ०
७४४	१५१२	३६/२	व्रत विधान राम	दौलतराम	१७६७ ग्रासोज सुद १० गुरुवार
७४५	२२५०	५८/३०	शनिश्चर की कथा		
७४६	६३२	२८/३१	शालिभद्र की चौपई	मतिसार	१६७८ ग्रासोज व० ६
७४७	१०१३	३०/३१	शालिभद्र की चौपई		१६७८ ग्रश्विन कृ० ६
७४८	१०७६	३२/३६	शालिभद्र की चौपई	मतिसार	१६७८ ग्रासोज बद६
७४६	१८८६	४७/१६	शालिभद्र की लावणी		
७५०	६१०	१६/४२	शालिभद्र की सज्झाय	रतन	
७५१	६२६	२८/२८	शालिभद्र चरित्र	मतिसार	१६७८ ग्रासोज धद६
७५२	७४०	२४/७	शालिभद्र चौपई	मतिसार	१६७८ ग्राश्विनकृ०६
७५३	३२५/५	१३/८४	शालिभद्र जी की लोवडी		
७५४	२३१५/१	६१/१०	शालिभद्रजी को सिलोको		
प्र०७५५	३४६	१३/१०५	शालिभद्र धन्ना ग्रधिकार छैढालिया	मु० रामचन्द्र	१६३१
७५६	३४	३/१५	शालिभद्र नी चौपई	प्र० मतिसार	१६७८ ग्राश्विन वद ६
७५७	१०१४	३०/३२	शालिभद्र महामुनि की चौपई	मतिसार	१६७८ ग्राश्विन कृ० ६
७५८	६८७	२१/४	शालिभद्र महामुनि चरित्र		१६७८ ग्राश्विन वद ६
७५६	१०१२	३०/३०	शालिभद्र महामुनि चरित्र	मतिसार	१६७८ ग्राश्विन कृ० ६
७६०	८८५/२	२७/१६	शालिभद्र सज्झाय		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी—राज०	५	५	२०.७×१०.६ १७—३१
जोधपुर	छगना	१९११ फा० शु० ३	किशनगढ	"	८	५	२३.६×११.७ १९—३७
				"	२८१	३१	२९.२×११.७ १४—३३
				"	गद्य	६	२२.०×११.३ १२—२५
	आर्या जवारी	१८८७	केकडी	"		१८	२५.४×११.४ १६—४०
	आर्या पन्ना	१८६७ वै० सु० १० रवि०	अलवर	"	३०	१८	२४.५×१०.९ १६—३५
		१८९२ वै० शु० १० बुधवार	विक्रमपुर	"	२९	३६	२४.३×११.५ १०—३०
	दल			"	२७	१	२५.३×११.६ १५—४०
				"	१५	१	२५.३×१०.६ १४—३८
				"	२९	३१	२६.०×१२.५ १०—३८
				"	२९	२६	२३.९×१०.८ १३—३३
				"	२८		२३.६×११.२ १३—४७
				"	२५		२४.८×१२.१ २२—४३
अहिपुर				"	६	३	२०.०×१०.४ १४—३९
	आर्या छगना	१९११ जेठ सु० २ रवि०	किशनगढ	"	२९	१६	२५.३×१२.० २०—४०
	धर्मकल्याण	१७६६ चैत्र सुद ७		"	३०	१७	२५.५×१०.७ १५—४५
		१८७३		"	२०	२२	२५.२×११.५ १३—२०
				"	२८	२ से १८	२६.७×१०.८ १५—४२
				"	१६		२६.२×११.८ १८—३८

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७६१	२४२३ / १	६३ / १५	शालिभद्र सज्झाय	रतन सूरि	
७६२	१६१५	४१ / ४५	शालिभद्र सिलोको		
७६३	१२१७ / ३	३५ / ११	शिव कुमार कथा (नवकार पर पंचपरमेष्ठी के प्रभाव की दूसरी कथा)		
७६४	१२१०	३५ / ४	शील का रास	विजयदेव सूरी	
७६५	२२०२	५६ / १९	शील का रास	विजयदेव सूरी	
७६६	३२५ / १	१३ / ८४	शील पंचढाला		
७६७	१६०६	४१ / ३६	शील पर रास (चित्त स भूत)	ज्ञानचंद	
७६८	७०	५ / ८	शील रास	विजयदेव सूरी	
७६९	२२३८	५८ / १८	शील रासो	विजयदेव सूरी	
७७०	९७५	२९ / २	शीलोपदेश बालावबोध		
७७१	४१८	१६ / २३	शीलोपदेश माला बालवबोध	जयकीर्ति	
७७२	१९१० / १	४७ / ४०	श्रीपाल चरितका चौथा खंड	विनय विजय	१७३८ चौमासे
७७३	३८५	१५ / १	श्रीपाल चरित्र सिद्धचक्र माहात्म्य सहित	रत्नशेखर सूरि	
७७४	५६७	१८ / ३	श्रीपाल प्रबन्ध	विनयविजयगणि	
प्र०७७५	१२१	८ / ३	श्रीपाल महाराय चौपई	जिनहर्ष	१७४० चै० ७ सोमवार
७७६	७७१	२४ / ३८	श्रीपाल रास या चौपई	प्र० यशविजय	१७३७ चौ०
७७७	१२१७ / २	३५ / ११	श्रीमती की कथा (नवकार उपर पंचपरमेष्ठी प्रभात की पहली कथा)		
७७८	२७५	१३ / ३४	श्रीमती की ढाल	रतनचंद	१८९४
७७९	१०६२	३२ / ४६	श्रीमती की ढाल	धरमसी	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	१६		२५ ८×११ २ / ११—३५
				”	गद्य	२	२१ ५×११ २ / १७—३४
				”	गद्य		२४ ५×११ १ / २२—४६
	ऋषि खेमचन्द	१८८९ भादवा सु० १५		”	ग्र०ग्र० २४२	१०	२५ ०×११ ८ / १३—३६
जालोर	ग्रा० लोढा	१८७५ वै० सु० ८ बुध०	जयपुर	”	६८	६	२५.३×११ ० / १७—५३
				”	५		२५ ०×११ ५ / १६—३८
		१८२१ का० सु० १०	बीकानेर	”	१०	५	२६.५×११.० / १९—६४
	ग्रा० फूलाजी	१८२३ वै० बद ९		”	६८	७	२६ ६×१२ ० / १५—४१
	जयदेव	१८७२ वै० सु० ३		”	८१	८	२५ २×११ ५ / १२—४५
				”	गद्य,कथा ४०	१४०	२५.०×११.० / १४—४१
				प्राकृत	गाथा ११७	१३	२६ ५×११ ० / १३—३९
राणेर				हिन्दी-राज०	गद्य ७५०		२३ ३×१० ६ / ९—३७
	ग्रा० जीउजी	१८३२		”	गा० १३४०	१२२	२५ ०×११.८ / ७—१८
				”	१२३६ खड ४	७२ रा नही	२७.५×१२ ५ / १२—३४
पाटण		१६४६ मिग० सु० ४		”	४९	३६	२५ ५—११ ८ / १५—४६
राणेर	जयदेव	१८७१ पौ० सु० ६	जयपुर	”	ढाल१४ खड ४	५३	२४ २×१२.० / १४—४२
				”	गद्य		२४ ५×११.१ / २२—४६
				”	४२	१	२५ ३×१२.० / २४—४७
				”	५	३	२५.३×१२.० / २४—५७

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७८०	१५३५	३९ / २५	श्रीमती को प चढालियो	रिख खूबचन्द	१९८० फा० सु० ८
७८१	२३५८	६२ / ३०	श्रेणिक कथा	भुवनसोम	१७०२ भा० सु०१० गुरुवार
७८२	११२६ / ३	३३ / ११	श्रेणिक वेलणा का चौढालिया		
७८३	५७ / २	४ / १७	श्रेणिक राजा नी चौपई	जयसार	१८७२ फा० सु० ७ बुधवार
७८४	१९७६ / १	४९ / २६	श्रेयासकुमार की सज्झाय	विजयदेव सूरि	
७८५	११० / १	७ / १२	सखजी री ढाला	रिख चौथमल	....काती वद १ चौमासा
७८६	३१२ / २	१३ / ७१	सख पोखली को चरित्र	सबलदास	१८६३ चौमासा
७८७	११२८ / ४	३३ / १३	संजाति को चौढालियो		
७८८	५५१ / ४	१७ / ७८	संजाति मुनि की सज्झाय		
७८९	१३११ / २	३६ / ४१	सदेह निवारण भरतजी की कथा		
७९०	१५८२	४१ / १२	संयति राजा को चौढालियो		
७९१	२०८८ / २	५४ / ५	सकडाल श्रावक की ढाल	जयमल	
७९२	१९८३ / २	४९ / ३३	सकोशल री ढाल	समयसुन्दर	
७९३	६७०	२० / ३७	सतवती सीता की सज्झाय	मुनि लक्ष्मीचन्द	
७९४	१७९२	४५ / २२	सनत्कुमार की सज्झाय		
७९५	१६३२ / ८	४२ / २	सनत्कुमार राजर्षि चौढालियो	किशनलाल	१९५५भाद्रपद शु० २
७९६	४८२	१७ / ९	समुद्रपाल की ढाल	उदेसिंह	१८२८मार्गशीर्ष शु० ... गुरुवार
७९७	५८	४ / १८	सागरचन्द मृग लेखा चौपई	रायचन्द	१८३८ भादवा वद ११ चौमासा
७९८	१९१६ / १	४८ / ६	सागरचक्रवर्ती का चौढालिया	रतनचन्द	१८९८

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र सं० १३	आकार १४
लसाणी				हिन्दी-राज०	५	२	२४·६ × ११·५ १८—४०
अंजार	पं० भक्तिराज	१७२१	बाडमेर	,,	१२	६	२६·५ × ११·३ १८—४६
				,,	४		२४·३ × १०·४ १५—३७
अजमेर	आनन्दरूप	१८७५ आसोज सु० ७ मंगल०		,,	ढाल ३४ गा० ५९८		२४·२ × १०·५ १५—४५
				,,	१६		२१·८ × १०·८ १४—३६
बगडी				,,	८		२४·६ × ११·० १२—७७
				,,	६		२६·१ × १०·७ १६—३५
				,,	४		२३·८ × ११·४ १६—४८
				,,	२०		२६·० × ११·२ २१—६६
				,,	५		२२·१ × १०·० १२—३६
	ज्ञाना आर्या			,,	४	३	२२·० × १०·५ १७—३५
				,,	६		२४·७ × ११·३ १६—४२
				,,	२		२४·५ × १०·७ २०—४४
				,,	१५	१	२४·२ × १०·७ १४—३८
	गुमाना आर्या			,,	१५	१	२०·० × ११·० १५—२६
जयपुर				,,	४		२५·५ × १३·४ १६—४७
फतेहपुर				,,	४	१	२५·५ × ११·० १७—४२
जोधपुर	नानगाजी	१८४९ का० वद १४ रवि०	सवाई जयपुर	,,	६२	२०	२५·७ × ११·३ १६—५१
	चन्दन	१९४४ आसोज सु० ३		,,	४		२६·७ × १२·० १६—५२

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७९९	७६/४	५/१४	सागर चक्रवर्ती का चौढालिया	रतनचंद	१८९८ फागण वद
८००	२३३१	६२/३	साम्ब प्रद्युम्न चौपई	समय सुन्दर	१६५९ आसोज सु० १०
८०१	१२१७/७	३५/११	सिंह कुमार को कथा		
८०२	२३३४	६२/६	सीता की ढाल		
८०३	९४८	२८/४७	सीताजी की आलोयणा	कुशलचन्द	१७१९ मार्गशीर्ष सु० ६ शनिवार
८०४	११५६/१	६३/४१	सीताजी की आलोयणा	कुशल	
८०५	७६४	२४/३१	सीताजी की चौपई		
८०६	११०५	३२/६२	सीताजी की ढाल		
८०७	१९३७	४८/२७	सीताजी की बीज		
८०८	१९२६/१	४८/१६	सीताजी की मुंदरी		
८०९	६१२	१९/४४	सीताजी की सज्झाय		
८१०	१७०४	४३/३४	सीताजी की सज्झाय		
८११	१७७८	४५/८	सीताजी की सज्झाय	तुलसीदास	
८१२	१९२६/२	४८/१६	सीताजी की सज्झाय		
८१३	१९२६/३	४८/१६	सीताजी की सज्जाय		
८१४	८८५/२	२७/२०	सीताजी को चरित्र	श्राप केशराज	
८१५	२२११	५७/२	सीता रामचन्द्र चौपई	समय सुन्दर	
८१६	१५५४/३८	४०/४	सीता री स झाय	जिनहर्ष	
८१७	१७६०/१	४४/३०	सीता सती की संझाय	जिनहर्ष	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	४		२५.३×११.३ / १७—४२
	आ० मुनी	१८८४ वै० वद ३० अमावस्या सोम०		"	२१ गा० ५४९	१४	२६.८×१३.४ / २१—४५
				"	गद्य		२४.५×११.१ / २२—४६
	रूपचन्द		हाथरस	"	१५	१	२५.३×११.० / १४—४२
				"	६	१०	२६.५×१०.८ / ९—२६
	आ० पन्ना			"	ढा० ५ पद्य ९३		२३.५×११.२ / १७—४८
	रिख नाया		मेडता	"	६	३	२५.०×१०.८ / १५—४५
				"	४८	३	२२.०×१०.६ / १४—३४
				"	७ अपूर्ण	१	१४.८×१०.३ / १९—१३
	आ० लाछा	१८५७ चै० वद १	जयपुर	"	३९		२४.७×११.४ / २०—४८
				"	६	१	२२.०×१०.७ / १५—३५
				"	१९	१	२२.८×११.८ / १३—४२
				"		१	२५.२×११.० / १४—४२
				"	१३		२४.७×११.४ / २०—४८
				"	११		२४.७×११.४ / २०—४८
				"	४		२६.२×११.८ / १४—३८
मेडता	लाभचन्द गणि	१७२२ काती सु० ५	जीर्णदुर्ग	"	ढाल ६३ खड ९		२६.५×१०.८ / १७—५३
				"	१३		२९.०×११.७ / १९—४३
				"	८		२४.३×१२.१ / १५—४०

क्रमांक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
८१८	२२६८	५६ / १६	सीता सती की सज्झाय		
८१९	२४३७ / २	६३ / २१	सीता सती सज्झाय		
८२०	२९० / १	१३ / ४९	सीताहरण सज्झाय		
८२१	६५८	२० / २५	सुखदेव की सज्झाय		
प्र०८२२	६१	४ / २१	सुदर्शन कथा भाषा वन्ध	विमल वुकागच्छ	
८२३	७०४	२१ / २१	सुदर्शन सेठ कथा	प्र० धर्मसिंह	
८२४	१३	२ / ३	सुदर्शन सेठ का रास	हीरमुनि	१७७५ जेठ
८२५	१००४	३० / ३२	सुदर्शन सेठ की चौपई	खेतसिंह	...१०....
८२६	४५८	१६ / ६३	सुदर्शन सेठ की ढाल		
८२७	१००५	३० / २३	सुदर्शन सेठ की ढाल		
८२८	१००६ / १	३० / २४	सुदर्शन सेठ की ढाल		
८२९	१२२२	३५ / १६	सुदर्शन सेठ चरित्र	विभवसुजस	
८३०	३१	३ / १२	सुदर्शन सेठ चौपई		
८३१	७३	५ / ११	सुदर्शन सेठ नी ढाल		
८३२	१५५३ / ६१	४० / ३	सुवाहु कुमार		१८७५ चौमासा
८३३	८४९	२६ / २०	सुवाहुकुमार का चरित		१८४९ भाद्रपद कृ० ७ गुरुवार
८३४	१०३२	३१ / १५	सुबाहु कुमार चरित	जयमल	१८१२ का सु०१५
८३५	७०२ / २	२१ / १९	सुभद्रा की ढाल		
८३६	१७७५	४५ / ७	सुभद्रा की सज्झाय		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	१९	१	२४·४×१०·९ / १४—३९
				”	९		२५ ८×१०·८ / १३—३४
				”	३५		२०·८×११·५ / १५—३९
			वरोड	”	२६	१	२५·७×११ ८ / १६—४४
	लक्ष्मीनारायण	१९४३ का० सु० १२ सोम०	सवाई जयपुर	”	१२१	६	२४·९×११ १ / १७—८०
		१९०३		”	१२१	१३	१८ ०×१३ ३ / १२—२४
सिद्धपुर	आर्या हीरा	१३ रवि०	मिसपुर	”			२५·९×११ ४ / १५—३६
कवरपुर	आर्या पन्ना		अहमदाबाद	”	१०	९	२६·३×११ ८ / १६—४५
				”	९	६	२५ ०×१०·० / १५—४०
	आर्या वदना			”	८	८	२६ ५×११ ८ / १३—३६
	आर्या मनाजी	१८५८	जयपुर	”	८		२५ ७×१० ९ / १०—२४
		१९२३ आसोज सु० ३ गुरु०		”	१२१	१०	२५ २×१२ ८ / १७—४१
	आर्या छगना	१९११ जे० बद १ शनि०		”	३५		१५·०×१२ २ / १७—३४
	आर्या नगा			”	१०	६	२३ ८×१० २ / १७—४७
जोधपुर				”	१०		२५ २×१२ ० / २०—४३
				”	११	१४	२६ २×१२·७ / ११—३८
				”	७		२६ २×११ ६ / २०—४४
				”	३		२० ५×१० ० / १०—४१
	आर्या पन्ना			”	२५	१	२५ ५×११ २ / १९—४०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
८३७	१०५१	३२/८	सुभद्रा चरित्र	रिख रायचन्द	१८२० माघ
अ०८३८	११८६/१	३४/६	सुभद्राजी को पचढालियो	विनयचन्द प्र०	१८७० पो० सु०१२
८३६	१५८४	४१/१४	सुभद्रा सती का पचढालिया	विनयचन्द	१८७०
८४०	६६८	३०/१६	सुभद्रा सती की चौपई	विनयचन्द	
८४१	६६६	३०/१७	सुभद्रा सती की चौपई	रिख लालचन्द	१८५८ आश्विन शु० १५
८४२	१०००	३०/१८	सुभद्रा सती की चौपई	ऋषि लालचन्द	१८५८ आश्विन शु० १५
८४३	६०८	२८/७	सुभद्रा सती को ढाला	रिख लालचन्द	१८५८ आश्विन शु० १५ चौमासा
८४४	४८६	१७/१६	सुभद्रा सती को सज्झाय		
८४५	१८२०	४५/५०	सुभद्रा सती की सज्झाय		
८४६	२२६६	५६/१७	सुभद्रा सती की सज्झाय		
८४७	११८६	३४/६	सुर सुन्दरी की चौपई	धर्मवर्द्धन	१७३६ सा० सु० १५
८४८	२०७७	५३/१४	सुर सुन्दरी चौपई (अपूर्ण)	विनयचन्द	१७३६ सा० सु० पूर्णिमा
८४६	१७४६	४४/१६	सूरिकता परदेशी की ढाल		
८५०	१३६६/२	३७/१६	स्थूलभद्र का चरित्र	लालविनोदी	
८५१	३३७/१	१३/६६	स्थूलभद्र की सज्झाय	समयसुन्दर	
८५२	१८०६/१	४५/३६	स्थूलभद्र चरित्र		
८५३	३१७	१३/७६	स्थूलभद्र चौढालिया		
८५४	३७५	१४/२८	स्थूलभद्रजी का नवरासा	उदयरतन	१७१६ मार्गशीर्ष शु० ११
८५५	४१५	१६/३०	स्थूलभद्रजी की सज्झाय		

रचना-स्थान ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
सोजत				हिन्दी-राज०	७	२	२५ ७×११ ५ / १९—४५
जयपुर				"	५		२५ ७×१२·२ / १७—३९
जयपुर		१८८० सा० सु० १२		"	५	४	२२ २×११ ० / १५—३४
	रतनचद	१८९३आश्विन शु० १५	दिल्ली जहानाबाद	"	६	३	२६ ७×१२ ६ / १९—४०
माधोपुर	वछाजी			"	७	७	२५ ५×११ ० / १५—३५
माधोपुर	गुमाना	१८७७		"	७	८	२४ ५×१० ८ / १४—३७
माधोपुर	ज्ञानाजी	१८७७		"	७	६	२५ ०×११ ५ / १७—३८
				"	१६	१	२२ ७×१० ६ / १४—१७
				"	१५	१	२० ८×१० ० / १४—३१
				"	२२	१	२० ८×१० ० / १४—३५
		१८९७ का० सु० ११ गुरु०	देशनोक	"	ढाल ४	२७	२६ ६×१२ ३ / १३—४१
बेनीतट	लाली	१८७७ जे० कृ० ४ मगल०	जयपुर	"	४	१८	२५ ३×११ २ / १७—४७
				"	२	२	२६ २×११ ० / १४—३३
				"	१७		२५ ३×१० ८ / १५—४०
	बुद्धिविजय			"	१०		१९ ०×११ ८ / १२—३८
				"	१७		२६ ०×१० ५ / १८—३९
	छगना	१९०५ चै० वद ७	किशनगढ	"	४	२	२२ २×१० ४ / १८—२७
	आर्या छगना	१९०६ वै० कृ० ६	किशनगढ	"	९	३	२४ ५×११·७ / २०—३४
	श्रीकिशन	१९०४ का० शु० पूर्णिमा		"	१७	२	२३ २×११ ४ / १६—२५

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचनासंवत् ६
८५६	१०८८	३२/४५	स्थूलभद्र नवरासो	उदयरतन	१७१९ मिगसर वद ११
८५७	१०६४	३२/२१	स्थूलभद्र नो नवरासो	उदयरतन	१७५९ मार्गशीर्ष शु० ११
८५८	२०७२	५३/९	स्थूलभद्र नो रास	उदयरतन	१७५९ मार्गशीर्ष शु० ११
८५९	१२१९	३५/१३	स्थूलभद्र नो रास	उदयरतन	१७५९ मार्गशीर्ष शु० ११
८६०	२४२९	६३/२३	स्थूलभद्र मुनि सज्झाय	जिनहर्ष	
८६१	५४४	१७/७१	स्थूलभद्र सज्झाय		
८६२	१४१८/२	३७/६८	स्थूलभद्र सज्झाय		
८६३	२०३५	५१/२५	स्थूलभद्र स्तवन	रिद्धहर्ष	
८६४	२२	३/३	हंसवच्छ चतुष्पदी	जिनोदय सूरि	१६८० आसोज सु० १०
८६५	८१	५/१९	हंसराज वच्छराज चउपई	जिनोदय सूरि	
८६६	९४९	२८/४८	हंसराज वच्छराज चौपई	जिनचन्द सूरि	१६८० आश्विन शु० १०
८६७	१०४१	३१/२४	हंसराज वच्छराज चौपई	जिनोदय सूरि	
८६८	१९१३	४८/३	हंसराज वच्छराज चौपई	जिनोदय सूरि	
प्र०८६९	७९४	२५/१	हंसराज वच्छराज नी चौपई	जिनोदय सूरि	
८७०	२२३३/२	५८/१३	हरजी की सज्झाय	जिनसागर	
८७१	१०९/३	७/१२	हरिकेशी की सज्झाय	रिखजी	
८७२	१५३७	३९/२७	हरकेशी मुनि चरित्र	रिख रायचन्द	१८२८ चौ०
८७३	१५/२	२/५	हरिबलनी चतुष्पदी	मुनि रामचन्द्र	१८१०
प्र०८७४	५६६	१८/२	हरिवंश (ढाल सागर) नो विस्तार अष्टमाधिकरण	गुणसागर सूरि प्र०	. ७६

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छन्द-संख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
उदयपुर	बाछाजी			हिन्दी-राज०	९	४	२६०×१२३ १४—३५
	आर्या ज्ञाना			"	९	५	२३१×१०७ १८—४२
				"	९	४	२६२×१२२ १६—४४
	आर्या सोनी	१८३५ चौ०	किशनगढ	"	९	५	२४०×१०८ १९—३९
				"	११	१	२५७×१०·८ १६—३८
				"	१७	१	२१०×९·५ १५—३५
				"	१७		२४८×१०·८ १८—५७
				,	१५	१	२४·६×१०·६ १५—३६
			रामपुरा	"	४	४९	२६१×११२ ११—४०
				"	४	३०	२५·३×१०·६ १३—५६
	केशराज	१८४७आषाढ सु० १३ ...आसोज सु० १५	जयपुर	"	४७	४१	२४३×११० १०—६
				"	खड ४	३३	२५५×११० १४—३०
				"	खड ४	३९	२७२×१२३ १२—३४
	रिख शुक्लाजी प्र०	१९०१आषाढ शु० ४	जयपुर	"		२७	२५७×१३३ २०—४८
				"	१६		१९५×१०२ १६—३३
				"	११		२२८×१०० १६—३९
बीकानेर	आर्या छगना	१८९९ जे० सुद ६		"	१०	३	२५९×१२५ २३—४१
पाली				"	१६		२३३×१२७ १७—५८
कुर्कटेश्वर		-		"		१८७	२४४×१३·२ १४—३७

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
८७५	७९९	२५/६	हरिश्चन्द्र राजा नी चौपई	कनकसुन्दर	१६९७
८७६	३७	३/१८	हरिश्चन्द्र राजा री चौपई	मुनि प्रेम	१८५८ मिगसर वद ९ रविवार
८७७	१७१	११/१३	हरिश्चन्द्र राजा री चौपी	मुनि प्रेम	१८५८ मिगसर वद ९ रविवार
८७८	१२१७/६	३५/११	हु डक चोर की कथा (नवकार पर पच परमेष्ठी के प्रभाव की ५वीं कथा)		

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
८७५	७६६	२५/६	हरिश्चन्द्र राजा नी चौपई	कनकसुन्दर	१६९७
८७६	३७	३/१८	हरिश्चन्द्र राजा री चौपई	मुनि प्रेम	१८५८ मिगसर वद ६ रविवार
८७७	१७१	११/१३	हरिश्चन्द्र राजा री चौपी	मुनि प्रेम	१८५८ मिगसर वद ६ रविवार
८७८	१२१७/६	३५/११	हुंडक चोर की कथा (नवकार पर पंच परमेष्ठी के प्रभाव की ५वीं कथा)		

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना संवत् ६
१	५५५/५	१७/८२	अक्षर बत्तीसी	मुनि महेश	१७२५
२	१५७१	४१/१	अक्षर बत्तीसी	मुनि महेश	१७२५
३	२१०२	५४/१६	अक्षर बावनी	रिख लालचन्द	१८७३
४	३७१	१४/२४	अट्ठारह नाता का चौढालिया		
५	६६८/१	२१/१५	अट्ठारह नाता की ढाल	कमलकीर्ति	
६	३६०	१५/६	अट्ठारह नाता की ढाल		
७	२१३/१	१२/४२	अट्ठारह नाता को चौढालियो		
८	२३५	१२/६४	अट्ठारह नाता को चौढालियो		
९	६४२/२	२८/४१	अट्ठारह नाता चौढाला		
१०	४५५	१६/६०	अध्यात्म के विभिन्न पद	कबीर आदि	
११	४१६	२६/२४	अनाचरण बावनी		
१२	१२४४/२	३५/३८	अनुभव पद डिग्री		
१३	२१६६	५६/१३	अनुभव पद्यावली	आनन्दघन	
१४	१६१४	४१/४४	अन्त करण प्रबोध	वल्लभाचार्य	
१५	१६३३	४८/२३	अन्नदेवता की ढाल	सिरैमल	
१६	८५८/३	२६/२६	अब तो साम सोवन दे री		
१७	२६४/१६	१३/२३	अरजी सुणो एक हमारी	रतनचन्द	
१८	२४७/२	१३/६	अरे सजन समझायो अपना मन	जिनदास	
१९	२४३६/२	६३/३३	अवधू ऐसो ज्ञान विचारो	कबीर	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
उदयपुर				हिन्दी-राज०	३४		२०५×१११ / २२—४५
उदयपुर				”	३४	१	२३०×११.५ / १३—३३
कोटा				”	५२	५	२२२×११६ / १८—४५
लोहट	आर्या सतोषा	१८३५	किशनगढ	”	ढाल ४	२	२४०×११३ / १८—३५
फीरोजाबाद	किसनाजी			”	ढाल २		२६७×११.५ / १६—४६
				”	ढाल २	५	२५६×१३० / १३—२७
	नगाजी	१८८० फा० व० १०सोम०	जयपुर	”	ढाल ४		२६१×१०.७ / १६—४८
लोहावट	रामचन्द्र			”	ढाल ४	२	२५५×११० / १५—४४
				”	ढाल ४		२२१×१०.८ / १६—३४
				”	११	१	२६०×१०५ / १४—४४
				”	बोल ५२	१	२५५×१११ / १३—४०
				”	४		२०५×११७ / १०–२६
				”	७३	२५	२३६×११२ / ६—२६
	वल्लभाचार्य			हिन्दी-व्रज	११	१	२३४×१०६ / ८—२६
				हिन्दी-राज०	ढाल २	१	१७०×१०५ / १४—२८
				”	२		२६१×१२७ / १७—४४
				”	४		२६५×१३.२ / २८—५८
				”	४		२५६×१२० / १५—४१
				हिन्दी-व्रज	४		२४८×१०६ / १६—४१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२०	१५५४/१०	४०/४	अविनीत की सज्झाय		
२१	४६७/१	१६/७२	आउखो टूटा को तान	ऋषि चौथमल	
२२	१८९५/१	४७/२५	आतम की सिझाय (बुढापा की सिझाय)	तिलक सूरि	१७६७
२३	४५१/२	१६/५६	आतम ज्ञान के पद		
२४	२१९८/५	५६/१५	आतम प्रबोध छतीसी	ज्ञानसागर	
२५	२४०८/२	६३/२	आतम बोध की सिझाय	राजसमुद्र	
२६	१७००	४३/३०	आतम सज्झाय		
२७	१५५४/२३	४०/४	आतम सिखावण सिझाय		
२८	१४९१/२	२८/६१	आतम-हित सज्झाय		
२९	२४७५	६३/६९	आतमा की सज्झाय		
३०	१९६०/८	४६/१०	आदर्श होरी पद	ऋषभदेव	
३१	१६५६	४२/२६	आध्यात्म गीता	देवचन्द्र	
३२	२४८७/२	६३/८१	आध्यात्मिक चौपड	रतनसागर	
३३	४०२/५	१६/७	आध्यात्मिक पद	शोभाचन्द्र	१८०८
३४	५८१/२	१६/१३	आध्यात्मिक पद	मोतीचन्द आनन्दघन	
३५	१५८५/६	४१/१५	आध्यात्मिक पद		
३६	१६३३/२	४२/३	आध्यात्मिक योद्धा रूपक		
३७	९६४	२८/६३	उपदेश इक्कीसी	रायचन्द	१८२० वै० सु० ६
३८	४०८	१६/१३	उपदेशक गाथा सार्थ		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	३२		२६०×११७ / १९—४३
जालोर				"	१३		२५७×११७ / १७—३८
उदयपुर				"	१६		२५२×११० / १८—४२
				"	१४		२५४×११·७ / १२—५२
जयपुर				"	३६		२४७×११२ / १०—३४
				"	७		२५८×१२६ / १५—३४
				"	२४	२	२०·७×१०८ / १२—३४
				"	४७		२६०×११७ / १९—४३
				"	२४	२	२६१×१०७ / १३—३३
				"	१५	१	२४·३×१०५ / ११—४६
				"	४		२१०×११५ / १६—३६
नोवडी				"	४६	३१ १४-५नहीं	१६०×१२४ / ४—१३
				"	८		२०४×१११ / २९—१९
हथनारा				"	२०		२६५×११८ / २७—५३
	छोगालाल			"	५		२५४×१०५ / १३—४४
				"	२१		२३५×१०४ / १६—३९
				"	१०		२५२×१२४ / १६—४०
तिवरी				"	२४	४	२६६×१११ / १२—४२
	आर्या मानकुवरी			"	१०	१	२/८×१०३ / २२—४०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
५८	६३६/२	२०/६	उपदेश मरेटी	कुशालचन्द	
५९	३२५/३	१३/८४	उपदेश रूप सज्झाय	कबीर	
६०	६४३/६	२८/४२	उपदेश रूप सज्झाय		
६१	२५७/३	१३/१६	उपदेश सज्झाय	रायचन्द	
६२	१७४/२	१२/३	उपदेश सिज्झाय		
६३	८०६	२५/१६	उपदेश सित्तरी	श्रीसार	
६४	१८२७/२	४५/५७	उपदेशात्मक पद		
६५	१५०१/२	३८/७१	उपदेशात्मक दोहे		
प्र० ६६	१८१५/१	४५/४५	उपदेशात्मक दोहे		
६७	१८४६/२	४६/१६	उपदेशात्मक दोहे		
६८	१८६६/३	४६/३६	उपदेशात्मक दोहे		
६९	२०६/१४	१२/३८	उपदेशात्मक पद		
७०	१३५६	३७/६	उपदेशात्मक पद		
७१	१५३६/१५	२९/२६	उपदेशात्मक पद	कबीर	
७२	१५३६/१७	२९/२६	उपदेशात्मक पद	आनन्दघन	
७३	१५३६/१८	३९/२६	उपदेशात्मक पद		
७४	१५३६/१९	३९/२६	उपदेशात्मक पद	दुर्गादास	
७५	१५३६/२४	३९/२६	उपदेशात्मक पद	दुर्गादास	
७६	१५३६/२६	३९/२६	उपदेशात्मक पद		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	१०		२५ ८ × १० ८ १५—४७
				"	५		२३ ६ × ११ २ १३—४७
				"	९		२१.९—१० ८ २०—३६
हरसोर				"	१०		२४ २ × १०.७ १८—६६
	आर्या लाछा			"	२१		२५.२ × १० ८ २१—४७
				"	७२	५	२६.६ × १२ ० १२—२७
				"	७		२२ ८ × ९ ५ १४—३०
				"	११		२३ ९ × ११ ५ १७—४२
	रायकवरी प्र०		चूरू	"	२४		१९ ५ × १०.४ १८—४१
				"	१४		२४ ० × १० ८ १२—४३
				"	४		२४ ० × ११ २ १५—४३
				"	५		२५ १ × १२.० १७—४२
				"	२२	१	२२ १ × १० १ १३—३०
				"	४		२४.५ × १२.० १३—३६
				"	३		२४ ५ × १२ ० १३—३६
				"	४		२४ ५ × १२ ० १३—३६
				"	४		२४ ५ × १२ ० १३—३६
				"	५		२४ ५ × १२ ० १३—३६
				"	७		२४ ५ × १२ ० १३—३६

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७७	१७९३ / ३	४५ / २३	उपदेशात्मक पद		
७८	६५१ / १	२० / १८	उपदेशात्मक पद	राममुनि	१९१८
७९	५२१ / १	१७ / ४८	उपदेशात्मक पद		
८०	५२७ / ३	१७ / ५४	उपदेशात्मक पद		
८१	१२४५ / १	३५ / ३९	उपदेशात्मक पद		
८२	१४०६ / १	३७ / ५६	उपदेशात्मक पद		
८३	१४६७ / ३	३८ / ३७	उपदेशात्मक पद		
८४	१५८५ / ३	४१ / १५	उपदेशात्मक पद		
८५	१५८५ / ४	४१ / १५	उपदेशात्मक पद		
८६	१६५१	४२ / २१	उपदेशात्मक पद		
८७	१६५७ / १	४२ / २७	उपदेशात्मक पद	नथमल	
८८	१६५७ / ३	४२ / २७	उपदेशात्मक पद	हीरालाल	
८९	१८२५ / २	४५ / ५५	उपदेशात्मक पद		
९०	१२४५ / २	३५ / ३९	उपदेशात्मक पद्य संग्रह	अखमल	
९१	१५३६ / २१	३९ / २६	उपदेशात्मक लावणी	जिनदास	
९२	१६६०	४२ / ३०	उपदेशात्मक सज्झाय	जेठो स्वामी	
९३	२४८७ / १	६३ / ८१	उपदेशी		
९४	४०२ / २	१६ / ७	उपदेशी कडा		
९५	२१७९ / ५	५५ / ५३	उपदेशी गीत		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	७		२५.३×११.४ / १५—३३
जोधपुर				”	१५		२६ ०×१२ ३ / १८—४३
	भोजराज			”	११		१८ १×९ २ / १५—३७
				”	५		२०.५×११ ० / १४—३७
				”	८		२५ ०×१० ९ / १३—४१
		१८६३ वै० वद १० रवि०	सवाई जयपुर	”	८८		२५ ३×१० ८ / २१—५१
				”	६		२४ ३×११ ० / १८—४८
				”	१२		२३ ५×१० ४ / १६—३९
				”	१२		२३.५×१०.४ / १६—३९
	सरसा	१८७७ चैत्र सु० सोम०		”	३०१	१०	२६.०×११.६ / १५—३६
				”	५		१५ २×११ ६ / २०—३४
				”	११		१५.२×११ ६ / २०—३४
				”	२		२० ६×९ ९ / १३—२५
				”	९		२५ ०×१० ९ / १३—४१
				”	५		२४ ५×१२ ० / १३—३६
				”	११	१	२५.२×१० ६ / १५—२८
				”	५		२०.४×११.१ / २९—१९
				”	१४		२६ ५×११.८ / २७—५३
				”	६		२४ ०×१० ७ / २२—७१

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्टाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
९६	५३६	१७/६३	उपदेशी ढाल	मुनि रामचन्द्र	१६१८
९७	१५३६/५	३६/२६	उपदेशी ढाल	रतनचन्द	
९८	१५५३/७४	४०/३	उपदेशी ढाल		१८८०
९९	१५५३/७८	४०/३	उपदेशी ढाल		
१००	१५५३/७९	४०/३	उपदेशी ढाल		
१०१	१५५३/८०	४०/३	उपदेशी ढाल		
१०२	१५५३/८२	४०/३	उपदेशी ढाल		१८६८ चौमासा
१०३	१५५३/९४	४०/३	उपदेशी ढाल		
१०४	१५५३/९६	४०/३	उपदेशी ढाल		
१०५	१५५३/९७	४०/३	उपदेशी ढाल		
१०६	२१५५/१	५५/२९	उपदेशी ढाल	रिख सबलदास	१८६३ फागण
१०७	१०२१	३१/४	उपदेशी ढाला (विविध सग्रह)		
१०८	२०९/१३	१२/३८	उपदेशी पद		
१०९	४१२	१६/१७	उपदेशी पद		
११०	६५१/२	२०/१८	उपदेशी पद	कबीर	
१११	८४२	२६/१४	उपदेशी पद	कबीर	
११२	८६५/३	२७/३०	उपदेशी पद	विनैचन्द्र	
११३	८६५/४	२७/३०	उपदेशी पद	सूरजमल	
११४	११७१/१	३२/५६	उपदेशी पद		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
जोधपुर				हिन्दी-राज०	१५	१	२१ ५ × १२ ३ १५—३६
				,,	७		२४ ५ × १२ ० १३—३६
बीकानेर				,,	९		२५ २ × १२ ० २०—४१
				,,	५		२५ २ × १२ ० २०—४३
				,,	७		२५ २ × १२·० २०—४३
				,,	७		२१ २ × १२ ० २०—४३
सोजत				,,	१३		२५ २ × १२ ० २०—४३
				,,	४		२५ २ × १२ ० २०—४३
				,,	१७		२५ २ × १२ ० २०—४३
				,,	१४		२५ २ × १२·० २०—४३
कुचेरा				,,	१६		२४·७ × ११ ० १८—५४
				,,	ढाल १५	२२	२५ ८ × १२ ७ ८—३०
				,,	५		२५ १ × १२·० १७—४२
		१९२१ चै० शु० ३	नागोर	,,	६८	५	२५ ८ × १२ ० २३—५६
				,,	५		२६ ० — १२ ३ १८—४३
				,,	५	१	२५ ६ × १२·१ १०—२७
				,,	५		२४ ५ × १२ ६ ७—२७
				,,	७	१	२४ ५ × १२ ६ ७—२७
	गाजी		नागोर	,,	१०		२१ ६ × ११ ८ १६—३६

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
११५	१३२६ / १	३६ / ५६	उपदेशी पद	रतनचन्द	
११६	१३२८ / २	३६ / ५८	उपदेशी पद	जिनहर्ष	
११७	१३२८ / ३	३६ / ५८	उपदेशी पद		
११८	१३५२ / २	३७ / २	उपदेशी पद	किशनलाल	
११९	१४७१	३८ / ४१	उपदेशी पद	राम	
१२०	१४७६	३८ / ४६	उपदेशी पद	आसकरण	१८६६ चैत्र
१२१	१४९८ / १	३८ / ६८	उपदेशी पद	रत्नचन्द्र	१८७३ चौमासा
१२२	१४९८ / ४	३८ / ६८	उपदेशी पद	रत्नचन्द्र	
१२३	१५३६ / १६	३९ / २६	उपदेशी पद		
१२४	१५५३ / ९२	४० / ३	उपदेशी पद		
१२५	१५५३ / ९३	४० / ३	उपदेशी पद		
१२६	१७२२ / १	४३ / ५२	उपदेशी पद		
१२७	१९९२ / २	५० / २	उपदेशी पद		
१२८	४३९ / १	१६ / ४४	उपदेशी पद		
१२९	११७७	३३ / ६२	उपदेशी पद		
१३०	१८७९ / ९	४७ / ९	उपदेशी पद	नवल	
१३१	५९८	१९ / ३०	उपदेशी पद संग्रह	कवीर, रूपचन्द रतनचन्द आदि	
१३२	१५२७	३९ / १७	उपदेशी पद सग्रह	कवीर माधोदास	
१३३	१३६९ / २	३७ / १९	उपदेशी लावणी	जिनदास	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी—राज०	६		१६ ५ × १० ६ १६—२५
				"	५		१६ ५ × १० ६ १६—२५
				"	३		१६ ५ × १० ६ १६—२५
				"	४		२६·० × १२ २ १७—३५
				"	१		२२ २ × ११ ३ ५—३७
पाली				"	१५	१	२५ ० × १२ ५ १३—५५
कृष्णगढ				"	५		२१ १ × ११·४ ६—२६
				"	२		२१ १ × ११·४ ६—२६
				"	४		२४ ५ × १२ ० १३—३६
				"	४		२५ २ × १२ ० २०—४३
				"	५		२५ २ × १२ ० २०—४३
				"	६		२५ ८ × १० ० ११—४८
				"	८		२५ ७ × ११ ८ २१—३६
	वृद्धिचन्द्र			"	१२		२३ ३ × ११·० १४—४१
				"	१०	१	१६·३ × ११ २ १६—३६
				"	५		२५ ३ × १०·६ १६—४४
				"	२६	१	२[illegible] ८ × ११·८ १६—४६
				"	८	१	२१ १ × १० २ ११—३६
				"	८		२० ० × १२ ० २०—४२

क्रमाक १	ग्रन्याक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१३४	१५३६ / ११	३९ / २६	उपदेशी लावणी	जिनदास	
१३५	१५३६ / ३०	३९ / २६	उपदेशी लावणी	जिनदास	
१३६	४३३	१६ / ३८	उपदेशी सज्भाय	चौथमल	
१३७	५१९	१७ / ४६	उपदेशी सज्भाय		
१३८	७०१ / २	२१ / १८	उपदेशी सज्भाय	विनयचन्द	
१३९	८६२	२६ / ३३	उपदेशी सज्भाय		
१४०	८८९	२७ / २४	उपदेशी सज्भाय	खोडीदास	
१४१	१०९६ / १	३२ / ५३	उपदेशी सज्भाय	सदारंग	
१४२	११३२ / २	३३ / १७	उपदेशी सज्भाय	रंगरसिक	
१४३	११७८	३३ / ६३	उपदेशी सज्भाय	सुजानमल	
१४४	१३१७ / २	३६ / ४७	उपदेशी सज्भाय		
१४५	१३२७ / ३	३६ / ५७	उपदेशी सज्भाय	सुबुद्ध	
१४६	१३६८ / २	३७ / १८	उपदेशी सज्भाय		
१४७	१३७४ / २	३७ / २४	उपदेशी सज्भाय		
१४८	१४१५ / २	३७ / ६५	उपदेशी सज्भाय		
१४९	१४६९	३८ / ३९	उपदेशी सज्भाय	जेठमल श्रावक	१९२२ मा० सु० ७ सोमवार
१५०	१५०८	३८ / ७८	उपदेशी सज्भाय		
१५१	१५३३ / ३	३९ / २३	उपदेशी सज्भाय	रतनचद	१८६२
१५२	१७२० / ३	४३ / ५०	उपदेशी सज्भाय	प० स्वरूपचन्द	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी राज०	४		२४·५×१२·० / १३—३६
				”	६		२४·५×१२·० / १३—३६
मेडता				”	१४	१	२४·३×१०·६ / १४—३६
	ज्ञाना			”	२६	१	२६·०×११·३ / १७—४३
				”	१३		२६·०×११·० / ८—३८
				”	१३	१	२२·६×११·० / १२—५०
				”	१२	१	२५·१×१२·० / १४—४४
				”	२४		२४·८×११·३ / १४—३६
				”	६		२५·०×१०·३ / १५—३८
सोजत				”	१३	१	२३·३×८·८ / १०—३२
				”	१६		२२·२×११·६ / २४—४३
				”	८		२५·३×११·१ / १७—४३
				”	१०		२५·०×११·१ / १८—४८
				”	६		२५·०×१०·२ / १६—३८
				”	५		२५·२×१०·५ / १६—४०
				”	२१	१	२४·८×११·८ / १५—[illegible]
				”	२६		२४·५×१०·६ / १४—४२
विराटिया				”	१०		२५·६×[illegible] / २४—४३
				”	१०		२४·८×१०·६ / १६—४२

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ–नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१५३	१७८८	४५/१८	उपदेशी सज्झाय	जयमल	
१५४	१८२५/१	४५/५५	उपदेशी सज्झाय	चौथमल	१८५५
१५५	१९४८/१	४८/३८	उपदेशी सज्झाय		
१५६	१९४८/२	४८/३८	उपदेशी सज्झाय		
१५७	१९६९	४९/१९	उपदेशी सज्झाय		
१५८	१९७०/२	४९/२०	उपदेशी सज्झाय		
१५९	२०२३/१	५१/१३	उपदेशी सज्झाय		
१६०	२०२६/२	५१/१६	उपदेशी सज्झाय		
१६१	२१६३/३	५५/३७	उपदेशी सज्झाय	व्यास उदल	
१६२	२१७९/१	५५/५३	उपदेशी सज्झाय	जयमल	
१६३	२३१५/३	६१/१०	उपदेशी सज्झाय	जसरूप	
१६४	२३२१/२	६१/१६	उपदेशी सज्झाय		
१६५	२३५१	६२/२३	उपदेशी सज्झाय		
१६६	२३६५/४	६२/३७	उपदेशी सज्झाय	केशव	
१६७	२२६/१	१२/५५	उपदेशी सज्झाय		
१६८	१४९८/३	३८/६८	उपदेशी स्तवन	जिनदास	
१६९	१५३६/१४	३९/२६	उपदेशी स्तवन	रतनचन्द	
१७०	१८४२/२	४६/१२	उपदेशी स्तवन		
१७१	२१३७	५५/११	उपदेशी स्तवन	चौथमल	१८८५

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना संवत् ६
१७२	२१४३ / १	५५ / १७	उपदेशी स्तवन	ज्येष्ठमल	
१७३	२४११ / १	६३ / ५	उपदेशी स्तवन		
१७४	२४२६ / १	६३ / ३०	उपदेशी स्तवन	जगरूप	१८७९
१७५	१८४५	४६ / १५	एकत्व भावना स्तवन	ज्येष्ठमल	
१७६	१६००	४७ / ३०	ककरण नै कामरण छोडो	दुर्गादास	१८४३ चौमासा
१७७	२०४३	५१ / ३३	कका बत्तीसी		
१७८	१५०६	३८ / ७६	कनीरामजी व अखेमलजी के पद	कनीराम, अखेमल	
१७९	१५५४ / ३६	४० / ४	कपट पच्चीसी	रायचन्द	१८३३ आश्विन शु० ३
१८०	१७७५	४१ / ५	कपट पच्चीसी	रायचन्द	१८३३ आसोज सु० ३
१८१	१६५५	४६ / ५	कपटी की ढाल		
१८२	२४८० / ३	६३ / ७४	कपिल अध्ययन गीत	ब्रह्म	
१८३	१५१६ / ६	३६ / ६	कबीर का पद	कबीर	
१८४	१८५२ / २	४६ / २२	करम गति पद		
१८५	२६४ / १७	१३ / २३	करम तणी गति न्यारी	रत्नचन्द्र	
१८६	१६८२	४६ / ३२	करुणाष्टक		
१८७	४०५ / १	१६ / १०	कर्कशा का वर्णन	भोगोशाह	
१८८	१५३६ / २२	३६ / २६	कर्म की लावणी	जिनदास	
१८९	१८८७	४७ / १७	कर्म की सज्झाय	रिद्धिहर्ष	
१९०	१७२२ / २	४३ / ५२	कर्म गति		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	७		२४·२×११·६ / १३—२४
				,,	६		२३·६×११·७ / १७—४२
वृन्दावन				,,	११		२५·२×११·५ / १५—३८
				,,	१७	१	२५·३×१२·० / १२—३१
नागौर				,,	१३	१	२४·८×६·७ / १२—५१
				,,	३३	१	२५·३×१०·५ / १५—३६
				,,	२७	१	२२·२×६·८ / १३—५१
मेड़ता				,,	२५		२६·०×११·७ / १८—४३
मेड़ता				,,	२८	१	२५·५×१२·३ / १७—२७
		१८६५ पौ० व० २० शनि०		,,	२१	१	२६·८×११·५ / १६—४२
				,,	१०		२५·७×१०·८ / १३—५०
				,,	४		२८·०×१३·१ / १७—२७
				,,	५		२६·०×१२·० / १२—३५
				,,	६		२६·५×१३·२ / २८—५०
				,,	८	१	२५·५×१०·५ / १८—३६
	केसर आर्या		जयनगर	,,	१५		२३·५×१०·२ / १६—३५
				,,	५		२४·५×१२·० / १२—३६
	[illegible] तुलसी	१८५५ माघा० सुद [illegible] गुरु०	अरिपु[illegible]	,,	१०	१	२८·३×१०·३ / १२—[illegible]
				,,	८		२५·८×१२·[illegible] / १२—४८

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१९१	२४९३	६३/८७	कर्म छत्तीसी		
१९२	५५५/४	१७/८२	कर्म पर सज्झाय	चौथमल	१८५५
१९३	६६४	२०/३१	कर्म हिंडोलना	हर्षकीरत	
१९४	१५५४/२	४०/४	कर्म हिंडोलना सज्झाय	हर्षकीर्ति	
१९५	२४०६	६२/७०	कर्मो की लावणी	किशनलाल	
१९६	७६६	२४/३३	कलियुग की नारी		
१९७	२०००/१	५०/१०	कलियुग की सज्झाय	रायचन्द	१८३०
१९८	१२०२/२	३४/२२	कवित्त	राम	
१९९	१४३८/१	३८/८	कवित्त	हरिदास, देवीदास	
२००	११६६	३३/५१	कवित्त संग्रह	भूरमल्ल	
२०१	५९६/२	१६/२८	कागद संवाद दूहा		
२०२	१३२१	३६/५१	काया ऊपर पद	हरसुख	
२०३	१५५४/२७	४०/४	कायाजीव का संवाद		
२०४	१८०९/४	४५/३९	काया वडी की सज्झाय	रतनतिलक सेवग	
२०५	२३४६/१	६०/१८	कान की सज्झाय	रतनचन्द	६७
२०६	२४१८/२	६३/१२	काल की सज्झाय		
२०७	१३६९/३	३७/१९	कुगुरु पर सज्झाय (कुमगत पर सज्झाय)		
२०८	२३४८	६२/२०	कुगुरु जागो वन की	अगेमन	
२०९	९८३/८	२८/८२	कुमति सुमति की सज्झाय		

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२१०	४०५ / २	१६ / १०	कुलक्षणी और सुलक्षणी		
२११	१३८० / २	३७ / ३०	कुव्यसन निषेध	गिरजी	
२१२	१३७२ / २	३७ / ७२	कूट दोहे आदि		
२१३	१५१०	३८ / ८०	कृपण पच्चीसी	रायचन्द	
२१४	२६४ / ११	१३ / २३	केती गया रे पछा वोनता	जिनदास	
२१५	१५४२ / २	३६ / ३२	क्रोध ऊपर सज्झाय		
२१६	३०६ / ३	१३ / ६५	क्रोध मान मद मच्छर मामा		
२१७	१५५३ / ७०	४० / ३	क्षमा की ढाल		१६००होनी चोमासा
२१८	१५५४ / २१	४० / ४	क्षमा की सज्झाय		
प्र०२१९	२१५	१२ / ४४	क्षमा छत्तीसी	समयसुन्दर	
२२०	१५५४ / ३६	४० / ४	क्षमा छत्तीसी	प्र० समयसुन्दर	
२२१	२४६५ / २	६३ / ८६	खबर नहीं जग मे पल की		
२२२	५१५ / १	१७ / ४२	खबर नही पल की	अखेमल	
२२३	२६४ / १४	१३ / २३	खबर है नही जग मे पल की	अखेमल	
२२४	८३६	२६ / ७	खमा छत्तीसी	समयसुन्दर	
२२५	२०४५ / २	५१ / ४५	ख्याल (चार ख्याल)		
२२६	२४००	६२ / ७२	गर्व पर स्तवन	किशनलाल व धनराज	
२२७	८६७	२७ / ३२	गाफल मत रहे	विनयचन्द	
२२८	१५१७ / १	३९ / ७	गाफिल मत रहे सज्झाय		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	१२		२३·५×१०·२ १६—३५
मेडता		·		"	१४		२५·१×१०·७ १६—५३
				"	४		२५·८×११·२ ८—३६
जोधपुर चौमासा	आर्या नगा	१८६०	जयपुर	"	२४	१	२३·०×१०·२ १४—३६
				"	६		२६·५×१३·२ २८—५२
				"	४		२५·३×११·६ १६—३१
				"	१२		१८·६×६·६ १७—८२
जैनारण				"	१५		२५·७×१२·० २०—४३
				"	५८		२६·०×११·७ १६—८३
नागोर				"	३६	२	२५·४×११·० १५—३८
				"	३६		२६·०×११·७ १६—४३
				"	९		२७·०×११·३ १२—३५
				"	९		२८·७×१०·८ १३—३३
				"	९		२६·५×१३·७ २८—५२
				"	३६	२	२०·५×११·० १३—३७
				"	१३		२८·५×१०·७ १६—४३
				"	८	१	२०·७×१०·८ १२—३०
				"	[illegible]	३	२५·३×११·५ [illegible]
				"	११		[illegible] [illegible]

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२२९	१७६८ / १	४४ / ३८	गाली की सज्झाय	रिखजी	
२३०	२४८४ / २	६३ / ७८	गीत		
२३१	१६५२ / २	४२ / २२	गीत	रूपचन्द	
२३२	१८४१ / २	४६ / ११	गीत	कवियण	
२३३	१७८५ / १	४५ / १५	गुदड़ी की सज्झाय		
२३४	२२७७	५९ / २५	गौ माता की पुकार		
२३५	२४४५	६३ / ३९	चचल जीव ने उपदेशी कथा		
२३६	६३५ / १	२० / २	चतुर नर दोपण कू टारी	चन्दन ऋषि	१९३९ सु० १३ मंगलवार
२३७	३२५ / ११	१३ / ८४	चरखा का पद		
२३८	१३१६ / १	३६ / ४६	चरखा को पद		
२३९	८९५ / ५	२७ / ३०	चामडारी पूतली	कवीर	
२४०	२२९२ / ०	५९ / ४०	चामडारी पूतली भजन कर री	कवीर	
२४१	२१९८ / ६	५६ / १५	चारित्र छत्तीसी	ज्ञानसागर	
२४२	७७६	२४ / ४३	चिन्तामणि ग्रंथ	रामचरण	
२४३	५५१ / ३	१७ / ७८	चुनडी	हीर मुनीश्वर	
२४४	१८७९ / १	४७ / ९	चेतन की सज्झाय		
२४५	२६४ / ९	१३ / २३	चेतन चतुर कमाया		
२४६	१७८०	४५ / १०	चेतन पच्चीसी	रायचन्द	
२४७	१४११ / १	३७ / ६१	चेतन पर सज्झाय	कुशल	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
जयगाव				हिन्दी-राज०	१०		२३.८ × ११.३ / १३—३३
				"	४		२५.६ × १०.६ / १३—३८
				"	५		२५.२ × ११.५ / १६—३८
				"	६		२५.१ × १२.२ / १८—४५
	लाछा		आगरा	"	१५		२४.८ × ११.८ / १५—३६
				"	९	१	२०.२ × १०.० / १२—२०
				"	११	१	२१.६ × १०.७ / १२—२२
फलोदी				"	१३		२५.६ × १२.५ / २२—४१
				"	१०		२३.६ × ११.२ / १३—४७
				"	१२		२०.० × ११.० / १८—२६
				"	५		२४.५ × १२.६ / ७—२७
				"	४		२६.३ × ११.५ / १६—३१
				"	२६		२४.७ × ११.२ / १०—३४
				"		४	२३.२ × १०.८ / १५—३२
रामपुरा				"	११		२६.० × ११.८ / २१—६६
				"	१२		२५.३ × १०.६ / १८—४४
				"	५		२६.५ × १३.२ / २८—५२
जोधपुर घोमासा	उदैचन्द			"		१	२५.२ × ११.० / १८—२८
				"	१०		२५.० × ११.६ / १५—३४

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२४८	६४४ / ६	२० / ११	चेतन मत कर जोर जवानो	किशनलाल	
२४९	१७३५	४३ / ५५	चेला की सज्झाय	रायचन्द	१८३१
२५०	७५६	२४ / २३	चेलाजी री सज्झाय	रायचन्द	१८३१ चौमासा
२५१	२६०४ / १	४१ / ३४	चौपड की सज्झाय	रतनसार	
२५२	१५५४ / २६	४० / ४	छ कायानी सज्झाय	दयारतन	
२५३	१५१४	३९ / ४	छ काया हिंसा पर उपदेश	पासचन्द	
२५४	१७४१ / ३	४४ / ११	छोगा कत की ढाल		
२५५	२१५६ / २	५५ / २०	जगत सुपना		
२५६	१४०९ / २	३७ / ७९	जगत सुपना	कवियण	
२५७	२४१४ / १	६३ / ८	जग स्वप्ना को स्तवन	रतनचन्द	
२५८	१६५	१८ / १	जडाव पद संग्रह	जडाव	१९५२ माह सु० ..
२५९	१३९६	३७ / ४६	जमा के सोरठिया		
२६०	२४७४ / १	६३ / ६८	जिनधर्म की उपदेशी सज्झाय		
२६१	२४११ / २	६३ / ५	जिन शरणागत उपदेशी स्तवन		
२६२	४७७ / ४	१७ / ४	जीभदात तणा		
२६३	१६६३ / २	४२ / ३३	जीव का जतन की सज्झाय		
२६४	१३२९ / १	३६ / ५४	जीव खामणा की साक्षी		
२६५	२३३ / २	१२ / ६२	जीव काया ऊपरै वैराग्य सज्झाय	रतनसमुद्र	
२६६	४५६ / २	१६ / ६१	जीव काया की सज्झाय		

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
२६७	१८५६ / २	४६ / २६	जीव काया की सज्झाय		
२६८	२२६६	५६ / १४	जीव की ढाल		
२६९	११०० / २	३२ / ५७	जीव की सज्झाय		
२७०	४९६	१७ / २३	जीव की सज्झाय	नरसिंहराय	१८८९ चैत्र सु० ७
२७१	१४१८ / १	३७ / ६८	जीवडला की सज्झाय		
२७२	२८४ / १८	१३ / २३	जीवडला यू ही जनम गवाया	रतनचन्द्र	
२७३	१९६ / ५	१२ / २५	जीव दया		
२७४	६४४ / १५	२० / ११	जीव दया उर धार		
२७५	१२४५ / २	३५ / ३९	जीव दया पर पद		
२७६	२१२५	५४ / ५२	जीव बोध सज्झाय	मनोहर	
२७७	१८९५ / ३	४७ / २५	जीव मन को सज्झाय	जिनचन्द्रसूरि	१७४१
२७८	२०२ / २	१२ / ३१	जीव हिंसा परिहार	ब्रह्म	
२७९	१६६८	४३ / २८	जीवोपदेश सज्झाय छत्तीसी	विनयचन्द	१८[illegible]
२८०	१५५४ / १८	४० / ४	जुआरी की सज्झाय		
२८१	१५५३ / ८१	४० / २	जुए पर ढाल		१८७१
२८२	१४५५	३८ / २५	जुवा की सज्झाय		
२८३	२१६० / १	५५ / ३४	जुवा की सज्झाय		
२८४	११० / ४	७ / १२	जुवा पर ढाल		
२८५	६४४ / २	२० / ११	जैजिणद जैजिणद	गिरधरलाल	

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचनासंवत् ६
२८६	६५४	२० / २१	जैन शतक	सुन्दरदास	
२८७	२२७ / ३	१२ / ५६	ज्ञान उनतीसी	मयाचन्द	
२८८	१६६० / २	४६ / १०	ज्ञान को होरी		
२८९	१६६० / ४	४६ / १०	ज्ञान की होरी	जिनलाभ	
२९०	८५६ / १	२६ / ३०	ज्ञान गुदडी		
२९१	१०१८	३१ / १	ज्ञान चिन्तामणि	मनोहरदास	१७२८ माघ सु० ७
२९२	१०८५ / १	३२ / ४२	ज्ञान चिन्तामणि	सेवक	१८२८ मा० सु० ७ शुक्रवार
२९३	१५७६	४० / ६	ज्ञान चिन्तामणि	मनोहरदास	१७२२ मा० सु० ७ शुक्रवार
२९४	२३०	१२ / ५६	ज्ञान चिन्तामणि चौपाई	मनोहरदास	१७२८ मा० सु० ७ शुक्रवार
२९५	१४१३	३७ / ८३	ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	
२९६	२००६ / ५	५० / १६	ज्ञान पच्चीसी	रिख चन्द्रभाग	१८५८ सा० सु० ११ गुरुवार
२९७	१०१५ / २	३० / ३३	ज्ञान बत्तीसी	श्रीसार	
२९८	१४२८ / १	३७ / ७८	ज्ञान वैराग्य का पद	सेवाराम	
२९९	१६३१ / १	४८ / २१	ज्ञान सज्झाय	रायचन्द	१८४२ चौमासा
३००	२३७८ / १	६२ / ५०	झगडा	कुशल	
३०१	४८०	१७ / ७	तमाखू की ढाल	आनन्द	
३०२	१५५४ / १६	४० / ४	तमाखू की सज्झाय	आनन्द	
३०३	५३६	१७ / ६६	तमाखू सज्झाय	मुनि आनन्द	
३०४	१६६६ / ३	४६ / १६	तिलक छापा की ढाल	कबीर	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	६५	६	२०.१×१०.७ / २२—४२
				,,	२६		२३.१×१२.० / १४—३६
				,,	४		२१.०×११.५ / १६—३८
				,,	७		२१.०×११.५ / १६—३८
	मुकुन्द	१८६४ मार्गशीर्ष कृ० ३०		,,	२७		२३.०×११.५ / ११—३९
बरानपुर		१९०२ श्रा० कृ० १३	जयपुर	,,	ग्र०ग्र० १२८	६	२२.४×१३.५ / १२—२७
				,,	ग्र०ग्र० १२८		२५.८×१२.४ / १२—३५
बरानपुर	आर्या राजकवर	१८२२ फा० सु० १० मंगल	जयपुर	,,	ग्र०ग्र० १२८	२	२५.२×११.४ / १६—४०
बरानपुर	छगना	१९१४ मगसर वद ५ शुक्र०	किशनगढ	,,	ग्र०ग्र० १२७	४	२७.१×१३.० / २४—३८
				,,	२५	१	२५.३×११.९ / १७—३९
फतेहपुर	चंदूलाल	१८८४ पो० सु० ४	विक्रमपुर	,,	२५		२२.३×१०.३ / ८—२२
				,,	३५		२२.४×१०.२ / १३—३०
				,,	७		२०.४×१०.४ / १३—४०
बीकानेर				,,	१९		२४.२×१०.२ / १८—४३
				,,	७		२५.०×१०.२ / १५—४३
				,,	२२	१	२५.२×११.३ / १५—४१
				,,	१८		२६.०×११.७ / १९—४३
				,,	१३	१	२३.०×१०.० / १०—३३
				,,	[illegible]		२४.३×१०.८ / १५—२५

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३०५	१८१७	४५/४७	तिलक मुद्रा विधि		
३०६	२४७/३	१३/६	तुम तजो जगत का ख्याल	जिनदास	
३०७	२६४/५	१३/२३	तुम तपस्या करो भव प्राणी	तिलक ऋषि	
३०८	८५८/२	२६/२६	तुम रा बाबो रे बाबो	कबीर	
३०९	१८१५/२	४५/४५	तृष्णा की सज्झाय		
३१०	२६४/१३	१३/२३	थारी फूली सी देह	रतनचन्द	
३११	२१७६/३	५५/५३	दया ऊपर सज्झाय		
३१२	१५४६	३६/३६	दया की सज्झाय		
३१३	२०३४	५१/२४	दया की सज्झाय		
३१४	१००/३	३७/५०	दया की होली	मौजीराम	
३१५	१५८३/६६	४०/३	दया धर्म की ढाल		१७६३ का० सु० ७
३१६	१२७५/२	३२/५	दया नग सिंघो वाजितो रे		
३१७	१६६/१	३५/६०	दया प्रतिबोध गीत	रामचन्द	
३१८	२६२	१३/२१	दया मंतीसी		१७६७ चैत्र पूर्णिमा
३१९	१७४८/१	०४/१८	दलाली की सज्झाय		
३२०	१५११	३६/१	दान की सज्झाय	शिव श्रावकगण	१८६६
३२१	२२६१	५६/६	दान की सज्झाय	कविराम	
३२२	२८३८	६३/३२	दान की सज्झाय	जेतीदास	
३२३	६०७/१	२८/६	दान शील तप भावना का चौढालिया	समयसुन्दर	१६६२

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				संस्कृत	गद्य	२	२०·३ × ८ ४ / ७—२७
				हिन्दी—राज०	४		२५·६ × १२ ० / १५—४१
				"	५		२६ ५ × १३ २ / २८—५२
				"	६		२६·१ × १२·७ / १७—४४
				"	११		२४ ७ × १० ६ / १८—४४
				"	५		२६·५ × १३ २ / २८—५२
				"	१२		२४·० × १०·७ / २२—७१
				"	३०	१	२४ १ × ११ ० / १८—३५
				"	३४	१	२६ २ × ११ २ / १९—४१
				"	१०		२४ ८ × १० ८ / १९—४७
मेड़ता				"	१५		२५ २ × १२ ० / २०—४३
				"	३३		२० ५ × ११ २ / २२—४७
	रिख भोजराज		बहादुरपुर	"	१४		२१ ० × १० ४ / १७—३९
विक्रमपुर				"	३७	१	२५ ० × १० ५ / १७—५३
				"	३२		२५ ० × ११ ० / १७—३७
दीवली				"	६	१	२१·५ × ११ २ / ११—२८
				"	१२	१	२२ २ × ९ ८ / १२—४०
	मनसा	१८७२ जेठ सु० ६ गुरु०		"	१३	१	२१ २ × ११ २ / १६—३६
सांगानेर				"	४	५	२२ ८ × १०·८ / २२—३४

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
३२४	२२५१	५८/३१	दान शील तप भावना को चौढालियो	समयसुन्दर	१६६२
३२५	११३१/१	३३/१६	दान शील तप भावना को चौढालियो	समयसुन्दर	१६६२
३२६	१०५३	३२/१०	दान शील तप भावना चौढालियो	समयसुन्दर	
३२७	२३१८	६१/१३	दान शील तप भावना चौढालियो	समयसुन्दर	१६६२
३२८	६६३	२१/१०	दान शील तप भावना संवाद	समयसुन्दर	१६६२
३२९	२४९१	६३/८५	दान शील तप भावना संवाद	समयसुन्दर	१६६२
३३०	५११/१	१७/३८	दानादि पर सज्झाय		
३३१	१८५५	४६/२५	दिवाली को सज्झाय		
३३२	२२७६	५९/२४	दिवाली की सज्झाय		
३३३	२३६९	६२/४१	दिवाली की सज्झाय	जयमल्ल	
३३४	१३२६	३६/५६	दिवाली की सज्झाय	जयमल्ल	
प्र० ३३५	३६०	१४/१२	दिवाली को स्तवन		
३३६	७६१	२४/२८	दिवाली नी सज्झाय		
३३७	४०२/१९	१६/७	दीवाने क्यू गफलत मे पडा		
३३८	२६४/३	१३/२३	दुनिया भोली		
३३९	१३९५	३७/४५	दुर्गादास गणि के सवैये	दुर्गादास	
३४०	१३२९/३	३६/५९	दुर्मति पद्य	भागचन्द	
३४१	५१५/२	१७/४२	दुर्लभ नर नो भव लाध्यो	विनयचन्द्र	
३४२	२११/६	१२/४०	दुहा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
सागानेर				हिन्दी-राज०	४	७	२१०×११ ३ / ११—२५
सागानेर				"	७	७	२५ २×१० ६ / ११—४०
सागानेर	आर्या पन्ना	१८१० वै० सु० १२		"	ढाल ५	५	२५ ८×११ ५ / १५—३२
सागानेर	कोयल	१८३५	लश्कर	"	४	४	२७ ०×१२ ३ / १४—३८
सागानेर	सरदारमल	१८५३ वै० बुद ११		"	६६	१६	२२ ०×१० ३ / ११—३१
सागानेर	आर्या माना	१९०८ शाके १७७३		"	११	६	२२ ७×११ २ / १२—३०
				"	२१		२४ ४×७ ० / १६—६१
				"	२२	१	२५ २×११ ५ / १७—४५
	महाकुवर		केकडी	"	३८	१	२५ ३×११ ४ / १९—३८
		१८२९ मा० बद ७	बुसी	"	४४	१	२३ २×१०·८ / १८—५९
	चाद		जयपुर	"	४५	२	२३ ९×१० ८ / १६—२९
	हमीरमल प्र०	१८६६ वै० सु० ८	नागौर	"	४१	१	२५ ६×११ ० / २२—४९
	आर्या माना		नदराय	"	३९	१	२६ २×११ २ / १८—४६
				हिन्दी	१०		२६ ५×११ ८ / २७—५३
				हिन्दी-राज०	७		२६ ५—१३ २ / २८—५२
				"	५	१	२२ ३×१० ४ / १४—३०
				"	५	१	२५ ३×११ ० / १७—५५
				"	११		२४ २×१० ८ / १३—३३
				"	८	९	२६ २×१२ ७ / १०—४१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३४३	३७९	१४/३२	दृष्टान्त का पद		
३४४	४८८/२	१७/१५	दो उपदेश के स्तवन	ऋषि रायचन्द	
३४५	१६६७/२	४२/३७	दो सवैया		
३४६	३२५/४	१३/८४	दोहा	तुलसी	
३४७	१५०१/१	३८/७१	दोहा नारी विषय मे		
३४८	३०८/२	१३/६७	दोहा सग्रह		
३४९	१३८४	३७/३४	दोहा सग्रह		
३५०	१५३४	३९/२४	दोहा सग्रह	चतुरदास, नाथ आदि	
३५१	१४३८/२	३८/८	दोहे		
३५२	१३१४/१	३६/४४	द्वादश भजना		
३५३	२७८/२	१३/३७	धरम की सज्भाय		
३५४	१८०९/६	४५/३९	धरम की सज्भाय	सरूपचन्द	
३५५	२१६१	५५/३५	धर्म भावना गाथा		
३५६	७६७	२४/३४	धर्मोपदेश काव्य अक्षरार्थ		
३५७	१६२६/६	४८/१६	नवभव ऊपर उपदेशो सज्भाय		
३५८	६४४/५	२०/११	नव भव चिन्ह मणि लाध्यो		
३५९	१५५३/९०	४०/३	नरभव चेतावनी		
३६०	६५९	२०/२६	नरभव सिभाय	आसो	
३६१	१६२९/३	४१/५६	नवघाटी की सज्भाय		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	२०	१	२०० × ७ ७ ८—३०
डीडवाना				"	१४+२१	७	२५ ७ × १२·० २०—४३
	भोजराज	१८३० माह सुद ११	बाजोली	"	२		१२ ३—६ ७ १२—२४
				"	४		२३ ६ × ११ २ १३—४७
				"	१६		२३ ६ × ११ ५ १७—४२
				"	७		१८·८ × ८ ७ १०—२६
				"	८८	३	२२ ४ × ११ २ १६—३५
	सोवनचन्द	१९४८ वै० सु० ६		"	८	१	२१ ५ × ११ ५ १३—२१
				"	५		२५ ० × १० ७ १२—३७
		१७४२ फा० सु० ८		"	१२		२३ ६ × १० ६ ११—३३
				"	४		२४ २ × ११ २ १७—३६
				"	१०		२६ ० × १०·५ १८—३६
				प्राकृत	२२	१	२३ ६ × १० ८ १४—४३
	सिंह सौभाग्य	१७३२ जे० कृ० १४	गोविन्दगढ	संस्कृत अर्थ राज०	१	१	२५ ० × १० ७ १६—४६
				हिन्दी-राज	१०		२४ ७ × ११ ४ २०—४८
				"	८		२५ ८ × ११ ५ १५—३५
		१८७४	देवगढ	"	६		२५ २ × १२ ० २०—४३
				"	१०	१	२५ १ × १२ ० १३—३५
				"	८		२३ ५ × १० ५ १६—४४

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३६२	२१६१	५६ / ८	नवरत्न कवित्त		
३६३	२१६८ / ६	५६ / १५	नवरत्न कवित्त	ज्ञानसार	
३६४	२०४० / २	५१ / ३०	नारी का गुण		
३६५	११७ / १	७ / १६	नारी की सज्झाय		
३६६	२१८ / २	१२ / ४७	नारी की सज्झाय		
३६७	२६६ / २	१३ / ५८	नारी की सज्झाय		
३६८	६६१	२० / २८	नारी की सज्झाय		
३६९	१३४१ / २	३६ / ७१	नारी की सज्झाय		
३७०	१५६६	४१ / २६	नारी की सज्झाय		
३७१	१६७० / १	४६ / २०	नारी की सज्झाय		
३७२	२०१८	५१ / ८	नारी की सज्झाय		
३७३	२२५३	५६ / १	नारी की सज्झाय		
३७४	२२४१ / १	५८ / २१	नारी नागण स्तवन		
३७५	१५५४ / ४	४० / ४	नारी स ग निवारो रे	उदयरत्न	
३७६	१८६६	४७ / २६	निन्दक की सज्झाय	लोतीराम	१८५२ भा० सु०११
३७७	४३४ / २	१६ / ३६	निन्दा का पद	रतनचन्द	
३७८	२३६	१२ / ६८	निन्दा निवारण गीत	राजसमुद्र	
३७९	१५५४ / २२	४० / ४	निद्रा की सज्झाय	जयमल	
३८०	१६२६	४१ / ५६	नीति का सवैया		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	११	२	२४१×११६ / १०—३५
				"	११		२४७×११२ / १२—३२
				"	१६		२५०×१०५ / १७—४६
				"	१५		२४४×१०८ / १३—४२
				"	२३		१००×४४ / १७—४८
				"	२२		२[illegible]५×११० / २०—४४
				"	२४	१	२६६×१०६ / १५—३४
				"	२३		२०३×१११ / १८—३५
				"	२४	१	२५४×११३ / १५—३५
				"	१८		२४५×११२ / १७—३२
	रतनचन्द	१८७६ माह वद ११	वादरपुर	"	२६	१	२५०×१२० / १८—४३
				"	१५	१	२४८×१०८ / ११—३४
	पूर्णचन्द्र			"	६		२५१×१२८ / १०—२६
				"	७		२६·०×११७ / १६—४३
				"	१७	१	२५५×१०६ / १४—४०
				"	५		१८·०×६·७ / ८—१६
				"	७	१	१७५×१०५ / ११—२२
				"	२४		२६०×११७ / १६—४३
				"	३	१	१६५×१०५ / ६—३१

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
३८१	६/२	१/६	नीति के दोहे		
३८२	३६२/३	१४/१५	नीति के दोहे		
३८३	११११६	३३/४	नीति के दोहे		
३८४	२४७/६	१३/६	नेम को जाण न देती रख लेती	गुलावचन्द	
३८५	१५०१/३	३८/७१	पच प्रकार जीव दोहे		
३८६	२४७/१०	१३/६	पथीरारे पथ चलेगो		
३८७	१५५३/६६	४०/३	पखवाडा की ढाल		१८५७ चौमासा
३८८	१४२६/१	३७/७६	पखवाडा की सज्भाय		१८७२ चैत वद २
३८९	६४७/२	२०/१४	पखवाडा को गीत		
३९०	१२८३	३६/८३	पखवाडा को स्तवन		
३९१	६३४	२०/१	पखवाडो	रूपविजय	
३९२	१५०२	३८/७२	पन्द्रह तिथि की सज्भाय		
३९३	१८८१	४७/११	पन्द्रह तिथियो की ढाल		
३९४	१५५४/३	४०/४	पर उपगार नी सज्भाय	जयरग	
३९५	२४२१	६३/१५	पर नारी त्याग उपदेश		
३९६	१३२२	३६/५३	पर नारी पर सज्भाय	रतनचन्द	८६ महामन्दिर
३९७	२४७/१	१३/६	पर नारी प्रेम की निन्दा	जिनदास	
३९८	२३०१	५६/४६	पर निन्दा की सज्भाय	समयसुन्दर	
३९९	१४९७	३८/६७	पर स्त्री निपेध		

रचना स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	-आर्या मया			हिन्दी-राज०	९		२५·७×११·८ / १४—५७
				”	६		२४ ७×१२·८ / २१—४९
				”	२९ ३२ से ६०	१	२६ २×११ ५ / १५—४४
				हिन्दी	३		२५·९×१२·० / १५—४१
				हिन्दी-राज०	७		२३ ९×१० ५ / १७—४२
				”	५		२५ ६×१२ ० / १५—४१
जोधास				”	१७		२५·२×१२·० / २०—४३
निवाज				”	१७		२५·९×११ ५ / २१—४२
				”	१६		२३ ८×१२·० / १६—३०
	आर्या चनुजी		नागौर	”	१०	१	२१ ०×१० ० / १६—३३
				”	१८	१	२६ ८×१३ १ / १५—३८
				”	१७	१	२२ ८×१० ६ / २२—४१
				”	२०	१	२० ८×१०·० / ९—३६
				”	९		२६ ०×११ ७ / १९—४३
				”	२८	१	२३ ३×११ ८ / १७—३६
				”	६	१	२५ १×११ ७ / १२—२४
				”	१०		२५ ६×१२ ० / १५—४१
				”	५	१	२३ २×१० ८ / १८—१७
				”	२८	१	१८ ७×११ ५ / १६—३१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
४००	१४९७/२	३७/७७	पर स्त्री निषेध भजन		
४०१	५९९	१९/३१	परिग्रह की चौपई	रिख रायचन्द	१८२२ का० वद ४ चौमासा
४०२	१५५४/२४	४०/४	पाच इन्द्रिय-सवाद	रूपचन्द	
४०३	१५५४/२०	४०/४	पाच इन्द्रियो की सज्झाय	धनजी	
४०४	१४९८/२	३८/६८	पाच इन्द्रियो पर स्तवन	रत्नचन्द्राचार्य	
४०५	२४७/६	१३/६	पाप मे रात दिवस जाता	जिनदास	
४०६	२६४/४	१३/२३	पालो रे सजम की किरिया	तिलोक रिख	
४०७	२६४/१२	१३/२३	पीले रे प्याला हो मतवाला	जिनदास	
४०८	१०४५	३२/२	पुण्य सत्तावीसी	रायचन्द	१८३५ चौमासा
४०९	१५२५	३९/१५	पुण्य सत्तावीसी	रायचन्द	
४१०	२१९८/१०	५६/१५	प्रस्ताविक अष्टोत्तरी	ज्ञानसागर	... .. आसोज
४११	२४५७/२	६३/५१	फकीरी का स्तवन	कबीर	
४१२	२३८४/१	६२/५६	फलविधि-पार्श्वनाथ छंद		
४१३	२३८४/२	६२/५६	फलावधि पार्श्वनाथ जी रो छद	कुशलधीर	
४१४	१४०४	३७/५४	फाटका की सज्झाय	किशनलाल	१९४६
४१५	७७४	२४/४१	फुटकर-अमूल्य उपदेश		
४१६	७०५/६	२१/२२	फुटकर सुभाषित		
४१७	१५५३/८६	४०/३	फूहड स्त्री की ढाल		
४१८	५८८/२	१९/२०	बारह भावना	जिनचन्द	१९७९

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी राज०	७		२५ ३×१० ६ / १२—२७
तिवरी	बुधमल		जोधपुर	"	२०	५	२९ ८×१२ ५ / १९ ४७
				"	ढाल ५ पद्य १२९		२६०×११·७ / १९—४३
				"	७		२६ ०×११ ७ / १९—४३
				"	८		२११×११ ४ / ९—२९
				"	४		२५ ६×१२ ० / १५—४१
				"	६		२६ ५×१३ २ / २८—५२
				"	३		२६ ५×१३·२ / २८—५२
जोधपुर		१९३३ माह वद ६		"	२७	१	२८·१×१३·२ / १५—४०
जोधपुर				"	२७	१	२६ ७×१२ ५ / १९—४३
विक्रमपुर				"	पद्य ११२		२४ ७×११ ० / १०—३४
				"	११		२३ ५×१० ७ / १४—३१
				"	२१		२५ २×१०·५ / ११—४८
				"	१४		२५ २×१० ५ / ११—४८
अहिपुर				"	११	१	२५·०×११ ६ / १५—२६
				"	गद्यपद्य	२	२५ ६×१२ ० / १५—४८
				संस्कृत	१६		२०·३×१४ ३ / १४—२७
				हिन्दी-राज०	१९		२५·२×१२·० / २०—४३
बीकानेर				"	७२		२६ ३×११·१ / १५—४६

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
४१९	११७३ / १	१३ / ५८	वारह भावना		
४२०	११८५ / ३	३४ / ५	वारह भावना		
४२१	५५७ / १	१७ / ८४	वाराखडी		
४२२	२१५३	५५ / २७	वाराखडी	सुरतिसिद्ध	
४२३	५३४	१७ / ५१	वालचन्द वत्तीसी	वालचन्द	
प्र०४२४	५३५	१७ / ६२	वालचन्द वत्तीसी	वालचन्द	१६८५ का० कृ० ३० दीपावली
४२५	८७९	२७ / १४	वालचन्द वत्तीसी	वालचन्द	१६८५ का० कृ० ३० दोपावली
४२६	२४९०	६३ / ८४	वाल पच्चीसी		
४२७	१९६८	४९ / १८	वुड्ढा की सज्झाय		
४२८	१५१७ / २	३९ / ७	वुढापा की सज्झाय		
४२९	४७७ / ५	१७ / ४	वुढापा रो वर्णन		
४३०	२२७ / २	१२ / ५६	वुढापे रा गुण वर्णन		
४३१	९५३	२८ / ५२	वुढा को सिलोको		
४३२	२०९५	५४ / १२	वुद्धि प्रकाश		१९३४ फागण वद
४३३	८६ / २	६ / २	वृद्ध चाणक्य राजनीति	चाणक्य	
४३४	९४३ / १०	२८ / ४२	ब्रह्मचारी की सज्झाय		
४३५	३८० / १	१४ / ३३	भद्रा की शिक्षा		
४३६	२४४१	६३ / ३५	भद्रामाता की सीख		
४३७	१७३४	४४ / ४	भव छत्तीसो	भगवानदास	१९०४ आसोज वद ४

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-सख्या १२	पत्र स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		२२७×११५ १३—३६
				,,	गद्य		२५७×१२५ १३—४८
	रतनचन्द	१८७४ पौ० कृ० ६		,,	गद्य		२५३×११४ १३—३४
				,,	७७		२५७×१२·० १४—४८
	आर्या नानगा	१८६० आपाढ कृ० ११ बुध०	जयपुर	,,	३२	३	२३२×११४ १६—४०
अहमदाबाद	प्रेमचन्द्र प्र०			,,	३७	७	२५२×११३ ११—२४
अहमदाबाद				,,	३३	४	२४·४×१०१ १५—३६
				,,	२५	१	२६५×११० १२—४२
				,,	२८	१	२५५×११३ १७—३६
				,,	१२		२१२×११५ १७—३१
				,,	६		२५५×१०८ २०—३७
				,,	२५		२४·५×१०८ १४—२६
				,,	२८	२	२२७×९८ १२—३६
अलवर		१९३५ माह सु० ७		,,	१५७	२ से ४	२६८×१३३ १४—५६
				संस्कृत	८		२३७×१२६ १०—३०
				हिन्दी-राज०	६		२१९×१०८ २०—३६
				,,	१४		२३५×१०२ १७—४१
				,,	१४	१	२४०×११३ १३—४४
पालो				,,	३७	१	२५९×११७ १९—४५

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
४३८	१५५४/१	४०/४	भव जीव करणी सज्झाय	कजोड़ी सेवक	
४३९	१७३६	४४/६	भाव रेल की ढाल	जडावजी	. ६७
४४०	५९	४/१९	भावना विलास टब्बा	वल्लभगणि	१७२० पो० बद१०
४४१	४७४/२	१७/१	भूलो मन भमरा	सेवक	
४४२	१३३९/२	१६/६९	मदोदरी की रावण ने सिखामण		१९३२ भा० सु० २
४४३	१५५३/५८	४०/३	मदोदरी द्वारा रावण को सिखावण		१८८१ चैं० सु० १३ रविवार
४४४	३६४/७	१३/२३	मत करो चतुर अभिमाना	तिलोक ऋषि	
४४५	२६४/८	१३/२३	मत करो रे चतुर माया	तिलोक ऋषि	
४४६	२१९८/७	५६/१५	मत प्रबोध छत्तीसी	ज्ञानसार	
४४७	२३५४	६२/२९	मधु बिन्दु सज्झाय	चरणप्रमोद	
४४८	२०१६/३	५१/६	मन की स्थिति		
४४९	१०७/२	७/९	मन लोभी का पद		
४५०	६५३/३	२०/२	मनवा मन मत चाव	सुजान मुनि	
४५१	२४१६/२	६३/१०	मन समझावण की सज्झाय	कबीर	
४५२	२४३०	६३/२४	मनुष्य जन्म अनमोल के श्लोक		
४५३	३३६	१३/९५	मनुष्य जमारा की सज्झाय	यति चिन्ताराम	
४५४	६१८/२	२८/१७	मनोपरि स्वाध्याय	लावण्य समय	
४५५	२१४३/२	५५/१७	ममता पर स्तवन	पेम	
४५६	१२३१/१	३५/२५	मर्म मोसा ऊपर सज्झाय		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	२४		२६०×११७ / १९—४३
जयपुर				"	१३	१	२४७×११० / १६—३८
	जोशी देवकृष्ण			"	५२	११	२०६×१०·८ / २१—४१
				"	८		२१६×११२ / ११—२४
				"	१०		२५०×११७ / १६—४०
असोप				"	११		२५२×१२० / २०—४३
				"	५		२६५×१३२ / २८—५२
				"	७		२६५×१३२ / २८—५२
				"	३७		२४७×११·२ / १०—३४
				"	१०	१	२३५×११·० / १३—२८
				"	७		२५६×१०७ / १३—३६
				"	५		१०५×५० / १६—५२
				"	६		२५९×१२५ / २२—४१
				"	४		२१८×११५ / १३—२५
				"	१४	१	२४४×१११ / १२—३५
				"	१३	१	२४८×१०५ / १२—३५
				"	६		२४९×११९ / १३—३४
				"	४		२४२×११६ / १३—३४
				"	२४		२५६×१२·१ / २२—५१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
४५७	६२० / १	१६ / ५२	मान की सज्झाय		
४५८	१६८१	४३ / ११	मान की सज्झाय		
४५९	१९७१	४६ / २१	मान की सज्झाय		
४६०	१९१४ / २	४८ / ४	मान पैंतीसी		
४६१	१९६ / २	१२ / २५	मानव जनम दुर्लभ		
४६२	१२६३ / ४	३५ / ५७	मालण की सज्झाय		
४६३	२३६४ / २	६२ / ६६	मालण की सज्झाय	कबीर	
४६४	२४७४ / २	६३ / ६८	मालण की सज्झाय		
४६५	१५५४ / १३	४० / ४	मालण जागता नर सेव पद		
४६६	१५५३ / १०४	४० / ३	मिसर छत्तीसी		१८७६ चैत्र
४६७	१२४४ / १	३५ / ३८	मुक्ति की डिगरी		१९२८ फा० व० १०
४६८	२०३१	५१ / २१	मुक्ति महल को स्तवन	रायचन्द	
४६९	६८ / ३	६ / १४	मुगत महल की सज्झाय	रायचन्द	
४७०	२६४ / ६	१३ / २२	मेटो मेटो रे भाविक	तिलोक ऋषि	
४७१	२३४५	६२ / १७	मोती कपास संवाद	मुनि श्रीसार	
४७२	५४६	१७ / ७३	मोती कपासियो संवाद	मुनि श्रीसार	
४७३	६३५ / २	२० / २	या कुमत खोव तू वीरा	सुजान मुनि	
४७४	१५५४ / ९	४० / ४	या देही असारनी सज्झाय		
४७५	८५८ / ४	२६ / २६	यारो जायो रे आयुखो पीछे नहीं आवे	रिख रायचन्द	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	आर्या मना			हिन्दी-राज०	९		२०·३×१०·२ / १३—३२
				,,	२८	१	२५·४×११·१ / २५—५०
	आर्या पन्ना		जयपुर	,,	३०	१	२५·१×११·५ / १६—४३
				,,	३५		२५·७×११·८ / १३—३५
				,,	२०		२५·८×११·६ / १४—४०
				,,	१०		२४·१×१०·५ / १९—४७
				,,	९		२१·४×१०·२ / १८—४३
				,,	५		२४·४×१०·२ / १५—४३
				,,	६		२६·०×११·० / १९—४३
अहिपुर				,,	३७		२५·२×१२·० / २०—४३
				,,	२०		२०·५×११·७ / १०—२९
				,,	११	१	२३·५×१०·८ / १५—३३
				,,	११		२५·०×१०·८ / १७—४८
				,,	५		२६·५×१२·२ / ३८—५२
फलौदी		१८४७आसोज वद ९		,,	६	३	२०·६×११·८ / २२—४२
फलौदी		१८४५		,,	६	२	२५·०×११·८ / २३—५५
				,,	५		२५·९×१२·५ / २२—४१
				,,	३७		२९·०×११·७ / १९—४३
				,,	१७		२९·१×१२·७ / १७—४४

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
४७६	१२६३ / २	३५ / ५७	योग फकीरी सज्झाय	कबीर	
४७७	१९६ / १	१२ / २५	रतन चिन्तामणि नरभव		
४७८	२१८३ / ३	५५ / १७	रमना ऊपर स्तवन	विनयचन्द	
४७९	८५८ / ५	२६ / २९	रात लुनी कहा जाग्या वाला		
४८०	६७८ / २	२० / ४५	रात्रि भोजन त्याग	धर्मसी	
४८१	१५५३ / ६५	४० / ३	रात्रि भोजन निषेध		१८७५ चौमासे
४८२	१९४६ / २	४८ / ३६	रात्रि भोजन निषेध की सज्झाय	रिख खुशालचन्द	१९४३ चौमासे
४८३	१८६०	४९ / ३	रात्रि भोजन निषेध सज्झाय		
४८४	२३६३	६२ / ६५	रात्रि भोजन निषेध सज्झाय	पू० जयमल	
४८५	१२३१ / २	३५ / २५	रात्रि भोजन निषेध सज्झाय		
४८६	१६५७ / २	४२ / २७	रावण को हनुमान की शिक्षा		
४८७	२००० / २	५० / १०	रुद्रा की सज्झाय		
४८८	९३९ / १	२८ / ३८	रेखता		
४८९	३०७ / १	१२ / ६६	लक्ष्मी दरिद्र नो सम्बन्ध		
४९०	१५७९	४१ / ९	लघु चाणक्य		
४९१	८९ / १	६ / २	लघु चाणक्य राजनीति		
४९२	१७९६	४५ / २६	लघु चाणक्य राजनीति		
४९३	३६८ / १	१४ / २१	लालचन्द बावनी	रिख लालचन्द	१८७७ आसोज सु० ११ मंगलवार चौमासे
४९४	१३७३	३७ / २३	लोभ पच्चीसी	रिख रायचन्द	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	११		२४ १×१० ५ १६—४७
				”	२०		२५ ८×११ ६ ११—३७
				”	५		२४ २×११ ६ १३—३४
				”	४		२६ १×१२ ७ १७—४४
				”	६		२५ ६×१० ६ १७—५५
जोधाणे				”	२६		२५ २×१२ ० २०—४३
जोधाणे				”	२५		२५ ७×१२ ३ २१—४८
				”	१४	१	२३ ०×११ ० १६—३६
				”	१४	१	२४ ०×१० ० ११—२५
				”	८		२५·६×१२ १ २२—५१
				”	७		१५ २×११ ६ १५—२८
				”	३६		२५ ५×११ ० १२—३२
				”	११		२५ ६×११ २ ८—३६
				”	२		२१ २×१० २ १८—३१
	आर्या ज्ञाना			संस्कृत		२	२४ ३×११ २ १६—३२
	आर्या ज्ञाना		शाहपुरा	”	८		२४ ८×१२ ८ १०—३०
	ज्ञानाजी		शाहपुरा	”	अ०४	२	२३ ७×१०·८ १२—२४
कोटा		१९०५ जे० वद १२	लश्कर	हिन्दी-राज०	५२		१६ ७×१० ६ १७—३०
बीकानेर	जेठमल			”	२५	१	२५·० ×११ ० १७—६५

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ–नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
४९५	१९५४ / २	४९ / ४	लोभ पर हार हाथी की सज्झाय		
४९६	४३४ / १	१६ / ३९	वर्णमाला वारह ग्रक्षरी श्रौर सयुक्त वर्ण		
४९७	२१०८	५४ / २५	वर्द्धमान प च तत्व हित शिक्षा स्तवन		
४९८	३२५ / ६	१३ / ८४	विनय पच्चीसी		
४९९	१५५३ / ७१	४० / ३	विनीत अविनीत पर ढाल		१८८६
५००	२५५ / २	१३ / १४	विरक्त पद		
५०१	१५२९ / २	३९ / १९	विरक्ति का पद		
५०२	४०२ / १७५	१६ / ७	विविध उपदेश पद		
५०३	२६४ / १५	१५ / २३	विसया वस जनम गयो रे		
५०४	१५५४ / २९	४० / ४	वृगना का दूहा		
५०५	४७१	१६ / ७६	वेश पच्चीसी		
५०६	१६६७ / १	४२ / ३७	वैराग्य की ढाल		
५०७	१४९१ / १	३८ / ६१	वैराग्य की सज्झाय	महमद	
५०८	१५९३ / १	४१ / २३	वैराग्य निशानी		
५०९	१५५४ / ३०	४० / ४	वैराग्य पच्चीसी	भय्या	१७५० पौ० शु० ८ गुरुवार
५१०	१२१६ / १	३५ / १०	वैराग्य वावनी	लालचन्द	१९२६भा० सु० १५
५११	२२४१ / २	५८ / २१	वैराग्य व दया के पद		
५१२	५९५ / ३	१९ / २७	वैराग्य वर्णन		
५१३	२२२६	५८ / ६	वैराग्य शतक	भर्तृहरि	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छन्द-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	८		२५ ६×११ ७ / १८—४०
		१९२६ आश्विन शु० १२		”	गद्य		१८ ०×९ ७ / ८—१९
	माणकचन्द	१८४७ पौ० सु० ९	जालणपुर	”	५८	३	२५ ०×११ २ / १५—४१
				”	२५		२३ ६×११ २ / १३—४७
रीया				”	१३		२५ २×१२ ० / २०—४३
				”	६		२४·३×१०·८ / १७—४५
				”	६		२६ ६×१२·९ / १४—३६
				”		६	२६·५×११·८ / २७—५३
				”	४		२६ ५×१३ २ / २८—५२
				”	८		२६·०×११·७ / १९—४३
	रतनचंद		नागौर	”	२६	१	२४ ८×११ ६ / १४—४१
	भोजराज		वाजोली	”	७		१२ ३×९ ७ / १२—२४
				”	१२		२६ २×१० ७ / १३—३३
				”	६		२३ ३×१० १ / १४—४०
				”	२६		२६ ०×११ ७ / १९—४३
	आर्यां उदा		बीकानेर	”	५३		२५·०×११ २ / २१—४०
				”	३+३		२५·१×१२ ८ / १०—२६
				”	१०		२५ ५×११ ३ / १३—५७
				संस्कृत	१३	१६	२४.८×१२·२ / ७—३०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
५१४	८४२	२६/१३	वैराग्य शतक टब्बा		
५१५	२०६५	५३/२	वैराग्य शतक टब्बा		
५१६	६००	२७/३५	वैराग्य शतक टब्बा सहित		
५१७	२८८	१३/४७	वैराग्य सिझाय	महम्मद	
५१८	१२६६/२	३५/६०	वैराग्य सिझाय		
५१९	१४८०/१	३८/५०	वैराग्य सिझाय	रत्नाचार्य	१८६७
५२०	२१५६/१	५५/३३	वैराग्य सिझाय	सदाशिव	
५२१	२१५६/२	५५/३३	वैराग्य सिझाय	अमरचन्द	
५२२	६१८/१	२८/१७	वैराग्य स्वाध्याय	रूपचन्द	
५२३	५५३	१७/८०	व्यसन पर गुणसागर की ५५वीं ढाल	गुणसागर	
५२४	४०२/११	१६/७	शरीर की नश्वरता के पद		
५२५	२८६	१३/४५	शिक्षा के पद		
५२६	१००७/३	३०/२५	शिक्षा के पद्य		
५२७	१७०६	४३/३६	शिक्षाप्रद पद्य संग्रह	गंगादास	
५२८	४१४/२	१६/१९	शील अखण्ड सेवज्यो ढाल		
५२९	१७६०/२	४४/३०	शील ऊपर सिझाय		
५३०	४१४/१	१६/१४	शील की ढाल	रायचन्द	१८२८ वै० शु० ६
५३१	४८६	१७/१३	शील की सज्झाय		
५३२	१८३८	४८/२८	शील की सज्झाय		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	कुशलाजी	१७५९ फा० सु० ३ मंगल०		संस्कृत	१०४	१२	२३ ७×१०·५ / ५—४०
	उत्तम ऋषि	१९२२ चै० सु० १२	अम्बाला	प्राकृत	१०४	८	२७·२×१२·० / १४—३९
	आर्या डमीजी			"	१०२	१२	२८·०×१२·५ / १२—३२
				हिन्दी-राज०	१२	१	२६·०×११·६ / १२—४२
			बहादुरपुर	"	१२		२१·०×१०·४ / १७—३९
किशनगढ	रतनचन्द्र	१८८५ मा० सु० १०	जयपुर	"	१३		२५ ५×११ ४ / १५—४२
				"	१९		२५ ०×११·० / २१—३५
				"	६		२५ ०×११·२ / २१—३५
				"	२१		२४ ९×११ ९ / १३—३४
				हिन्दी-राज०	२९	७	२५·२×९·८ / १०—३७
				"	पद ४		२६ ५×११ ८ / २७—५३
				"	१४	१	२२ ०×८ २ / १२—३९
				"	५		२५ २×११ ० / १७—४५
				"	३७	२	२२ ४×१० २ / १५—३९
				"	१६		२६ ५×१२ ३ / ३०—६५
				"	१४		१४·३×१२·१ / १५—४०
				"	२१		२६·५×१०·३ / ३०—६५
				"	५०	२	२५ ७×१०·० / १८—३९
				"	९	१	२० ७×९·८ / १२—३६

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
५३३	१९३५	४८/२५	शील की सज्झाय	चौथमल	
५३४	२४२६/२	६३/३	शील की सज्झाय		
५३५	२४४४/२	६३/३८	शील की सज्झाय	देव ब्रह्म	
५३६	१५३३/१	३९/२३	शील के कंडे		
५३७	९३१	२८/३०	शील को स्तवन		
५३८	४०७	१६/१२	शील ना कडा		
५३९	५४५/१	१७/७२	शील पच्चीसी	नेतजी	
५४०	५६३	१७/९०	शील पच्चीसी	कृष्ण मुनि	
५४१	२२६३	५९/११	शील पच्चीसी	नेतजी	
५४२	१४२३	३७/७६	शीलोपदेश		
५४३	१८३९	४६/९	सती की सेवा मे सीख	मोतीलाल	१८३६
५४४	२०८१	५३/१८	सवोध सत्तरी टब्वा		
५४५	८३३	२६/४	सब्रोध सत्तरी टब्वा सहित		
५४६	३०६	१३/६५	समज भोला प्राणी	रूपचन्द	
५४७	१३५१	३७/८१	ससार माया फेर बाजो रे		
५४८	६४२/६	२०/९	संसार रूपी समुद्र केवो		
५४९	४४२	१६/४७	संसार समुद्र टब्बा सहित		
५५०	८५९/२	२६/३०	सजन तेरा मन चंचल घोडा	चम्पाराम	
५५१	६४४/३	२०/११	सतगुरु वोले राज	किशनलाल	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	२१	१	२० ६×१० ९ / १५—३३
				"	१५		२५ २×११ ५ / १५—३८
				"	१८		२५ ५×१० ८ / १६—३५
	कनीराम	१९०७ जे० बद ६	पीपाड	"	१६		२५ ६×१२ १ / २४—४७
				"	३१	१	२१ ४×१० ८ / १८—४५
	मागा	१९०१आश्वि. कृ० ७ गुरु०	मेडता	"	१८	३	२५ ०×११ ० / १५—४१
				"	२६		२२ ४×९.५ / १२—३३
				"	२५	१	२४ ३×११ ४ / १६—३८
	आर्या पन्ना		जयपुर	"	२५	१	२६ ५×१२ ५ / १५—३५
				"	१६		२५ ९×११ ५ / २१—४२
दखिन	रिख किशनचन्द	... काती सु० ३	जोधपुर	"	३५		२५ ८×१२ ३ / १७—४०
	रिख वर्द्धमान	१८१६ फा० कृ० १४शुक्र०		प्राकृत	गद्य	१४	२४ ३×११ ३ / १७ ४१
	ऋषि कृष्ण	१६७५ चै० शु० १ सोम०		"	७४	७	२६ ५×११ ५ / १२—३८
				हिन्दी-राज०	१७		१८ ६×६ ६ / १७—४२
				"	५	१	२० ५×१० ३ / ९ ४०
				"	गद्य		२५ ०×१० ९ / १६—४२
				मू० प्राकृत ट० हिन्दी	गद्य	३	२५ ४×१० ६ / २७—३७
				हिन्दी-राज०	५		२६ ०×११ ५ / ११—३२
				"	४		२५ ८×११ ५ / १५—३५

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
५५२	२३८२	६२/५४	सत्यवाणी सज्झाय	लक्ष्मी कल्लोल	
५५३	२४३६	६३/३०	सद्गुरु देखण	कुशल	
५५४	१७६०/१	४५/२०	सपहिडा की सज्झाय		
५५५	८५८/१	२६/२९	सबद गुर बाण भर मार्‌या		
५५६	४९९	१७/२६	समझ छत्तीसी	रतनचन्द	
५५७	५२७/१	१७/५४	समकित की महिमा	रिख रतनचन्द	... ६६
५५८	१५५३/१०१	४०/३	समकित छत्तीमी		१८६८
५५९	११८४	३४/४	समकित छप्पनी		
५६०	२४७४/३	६३/६८	समकित की सज्झाय		
५६१	१५५४/८	४०/४	समकित नो चौढालियो	रिख रायचन्द	१८३३ जेठ कृ० ८
५६२	१५५३/७३	४०/३	समकित पर ढाल		
५६३	६४४/४	२०/११	समझ विचार करो		
५६४	६४४/१२	२०/११	समझ विचार करो	क्रिशनलाल	१९४२ श्रा० कृ० ५ शनिवार
५६५	१३३६/१	३६/६६	समझणी बाई की सज्झाय		
५६६	२१४३/४	५५/१७	समता पर स्तवन	रतनचन्द	
५६७	१६१७/१	४१/४७	सवैया आत्मोपदेश के	लालचन्द	
५६८	५५७/२	१७/८४	सवैया उपदेशात्मक		
५६९	१९२६/५	४८/१६	सात वार ऊपर ढाल	रिख लालचन्द	१८५०
५७०	१३६८/१	३७/१८	सात वार की ढाल	रिख लालचन्द	१८५०

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
	खुशालचन्द			हिन्दी-राज०	१५	१	२४ ९ × ९ ८ ९—३१
				”	९		१८ ७ × ११ ४ १४—२९
				”	१४		२५ ५ × ११ ५ १७—४६
	रामलाल	१९१५	लखनऊ	”	६		२६ १ × १२ ७ १७—४४
				”	३६	१	२४ ८ × ११ ४
नगोने				”	१३		२५ ५ × ११ ० १४—३७
रीया पीपाड				”	३६		२५ २ × १२ ० २०—४२
				”	५७	३	२५ ७ × १२ ५ १४—४०
				”	१०		२४ ४ × १० २ १५—४३
पीपाड				”	ढाल ४ पद्य ६३		२६ ० × ११·७ १९—४३
कुचामण				”	९		२५ २ × १२ ० २०—४३
				”	५		२५ ८ × ११·५ १५—३५
जोधपुर				”	१०		२५ ८ × ११ ५ १५—३५
	अमरचन्द	१८७६	जोबनेर	”	२२		२३ ८—१० ८ १७—४२
				”	५		२४ २ × ११·६ १३—३४
				”	१०		२१ ० × ११ २ १६—३८
				”	१		२५ ३ × ११ ४ १३—३४
माधोपुर				”	१०		२४ ७ × ११ ४ २०—४८
माधोपुर				”	१०		२५ ० × ११ १ १८—४८

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
५७१	१४६६/३	३८/६६	सात वार की विनती		
५७२	१३१७/१	३६/४७	सात व्यसन पर सज्झाय		
५७३	१४३०/२	३७/८०	सात व्यसन सज्झाय	जयरंग	
५७४	५१५/३	१७/४२	साथ कहे साभल तू	कुशलाजी	
५७५	१६८४	४६/३४	साधु उपदेश सज्झाय	रतनचन्द	१८८८ मिगसर वद १
५७६	१६६/४	१२/२५	साधुजी के उपदेश		
५७७	६६६	२१/१६	सिन्दूर प्रकरण सूक्ति मुक्तावली का २२वा प्रकरण	विजयसेन आचार्य पद्यानुवाद कवरपाल, वनारसीदास	१६६१ वै० सु०११ सोमवार
५७८	८५२	२६/२३	सिंदूर प्रकरण सूक्ति मुक्तावली	सोमप्रभ	
५७९	६४३/१३	२८/४२	सिपाही की ढाल	सुखानन्द	
५८०	१४२३/१	३७/७३	सिसुजो पीतु ..	जिनहर्ष	
५८१	५२७/२	१७/५४	सीखनी इक्वीसवी	रतनचन्द	चौमासा
५८२	१७१७	४३/४७	सीख पच्चीसी		
५८३	६७३	२०/४०	सुकृत कर ले मूजी तेरी बिगड जायगी पूजी	कृष्ण	
५८४	१८६५/२	४७/२५	सुकृत की सज्झाय	तिलक सूरि	
५८५	३२८/३	१३/८७	सुखनी स्वाध्याय		
५८६	४७७/३	१७/४	सुच कहा सू आइ है रे पाडे		
५८७	६४४/१६	२०/११	सुज्ञानो चेतरे	किशनलाल	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी--राज०	८		२१ २×११ ६ १९—३२
				"	३३		२२ २×१०·९ २४—४३
				"	९		२३·६×१० ७ १२—२९
				"	११		२४·२×१०·८ १३—३३
बादरपुर				"	१६		२५ ३×१०·६ १५—३५
				"	८		२५·८×११·६ ११—३७
				"	१०४	१९	२५·५×१२·२ ९—३५
				सस्कृत	१०	९	२५ ३×११·६ १३—३४
				हिन्दी-राज०	१४		२१ ९×१० ८ २०—३६
				"	११		२४ ३×११ ० १९—४२
अजमेर				"	२१		२० ५×११ ० १४—३७
				"	२५	१	२३ ७×१० २ १३—४४
				"	११	१	२३ ७×११ १ १२—३५
				"	९		२५·२×११ ० १८—४२
				"	१०		२४ ८×१० ४ १८—४७
				"	८		२४ ५×१० ८ २०—३७
				"	९		२५ ८×११ ५ १५—३५

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना–सवत् ६
५८८	११० / ३	७ / १२	सुभाषित	लक्ष्मी कल्लोल	
५८९	४४५	१६ / ५०	सुभाषित पद्य		
५९०	४५१ / ३	१६ / ५६	सुभाषित पद्य	मु० बालचन्द	
५९१	२४३७ / १	६३ / ११	सुभाषित पद्य	रिख लाल	
५९२	२४५६ / ४	६३ / ५३	सुभाषित पद्य	माधोदास	
५९३	१६५०	४२ / २०	सुभाषित पद्य संग्रह		
५९४	५२५	१७ / ५२	सुभाषित श्लोक और दोहे		
५९५	५०६	१७ / ३३	सुभाषित श्लोक टब्बा सहित		
५९६	१९७२	४६ / २२	सुमति की सज्भाय		
५९७	१८१० / २	४५ / ४०	सुमति की सज्भाय		
५९८	२४० / २	१३ / ६	सुमति कुमति		
५९९	२४५१	६३ / ४५	सुमति कुमति को सवाद	लाल विनोदी	
६००	१६६३	४६ / १३	सुवडा की सज्भाय	कीर्ति सूरि	
६०१	१३२७ / १	३६ / ५७	सुवा को सज्भाय	कबीरदास	
६०२	१२६३ / ३	३५ / ५७	सुवा के पद	कबीर	
६०३	१९९१	४० / १	सूक्ति माला	केसरविमल गणि	
६०४	१०	१ / १०	सूक्ति मुक्तावली सिन्दूर प्रकरण सटीक	सोमप्रभाचार्य	
६०५	१०६३	३२ / २०	सूक्ति मुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	
६०६	११९४	३४ / १४	सूक्ति मुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	१९		२३ ८×१० ५ २२—७७
				"	१२		२५ ४×११·७ १२—५२
				"	४		२५ ८—१० ८ १३—३४
				"	१०		२५ ३×१० ३ १३—२९
				संस्कृत	४५	२	२४·०×११ ६ १६—२६
				"	८२	१४	२१·८×९ २ ७—२२
				संस्कृत व हिन्दी	१८	१	१२ ९×११ ० १८—२९
				संस्कृत	१९	२	२५ ३×१० ९ १४—४४
				हिन्दी-राज०	२५	१	२५ ०×११ ३ १७—३६
				"	५		२१ ८×१० ५ १४—३१
				"	४		२५ ६×१२·० १५—४१
				"	११	१	२४ ५×१० ६ १४—३३
				"	९	१	२६ ५×११·२ ११—४७
	आर्या गुमाना			"	६		२५ ३×११ १ १७—४३
				"	६		२४ १×१० ५ १९—४७
	राणी दसी	१९२३ मा० सु० ७ सोम०	वडानगर	संस्कृत	४	११	२६ ७×१२ २ १३—३६
				"	१०१	२७	२५ ७×१० ६ ४—३५
		१८४० वै० सु० ७	आहउसर	"	१००	११	२१·७×१० ६ १२—३०
		१९८२ माह सु० २		"	पद्य १५ से १००	९ १ला न	२५ ५×११·८ ११—३४

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
६०७	२२०१	५६ / १८	सूक्ति मुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	
६०८	४०२ / ४	१६ / ७	स्वारथ पंथी	रिख लालचन्द	१८६३ फा० शु० ६
६०९	१७४८ / २	४४ / १८	स्वार्थ पच्चीसी	लालचन्द्र	१८५८ फा० सु० ६
६१०	६४४ / ६	२० / ११	हाँ रे जी वहल्या		
६११	६४४ / ७	२० / ११	हाँ रे जी वा सुगुर चरणा	किशनलाल	
६१२	१३४४	३६ / ७४	हितोपदेश सज्झाय		
६१३	२००६ / ३	५० / १६	हितोपदेश सज्झाय		
६१४	७०१ / १	२१ / १८	होरी का पद	रतनचन्द	
६१५	६४७ / ४	२० / १४	होली का गीत		
६१६	१९६० / ५	४६ / १०	होली का पद	सेवक	
६१७	२३७८ / २	६२ / ५०	होली की सज्झाय	मलूकदास	
६१८	१३१६	३६ / ४६	होली पद		
६१९	६५०	२० / १७	होली रो चौढालियो	विनयचन्द	
६२०	२१२३ / २	५४ / ४०	हृदय की आंख		

रचना स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	धर्मविशाल		नारायण	संस्कृत	१०२	९	२५ ३×१० ८ / ११—४८
भाणपुर				हिन्दी-राज०	२४		२६·५×११ ८ / २७—५३
भाणपुर				"	२७		२५ ०×११ ० / १७—३७
				"	३		२५ ८×११ ५ / १५—३५
				"	११		२५·८×११·५ / १५—३५
				"	३४	१	२३ ७×१० ४ / १६—४२
				"	३४		२२ ३×१०·३ / ८—२२
				"	५		२६ ०×११ ० / ८—३८
				"	पद्य १ से ४		२३ ८×१२ ० / १६—३०
				"	४		२१·०×११ ५ / १६—३६
				"	६		२५ ०×१० २ / १५—४३
				"	१०	१	१७ २×१० ६ / १२—२२
	प्रार्या उदाजी		जयपुर	"	४	२	२५ ४×११·७ / १४—३२
				"	८		२५ ३×१० ७ / १९—४२

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	२०६६	५३/३	अंतगडदशांग टव्वा		
२	२०६१	५२/११	अंतकृद्दशांग सूत्र मूल		
३	२२४४	५८/२४	अंतगड सूत्र टव्वा		
४	८०७	२५/१४	अंतगड सूत्र टव्वा		
५	२०७४	५३/११	अणुत्तरोपपत्तिक सूत्र		
६	७४७	२४/१४	अनुत्तरोववाई सूत्र टव्वा		
७	२२१४	५७/५	अनुतरोववाई सूत्र टव्वा		
८	७००	२१/१७	अनुत्तरोववाई सूत्र टव्वा		
९	९५४	२८/५३	अनुत्त ोववाई सूत्र टव्वा		
१०	९५९	२८/५८	अनुत्तरोववाई सूत्र टव्वा		
११	७३४	२५/१	अनुत्तरोववाई सूत्र मूल		
१२	२०७३	५३/१०	अनुत्तरोववाई सूत्र मूल		
१३	२२२५	५८/५	अनुयोगद्वार सूत्र मूल		
१४	२२४६	५८/२६	अनुयोगद्वार सूत्र मूल		
प्र०१५	१५२	१०/२	आचारांग सूत्र प्रथम भाग मूल		
१६	१५३	१०/३	आचारांग सूत्र प्रथमाग मूल		
१७	१५१	१०/१	आचारांग सूत्र प्रथम श्रुत स्कंध टव्वा		
१८	१५४	१०/४	आचारांग सूत्र प्रथम श्रुत स्कंध टव्वा		
१९	१५६	१०/६	आचारांग सूत्र प्रथम श्रुत स्कन्ध मूल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भापा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
	भारमल	१८८२ पौ० शु० ६ शनि०	नागौर	प्राकृत		६८	२६०×१२५ / ५—३६
				,,	ग्र०ग्र०८९५	२१	२७०×११० / १३ ५०
				,,		५४	२५४×११·५ / १७—४०
		१९२८		,,	८ अग	५५	२५०×१२.१ / १४—३२
				,,	गद्य	२८	२५२×११० / १६—३९
	तिलोक ऋषि	१९३० फा० व० ८	कमवा (मालवा)	,,	ग्र०ग्र०१९२	५	२४९×१२३ / २३—७९
	आर्या चम्पा	१७८२ का० कृ० ८	बिनाडा	,,		१४	२४४×११४ / २२—३६
	मागरयार	१८८७ सा वद ८	रामपुरा	,,	गद्य	१५	२४३×११७ / १९—३०
				,,		१३	२५५×१०·५ / १३—४५
	जयदेव	१८७४ चै० कृ० १३		,,	ग्र०ग्र० ११९२		२४२×१०·३ / १५—४०
				,,	अध्ययन ३	९	२३८×१२४ / १५—४८
				,,		४	२७३×११५ / १५—४३
				,,		२ से ५८	२७०×११·० / ११—३६
				,,		७७	२६५×११२ / ११—३९
	जिनहर्ष प्र०	१६६३		,,	ग्र०ग्र० २५००	७८	२६·०×११० / १३—४४
	मुनि सवसी	१६४३ प्रथम वै० सु० १३	इदलपुरी	,,	ग्र०ग्र० २६५४	५१	२६२×११० / १३—४६
	बोडा ऋषभदत्त	१९२९ सा० वद ६		,,		६०	२५०×११६ / ५५—४७
				,,	ग्र०ग्र० ४०००	४८	२५·५×१०·५ / २०—४८
				,,		२ से २०	२५८×१०·५ / १५—४३

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२०	१५७	१०/६	आचारांग सूत्र प्रथम श्रुत स्कन्ध मूल (अपूर्ण)		
२१	२०६२	५२/१२	आचारांग सूत्र प्रथम श्रुत स्कन्ध मूल		
२२	१५५	१०/५	आचारांग सूत्र प्रथम श्रुत स्कन्ध मूल आंशिक टब्बा		
२३	२०६०	५२/१०	आचारांग सूत्र प्रथम स्कन्ध टब्बा		
२४	११६६	३४/१६	आवश्यक सूत्र मूल		
२५	१८४	१२/१३	आवस्सग सूत्र टब्बा सहित		
२६	८६६	२७/३४	उत्तराध्ययन सूत्र का १८वा अध्याय		
२७	२१३१	५५/५	उत्तराध्ययन सूत्र का २८वा अध्ययन मूल		
२८	८७४	२७/६	उत्तराध्ययन सूत्र का ३६वा अध्ययन मूल		
२९	२३०८	६१/३	उत्तराध्ययन सूत्र का ३६वा अध्ययन मूल		
३०	११८०	३३/६५	उत्तराध्ययन सूत्र के प्रथम ७ अध्ययन		
३१	२०५१	५२/१	उत्तराध्ययन सूत्र टब्बा		
३२	७१२	२२/३	उत्तराध्ययन सूत्र टब्बा सहित		
३३	७१६	२२/७	उत्तराध्ययन सूत्र टब्बा सहित		
३४	६३	६/६	उत्तराध्ययन सूत्र मूल		
३५	७३०	२३/४	उत्तराध्ययन सूत्र मूल		
३६	६७६	२६/३	उत्तराध्ययन सूत्र मूल		
३७	२३११	६१/६	उत्तराध्ययन सूत्र मूल		
३८	१३१२	६१/७	उत्तराध्ययन सूत्र मूल		

(19)

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र सं० १३	आकार १४
				प्राकृत		३६	२५८×११० / ११—३१
				”		३२	२५८×११० / ११—३१
				”		७१	२६६×१२० / ५—३०
		१७६१आश्वि. सु० १५चन्द्र०		”	ग्र०ग्र० ४०००	६२	२५५×१०५ / १६—५४
				”		७	२६७×१०५ / ९—३३
	नगाजी	१८४७ सुद ६ गुरुवार	नागोर	”		१२	२५४×११० / २१—८
				”	१८वाअध्याय	१९	२५४×१०५ / १७—४५
	आत्माराम			”	गाथा ३६	१	२६५×१२५ / १६—४३
				”	गाथा २७२	७	२४७×१०७ / १५—४५
	ब्राह्मण मागीलाल	१९१३ चै० सु० ६		”		१२	२५१×११६ / १३—३५
				”	७ अध्ययन	१०	२५६×११० / १२—४१
	चम्पाजी			”		१६५	२५५×११० / २०—४४
				”		१९१	२५३×१२० / २२—४७
		१९०८आश्वि शु० ६		”	ग्र०ग्र० १६०००	२३९	२४०×१२८ / २३—३१
	आर्या नगाजी	१८५४ माह सुद ४ रवि०	भसलाणा	”		४७	२२०×१०५ / १७—३८
				”	अध्ययन २९	४९	२[illegible]४×१२४ / [illegible]—३३
				”		४१	२५०×११० / १९—४५
				”		७९	२५७×११३ / १२—३८
				”		८५	२५५×११० / ११—३९

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पृष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
३९	२३१३	६१/८	उत्तराध्ययन सूत्र मूल		
४०	२२४५	५८/२५	उत्तराध्ययन सूत्र मूल		
४१	७९३	७४/६०	उत्तराध्ययन सूत्र बालावबोध टब्बा सहित		
४२	८६३	२६/३४	उपासगदशाग सूत्र टब्बा		
४३	२०५९	५२/९	उपासगदशाग सूत्र टब्बा		
४४	२०६१	५४/८	उपासगदशाग सूत्र टब्बा		
४५	२१८१	५५/२५	उपासगदशाग सूत्र टब्बा		
४६	२२२३	५८/३	उपासगदशाग सूत्र टब्बा		
४७	१२०५	३४/२५	उपासगदशाग सूत्र मूल (अपूर्ण)		
४८	७२८	२३/२	उववाई उपाग सूत्र टब्बा सहित		
४९	३८६	१५/२	उववाई सूत्र		
५०	२०५८	५२/८	कल्प सूत्र टब्बा		
५१	२२१९	५७/१०	कल्प सूत्र टब्बा		
५२	२०५३	५२/३	कल्प सूत्र बालावबोध टब्बा		
५३	८२१	२५/२८	कल्प सूत्र मूल		
५४	८२	२५/३१	कल्प सूत्र मूल		
५५	२२७५	५९/२३	खमासमण का पाठ		
५६	८४४	२६/१५	चउसरण		
५७	२१७८	५५/५२	चउसरण पइन्ना टब्बा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				प्राकृत	ग्रं०ग्र० २२०५	६७	२९२×११० / १३—४१
				”		७९	२६५×१२८ / १२—३४
				”	अध्याय ३६	१४६	२५८×११२ / १६—६२
				”	अध्ययन १०	५५	२४४×१११ / १५—३२
				”	मू०ग्र ग्र ८१२ ट० ३०००५	५१	२६०×१०८ / १४—५०
	म० वशीलाल, रामगोपाल	१९६६ जे० बद ३		”		४८	२[illegible]८×११८ / २०—४०
	महात्मा केसरीचन्द	१९६९आषाढ सु० १२	सरदारशहर	”		५३	२५८×११५ / १६—४३
	आर्या सारा	१८५० का० व० १४	भीलवाडा	”		५०	२८५×१२८ / ३१—४६
				”		२४	२९०×११२ / १३—४९
	रिख दामा	१९२०आषाढ कृ० २	उदयपुर	”	ग्र.ग्र.७०९५	९०	२६०×१२४ / २४—३५
	मुनि अभयचद्र	१८२६आश्विन शु० १५	फलौदी	”	मू०ग्र १२०० ट० ३८००	९६	२५२×११० / १४—३७
	मुनि सेखा	१७३८आसौज सु० ५ गुरु०	एवडिया	”		९९	२९५×११० / १५—४०
	मायरग	..वै० सु० ..	भादरा	”		९९	२९५×१०८ / १८—५०
	रिख लालचन्द	१७९७ भा० व०		”		१७०	२५७×१०८ / १४—६६
	मुनि हेमसौभाग्य	१८०६आश्विन कृ० १३ गुरु०	देवरिया	”	ग्र०ग्र० १२१६	६०	२५३×११४ / ११—३७
				”	ग्र०ग्र० १२१६	१३३	२५०×११० / ७—४४
				”	गद्य	१	११७×७० / ११—२५
				”	६३	२	२५८×१२० / २०—३९
	कृष्णदास	१६४३ पो० बद ६	वर्धमानशहर	”	६३	६	२४५×१०९ / १६—४१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
५८	१०६	७/८	चउसरण पइन्ना टव्वा		
५९	१०६०	३२/१७	चउसरण प्रकरण		
प्र०६०	२६७/१	१३/५६	चउसरण प्रकरण		
६१	१६३७	४२/७	जीवाभिगम सूत्र पाठ सार्थ		
६२	६०	६/६	ज्ञाता सूत्र मूल		
प्र०६३	५७१/१	१६/३	दशवैकालिक का गीत	जयतसी	१७००
६४	३२८/१	१३/८७	दशवैकालिक का गीत	प्र० जैतसी, कलसवाचक	
६५	६४०	२८/३६	दशवैकालिक का गीत	पुण्यकलश	१७७७
६६	२००२/२	५०/१२	दशवैकालिक का गीत		
६७	७२४	२२/१५	दशवैकालिक की ढालें	जैतसी	१७७२
६८	१७३८/३	४४/८	दशवैकालिक सूत्र के ४ अध्ययन (अपूर्ण)		
६९	३५८	१४/११	दशवैकालिक सूत्र के प्रथम के चार अध्ययन मूल		
७०	७२३/१	२२/१४	दशवैकालिक सूत्र के प्रथम के ३ अध्ययन		
७१	३५०	१४/३	दशवैकालिक सूत्र के प्रथम के ३ अध्ययन		
७२	२२४६	५८/२६	दशवैकालिक सूत्र टव्वा		
७३	२०७०	५३/७	दशवैकालिक सूत्र टव्वा		
७४	७१८	२२/६	दशवैकालिक सूत्र टव्वा बालावबोध	टव्वाकार मुनि श्रीपाल	
७५	७२२	२२/१३	दशवैकालिक सूत्र टव्वा सहित		
७६	७३१	२३/५	दशवैकालिक सूत्र टव्वा सहित		

रचना-स्थान ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				प्राकृत	६३	१०	२६·१×१०७ / १५—४८
		१७६६ वै० वद ७ मंगल०		,,	६३	४	२५ ४×१०·६ / ११—३०
	रिख शोभाचद			,,	६३	३	२१·१×१० ६ / १७—२७
	प्र० आर्या नानगाजी	१८५८ वै० सु० ११	जयपुर	प्राकृत	गाथा ३५	४	२५ ४×११ ८ / २७—६३
	पद्मचन्द्र			अर्थ राज० मे प्राकृत		६६	२६ ४×११ ७ / १६—५५
बीकानेर	मुनि रावत	१६०६आश्विन शु० ११	विक्रमपुर	हिन्दी राज०		४	२५ २×११ ५ / १७—४५
				,,	ढाल १३		२८·८×१० ४ / १८—४७
बीकानेर				,,	ढाल १०	३	२४ ४×१०·६ / १८—४६
	भोजराज		बीकानेर	,,	१०		२४ ७×१० ८ / २०—६०
बीकानेर	मुरलीधर	१८६१ का० कृ० १३	नागौर	,,	ढाल ११	४	२५ ४×११ ५ / १५—३८
				प्राकृत	४ अध्ययन		२३ ५×१० ४ / १२—३५
	रिख मन्नूलाल	१६१८ चै० वद ३	अलवर	,,	,,	७	२० ०×१० २ / १२—२६
	हीरालाल	१६५८ प्रथम आ० सु०२		,,	गाथा ३१	५	२५ ०×११·५ / १३—४३
				,,	३ अध्ययन	२	२५ ०×१२ ० / ११—३४
	आर्या ज्ञाना	१८४५ आ० सु० ४ शुक्र०	उगवास	,,	ग्र ग्र.३००	३६	२७·४×१२ ४ / २४—३६
				,,		७१	२५ ०×१२ ० / १०—३०
	मुनि उत्तमचद	१८३२ चै० शु० ५ शनि०	उदयपुर	,,	अध्ययन १०	६३	२७ ०×१२ ६ / १६—३७
				,,	अध्ययन १०	६१	२५ ५×१२ ० / १६—४२
		१७८२		,,	अध्ययन १०	५५	२६ ०×१२ ० / १६—४२

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७७	२०५७	५२/७	दशवैकालिक सूत्र मूल		
७८	२०५८	५२/६	दशवैकालिक सूत्र मूल		
७९	९२	६/८	दशवैकालिक सूत्र मूल		
८०	८९	६/५	दशवैकालिक सूत्र मूल		
८१	१९४	११/६	दशवैकालिक सूत्र मूल		
८२	७१३	२२/४	दशवैकालिक सूत्र मूल		
८३	७१९	२२/१०	दशवैकालिक सूत्र मूल		
८४	७९७	२५/४	दशवैकालिक सूत्र मूल		
८५	८०२	२५/६	दशवैकालिक सूत्र मूल		
८६	८१२	२५/१९	दशवैकालिक सूत्र मूल		
८७	८७२	२७/७	दशवैकालिक सूत्र मूल		
८८	९५८	२८/५७	दशवैकालिक सूत्र मूल		
८९	८९४	२९/३५	दशवैकालिक सूत्र मूल		
९०	८९४	२९/३५	दशवैकालिक सूत्र मूल		
९१	१५५५	४०/५	दशवैकालिक सूत्र मूल		
९२	२२३१	५८/११	दशवैकालिक सूत्र मूल		
९३	२३१०	६१/५	दशवैकालिज सूत्र मूल		
९४	८२२	२५/२९	दशाश्रुत स्कन्ध सूत्र टब्बा		
९५	१८५८	४९/२८	द्रुमपत्तम (उत्तराध्ययन सूत्र का दशम अज्झयण) मूल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	मुनि जेठा	१७५५ मा० सु० १		प्राकृत		१८	२५२×१०८ / १३—४६
		१८७० श्रा० सु० १५		"		२१	२७०×१२० / १२—५०
	नगाजी	१८४७ भा० सु० १५ गुरु०	बीकानेर	"		१४	२५०×१२० / २२—४४
				"		१९	२५७×११० / १४—४४
	पूरणमल माथुर	१६३८ पौ० वद ६ मंगल०		"		३७	२२५×१०६ / १०—३०
				"	१० अध्याय	१६	२५८×१२० / १६—४०
	वालचन्द बुरड	१६१३ भा० सु० ५		"	६वा अ० नही १० अध्ययन	२६	२०४×११६ / ६—२४
				"	१० अध्ययन	१४	२५०×१२३ / १७—४८
	आर्या मथुरा	१६५८आश्वि शु० ८	वामडोल	"		१७	२५३×११५ / १६—३२
				"		१६	२५७×११५ / १२—४५
	आर्या नगा	१८५४	कुचामण	"		१५	२०५×१०१ / १७—३६
	डूंगरसिंह	१६७३	रतलाम	"		२१	२३७×११५ / १४—४२
				"		१६	२४३×१०८ / १४—४२
	नाछा	१८६२ का० वद १२	किशनगढ	"		२से१६	२४६×१०७ / १७—४३
				"		२८	२२२×११५ / १२—३६
	सवचन्द	१६०१आषाढ वद १३	वरवाडा	"		२०	२८२×१३० / १५—४२
				"		१६	२६३×१२० / १३—३८
				"		५७	२३८×११३ / १४—३८
				"		१	२५२×११५ / १८—४६

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ–नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
९६	१२३४	३५/२८	द्रुम पत्तम् (उत्तराध्ययन सूत्र का दसवा अध्ययन मूल)		
९७	४७०/१	१६/७५	नन्दी सूत्र उदे सुरता ज्ञानी देवा दाण्या	आसकरण	१८५६ आश्विन शु०....
९८	८४	५/१२	नन्दी सूत्र टव्वा		
प्र०९९	३४८	१४/१	नन्दी सूत्र टव्वा		
१००	७९८	२५/५	नन्दी सूत्र टव्वा		
१०१	९१	६/७	नन्दी सूत्र मूल		
१०२	९५	६/११	नन्दी सूत्र मूल		
१०३	७२१	२२/१२	नन्दी सूत्र मूल		
१०४	८०५	२५/१२	नन्दी सूत्र मूल		
१०५	८५४	२६/२५	नन्दी सूत्र मूल		
१०६	९६३	२८/६३	नन्दी सूत्र मूल		
१०७	२१६९	५५/४३	नन्दी सूत्र मूल		
१०८	२१७०	५५/४४	नन्दी सूत्र मूल		
१०९	२१९८	५६/११	नन्दी सूत्र मूल		
११०	२२२५	५८/१५	नन्दी सूत्र मूल		
१११	२३०६	६१/४	नन्दी सूत्र मूल		
११२	२३०९	६१/४	नन्दी सूत्र मूल		
११३	७२३/३	२२/१४	नमि पवज्जा		
११४	१५७५	४१/५	नमि पवज्जा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				प्राकृत		२	२५ ६×१२ १ / १५—४३
	छगनाजी	१८७० पौ० कृ०१२ शनि०	जोधपुर	हिन्दी-राज०		१८	२५ ९×१२ ० / १८—५३
	पिरागदास	१८४३ जे० सु० १२ गुरु०	सवाई जयपुर	प्राकृत		८०	२७ २×१२ ५ / १५—६०
	किशोर सागर प्र०	१८३३ चैं० सु० १०	वडलूग्राम	”	स०सूत्र११४० अर्थस०२२०५	१००	२५ ७×११ ३ / १४—२८
				”	गाथा ५०	६	२६ २×११ २ / २७—४८
	आर्या पन्ना			”		१७	२२ १×१०·२ / १५—४२
	उदयविजय	१९७० चै० वद १४		”		२५	२७ ३×१२ ३ / १२—३७
				,		२९	२६·९×१२·३५ / ११—३१
				”		२९	२५ ०×११ ८ / १५—३७
				”		१४	२५·०×११ ४ / १५—५०
	मनसाराम	१८६९ माघ कृ० १	बीकानेर	”		१९	२४ ८×११ ० / १३—४३
				”		२२	२५ ५×१२ ० / १३—३९
	सीताराम	१९४९ माह वद १ मगल०	रतलाम	”		१०	२४ ५×१२ ० / २१—५८
	व्यास भाऊ	१८६७ माह सु० ७ गुरु०	नागौर	”		२०	२५ ३×११ ६ / १ —४५
				”		२५	२६ ०×११ ० / १०—३६
				”		१७	२५·३×१२ ७ / १६—४०
	आशाराम		वीकानेर	”		१८	२५ ९×१२ ० / १५—३८
				”	६२		२५ ०×११ ५ / १५—३८
		१८७३ जे० शु० ..		”	६१	१	२५ २×११ ३ / २६—६०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
११५	१७३८/२	४४/८	नमि पवज्जा		
११६	२११/१	१२/४०	नमि पवज्जा		
११७	१४३	६/८	नमि पवज्जा मूल		
११८	२४६	१३/५५	नमि पवज्जा मूल		
११९	६२६	१६/५८	नमि पवज्जा मूल		
१२०	८५१	२६/२२	नमि पवज्जा मूल		
१२१	६१७	२८/१६	नमि पवज्जा मूल		
१२२	१११४/२	३२/७१	नमि पवज्जा मूल		
१२३	११७०	३३/५५	नमि पवज्जा मूल		
१२४	१२४०	३५/३४	नमि पवज्जा मूल		
१२५	१४५२	३८/२२	नमि पवज्जा मूल		
१२६	२२३६/२	५८/१६	नमि पवज्जा मूल		
१२७	२४५३/१	६३/४७	नमि पवज्जा मूल		
१२८	६७	६/१३	निशीथ सूत्र		
१२९	२२१८	५७/६	निशीथ सूत्र टब्बा		
१३०	१२४६	३५/४३	पडिक्कमण सूत्र मूल		
१३१	२३८०	६२/५२	पाक्षिक प्रतिक्रमण सूत्र मूल		
१३२	१६३०	४८/२०	पैंतालीस आगम नाम		
१३३	२३१	१२/६०	प्रतिक्रमण चौथा आवश्यक मूल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				प्राकृत	६२	८	२३ ५×१० ४ / १२—३५
				”	६७		२३ ५×१० ४ / १२—३५
				”	६२	९ से १८	२५ ५×११ ७ / ५—२३
				”	६३	३	२५ १×१०·९ / ११—४१
				”	६१	१	२४ ८×१२ ० / २२—४७
				”	६२	३	२५ ५×१२ ५ / १२—३१
	ऋषि भजूलाल	१९१८ का० शु० ११	अलवर	”	६२	२	२५ ८×१२ २ / १४—३५
				”	६२	५	२४ ९×१० ७ / १३—२५
				”	६१	२	२५ ६×१० ४ / १३—५४
				”	६२	७	२१·६×११ ५ / ७—२४
	दौलतराम	१८७२ जे० सु० १	कुचामण	”	६३	१	२५ १×११ ५ / १९—४९
				”	६२	३	२५ ८×१२ २ / १९—४६
	आर्या लाछा	१८९१ आसोज सु० ११		”	६३	३	२४ ४×१० ५ / १८—४४
	नगाजी	१८४६ आसोज सु० १४ शनि०	जयपुर	”		८७	२६ ९×१२ १ / २४—४०
	रिख नारायण	१७९५ का० वद ६		”		५८	२५ २×१० ८ / १६—४४
				”	५०	२	२५ ९×११ ९ / १४—३८
				”		१३	२१ ७×१०·५ / १४—३४
	आर्या लिखमा			हिन्दी-राज०	गद्य	१	२५·९×१० ९ / ११—३३
				प्राकृत		२	२५·३×११ १ / १९—५२

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
१३४	११५२ / २	३३ / ३७	प्रतिक्रमण सूत्र टब्बा		
१३५	९०४	२८ / ३	प्रतिक्रमण सूत्र मूल		
१३६	६७१	२० / ३८	प्रश्न व्याकरण गाथा		
१३७	७१७	२२ / ८	प्रश्न व्याकरण सूत्र टब्बा सहित		
१३८	२३०४	६० / ३	प्रश्न व्याकरण सूत्र बालावबोध		
१३९	२०६३	५२ / १३	प्रश्न व्याकरण सूत्र मूल		
१४०	१०५	७ / ७	भगवती सूत्र का १२वा शतक को पहिलो उद्देशो टब्बा		
१४१	८४७	२६ / १८	मोक्ष मार्ग अध्ययन मूल		
१४२	१२६९	३५ / ६१	मोक्ष मार्ग का ११वा अध्ययन मूल		
१४३	२२०९	५६ / २६	मोक्ष मार्ग नामा ११वा अध्ययन मूल (उत्तराध्ययन सूत्र का)		
१४४	८२	५ / २०	रायप्रसेणी मूल टब्बा		
१४५	८३९	२६ / १०	रायप्रसेणी सूत्र मूल		
१४६	८३	५ / २१	विपाक सूत्र टब्बा		
१४७	९८२	२९ / ९	विपाक सूत्र टब्बा सहित		
१४८	४४१	१६ / ४६	विपाक सूत्र मूल		
१४९	२०५४	५२ / ४	विपाक सूत्र मूल		
१५०	२२१५	५७ / ६	विपाक सूत्र मूल		
१५१	१९५९	४९ / ९	विवाह पटल भाषा टीका सहित		
१५२	८१७	२५ / २४	विवाह पन्नति जिको ९ शतक टब्बा सहित		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भापा ११	छंद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				प्राकृत		२०	१८६×१४२ / १४—३२
		१९०२ जेठ शु० १		"		३५	२३०×१३० / ४—३२
				"	३		२५५×११६ / १७—४६
				"		९०	२६०×१०७ / १५—४०
				"		२४९	२८०×११० / ११—४०
				"	ग्र.ग्र. १२५०	५८	२६०×११० / १४—४४
				"		४	२७३×१२३ / २७—४५
				"	ग.था ३८	२	२४७×११७ / १३—४४
				"	अध्याय १ अध्याय १	२	२४७×१०६ / ११—४१
				"	३८	२	२५१×१२·२ / १२—३४
	आर्या नगाजी	१८४३ जेठ वद १३ गुरु०	जयपुर	"	ग्र ग्र. २२२० टब्बा ३२८१	१३०	२५४×१२३ / २४—३७
		१६१५ का० शु० १ बुध०		"	ग्र ग्र. २१७९	४८	२५७×११·० / १५—४४
		१९३५ आसोज वद १		"	९८		२५२×१२२ / १८—३७
	ऋषि रूपा	१८०७ वै० कृ० ६ रवि०	मोरबी	"		१२०	२५८—११५ / १३—३०
	ऋषि धर्मदास	१६६५ आश्वि शु० ५ सोम०		"		३५	२७·०×११·४ / १३—३५
		१५५५ का० सु० १३ गुरु०		"	ग्र ग्र. १२९६	३२	२६०×११० / १३—६०
				"		४३	२५९×११·३ / १२—४०
				हिन्दी-राज०		१०	२२२×११९ / १७—४६
	ऋषि रतनचद	१९४९ जेठ शु० ९	रूपनगर	प्राकृत	गद्य	५	२९०×१२० / २५—४५

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना संवत् ६
१५३	८१०	२५/१७	बृहत्कल्प सूत्र मूल		
१५४	६८०	२६/७	व्यवहार सूत्र टव्वा सहित		
१५५	८६२/१	२७/२७	श्रावक प्रतिक्रमण		
१५६	११५८	३३/४३	श्रावक प्रतिक्रमण		
१५७	२३४२	६२/१४	श्रावक प्रतिक्रमण		
१५८	११७६	३३/६१	श्रावक प्रतिक्रमण मूल		
१५९	११६५/१	३४/१५	श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र बालावबोध टव्वा सहित		
१६०	४६२	१७/१६	स जति अध्ययन मूल (उत्तराध्ययन सूत्र का १८वा अध्ययन		
१६१	७१०	२२/१	समवायांग सूत्र टव्वा सहित	टव्वाकार मु० मेघराज	
१६२	१२६२	३५/५६	साधु प्रतिक्रमण मूल		
१६३	१४६२	३८/३२	साधु प्रतिक्रमण मूल		
१६४	१४२	६/७	सुख विपाक सूत्र प्रथम अध्ययन सार्थ		१७७१ द्वि० आषा० बद ६
१६५	६७२	२८/७१	सुख विपाक सूत्र मूल		
१६६	२२१३	५७/४	सूयगडांग सूत्र टव्वा		
१६७	७२७	२३/१	सूयगडांग सूत्र टव्वा सहित		
१६८	७२६	२३/३	सूयगडांग सूत्र टव्वा सहित		
१६९	८३०	२६/१	सूयगडांग सूत्र टव्वा सहित		
१७०	४३८	१६/४३	सूयगडांग सूत्र दूजा श्रुत अध्ययन २रा उद्देश ५ टव्वा सहित		
१७१	२१७१	५५/४५	सूयगडांग सूत्र प्रथम श्रुत स्कन्ध मूल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
		१६३५ सा० कृ० ५		प्राकृत	उद्देशक ६ ग्र ग्र २५००	२६	२५ १×१२० / ८—४४
				,,	ग्र ग्र ३०११	६६	२६ २×११८ / १४—३५
				,,	गद्य		२२ ५—१२० / १४—५१
	आर्या संतोष	१८५२	मालपुरा	,,	गद्य	३	२२ ३×१० ५ / १६—३६
	रिख चमनाजी	१६०४		,,	गद्य	३	२५ ७×१२ ३ / २२—५५
				,,	गद्य	१२	२० १×६ [illegible] / ६—३१
				,,	गा० ४३		२६ ८×१२ १ / ८—३१
	रिख महकर्ण	१६०६ द्वि० भा० शु० ८	किशनगढ	,,	५८	२	२३ २×११ ० / १४—४२
	प० रामप्रसाद	१८६० चै० सु० ३ शनि०	जयपुर	,,	ग्र ग्र १६६७ टं०ग्र ५४७७	१७५	२५ ०×११ ५ / १५—३६
				,,	गद्य	२	२२ ८×१० ७ / १६—४०
		१८५३ सोम०	बूंदी	,,	गद्य	३	२४ १×११ १ / १४—३६
				,,	गद्य	४	२५ ५×१० ८ / १८—४८
				,,	अ० १०	६	२४ ५×१२ २ / १५—४१
		१७८१ पौ० सु० ८		,,		७६	२६ १×११ २ / २०—४५
	रिख दमाजी	१८१६ का० व० १३	देलवाडा	,,	८	७२	२६ २×१२ ६ / १८—४२
				,,		७६	२६ ५×१५ ७
		१६६७ चै० सु० ६		,,	अ० ७ ग्र १२०००	१७३	२१ २×११ ० / १५—३८
				,,	३२	३	२६ ०×११ ० / १६—५०
	दौलतराम	१८७१ आषाढ सु० २ रवि०		,,		१२२	[illegible]५ ७×१२ ० / १३—५०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१७२	२२२४	५८/४	सूयगडाग सूत्र प्रथम श्रुत स्कन्ध मूल		
१७३	२८५	६/१	सूयगडाग सूत्र प्रथम स्कन्ध टब्बा		
१७४	२३०७	६१/२	सूयगडाग सूत्र श्रुत स्कन्ध मूल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ६	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				प्राकृत		३३	२५ ६×११ १ / ११—३६
	आर्या नगा	१८४७ भा० सु० ८ गुरु०	किशनगढ	"	ग्र ग्र टब्बा पहित ५०००		२५ १×१२ १ / ३३—३६
	रतनचन्द	१८६६आमोज सु० १	जयपुर	"		१६	२६ ०×१२ ० / २१—३४

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ–नाम ४	ग्रंथकार ५	रचना-संवत् ६
१	१२८८	३६/१८	अ क सख्या का थोकडा (सारिणी)		
२	११४/१	९/९	अ ग ना थोकडा		
३	२३०२/२	५९/५०	अ ग परिलेहणा		
४	६८	५/६	अ त समाधि		
५	१६७१	४३/१	अगुरु लघु		
६	१७२१	४३/५१	अगुरु लघु आदि चार भागा		
७	१६७८	४३/८	अछेरा विचार		
८	१६९६	४३/२६	अजीव के ५६० भेद		
९	८६०	२६/३१	अट्ठानवे बोल का थोकडा		
१०	९४७	२८/४६	अट्ठानवे बोल का थोकडा		
११	१२७७	२८/४६	अट्ठानवे बोल का थोकडा (सारिणी)		
१२	६७२	२०/३९	अट्ठानवे बोल का बासठिया(सारिणी)		
१३	७०६	२१/२३	अट्ठानवे बोल का बासठिया(सारिणी)		
१४	६००	१९/३२	अट्ठानवे बोल का बासठिया		
१५	२०९/९	१२/३८	अट्ठारह दोष का बोल		
१६	६४९/३	२०/१६	अट्ठारह दोष रहित अरिहन्त		
१७	१३००/१	३६/३०	अट्ठारह पाप का विचार थोकडा (सारिणी)		
१८	१५५४/२५	४०/४	अट्ठारह भार वनस्पति सज्झाय		
१९	१६४०/२	३८/१०	अट्ठारह स्थानक के नाम		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०		१	२४ ७×१० ७ / १४—५९
	देवकृष्ण	१९४३ वै० बद १४		"	श्लोक ९९		२५ ६×११ ७ / १५—४२
				"	गद्य		२४ ७×११ ५ / १४—४१
	आर्या छगला	१९०८ वै० बद ८ गुरु०	किशनगढ	"	गद्य	७	२६ १×१२ ५ / २१—३७
				"	गद्य	२	२५·४×१२·८ / ८—२७
	रिख रतनचन्द्र	१८९१ चै० सु० १३	अलवर	"	गद्य	१	२२ ५×१० ४ / १५—३५
				"	गद्य	३	२५ २×११·५ / १८—४८
				"	गद्य	१	२१ ०×११ २ / १३—३५
				"	गद्य	१	२४ ०×११ ० / १५—४७
				"	गद्य	१	२४·३×१०·९ / ५४—३०
				"	गद्य	२	२४ ३×१० ९ / ३०—२२
	सुखलाल		जयपुर	"	गद्य	२	२० ५×१० ५ / ३४—२२
				"	गद्य	४	१८ २×१४ ० / १३—३१
				"	गद्य	३	२५ ५×११ ६ / १८—१६
				"	गद्य	४	२५·१×१२ ० / १७—४२
				"	गद्य		२४ ८×१०·३ / १२—३५
				"			२५ १×११·२ / ४२—२६
				"	८		२९ ०×११ ७ / १९—४३
				"	गद्य		२९ ३×११ ७ / २०—५०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२०	३२५/१४	१३/८४	अट्ठावीस लब्धि अधिकार		
२१	१५७७	४१/७	अट्ठावीस विग्रह और १४ अन्य द्रव्य (सारिणी)		
२२	१६०८/१	४१/३८	अगाचार		
२३	७८४	२४/५१	अतिचार		
२४	१०८७	३२/४४	अतिचार		
२५	२२६५	५६/४३	अर्द्ध पुद्गल की स्थिति		
२६	११४१/२	३३/२६	अनन्तकाय अभक्ष्य गाथा		
२७	१३१०	३६/४०	अनुयोग द्वार के २१ बोल		
२८	१३३७	३६/६७	अनुयोग द्वार के २१ बोल थोकडा		
२९	८४०	२६/११	अन्तरवाच्य		
३०	१६०७	४१/३७	अरिहन्त चेइय की व्याख्या		
३१	८७०	२७/५	अर्थावृद्ध आलोयणा (सुभाषित पद्य संग्रह)		
३२	२४९८/२	६३/६२	अर्हन्त का गुण		
३३	१७५५	४४/२५	अल्पाबहुल विचार (सारिणी)		
३४	६२७	१९/५९	अष्टविंशति लब्धि टब्बा सहित		
३५	१७६६	४/३९	असखय अज्झयण		
३६	१३३०	३६/६०	असभाय		
३७	१३२४	३६/५४	असभाय टब्बा		
३८	१५७८	४१/८	असत्य परिहार भाषा सभाय	ब्रह्म	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		३६·६×११ २ / १३—४७
				"	१		२४ ७×११ ६ / ३६—१८
				"	गद्य		२४·४×११ ३ / १९—३८
				"	गद्य	१	२६·१×१२ २ / २३—५६
	दयाचन्द्र			"	गद्य	४	२६ ५×१२ १ / ११—३३
				"	गद्य	१	२५ ८×११ ६ / १५—४३
				प्राकृत	गाथा ९		३३ ४×११·० / १५—३०
				हिन्दी-राज०	गद्य	३	२४ ८×१२ २ / २३—४७
	आर्या नगाजी	१८७३ चै० वद ७ रवि०	जयपुर	"	गद्य	५	२५ ८×१० ५ / १५—४४
	चेला पंचाई	१६४९ भा० कृ० ८ रवि०		सस्कृत	गद्य-पद्य	३५	२५ ८×११·० / १४—४३
				"	गद्य	१	२४ ५×१० ५ / १२—४३
				हिन्दी-राज०	७७	५	२० ८×११·० / ११—३०
				"	गद्य		२३ ६×११ ७ / १३—४३
				"	गद्य		१४ ७×१० ३ / २२—२७
	ऋषि वीरजी			प्राकृत	४	१	२५ ८×१० ८ / १६—४७
				"	१३	१	२५ ०×१२ १ / १४—३१
				"	गद्य	१	२९ ७×११ २ / १३—४१
				"	गद्य	१	२५ ७×११ ९ / ११—३५
				हिन्दी-राज०	१३	१	२३ ५×१२ २ / १२—४५

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सं. ६
३९	१६०८ / २	४१ / ३८	असमाधि		
४०	६४८ / २	२० / १५	असमाधि के वीस वोल		
४१	६१३	२८ / १२	आगमसार		
४२	२१०	१२ / ३६	आचार छत्तीसी	रतनचन्द	
४३	१५५३ / १०२	४० / ३	आचार छत्तीसी		
४४	७६६	७४ / ३६	आतुर पच्चखाण टब्बा सहित		
४५	११४	७ / १६	आत्म निन्दा		
४६	८६२ / ४	२७ / २७	आत्म निन्दा	मुनि ज्ञानसागर	
४७	२२४३	५८ / २४	आत्म निन्दा	ज्ञानसागर	
४८	१२७३	४३ / ३	आ त्म विचार		
४९	१६७९	४३ / ९	आत्मा का विचार		
५०	३२५ / १८	१३ / ८४	आ दिनाथ तपस्या विचार		
५१	७९२	२४ / ५९	आदिनाथ देशना द्वार टब्बा सहित		
५२	१९१८	४८ / ८	आठ कर्म की १५८ प्रकृति नो विचार		
५३	२१०३	५४ / २०	आठ कर्म की १५८ प्रकृति को विवरण		
५४	११४३	३३ / २८	आठ कर्म की १५८ प्रकृति को व्योरो		
५५	१११६	३३ / १	आठ कर्म की १४८ प्रकृति का थोकडा		
५६	१२७०	३५ / ६४	आठ कर्म की १४८ प्रकृति का थोकडा		
५७	१९६२	४९ / १२	आठ कर्म की १४८ प्रकृति विचार		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छन्द-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		२४ ४×११ ३ / १६—३८
				”	गद्य		२६ ७×१० ५ / १७—३४
	स्वामी गोरधनप्रसाद		लुधियाना	”	गद्य	१४	२७ ८×१२ ५ / २१—५३
पाली				”	३७	२	२६ २×१३.३ / १६—३२
				”	३७		२५ २×१२ ० / २०—४३
	रिख हरजी			प्राकृत	पाठ ३	४	२५ ५×१० ५ / १५—४०
				हिन्दी-राज०	गद्य	५	२६ ०×११ ५ / ६—३५
				”	गद्य		२५ ५×१२·० / १४—५१
		१६३५ पौ० ब० ११	नागौर	”	गद्य-पद्य	२	२५·४×१२ २ / १६—४७
	जयदेव			”		१	२४ ८×१२·० / १४—२३
				”		१	२४ ६×१० ८ / १४—२३
				”	गद्य		२३ ६×११ ७ / २२—३८
	आर्या बालाजी	१६....		प्राकृत	८८	८	२६ ६×११·८ / १४—३५
				हिन्दी-राज०	गद्य	४	२६ ०×११ ६ / १६—५२
	आर्या पार्वती	१७१२ मार्गशीर्ष वद १३		”	गद्य	५	२६·३×११ ३ / १५—४८
				”	गद्य	५	२५ ५×१० २ / १४—४०
				”	गद्य	५	२४ ७×११ ३ / १८—४१
				”	गद्य	३	२५·०×१० ६ / १६—४२
				”	गद्य	१	२४ ०×११·० / १८—४८

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
५८	१६६६	५०/६	आठ कर्म की ढाल	रायचन्द	
५९	१२२८	३५/२२	आठ कर्म की प्रकृति बालावबोध		
६०	११११५/१	३२/७२	आठ कर्म को थोकडो		
६१	८६५/१	२७/३०	आठ कर्म को बन्ध उदय		
६२	४०४	१६/६	आठ कर्म ना बाधवा ना बोल		
६३	२०५	१२/३४	आठ कर्म बालावबोध		
६४	८२७	२५/३४	आठ कर्म बालावबोध		
६५	२२८१	५६/२६	आठ कर्मो का विस्तार	मुनि उत्तम	चोम
६६	२४०७	६३/१	आठ कर्मो की सज्झाय	ब्रह्म	
६७	१६६७	४६/१७	आठ पदो का गुण		
६८	४३१	१६/३६	आठ प्रवचन माता ना बोल		
६९	२४२३/२	६३/१७	आठ बोल		
७०	१२७६	३६/६	आठ शतक २ उपदेश लब्धि १० प्रकार की		
७१	१२९३	३६/२३	आट सौ बोल की बन्धी का थोकडा		
७२	११८७	३४/७	आराधना अधिकार		१५९२ माघसु० पुष्य
७३	७५८	२४/२६	आराबना बालावबोध		
७४	२१०९	५४/२६	आराधना बालावबोध		
७५	१४८	६/१३	आलोयणा		
७६	५१०	१७/३७	आलोयणा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
	रिख दयालचद्र	१८४७ भा० सु०१२ सोम०	बीकानेर	हिन्दी-राज०	ढाल १३	६	२६ ८×११ ५ / १८—३८
				"	गद्य	९	२५ ६×१२ ४ / १०—४०
				"	गद्य		२४ ८×१० ५ / १५—३६
				"	गद्य		२४ ५×१२ ६ / ७—२७
	ऋषि गजराज	१८१८ फा० सु० ६ रवि०	भावनगर	"	गद्य	२	२४ ७×११ ५ / १७—४६
		१७६८आश्वि. शु० १३		"	गद्य	६	२६ ४×११ ५ / १३—४१
	आर्या सोनाजी		जयपुर	"	गद्य	४	२४.४×११.० / १९—३४
उज्जेन				"	७४	५	२३ ०×१० ५ / १४—३५
				"	७	१	२७ ५×१३.५ / ८—३४
	आर्या सतोषांजी			"	गद्य	१	२४.५×११.२ / २०—५०
				"	गद्य	१	२४ ५×१०.१ / १५—४०
				"	गद्य		२४ ८×११ २ / ११—३५
				"	गद्य	२	२५ ८×१० ६ / ४२—२०
	रिख रामचन्द्र	१८१७ जे० सु०....	जयपुर	"	गद्य	१	२५ १×११.० / ४०—२६
	ऋषि नन्दचन्द्र	१८५३ चै० ब० ६ बुध०	वीरावड	"	गाथा ४१० ग्र.ग्रं ६५०	१३	२८ ५×१२ ३ / १६—४८
		१५८८आषाढ शु०६ मगल०		"	५८	५	२६ ०×११ २ / १४—५३
				"	गद्य	६	२१ ०×११.२ / १३—३०
		१९४६ चै० बद ४ गुरु०		"	गद्य	४	२५.६×१२ ४ / १५—४३
				"	गद्य	१	२५ ६×११ ५ / १५—५५

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुण्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७७	५७०/२	१९/२	ग्रालोयरणा		
७८	११३८/१	३३/२३	ग्रालोयरणा		
७९	१३४३	३९/७३	ग्रालोयरणा	रणजीतसिंह	
८०	२००९	५०/१९	ग्रालोयरणा		
८१	२११९	५४/३६	ग्रालोयरणा	रणजीतसिंह	
८२	२२७/१	१२/५६	ग्रालोयरणा की सज्झाय		
८३	१६६५	४२/३५	ग्रालोयरणा दोहा		
८४	२११७	५४/३४	ग्रालोयरणा दोहा		
८५	२११८	५४/३५	ग्रालोयरणा दोहा		
प्र०८६	२०७	१२/३६	ग्रालोयरणा पद	पेमराज	१९३४
८७	२१२०	५४/३७	ग्रालोयरणा पद	प्र० समयसुन्दर	
८८	२४८	१३/७	ग्रालोयरणा पद संग्रह		
८९	२४९९/४	६३/९३	ग्रावनी २४ तीर्थंकरो ना नाम, जीव, देह ग्रायुखो		
९०	५७७/२	१९/९	ग्रावसग ना बोल		
९१	३९९/५	१६/४	ग्राहार उपदेशो की गाथा		
९२	७५९/४	२४/२६	ग्राहार के तेरह बोल		
९३	१५७६	४१/६	ग्राहार के दोष टब्बा सहित		
९४	११३६	३३/२१	ग्राहार परिज्ञान सो ग्रलावा		
९५	१८४९/१	४९/१९	इकत्तीस सूत्र सज्झाय		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भापा ११	छंद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		२५४×११७ १५—४७
		१८४८		"	गद्य		२४०×११२ ११—४४
				"	पद्य २७	४	२४३×१०८ १५—४०
				"	गद्य	६	२१०×११६ १४—४१
	दामोदर श्रा० कृ० १४			"		६	२५५×१०·८ १४—३७
				"	पद्य ५६		२३१×१२० १४—३६
				"	६७	७	१३८×१०·० १८—१४
				"	८५	४	२०५×११० १३—३५
				"	१०	१	२५५×१०८ १४—३४
धूलिया	पेमराज	१९३४ मा० सु० पूर्णिमा		"	पद्य १६१	१७	६५२×१०५ ८—२३
				"	३०	१	२२८×१०५ २०—४५
				"	८८	४	२१·०×११० १४—३४
				"	गद्य		२६०×११४ २८--२१
				"	गद्य		२५३×१०९ १६—४८
				"	गद्य		२६·४×११७ २३—६१
				"	गद्य		२५८×११७ १४—४१
				प्राकृत	गद्य	१	२२५×११५ ५--३१
	आर्या लाछा	१८६५ चै० कृ० १ शुक्र०	सवाई जयपुर	हिन्दी-राज०	गद्य	१	२४७×१०७ १६—५१
				"	९		२४०×१०८ १२—४३

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
९६	१४४० / १	३८ / १०	इकवीस धोवना के नाम		
९७	१६१२	४१ / ४२	इकवीस ठाणा		
९८	२३६१	६२ / ६३	इकवीस ठाणा मूल	सिद्धसेन सूरि	
९९	६	१ / ६	इकवीस ठाणा मूल व बालावबोध	टीकाकार सिद्धसेन सूरि	
१००	६१५	२८ / १४	इकवीस द्वार का थोकडा (सारिणी)		
१०१	५९७ / ११	१९ / २९	इकवीस सबला		
१०२	१८५१ / २	४६ / ३१	इकवीस सबला दोष (सारिणी)		
१०३	६४४ / २	२८ / ४३	इन्द्र की ऋद्धि		
१०४	५५४	१७ / ८१	इन्द्रभूति को प्रतिबोध		
१०५	१६६१ / २	४३ / २१	इन्द्रिय		
१०६	३५४	१४ / ७	इन्द्रिय पराजय शतक टब्बा		
१०७	२०४० / १	५१ / ३०	इरियावही की सिझाय	जयमल	
१०८	१५५३ / ८९	४० / ३	ईर्ष्या पर ढाल		१९०० वैशाख
१०९	१९१९	४८ / ९	उनचास बन्धी का बोल का विचार		
११०	३१६ / १	१३ / ७५	उनचास भागा		
१११	२११० / ३	५४ / २७	उनचाम भागा की विधि		
११२	१०७३	३२ / ३०	उनचास भांगा की विधि		
११३	२१४८	५५ / २२	उपशम स्वाध्याय	विजयभद्र	
११४	१९१० / ५	४७ / ४०	उपाध्याय सज्झाय २५ गुण सहित		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		२६ ३×११.७ / २०—५०
				,,	गद्य	९ पहला नही	२५ ५×११ ० / १८—५०
	देवविजय			प्राकृत	गद्य	४	२६.२×११ ० / ११—३४
	मतिविजन			,,	६६	७	२५ २×११ ४ / १६—४४
	कृष्णाकुमारी	१८७७ मार्गशीर्ष कृ० ४	जयनगर	हिन्दी-राज०		४	२७ ८×१२ ६ / ४२—३३
				,,	गद्य		२५.२×११ ४ / ३२—४८
				,,			२४ ५×११.१
				.	२५		२३.३×१०.५ / १५—३६
	रिख जयता			,,	गद्य	४	२५ ६×११.३ / १८—५३
				,,	गद्य		२५.०×१०.६ / १३—४४
		१७२७	पिंडी शहर	प्राकृत	१००	८	२५ ३×११.० / १६—४०
				हिन्दी-राज०	२०		२५ ०×१० ५ / १७—४६
सोजत				,,	१५		२५ २×१२ ७ / ३०—४३
				,,		२	२६ ०×११ ६ / ४१—२३
	नथमल	१९१३ चै० सु० १२	जोधपुर	,,			२२ ७×१० १ / १३—३३
	रिख कल्याण	१८५६ आसोज सु० १०	कुचामण	,,			२५.५×११.२ / १८—५०
	आर्या ज्ञाना	१८६४ वै० सु० १२		,,		२	२३ ४×१० ५ / १८—३८
				,,	१२	१	२६ ०×११ ३ / १२—३४
				,,	५		२३ ३×१० ६ / ९—३७

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पृष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
११५	२४७ / १५	१३ / ६	उभव रतनचिन्तामणि सरिखो		
११६	१५१३	३९ / ३	एक सौ एक बोल का बासठिया (सारिणी,		
११७	६०५	२८ / ४	एक सौ तीन वोल का थोकडा (सारिणी)		
११८	६०४	१९ / ३६	एक सौ दो वोल का थोकडा (सारिणी)		
११९	१२३९ / १	३५ / ३३	एक सौ दो बोल का बासठिया (सारिणी)		
१२०	१७७०	४४ / ४०	एक सौ दो वोल का बासठिया (सारिणी)		
१२१	६३३	२८ / ३३	एक सौ दो बोल का वासठिया थोकडा (सारिणी)		
१२२	१२७९	३६ / ९	एक सौ दो बोल का वासठिया थोकडा (सारिणी)		
१२३	२४९९ / २	६३ / ६३	एकादश कंकणी		
१२४	२४८० / २	६३ / ७४	एलकाध्ययन गीतम्	ब्रह्म	
१२५	१६८३	४३ / १३	करण विचार (सारिणी)		
१२६	१५२४ / १	३९ / १४	करण सत्तरी		
१२७	६४२ / ३	२० / ९	करने के (होइवो) १० वोल		
१२८	१६०८ / ४	४१ / ३८	करम का वोल		
१२९	२२७९ / २	५९ / २७	कर्म काठिया नाम श्रावक के २१ गुण		
१३०	१०९७	३२ / ५४	कर्म की १४८ प्रकृति		
१३१	१२१३	३५ / ७	कर्म ग्रन्थ चौथा का मार्गणा विचार		
१३२	१७०३	४३ / ३३	कर्म प्रकृति का थोकडा		
१३३	६१४	१९ / ४६	कर्म प्रकृति का वाल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	४		२५ ६×१२ ० १५—४१
				”		५	२०·७×१२ ७ २१—२२
				”		३	२६·२×१२·३ ३२—२३
				”		३	२५ ८×११ ५ ३८—२०
	आर्या ज्ञाना	१८७६	अलवर	”			२५ २×११ ० ३५—२२
				”		३	२७ २×१२ ३ ३४—१७
				”		५	२५ ५×११·८ ३४—१८
				”		३	२३ ६×११ ० ३२—२६
				”	गद्य		२६ ०×११ ४ २८—२१
				”	९		२५·७×१० ८ १३—५०
				”		१	२५ ५×११·२ १३—३९
				”	७ बोल गद्य	१	२६ २×१२ ६ १८—४७
				”	१० बोल गद्य		२५ ०×१०·६ १६—४२
				”	गद्य		२४·४×११ ३ १९—३८
				”	गद्य		१३ ६×१० २ १७—२१
				”	गद्य	१	२५·७×१२ २ १७—४७
	आर्या संतोषा	१८४२ जे० सु० १४	फागी	”	गद्य	६	२३ ४×११·१ ४२—२४
				”	गद्य	३	२६·०×११ २ ३५—१८
	शिवजीवण	१७७४ जे० सु० ५		”	गद्य	४	२५·२×१०·६ ३४—१८

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत ६
१३४	१६६४	४३/२४	कर्म प्रकृति के बोल		
१३५	१७३२	४४/२	कर्म प्रकृति के बोल		
१३६	१५५३/१०५	४०/३	कर्म विपाक		१८७७
१३७	२१५१	५५/१५	कर्म विपाक के सौ बोल		
१३८	८२९	२५/३६	कर्म विपाक ना बोल		
१३९	१५३९/२	३९/२९	कलकी राजा की जन्म पत्री		
१४०	१२९९/३	३६/२९	कषाय जीव मार्गणा के ८२ बोल (सारिणी)		
१४१	४५०/१	१६/५५	कांक्षा मोहनीय टव्बा सहित		
१४२	११७३/४	३३/५८	काउसग्ग के अडसठ दोष		
१४३	५९६/४	१९/२८	काउसग्ग के उन्नीस दोष		
१४४	८०३	२५/१०	कायास्थिति थोकडा		
१४५	१२२९/२	३५/२३	कायास्थिति थोकडा		
१४६	१८६	१२/१५	कायास्थिति यन्त्र (सारिणी)		
१४७	२२७१	५९/१९	काल चक्र		
१४८	१७२३	४३/५३	कालिक व उत्कालिक सूत्र विचार		
१४९	१६३२/२	४२/२	किंचित समकित स्वरूप	मुनि किशनलाल	
१५०	१३१६/२	३६/४६	कुलझोडी सार		
१५१	१७०५	४३/३५	कृत कर्म विचार		
१५२	१५४६	३९/३६	केशी गौतम चर्चा	आसकरण	१८३२ का० सु०

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य	३	२६·० × ११·४ / १५—४०
				”	गद्य	५	२६·५ × १२·५ / १५—३७
अहिपुर				”	३६		२५·२ × १२·० / २०—४३
	पानाराम			”	गद्य	२ से ६	
				”	गद्य ६३ बोल	४	२५·८ × ११·३ / २०—४५
				”	गद्य		२५·६ × १२·५ / १६—३७
				”			२१·५ × ११·२
	नगाजी		जयपुर	प्राकृत	सूत्र १३		२५·७ × ११·४ / २१—५८
				हिन्दी-राज०	गद्य		२२·७ × ११·५ / १३—३६
				”	गद्य		२५·० × ११·५ / २०—४५
				”	गद्य	४	२५·१ × ११·३ / १२—४४
		१८८१		”	गद्य		२४·६ × १२·० / १५—४४
	आर्या लिखमा जी			”			२५·२ × १२·५ / २०—४६
				”	गद्य	१	२५·५ × ११·२ / १३—४०
				.	गद्य	१	२६·२ × १०·८ / १३—३३
				”	८०		२५·५ × १३·४ / १६—४७
				”	गद्य		२०·० × ११·० / १८—२६
				”	ढाल २	१	२२·७ × १०·० / २१—४८
				”	ढाल ६	४	२५·२ × ११·६ / १६—३७

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१५३	१६७	१२/२६	क्रववधी ध्रुववधी आदि विचार (सारिणी)		
१५४	७६८	२४/३५	खण्डा योजना थोकडा		
१५५	८२८	२५/३५	खण्डा योजना थोकडा		
१५६	८३७	२६/८	खण्डा योजना थोकडा		
१५७	२०८३	५३/२०	खण्डा योजना थोकडा		
१५८	१७११	४३/४१	खामणा		
१५९	१६६३	४३/२३	खामणा विधि	रिख रिषभ	
१६०	८३५	२६/६	खेतारावाई का थोकडा		
१६१	१२४८	३५/४२	खेतारावाई का थोकडा		
१६२	१७४७	४४/१७	खेतारावाई का थोकडा		
१६३	६१५	१६/४७	खेतारावाई सख्यात आदि का मान		
१६४	१६७६	४३/६	गणधरों का लेखा (सारिणी)		
१६५	८००	२५/७	गतागत का थोकडा	रघुनाथपुरी	१९४३ आश्विन कृ० ७
१६६	१११२/२	३२/६८	गतागत का थोकडा		
१६७	१६१६	४१/६	गतागत का थोकडा		
१६८	८६९	२७/४	गतागत का थोकडा		
१६९	९६९	२७/६८	गतागत का थोकडा सयत्र		
१७०	२४७९	६३/८३	गतागत के बोल का थोकडा		
१७१	२०६८	५३/५	गमा का थोकड़ा (सारिणी)		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थ० १०	भाषा ११	छद सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य	१	२५ ६×११ ७ २२—५४
	ज्ञानाजी आर्या	१८५३	किशनगढ	"	गद्य	७	२६·५×११ ० १६—४
	आर्या जेताजी			"	गद्य	४	२५·८×११·४ २०—४५
	आर्या सतोषाजी		भगवतगढी	"	गद्य	६	२४ ७×११·४ १६—३७
				"	गद्य	२	२५·५×११ ३ १५—४१
				प्राकृत	गाथा १४	१	२४ ७×१० ४ १२—३२
				हिन्दी-राज०	पद्य १४	१	२४ ७×१०·७ १२—३१
	आर्या नगाजी	१८४६ आषाढ कृ० ७ रवि०	कोटला	"	गद्य	३	२३ ३×११ ० १५—३२
				"	गद्य		२५ ३×११·२ २६—४८
	आर्या फूलाजी	१८२८	जयपुर	"	गद्य	२	२५ ४×१०·६ १८—४५
				"	गद्य	४	२५ २×११ ४ २२—५६
				"	गद्य	१	२३ ५×११ ७
				"	गद्य	११	२५ ३×११·४ १४—३८
				"	गद्य	४	२३·२×१०·८ १८—३४
	आर्य ःरीघु	१९३१ भा०	जयपुर	"	गद्य	३	२१·०×११·२ १२—२३
				"	गद्य	२	२६ ०×११·० १५—३६
				"	गद्य	३६	३६ ०×११ ४ १८—४६
				"	गद्य	१	२५ ५×११ ० १५—५६
	आर्या लाछाजी	१८५० फा० ब० ११ गुरु०	जयपुर	"	गद्य	३	२५ ७×१० ८ २०—५६

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१७२	२१८७	५६/४	गमा का थोकडा (सारिणी)		
१७३	२०६७	५३/४	गमा का बोल (सारिणी)		
१७४	१४३४/२	३८/४	ग्यारह उद्देश्यो का नाम (सारिणी)		
१७५	२१९	१२/४८	गुणठाणा आदि विविध प्रश्नोत्तर साख सहित		
१७६	१०६२	३२/१९	गुणठाणा ऊपर ४१ द्वार का थोकड़ा		
१७७	४९०	१७/१७	गुणठाणा ऊपर ४१ द्वार का थोकडा (अल्पा बहुत्व धार समत)		
१७८	२२७०/२	५९/१८	गुणठाणा ऊपर करण का बोल		
१७९	२१६६	२५/४०	गुणठाणा का ११ द्वार		
१८०	१४५९	३८/२९	गुणठाणा दंडक संख्या		
प्र०१८१	१८०	१२/९	गुणठाणा नो द्वार		
प्र०१८२	१२१५	३५/९	गुण ठाणा पर २१ द्वार का थोकडा		
१८३	५७२	१९/४	गुणठाणा विचार थोकडा		
१८४	५९१	१९/२३	गुणतीस ठाणा (सारिणी)		
१८५	५९२	१९/२४	गुणतीस भव नाणता का थोकडा		
१८६	१२९८/१	३६/२८	गुणस्थ न ऊपर ४१ द्वार का थोकड़ा		
१८७	६९६	२१/१३	गुण स्थानक प्रकाश	कवि गंगाराम	१८७४ भा० सु० १[illegible] शुक्रवार
१८८	३८३	१४/३६	गुण स्थानक वृत्ति	वृत्तिकार रत्नशेखर सूरि	
१८९	७७	५/१५	गौतम कुलक ऋषि भाषित		
१९०	१४४७	३८/१७	गौतम कुलक टब्बा सहित		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०		५६ ५५वा नहीं	२५ ६×१२ ३ / १८—३७
	आर्या लाछाजी	१८२८आसोज सु॰ २ गुरु०	जयपुर	"		३६	२६ २×११ ५ / १८—३२
				"			२१ ०×१० ५ / ३३—२६
				"	गद्य	१६	२६ ५×१२·० / ११—३४
	पन्ना	१८१०		"	गद्य	१३	२१ ३×११ ० / १२—२७
				"	४१ धार	६	२५ ८×१० ८ / २०—४३
				"	गद्य	१	२५·८×११·४ / १४—४१
				"	गद्य	७	२५ ७×६ २ / १५—३७
				"	गद्य	१	२६ २×११ ० / १९—४६
	चतराश्री प्र०			"	गद्य	१३	२६·९×११ ४ / १७—३४
	आर्या नथूजी प्र०	१८५१ चै० व० ९ शनि०	दिल्ली	"	गद्य	६	२४ ०×१०·३ / १५—४३
				"	गद्य	४	२६ २×११ ४ / १६—४५
				"	गद्य	६	२५ ७×११ ३ / १६—२०
				"	गद्य	६	२६ १×११ २ / ३६—१७
				"	गद्य	३	२५·८×११ ५ / २५—५०
सांगराव	रिख उदयचद	१८८० चै० सु० ५ मगल	सरू	"	गद्य	१४	२३·८×१२ ० / १०—३०
		१७०२ का० वद ४		संस्कृत	गद्य	३८	२६·६×१० ७ / १२—३५
				प्राकृत	गाथा २०	३	२६ ५×११ ७ / २८—४३
				"	२०	३	२५·६×१० ४ / ११—४०

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१९१	९	१/९	गौतम कुलक सार्थ	गौतम ऋषि	
१९२	१३०६	३९/३६	गौपद भजना मोक्ष शरीर द्वार का थोकडा		
१९३	१८१८/२	४५/४८	गौतमजी के पद		
१९४	१०७/१	७/९	गौतम पृच्छा टव्वार्थ व्याख्यानक		टव्वा रचना १८३० भा० मु०
१९५	२२४८	५८/२८	गौतम स्वामी १०० बोल की पृच्छा		
१९६	२२४७	५८/२७	गौतम स्वामी की १२ बोल की पृच्छा		
१९७	४७६	१७/३	गौतम स्वामी जी का बोल		
१९८	२२८२	५९/३०	चक्र रत्न महिमा		
१९९	१४२५/१	३७/७५	चक्रवर्ती के १४ रत्न		
२००	७२३/४	२२/१४	चतुरंगी अध्ययन		
२०१	१२१२	३५/६	चतुर्थ कर्मग्रंथ सार थोकडा (मार्गणा विचार)		
२०२	१६३२/३	४२/२	चतुर्दश गुण स्थानक रचना		
२०३	२१७४	५५/४८	चतुर्विशति प्रकरण दडक टव्वा		
२०४	१८४८/१	४९/१८	चत्वारि मगल सूत्र		
२०५	२२८०	५९/२८	चरण करण आदि बोल		
२०६	१५२४/२	३९/१४	चरण सत्तरी		
२०७	९११	२८/१०	चरण सत्तरी करण सत्तरी का बोल		
२०८	२२३२	५८/१२	चर्चा		
२०९	१२८४	३६/१४	चर्चा का बासठिया (सारिणी)		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
	मती मयाजी	१८७६ जे० सु० १० गुरु०	जयनगरे	प्राकृत			२५७×११८ २२—५२
				हिन्दी-राज	गद्य	१	२४०×११·६ २८—५६
				,,	५		२२०—१०४ १२—३६
		१८६५ फा० ब० ७	मेडता	प्राकृत	गाथा ६४		२७·३×१२९ १६—४२
				हिन्दी-राज०	गद्य	३	२५·२×११८ २०—५३
				,,	१२ प्रश्न	२	२४·८×१२२ १८—२५
				,,	गद्य	३	२५·०×११४ १६—४०
				,,	गद्य	१	२३३×१०६ १४—३७
				,,	गद्य	१	२२८×१०·६ १९—४१
				प्राकृत	पद्य २०		२५०×११५ १३—४३
	आर्या गुलावाजी	१८३०		हिन्दी-राज०	गद्य	४	२६५×११५ ५५—२९
				,,	८७		२५५×१३·४ १९—४७
	मुनि भोज	१७७४ वै० शु० ११ शुक्र.	दीव बन्दरे	प्राकृत		६	२६३×११·५ १९—५३
				हिन्दी-राज०	ढाल ४		२५०×११५ १६—४६
				,,	गद्य	१	१९६×१०२ १५—३५
				,,	गद्य ७० बोल		२६२×१२६ १८—४७
				,,	गद्य	३	१६५×११५ १५—२६
				,,	गद्य	३	२७७×१२५ १५—४४
				,,		२	२६३×११४ २७—१७

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२१०	१४४४	३८ / १४	चर्चा का वासठिया (सारिणी)		
२११	१८६	१२ / १८	चर्चा का वोल		
२१२	६२७	२८ / २६	चर्चा का वोल		
२१३	१६४३	४२ / १३	चर्चा का वोल		
२१४	१६३	१२ / २२	चर्चा का वोल ८४ शास्त्रो की प्रामाणिकता		
२१५	१५५३ / ६८	४० / ३	चर्चा की ढाल		१६०६ आषाढ
२१६	१४४३	३८ / १३	चर्चा को वासठियो (सारिणी)		
२१७	२३२	१२ / ६१	चर्चा प्रश्नोत्तर		
२१८	८६१	२६ / ३२	चवदा गुणठाणा ऊपर ४१ द्वार		
२१९	१२६६ / २	३६ / २६	चवालिस वोल अवगाहना		
२२०	३२६ / २	१३ / ८५	चार अनुयोग व २२ परिषह व चार कर्म पर विचार (सारिणी)		
२२१	१३८६	३७ / ३६	चार गोला को दृष्टान्त		
२२२	१३८० / १	३७ / ३०	चार गोला को दृष्टान्त		
२२३	१३४६	३६ / ७६	चार ध्यान का विचार		
२२४	२१२६	५४ / ४३	चार ध्यान का विचार संक्षिप्त		
२२५	७७८	२४ / ४५	चार ध्यान तथा गुणस्थान ध्यान के भेद		
२२६	५७७ / १	१६ / ६	चार ध्यान विचार		
२२७	२४५७ / १	६३ / ५१	चार प्रकार के श्रावकों की सझाय	मोतीचन्द	१८२७
२२८	१३०० / ३	३६ / ३०	चार बुद्धि का थोकडा (सारिणी)		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
	किशनकवरी	१८६३ का० सु० १	पीपलदा	हिन्दी-राज०		१	२६ १ × ११ ३ / ४५—५७
	फूनाजी	१८७६	जय	"	गद्य	३	२२ ५ × १० ६ / १६—३६
				"	बोल ६६ गद्य	३	२४·० × ११ ४ / १५—४६
				"	बोल १६ गद्य	२	२५ ५ × ११·५ / १७—३०
				"	गद्य	२	२४·८ × १२·१ / १७—३७
चडावल				"	पद्य १४		२५·२ × १२·० / २०—४३
	आर्या फूलाजी	१८८० का० सु० १३	जयनगरे	"		२	२५ २ × ११·३ / ३०—२२
				"	गद्य	४	२५ ६ × ११ ६ / १७—३६
	रत्ना			"	गद्य	६	२४ ० × ११·३ / १५—४७
				"	गद्य		२५·८ × ११ ४ / २१—४५
				"	गद्य	१	२६ ५ × १० ८ / १४—५०
				"	गद्य		१६ ६ × १० ६ / १२ ३३
				"	पद्य २२		२५·१ × १०·७ / १६—५३
				"	गद्य	१	२३ ६ × १० ८ / २१—३६
				"	गद्य	२	२३·६ × १० २ / १५—५४
	शशि ऋ[illegible]	१८०२ आश्वि. शु० ६ शुक्र०		"	गद्य	१	२४·८ × १० ८ / १८—४३
				"	गद्य		२५·३ × १०·६ / १५—३३
				"	पद्य २७		२२·५ × १० ७ / १४—३१
				"	गद्य		२५ १ × ११·२

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२२९	४५७	१६/६२	चार मंगल की ढालें	जयमल	
२३०	३२७	१३/८६	चार शरणा		
२३१	८७५/१	२७/१०	चार शरणा		
२३२	१४१७/१	३७/६७	चार शरणा		
२३३	१८७७	४७/७	चार शरणा	चौथमल	१८५२
२३४	१५३९/२९	३९/२६	चार शरणा की ढाल	चौथमल	१८५२
२३५	१२५१	३५/४५	चार स्थानक के बोल		
२३६	११५५	३०/४०	चित्त समाधि का दस बोल की संझाय	रिख रायचन्द	१८३३ चौमासा
२३७	३०९/२	१२/३८	चौंतीस अतिशय		
२३८	५९७/२	१९/२९	चौंतीस अतिशय		
२३९	११११/६	३२/६८	चौंतीस अतिशय		
२४०	१४०८/१	३७/५८	चौंतीस अतिशय		
२४१	१४३४/१	३८/४	चौंतीस अतिशय		
२४२	२११२	५५/२६	चौंतीस अतिशय		
२४३	१५३६/१	३९/२६	चौंतीस असज्झाय ना नाम		
२४४	१८३	१२/१२	चौथा ठाणा का बोल		
२४५	११४९	३३/३४	चौदह गुण ठाण को चौढालियो	रिख धरमसी	१७२९ श्रा० व० ११
२४६	१५१५/२	३९/५	चौदह गुण ठाणा		
२४७	१२९४	३६/२४	चौदह गुण ठाणा पर बंध उदय का थोकडा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
	नगाजी	१८४२ फा० ७ सोम०	जयपुर	हिन्दी-राज०	ढाल ४ पद्य २०८	५	२४ ० × १० ८ १५—४६
				”	गद्य	४	२४'२ × १० ६ ६—३५
		१८५७ का० कृ० ३		”	गद्य	१०	२० ८ × ११ ४ ६—२०
				प्राकृत	गद्य		२५'८ × ११ ० १६—३८
पाली				हिन्दी-राज०	पद्य १२	१	२४ ३ × १० ५ ११—३२
पाली				”	पद्य १२		२४ ६ × ११ ५ १८—४०
				”	गद्य	७	२५'१ × ११'२ १६—४२
मेडता				”	२५	१	१६ ५ × ११ ७ २०—३४
				”	गद्य ३४ बोल		२६ ७ × ६ ४ १६—४८
				”			२५ २ × ११'४ ३२—४८
				”	गद्य ३४ बोल		२४ ३ × १० ३ १६—३४
	ब्राह्मण उदैराम	१६१८ वै० सु० ११		”	गद्य		२४ ८ × ११'६ १२—४८
				”	गद्य		२१ ० × १० ५ ३३—२६
				”	गद्य ३४ बोल	१	२६ २—११ ३ ११—३४
				”	गद्य	४ से १७	२४ ५ × १२'० १३—३६
				”	गद्य	१२	२५ ६ × ११ ४ १२—४१
बाडमेर				”	ढाल ४	२	२३ ७ × १० ६ १५—३७
				”	गद्य		१६ २ × ११ २ १६ — २७
				”	गद्य	२	२५'५ × १२ ६ १६—४६

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२४८	२३९२ / २	६२ / ६४	चौदह गुण स्थान		
२४९	९३५	२८ / ३४	चौदह गुण स्थान का इकतालीस द्वार		
२५०	१३०२ / १	३६ / ३२	चौदह नियम		
२५१	१४४० / ६	३८ / १०	चौदह नियम के नाम		
२५२	३६४	१४ / १७	चौदह नियम मर्यादा विधि		
२५३	१२८७	३६ / १७	चौदह पूर्व का मान का थोकडा (सारिणी)		
२५४	१७८४	४५ / १४	चौदह वोल		
२५५	१४११ / २	३७ / ६१	चौदह वोल की ढाल	रायचन्द	
२५६	१३१४ / ५	३६ / ४४	चौदह वोल जीव साता वेदना के		
२५७	१९३६	४८ / २६	-ौवीस असभाय		
२५८	९१६	१९ / ४८	चौवीस गमा का वोल (सारिणी)		
२५९	९१६	२८ / १५	चौवीस ठाणां को थोकडो (सारिणी)		
२६०	७	१ / ७	चौबीस ठाणा रो वोल		
२६१	९७०	२८ / ६९	चौवीस तीर्थंकर को आलोवो		
२६२	१३५८ / २	३७ / ८	चौवीस तीर्थंकर, ग्यारह गणधर वीस विरहमान नाम		
२६३	७०५ / १	२१ / २२	चौवीस दण्डक ऊपर २६ वोल		
२६४	४६१ / १	१६ / ६९	चौवीस दंडक का थोकड़ा		
२६५	१२७८	३६ / ८	चौवीस दडक का वासठिया थोकडा (सारिणी)		
२६६	२३९२ / १	६२ / ६४	चौवीस दडक का वोल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-सख्या १२	पत्र स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य १४ बोल		२५ ०×१० ० / २७—२९
		१८८०	जयनगर	"	गद्य	६	२५ ३×११ ५ / १६—३६
				"	गद्य		२२ ५×१३'८ / १९—३६
				"	गद्य		२६ ३×११ ७ / २०—५०
	जोशी देवकृष्ण	१९४३ जे० सु० ६		"	गद्य	१	२४'७×१२ ७ / १६—४४
				"		१	२३ ९×११ ३ / २८—१८
				"	गद्य	१	२२ ५×११ ० / १५—२५
				"	१७		२५ ०×११ ६ / १५—३४
				"	गद्य १४ बोल		२३ ९×१० ६ / ११—३३
	आर्या सतोपाजा			"	२४	१	१२ ५×१० ६ / १९—१८
	आर्या फूलाजी		बीकानेर	"		१०	२५ ३×११ २ / २१—४४
	आर्या फूलाजी	१८८१ आसोज शु० ७	जयनगर	"		११	२६ ०×११ ७ / ५०—३१
				"	गद्य	२७	२४ २×१० ६ / १३—३५
	जयदेव	१८७५ भा० ब० १२	जयपुर	"	गद्य	५	२६ ४×११ २ / १२—५१
				"	गद्य	१	२० ३×१० ८ / १२—३२
				"	गद्य	२ से १९	२० ३×१४ ३ / १४—२७
				"	गद्य	६	२६ २×१२ ७ / २५—५१
	रिख भजूनाम	१९१३ श्रा० ब० १२ सोम०	अलवर	"		१	२४ ९×११ ० / १७—२९
				"	गद्य	१	२५ ० × १० ० / २७--

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२६७	७०५/५	२१/२२	चौवीस दण्डक के जाणायणा रा बोल		
२६८	८१९	२५/२६	चौबीस द्वार थोकडा		
२६९	१११३/३	३२/७	चौरानवे लाख जीव योनि का २१ बोल		
२७०	५३७/३	१७/६४	चौरासी आशातना सार्थ		
२७१	४९५/३	१७/२२	छ आरा		
२७२	१८९१	४७/२१	छ आरा का विचार		
२७३	९१९/१	२८/१८	छत्तीस बोल का थोकडा		
२७४	१२८	८/१०	छत्तीस बोल का थोकडा		
२७५	१९२९	४८/१९	छ पर्याप्ति व दश प्राणो का विचार		
२७६	२४२४	६३/१८	छ पर्याप्ति व प्राण १० को विस्तार		
२७७	११९२	३४/१२	छब्बीस द्वार थोकडा		
२७८	१४३६	३८/६	छ भाव का भागा		
२७९	२०८९	५४/६	छ भावो का विचार		
२८०	११७३/३	३३/५८	छ लेश्या की सज्झाय		
२८१	१५५४/१४	४०/४	छ सूत्र नी सज्झाय		
२८२	३७०	१४/२३	जिनमार्ग की ढाल		
२८३	८३२	२६/३	जिन शतक पंजिका विवृत्ति टीका सहित	पंजिका रचनाकार शंबु साधु श्रीसार	पं० र० १०२५ वै० सु० १३
२८४	१३१५	३६/४५	जीव उत्पत्ति की सज्झाय		
२८५	२३९८	६२/७०	जीव का दस प्रश्न का बोल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छन्द-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य	२ से १९	२०.३×१४.३ / १४—२७
				"	गद्य	६	२५.०×११.८ / २२-४१
				"	गद्य		२२.५×११.२ / १५—२७
				"	गद्य		२७.२×१२.८ / १५—४४
				"	गद्य		२५.१×११.० / १६—४२
	रिख देवा	१७६९ चैं० सु० १		"	गद्य	३	२५.४×११.० / १५—६०
	घासीराम	१८८६आश्विव शु० ६	खेतडी	"	गद्य ३६ बोल	१०	२५.६×११.६ / १८—४८
	सूजाजो	१८६४ जे० शु० १० रवि०	जयपुर	"	गद्य ३६ बोल	११	२५.५×११.० / १६—६०
				"	गद्य	१	२६.३×१०.६ / २१—१२
				"	गद्य		२५.४×११.० / ८—४४
				"	गद्य	१७	२५.२×११.८ / १२—३१
				"	गद्य	१	२५.३×११.८ / १४—४६
				"	गद्य	३	२२.६×११.२ / ११—३४
				"	पद्य ७		२२.७×११.५ / १३—३६
				"	पद्य ९		२६.०×११.७ / १९—४३
				"	पद्य ३८	१	२७.२×१२.६ / २१—४८
				सस्कृत	ग्र ग्र १५५०	२७	२५.५×१०.१२ / १४—६२
				हिन्दी-राज०	७०	३	२४.०×११.० / १२—३७
	आर्या ज्ञाना			"	गद्य	१	१५.६×१०.९ / १४—२१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२८६	२३८३	६२/५५	जीव की अलगा बहुन का ९८ द्वार का थोकड		
२८७	२४७०	६३/६४	जीव चार प्रकरणम्		
२८८	१६२	४८/१०	जीव तथा अजीव के भेदो के विचार		
२८९	२४९८/१	६३/६२	जीव ना भेद		
२९०	२०६	१२/३५	जीव राशि (आलोयणा)	समयसुन्दर	
२९१	४४६	१६/५१	जीव विचार		
२९२	६७७	२९/४	जीव विचार टब्बा सहित		
२९३	६६२	२१/९	जीव विचार प्रकरण मूल		
२९४	१०८९	३१/४६	जीव विचार सूत्र		
२९५	११९८/१	३४/१८	जीव स्वरूप विचार	ज्ञानसागर	१८६१ मा० व० ४
२९६	२०९/८	१२/३८	जीवा रो आयुषो		
२९७	१७३९	४४/९	जीवा जीव विभक्ति		
२९८	७४५	२४/१२	जीवा जीव विभक्ति अध्ययन		
२९९	११९९	३३/५४	जीवा जीव विभक्ति ३६ वां अध्ययनाम्		
३००	२३४७	६२/१९	जीवो का आहार भगवती का पाठ टब्बा		
३०१	५९५/१	१९/२७	जीवो की अवगाहणा का ४४ बोल थोकडा		
३०२	२२६४	५९/१२	जीवोत्पत्ति के १४ स्थान		
३०३	६४२/४	२०/९	जोरावर होई १० बोल		
३०४	१७७३/२	४५/३	ज्ञान ववरण का बोल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य ६८ बोल	३	२५ ६ X १० ६ / १२—२८
				प्राकृत	पद्य ५१	२	२३ ८ X १० ० / १२—४६
				हिन्दी-राज०	गद्य	२	२६ २ X ११ ५ / ३७—२६
				"	गद्य		२३ ६ X ११·७ / १३—४३
				"	ढाल ३ पद्य ३५	२	२५ २ X ११ ० / ११—४६
				प्राकृत	पद्य ५१	१	२६ ५ X १० ८ / १३—३३
	मुनि नानजी			"	गाथा ५१	७	२५ ४ X ११ ५ / १५—२६
				"	गाथा ५१	३	२४ ४ X १० ८ / ११—३१
				"	गाथा ५१	६	२६ ८ X १२ ५ / १८—२६
जयपुर				हिन्दी-राज०	२६		२४·७ X ११·२ / १०—३४
				"	गद्य		२६ ३ X १२·७ / १०—४१
	ऋषि कनीराम	१८७६ चौमासा	अजमेर	प्राकृत		२ से ७	२४ ५ X १० २ / १६—४०
	प्रभुदास वैष्णव	१९०१		"	सूत्र १७१	१०	२७ ७ X ११ ४ / १३—४०
		१८८६		"	गाथा २७३	५	२५ ८ X ११·० / २१—४२
				"	गद्य	३	२५ ३ X १२ ० / १८—३८
	पीरचन्द			हिन्दी-राज०	गद्य		५५ ५ X ११ ३ / १३—५६
				"	गद्य	१	२६ ० X ११ २ / १३—३६
				"	गद्य		२५ ० X १० ६ / १६—४२
				"	गद्य १० बोल		२४ ० X ११ २ / १६—२८

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३०५	१२८५	३६/१५	ज्ञान लब्धि का थोकड़ा (सारिणी)		
३०६	४३५/१	१६/४०	टोटा पड़ने के २३ बोल साक्षी सहित		
३०७	१५५३/१०३	४०/३	तत्त्व उपदेश		
३०८	७२०	२२/११	तत्त्व ववनिका	दलपतराय	
३०९	१६६९	४२/३९	तप अधिकार (सारिणी)		
३१०	१७५४/३	४०/४	तप की सज्झाय	आसकरण	....५३ आसोज चौमासा
३११	२४४४/१	६३/३८	तप की सज्झाय	आसकरण	
३१२	१२९६/१	३६/२६	तपस्या की विगत		
३१३	१०५९	३२/१६	तीजा ठाणा का बोल		
३१४	२४४/४	१२/४०	तीन प्रकार की ऋण करण की श्रेणी		
३१५	१७५९/१	४४/२९	तीन पद		
३१६	८७५/२	२७/१०	तीन मनोरथ		
३१७	११२७	३३/१२	तीन मनोरथ		
३१८	१४१७/२	३७/६७	तीन मनोरथ		
३१९	१४२४	३७/७४	तीन मनोरथ		
३२०	६६८/३	२०/३५	तीर्थंकर गोत्र का वीस बोल		
३२१	१३३२/१	३६/६२	तीर्थंकर गोत्र का २० बोल की सज्झाय	रायचन्द	१८४६ चौयासा
३२२	१३३२/२	३६/६२	तीर्थंकर गोत्र का २० बोल की सज्झाय	रायचन्द	१८४६ चौमासा
३२३	६४८/१	२०/१५	तीर्थंकर गोत्र बंध के वीस बोल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०		२	२५ ७ × ११ ० / २० — ६४
				,,	गद्य		२३ ७ × १० ८ / १५—४७
				,,	३		२५ २ × १२ ० / २०—४३
		१९१६ आश्वि १		,,	गद्य	३३	२४ ३ × १२ ० / ११—४०
				,,		१	२६ ४ × १२ ० / १७—५०
जोधपुर	आर्या लाछा	१८७२ का० वद ३० सोम	सवाई जयपुर	,,	१६		२६ ० × ११ ७ / १९—४३
जोधपुर				,,	१३		२५ ५ × १० ८ / १६—३५
				,,	गद्य		२५ ८ × ११ ४ / २१—४५
	पन्ना आर्या			,,	गद्य ११८बोल	६	२२ ५ × १० ० / १४—३३
	-			,,	गद्य		२६ ३ × १२ ७ / १०—४१
	पन्ना आर्या	१६६३ जे० सु० ५ सोम०		,,	गद्य		२३ ५ × ६ ८ / ४७—१४
				,,	गद्य		२० ८ × ११ ४ / ९—२०
				,,	गद्य	१	२५ ५ × ११ ० / १९—६०
				,,	गद्य		२५ ८ × ११ ० / १९—३८
				,,	गद्य	१	२१ ९ × १० ७ / १९—३६
				,,	गद्य २० बोल		२५ ० × ११·० / ५—३४
मेडता	आर्या नगाजी		नागौर	,,	पद्य ११		२३ ९ × १० ६ / १७—४०
मेडता	आर्या नगाजी		नागौर	,,	पद्य १६		२३ ९ × १० ६ / १७—४०
	लाछाजी	१८७३ का० गुरुवार	सवाई जयपुर	,,	गद्य २० बोल		१६ ७ × १० ५ / १७—३४

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३०५	१२८५	३६/१५	ज्ञान लब्धि का थोकडा (सारिणी)		
३०६	४३५/१	१६/४०	टोटा पडने के २३ बोल साक्षी सहित		
३०७	१५५३/१०३	४०/३	तत्त्व उपदेश		
३०८	७२०	२२/११	तत्त्व ववनिका	दलपतराय	
३०९	१६६६	४२/३६	तप अधिकार (सारिणी)		
३१०	१७५४/३	४०/४	तप की सज्झाय	आसकरण	... ५३ आसोज चौमासा
३११	२४४४/१	६३/३८	तप की सज्झाय	आसकरण	
३१२	१२९६/१	३६/२६	तपस्या की विगत		
३१३	१०५९	३२/१६	तीजा ठाणा का बोल		
३१४	२४४/४	१२/४०	तीन प्रकार की ऋण करण की श्रेणी		
३१५	१७५९/१	४४/२९	तीन पद		
३१६	८७५/२	२७/१०	तीन मनोरथ		
३१७	११२७	३३/१२	तीन मनोरथ		
३१८	१४१७/२	३७/६७	तीन मनोरथ		
३१९	१४२४	३७/७४	तीन मनोरथ		
३२०	६६८/३	२०/३५	तीर्थंकर गोत्र का वीस बोल		
३२१	१३३२/१	३६/६२	तीर्थंकर गोत्र का २० बोल की सज्झाय	रायचन्द	१८४६ चौमासा
३२२	१३३२/२	३६/६२	तीर्थंकर गोत्र का २० बोल की सज्झाय	रायचन्द	१८४६ चौमासा
३२३	६४८/१	२०/१५	तीर्थंकर गोत्र बंध के वीस बोल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भापा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०		२	२५ ७×११ ० / २०—६४
				"	गद्य		२३ ७×१० ८ / १५—४७
				"	३		२५ २×१२ ० / २०—४३
		१९१६आश्वि १		"	गद्य	३३	२४ ३×१२ ० / ११—४०
				"		१	२६ ४×१२ ० / १७—५०
जोधपुर	आर्या लाछा	१८७२ का० वद ३० सोम	सवाई जयपुर	"	१६		२६ ०×११ ७ / १९—४३
जोधपुर				"	१३		२५ ५×१० ८ / १६—३५
				"	गद्य		२५ ८×११ ४ / २१—४५
	पन्ना आर्या			"	गद्य ११८बोल	६	२२ ५×१० ० / १४—३३
	-			"	गद्य		२६ ३×१२ ७ / १०—४१
	पन्ना आर्या	१६६३ जे० सु० ५ सोम०		"	गद्य		२३ ५×६ ८ / ४७—१४
				"	गद्य		२० ८×११ ४ / ९—२०
				"	गद्य	१	२५ ५×११ ० / १९—६०
				"	गद्य		२५ ८×११ ० / १९—३८
				"	गद्य	१	२१ ९×१० ७ / १९—३६
				"	गद्य २० बोल		२५ ०×११·० / ५—३४
मेडता	आर्या नगाजी		नागौर	"	पद्य ११		२३ ९×१० ६ / १७—४०
मेडता	आर्या नगाजी		नागौर	"	पद्य १६		२३ ९×१० ६ / १७—४०
	लाछाजी	१८७३ का० गुरुवार	सवाई जयपुर	"	गद्य २० बोल		१६ ७×१० ५ / १७—३४

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
३२४	११३७	३३/२२	तीर्थंकर चिटी अगुली वल		
३२५	१९२४/१	४८/४	तीर्थंकर चौवीस		
३२६	११६०/४	३३/४५	तीर्थंकर वल वर्णन		
३२७	५९७/८	१९/२९	तीस प्रकार के महा मोहनी कर्म वन्ध		
३२८	५९७/१०	१९/२९	तैतीस आसातना		
३२९	१८५१/३	४६/२१	तैतोस आसातना (सारिणी)		
३३०	४३२/३	१६/३७	तैतीस आसातना गुरा नी (तैतीस असातना वडो की)		
३३१	९१०	२८/९	तैतीस वोल का थोकडा		
३३२	९३४	२८/३३	तैतीस वोल का थोकडा		
३३३	११९०	३४/१०	तैतीस वोल का थोकड़ा		
३३४	११६०/१	३३/४५	तैतीस वोल का थोकडा		
३३५	१२०१	३४/२१	तैतीस वोल का थोकडा (भरत क्षेत्र के ३६ वोल पर)		
३३६	१३७०/१	३७/२०	तेरा पथ पर पद		
३३७	५५९	१७/८६	तेरा पथी की चर्चा	रतनचन्द	
३३८	१३९९	३७/४९	तेरा वोल भगवती के		
३३९	१३०९/१	३६/३९	तेतीस पदवी का थोकडा		
३४०	१६१०	४१/४०	तेवीस पदवी की सज्झाय	रत्नसिंह अणगार	१६६१मा० सु० १३ रविवार
३४१	२९३	१३/५२	तेवीस पदी थोकडा (सारिणी)		
३४२	१०९०/२	३२/४७	त्रिजभक के नाम		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	पद्य १	१	२० ८×१० २ / ९—२२
				”	पद्य ७		२५ ७×११ ८ / २०—३९
				”	गद्य		२३'४×१० ६ / १७—४०
				”	गद्य		२५ २×११ ४ / ३२—४८
				”	गद्य		२५ २×११ ४ / ३२—४८
				”			२४ ५×११ ५ / १७—
				”	गद्य ३३ बोल		२५ ०×११ ५ / १६—४६
		१९०४ जे० कृ० २		”	गद्य	८	२७ २×११ ७ / १६—३६
	आर्या रुखमा	१८८०		”	गद्य	२ से १३	२३ ९×११ ६ / १६—३८
				”	गद्य	३	२४ ८×१२ १ / २३—४२
	आर्या ज्ञानाजो	१८६१ वै० वद ९	जयपुर	”	गद्य ३३ बोल		२३ ४×१० ६ / १७—४०
				”	गद्य	३६	२२ ४×११ २ / १९—३६
				”	पद्य ११		२५ २×११ ५ / १४—४०
				”	४३	२	२३ ०×१० ८ / १५—४२
				”	गद्य	१	१९ ०×१० ५ / १५—२७
	रतनचन्द	१८८८ का० सुद २	बीदरपुर	”	गद्य	१	२६ २×१२ ५ / २३—४३
				”	२०	१	२४ ७×१० ५ / १५—४०
	आर्या नगा	१८५६	जयपुर	”		१	२६ ५×११ ८ / २६—४९
				”	गद्य		२७ २×१२ ८ / १२—४०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३४३	२०६ / ७	१३ / ३८	दण्ड्क		
३४४	२०८०	५३ / १७	दण्डक का थोकडा		
३४५	१६१५	४८ / ५	दडक विचार	गजसार	
३४६	१७४४ / २	४४ / १४	दस अछेरा		
३४७	१३८२	३७ / ३२	दस अछेरा		
३४८	२३६०	६२ / ३२	दस अछेरा आदि बोल		
३४९	२०८६	५४ / ३	दस ठाणा		
३५०	१३१	८ / १३	दस ठाणा का बोल		
३५१	५६०	१६ / २२	दस ठाणा के बोल		
३५२	२०४२	५१ / ३२	दस दृष्टान्त		
३५३	६३०	२८ / २६	दस पच्चखाण		
३५४	१८३३	४६ / ३	दस पच्चखाण		
३५५	२४७८	६३ / ७२	दस पच्चखाण		
३५६	११६० / ३	३३ / ४५	दस पच्चखाण		
३५७	१३६१	३७ / ४१	दस पच्चखाण		
३५८	१०७८ / १	३२ / ३५	दस पच्चखाण ढाल मे	मुनि रामचन्द्र	१६३१ पौ० शु० १०
३५९	३७३	१४ / २६	दस पच्चखाण पाठ		
३६०	१३७२ / १	३७ / २२	दस प्रकार का दान		
३६१	१७५३ / १	४४ / ३३	दस प्रकारें दीक्षा की सज्झाय	रिख रायचन्द	१८३३ चौमासे

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		२५ १×१२ ० / १७—४२
				,,	गद्य	२०	२५ ३×११ ३ / १५—५१
			रावलपिंडी	प्राकृत	गाथा ४०	३	२६ ५×११ ८ / १३—३५
				हिन्दी-राज०	गद्य		२५ ३×१० ८ / १५—५४
				,,	गद्य	१	२६ ५×९ ६ / १३—४१
				,,	गद्य	१	२६ ०×११ १ / २०—५३
	लाछा	१८५६आषाढ शु० १ गुरु०	जयपुर	,,	गद्य	९	२३ ५×११ ५ / २०—४१
				,,	गद्य	३३	२५ ०×१२ ० / १९—२८
				,,	गद्य	३५	२४ ८×११ १ / १३—३७
	आर्या रायकुंवर			,,	पद्य ३३	१	२५ ५×१० ५ / १५—३९
				प्राकृत	गाथा १०	४	२७ ५×११ ३ / ७—२४
	आर्या मानी		मेदिनीपुर	प्राकृत	गद्य	१	२६ ०×१३ ० / १५—२९
				,,	गद्य	१	२५ ८×१० ७ / १८—५५
				,,	गद्य	६	२३ ४×१० ६ / १७—४०
				,,	पद्य ७	१	२४ ५—१२ ० / १३—३२
	आर्या संतोषा			हिन्दी-राज०	ढाल २	३	२१ ७×१०·७ / १५—२९
				प्राकृत	गद्य	१	२४ ८×११ ८ / १८—३३
				हिन्दी-राज०	गद्य १० बोल	१	२५ ८×११ २ / ८—३६
मेड़ता				,,	पद्य १४	१	१७ ९×११ ४ / २३—२९

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३६२	५३७ / २	१७ / ६४	दस प्रकारे वैयावच		
३६३	५३७ / ४	१७ / ६४	दस बडी असातना		
३६४	६५६ / २	२० / २३	दस बोल की सज्झाय	रिख रायचन्द	
३६५	३०७ / २	१३ / ६६	दस बोल को स्तवन	हीराचन्द	१६०६ चौमासा कार्तिक
३६६	२६१ / २	१३ / ५०	दस बोल व सिंझाय		१८३३ चौमासा
३६७	१३३८	३६ / ६८	दस बोले देवतारो आउखो वाधे सज्झाय	आसकरण	१८६५ फाल्गुण
३६८	१६४४	४२ / १४	दस भवनपति का चिन्ह व नरक की स्थिति		
३६९	१२५५	३५ / ४६	दसम ठाणे के बोल		
३७०	२२५२	५८ / ३२	दस लक्षण धर्म		
३७१	२०३०	५१ / २०	दस लक्षण व्रतोद्यापन पूजा		
३७२	११३१ / २	३३ / १६	दस लक्षण साधुजी का स्तवन		
३७३	२०६ / ३	१२ / ३८	दस विध जती धरम		
३७४	१५५४ / १५	४० / ४	दस विधि पच्चक्खाण संझाय		
३७५	१३१५ / २	४३ / ४५	दस सुख		
३७६	९८ / २	६ / १४	दस सुख की ढाल	रायचन्द	
३७७	१८५३ / २	४४ / २३	दस सुखा को ढाल	रिख रायचंन्द	१८३३ चौ०
३७८	२१०५	५४ / २२	दान की चर्चा		
३७९	३२६ / २	१३ / ८५	दान के गुण		
३८०	३६१	१४ / १४	दान चर्चा प्रश्नोत्तर		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य १० बोल	४	२७ २×१२ ८ / १५—४४
				"	गद्य १० बोल	४	२७ २×१२ ८ / १५—४४
				"	पद्य ११		१९ ६×१० ८ / १७—३६
	छगना आर्या	१९१८ का० सु० २	सोजत	"	११		२१ २×१० २ / १४—२१
मेडता				"	१३		२५ ३×११ २ / २२—४१
चडावल	आर्या मगना	१९२२ पौ० सु०१४ रवि०		"	१३	१	२४ ५×१० ६ / १२—३६
				"	सारिणी	१	२६ ६×११ ७
				"	गद्य	५	२४·७×११·० / १९--४१
				संस्कृत	गद्य	१	२६ ०×१२·७ / ५—४७
	नरसिंह	१९०१ भा० सु० १३		हिन्दी-राज०	गद्य-पद्य	२ से २५	२६·४×१०·८ / ७—३२
				"	१० बोल		२५ २×१० ६ / ११—४०
				"	१० बोल		२५ १×१२ ० / १७—४२
				"	पद्य ८		२६ ०×११ ७ / १९—४३
				"	गद्य १० बोल		२२ ०×१० ७ / १२—२८
				"	पद्य २		१० १×४ ६ / १७—३९
				"	पद्य ३		१७ ९×११·४ / २३—२९
				"	गद्य १६ बोल	१	२५ ०×११ ५ / ३६—२८
				"	गद्य		१९ ८×१० ६ / १२—३३
				"	गद्य	१	२६.०×११ ४ / १८—४४

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३८१	२३२०	६१ / १५	दान, शील, तप भावना कुल का टब्बा		
३८२	१२४१ / १	३५ / ३५	दिगम्बर श्वेताम्बर के अन्तर के ८३ बोल		
३८३	५८६	१६ / १८	दिशाणुवाई का थोकडा		
३८४	३०५	१३ / ६४	दिशाणुवाई का थोकड़ा		
३८५	२१७	१२ / ४६	दिशाणुवाई का थोकडा		
३८६	११०४	३२ / ६१	दिशाणुवाई का थोकड़ा		
३८७	१७६१	४४ / ३१	दिशाणुवाई का थोकडा		
३८८	१५५४ / ७	४० / ४	दृढ समकित नर थोकडा		
३८९	५६७ / १	१६ / २६	देवताओं के नाम ३५ बोल		
३९०	१११५ / २	३२ / ७२	देवता की आयुष्य बाधने वाले १७ बोल		
३९१	२०६ / १०	१२ / ३८	देव द्वार		
३९२	१२०४ / २	३४ / २४	देवना ३४ बोल		
३९३	५६६ / ३	१६ / २८	देव लोक रा बोल		
३९४	२१३४	५५ / ८	देवसी पाक्षिक प्रतिक्रमण विधि		
३९५	१६६६	४३ / २६	देवो की पर्षदाएं		
३९६	१६४७ / १	४८ / ३७	देवो मे समकित मिथ्यात्व		
३९७	३६६ / ४	१६ / ४	द्रव्य क्षेत्र काल भावना के बोल		
३९८	७४३	२४ / १०	द्रव्य गुण पर्याय		
प्र०३९९	१२५	८ / ७	द्रव्य प्रकाश भाषा बंध	देवचन्द गणि प्र०	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
	आर्या फूला	१८८० फा० व० ५ गुरु०		प्राकृत	५०	५	२५ २×११ ६ २१—४१
				हिन्दी-राज०	गद्य ८३ बोल		२६ २×११·६ १०—२१
				,,	गद्य	७	२६ ३—११·० २५—१४
				,,	गद्य	२	२५ ८×१०·८ १३—३५
	सुजाणाजी	१८६३मिगसर सु०१२ सोम०	जयपुर	,,	गद्य	३	२५·४×१० ८ १७—६१
				,,	गद्य	२	२५ २×११ ६ १५—४१
				,,	गद्य	१	२३ ६×११·९ १९—४९
				,,	पद्य १४		२६ ०×११ ७ १९—४३
				,,	गद्य-३५ बोल		२५ २×११ ४ ३२—४८
				,,	गद्य		२४ ८×१० ५ १५—३६
	उत्तमा		कुचेरा	,,	गद्य		२५·१×१२·० १७—४२
				,,	गद्य ३४ बोल		२५ ०×११ ६ १७—४८
				,,	गद्य		२५·०×११·५ २०—४५
				,,	गद्य	१	२६ २×११ ८ १६—४५
				,,	सारिणी	१	२६·०×११ ० ११—५०
				,,	गद्य		२१ ८×११ ० ३२—१९
				,,	गद्य		२६ ५×१२ ० ३२—६५
				,,	गद्य	३	२७ ५×१३ ० १२—३२
भेरुदास				,,	गाथा २६६	४३	२६·७×१२·२ १२—३३

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
४००	११११ / १०	३२ / ६८	धन्ना अणगार के सास उसांस		
४०१	१३०० / ४	३६ / ३०	ध्यान का थोकड़ा (सारिणी)		
४०२	२३६४ / १	६२ / ६६	ध्यान पद		
४०३	१५५४ / २८	४० / ४	ध्यान बत्तीसी		
४०४	१६७४	४३ / ४	ध्यान विचार		
४०५	२४५६ / २	६३ / ५३	नपुंसक का २४ ठिकाणा		
४०६	१२७५ / १	३६ / ५	नरक का दुख की ढाल		
४०७	१३०० / ५	३६ / ३०	नर्क का थोकडा (सारिणी)		
४०८	३९९ / ६	१६ / ४	नर्क देवलोके चवणोत्पाददत्ता द्वार		
४०९	१७४४ / १	४४ / १४	नवकल्पी विहार		
४१०	१२१८	३५ / १२	नवकार बालावबोध		
४११	९७१ / १	२८ / ७०	नव तत्त्व	जिनदास	
४१२	२३२५	६१ / ६०	नव तत्त्व		
४१३	११३	७ / १५	नव तत्त्व का थोकड़ा		
४१४	४६९ / १	१६ / ७४	नव तत्त्व का थोकडा		
४१५	९६७	२८ / ६६	नव तत्त्व का थोकडा		
४१६	१२०४ / १	३४ / २४	नव तत्त्व का थोकडा		
४१७	२१२८	५५ / २	नव तत्त्व के भेद		
४१८	१२०७	३५ / १	नव तत्त्व चर्चा रूप १५ द्वार		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		२४ ३ × १० ३ / १६—३४
				"	गद्य		२५ १ × ११ २
				"	पद्य ६		२१ ४ × १०·२ / १८—४३
				"	पद्य ३४		२६ ० × ११ ७ / १९—४३
				"	गद्य	१	२५ ५ × ११ ८ / १६—४८
				"	गद्य		२५ ३ × १० ३ / १३—२९
				"	१६		२५ ५ × ११ २ / २२—४७
				"	गद्य		२५ १ × ११ २
				"	गद्य		२६ ४ × ११ ७ / २३—६१
	भोजपि	१७०४ भा० सु० ११ शुक्र०	लायलपुर	"	गद्य		२५·३ × १० ८ / १५—५४
		१६३० भाद्रपद सु० ९ रवि०		"	गद्य	५	२५ ५ × १० ९ / १२—३७
				"	गद्य		२१ ३ × १० ७ / १२—४३
	आर्या लिछमा	१८३१ आसोज सु० ५	किशनगढ	"	गद्य	५	२४ २ × १० ४ / २०—४३
				"	गद्य	१४	२६ १ × १२ ५ / १९—५३
	छगना	१९१४ जे० कृ० ४ गुरु०		"	गद्य		२५ ४ × १२ ५ / २०—३१
				"	गद्य	३५	२६ ७ × ११ ३ / १२—४६
				"	गद्य		२५ ० × ११ ६ / १७—४८
	जेठ उतवशी	१९२४ मिग० सु० २ गुरु०		"	गद्य	१३	२७ २ × १३ ० / १६—३२
	ऋषि जगरूप	१८७९ दूजा आसोज सु० ५	शुद्धदनी	"	गद्य	८	२५ ६ × १२ ९ / २१—५१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
४१९	२००३	५०/१३	नव तत्त्व टब्बा		
४२०	८१६	३५/२३	नव तत्त्व टब्बा		
४२१	४६५	१६/७०	नव तत्त्व थोकडा (सारिणी)		
४२२	५७६	१९/८	नव तत्त्व थोकडा		
४२३	८८८	२७/२३	नव तत्त्व थोकडा		
४२४	११८५/१	३४/५	नव तत्त्व थोकडा		
४२५	३५५	१४/८	नव तत्त्व प्रकरण टब्बा		
४२६	२०७९	५३/१६	नव तत्त्व प्रकरण टब्बा		
४२७	२१६८	५५/४२	नव तत्त्व प्रकरण टब्बा		
४२८	५१३	१७/४०	नव तत्त्व प्रकरण टब्बा	पार्श्वचन्द्र	
४२९	१४३५	३८/५	नव तत्त्व प्रकरण मूल		
४३०	४	१/४	नव तत्त्व बालावबोध		
४३१	१०५७	३२/१४	नव तत्त्व बालावबोध		
४३२	१०५८	३२/१५	नव तत्त्व बालावबोध		
४३३	२०९६	५४/१३	नव तत्त्व बालावबोध		
४३४	२०६४	५३/१	नव तत्त्व यत्र (सारिणी)		
४३५	२१९८/२	५६/१५	नव तत्त्व विचार		
४३६	३९९/३	१६/४	नव दण्डक		
४३७	२९९/११	१२/३८	नव नेभार	रामचन्द्र	१८४६ चौमासा

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	दान विजय	१८६६ मा० सु० ९	रायपुर	प्राकृत	गद्य	१४	२४·० × ११ ३ / १३—२४
	गणि दौलत	१७६५ वै० कृ० ४ ट०ले०		"	४०	१०	२६ ४ × १०·८ / १२—३०
	हम मूल	१७७१ वै० कृ० १२	मुढा	हिन्दी राज०		२	२५·८ × ११ ७ / १६—३७
	बुद्धमल			"	गद्य	४	२५ ३ × ११ १ / १६—४८
	गंगाबगा	१६३१भाद्रपद शु० ४ सोम०		"	गद्य	१२	२४·३ × १२ ६ / २०—४६
				"	गद्य		२५ ७ × १२ ५ / १३—४४
				प्राकृत	गाथा ५४	५	२५ ३ × १० ७ / १७—४०
	जिनरंग सूरि	१५११ का० कृ० २	आगरा	"		६	२६ २ × ११·५ / १९—४३
				"	५७	११	२५ ८ × ११·१ / ११—२८
	कुमाजी			"	सूत्र ४४ ग्र० ग्र० ४०	८	२६ २ × १० ७ / १५—३१
				"	गाथा ५२	२	२३ ८ × १० ७ / १२—४१
				हिन्दी राज०	गद्य	११	२४ ८ × ११ ७ / २१—५६
	त्रिलोकचन्द	१८४२ पो० वद ३ रवि०	जहानाबाद	"	गद्य	११	२१ ५ × १०·१ / ९—३०
	आर्या पन्ना		अलवर	"	गद्य	५	२३ ६ × १० ७ / १५—४०
	पुरुषोत्तम	१८०५आसोज	फरूख गर	"	गद्य	३	२६ ७ × ११ ७ / १३—५९
				"		२०	२६ २ × २४ ० / २२—२५
	ज्ञानसागर	१८६१ माघ वद ८ सोम०		"	पद्य ३३		२४ ७ × ११ ३ / १०—३४
				"	गद्य		२६ ४ × ११ ७ / २३—६१
मेड़ता				"	पद्य ११		२५ १ × १२ ० / १७—४२

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
४३८	१७४८/१८	४८/१३	नव पदां की ढालां	स्वरूपचन्द	
४३९	४२९/२	१९/३४	नव पानगिरा		
४४०	१०७६	३२/३२	नववाड की ढाल	अमरचन्द	
४४१	११९१	३८/११	नववाड की ढालां		१८४१ संवत
४४२	१५८९	८१/१९	नववाड की सज्झाय		
४४३	१८०३	४१/३३	नववाड की सज्झाय		
४४४	१८१४/१	४५/४८	नववाड की सज्झाय		
४४५	२१६५	५५/३९	नववाड री सज्झाय	रिख अमर व धन	७१ चौमासे
४४६	९५७	२८/५६	नववाड के स्तवन		
४४७	१५५७	४०/७	नववाड को स्तवन		
४४८	२०२७	५१/५३	नववाड स्वरूप की ढाला	जिनहर्ष	
४४९	९५२	२८/५१	नववाड स्वाध्याय	धर्महंस	
४५०	६२८	१९/६०	नववाडी सज्झाय		
४५१	९५७/७	१९/२९	नवाणी सिखावण के बोल		
४५२	१२४६	३५/४	नारकी का २७ भागा		
४५३	६५५	२०/२२	नियठा का थोकडा		
४५४	८२६	२५/३३	नियठा का थोकडा		
४५५	१७५०	४४/२०	नियठा का थोकडा		
४५६	२१४०	५५/१४	नियठा व सजया का थोकडा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
जयपुर				हिन्दी-राज०	२७		२१५×१०२ / १२—३४
				,,	गद्य	१	२५७×१११ / १४-४८
		१९६५ वैं० वद ६	उदयपुर	,,	६	१३	२३०×९७ / १०—१८
				,,	११	१४	२४८×१२.२ / ६—३७
				,,	११	१	२८८×११२ / १२—४०
				,,	पद्य २६	२	२३६×१०७ / १२—३४
	भोजराज			,,	११		२३०×९६ / १४—४०
फतहपुर	आर्या मया	१८४३ का०	लुजावग्रामे	,,	१४	१	२४०×९·३ / १४—४१
				,,	१३	१	२५१×११·३ / १२—३७
				,,	१	१	२५२×११·३ / १२—४४
				,,	६	५	२३०×११२ / १३—३१
	जातिविजय			,,	६	३	२५८×११·० / १४—३५
				,,	१२	१	२६६×११·३ / ११—२७
				,,	गद्य ८९		२५२×११४ / ३२—४८
				,,	गद्य	२	२२·७×११३ / २०—३७
	प्रेमा आर्या	१८३३ का० वद ३	मेडता	,,	गद्य	६	२३३×१२० / २४—४२
	विलासोजी			,,	गद्य	१	२४७×१०७ / १९—३८
				,,	सारिणी	६	२६·०×११·० / १८—५०
	आर्या लाछा	१९५९		,,	सारिणी	५	२५७×११५ / २३—४१

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पृष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
४५७	२२१६	५७/७	निरयावलिका सूत्र टब्बा		
४५८	६६६	२८/६५	निर्जरा तत्त्व थोकडा		
४५९	७०५/४	२१/२२	निर्जरा ना १२ भेद		
४६०	६०६/२	२८/८	निर्वाण कान्ड की भा गा		१७४१ श्राश्विन शु० १०
४६१	१७६	१२/८	निवृत्ति पद		
४६२	२२७/६	१२/५६	निह्नव गुणतीसी	जवानमल	१६११ होली चौमासे
४६३	१५१६	३६/६	नीमती रो थोकडो		
४६४	३४६/२	१४/३	नोकार मत्र		
४६५	४४६/२	१६/५४	नोकार मत्र		
४६६	४७३/१	१६/७८	नौ वाड की सज्झाय		
४६७	१०६१	३२/१८	पत्र के द्वार		
४६८	१२३०/२	३५/२६	पचम आरा की सज्झाय		
४६९	१६७५	४६/२५	पचम आरा की सज्झाय	रिख लालचन्द	
४७०	१८६२/२	४६/३२	पच महाव्रत मूल		
४७१	११७५	३३/६०	पचमी की सज्झाय	विजयलक्ष्मी सूरि	
प्र०४७२	५८१/१	१७/८८	पच समवाय स्तवन	कीर्तिविजय प्र०	१७२३
४७३	२४३३	६३/२७	पचास्ति काय		
४७४	२०२८/२	५१/५८	पचेन्द्रिय चौपई		
४७५	२२१	१२/५०	पथी चर्चा	कृपाराम	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भापा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
	आर्या म गतू	१८२२आपाढ वद १	सांजत	प्राकृत		६२	२५ ८×११ २ / १६—४४
				हिन्दी-राज०	गद्य	१३	२५ २×११·३ / १२—३५
				हिन्दी-राज०	गद्य		२० ३×१४ ३ / १४—२७
				,,	२२		२५·०×११ ५ / १७—४८
				,,	सारिणी	४	२५ ७×११ ५ / १३—२४
उज्जैन				,,	पद्य २६	७	२४ ५×१० ८ / १४—३६
	रिच विनय मलजी	१६३२ भा० सु० ६		,,	गद्य	१	२१ ५×११ ६ / १०—३७
				,,	गद्य	२४	२८ ५×११ ७ / १८—६३
				,,	गद्य		२१ ०×११ १ / ११—३६
				,,	गद्य		२५ ३×१० ४ / १४—४३
	कुशलराम	१८३६ पौ० सु० ८ शुक्र०		,,	गद्य	४	२५ ८×११ ० / १५—३४
				,,	८		२६ ४×१२·४ / २४—४५
रतलाम				,,	१४	१	२६ २×१० ८ / १५—४२
				प्राकृत	६		२४ ४×११ ३ / १६—४४
				हिन्दी-राज०	४	१	२२ ५×१० ५ / १४—३४
घाणाले नगर	छोगालाल	१९४२ चैं० सु० १४		,,	५८		२५ ४×१० ५ / १३—४४
				,,	गद्य	१	२६ ४×११ ४ / ११—४६
				,,	पद्य २८		२५ २×१० ७ / १८—५८
	देवकृष्ण जोशी			,,	४०	५	२५·५×१० ० / १५—४१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना संवत् ६
४७६	१२६५	२५/५६	पच्चक्खाण पाठ		
४७७	१२५६/१	६२/२८	पच्चक्खाण फल कुलक		
४७८	१०७८/२	३२/३५	पच्चक्खाण फल विधि		
४७९	११६५/२	३४/१५	पच्चक्खाण फलावबोध अक्षरार्थ सहित		
४८०	११५०/३	३३/३७	पच्चक्खाण विधि टब्बा		
४८१	५६७/४	१६/२६	पच्चास बोल आलोचना के		
४८२	६०१	१६/३३	पच्चीस क्रिया		
४८३	३६६	२४/२२	पच्चीस क्रिया टब्बा सहित		
४८४	२०७५	५३/१२	पच्चीस द्वार		
४८५	४६६/२	१६/७४	पच्चीस बोल का थोकडा		
४८६	८५०	२६/२१	पच्चीस बोल का थोकडा		
४८७	१०८६/५	३२/४३	पच्चीस बोल का थोकडा		
४८८	१५६४	४४/२४	पच्चीस मिथ्यात्व		
४८९	१२६२	३६/२२	पच्चीस मिथ्यात्व का थोकडा		
४९०	२००/१	१२/२६	पडिमा छत्तीसी	कनीराम	
४९१	२४५३/२	६३/४७	पदवी का बोल		
४९२	२७६	१३/३५	पदवी द्वार का थोकडा		
४९३	११६०/२	३३/४५	पदवी द्वार का थोकडा		
४९४	१२२६/१	३५/२३	पदवी द्वार का थोकडा		

रचना-स्थल ७	तिपिकार ८	निपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भापा ११	छंद-सख्या १२	पत्र स० १३	आकार १४
				प्राकृत	गद्य	१	२३०×१०१ १३—३५
		१८८०		"	पद्य ७	१	२५५×११८ १३—४६
				"	५		२१७×१०७ १५—२९
				"	गद्य	१	२६८×१२१ ८—३१
		१९४३ जे० सु० ६		हिन्दी-राज०	पद्य	२०	२८६×१४२ १४—३२
				"	गद्य		२५२×११·४ ३२—४८
				प्राकृत	सूत्र २५	२	२३३×११५ २०—२८
	आर्या नगा		बीकानेर	"	गद्य २ बोल	२	२३५×११६ २२—३४
				हिन्दी-राज०	गद्य	७	२५५×११० ११—३३
	आर्या छगना	१९१४ जे० कृ० ७ शनि०		"	गद्य		२५४×१२५ २०—३१
	म जुनाल		जयपुर	"	गद्य	२	२६२×१२३ १४—३४
				"	गद्य		२६७×१२३ १०—४०
				"	गद्य	१	२५८×११२ १५—५२
				"	गद्य	१	२४३×१०८ २०—४६
				"	१९		२७७×१२० २१—५३
				"	गद्य		२४४×१०५ १८—४४
				"	गद्य	२	२५·१×१२५ १३—३७
				"	गद्य		२३४×१०६ १७—४०
				"	गद्य		२४६×१२८ १५—२४

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
४९५	१३०५/१	३६/३५	पदवी द्वार का थोकडा		
४९६	१३३९/१	३६/६९	पदवी द्वार का थोकडा		
४९७	२३३८	६२/१०	पन्नवणा का भाषा पद		
४९८	१७३०	४३/६०	पन्नवणा के बोल		
४९९	२१४४	४८/१८	पन्नवणा के बोल		
५००	९४	६/१०	पन्नवणाजी की हुंडी		
५०१	२०२१/१	५१/११	पन्नवणा सूत्र के २३ पद		
५०२	११६५	३३/५०	परदेशी राजा का प्रश्न		
५०३	२०९०/१	३२/४७	परमधामी के नाम		
५०४	१९२१	४८/११	परमाणु आदि चरम अचरम विचार		
५०५	१९४७/२	४८/३७	परमाणु विचार		
५०६	१२२४	३५/१८	परिणाम द्वार		
५०७	४४७	१६/५२	पर्याप्ति का यंत्र (सारिणी)		
५०८	७३२	२३/६	पर्युषणाभिधस्य कल्प सख्या		
५०९	१७५७	४४/२७	पाच इन्द्रियो का विषय विचार		
५१०	१७२६	४३/५६	पाच इन्द्रियो की अवगाहनादि विचार		
५११	२१२	१२/४१	पाच कारण महावीर जिन सज्भाय	विनय	१७२३
५१२	२१००	५४/१७	पाच गति को बोल	मुनि हरपकीर्ति	१६८९ श्रावण ९
५१३	२०९/१	१२/३८	पाच चारत नो अर्थ		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		२७०×१२४ १३—४६
				,,	गद्य		२५०×११७ १६—४०
				,,	सारिणी	१	२४२×११७ २०—४५
				,,	गद्य	६	२४७×११० ११—३६
				प्राकृत	गद्य	१	२५५×११६ १६—४५
				हिन्दी राज०	गद्य	१२	२४८×११८ २३—४७
				,,	गद्य		२५४×११५ २०—४०
				,,	७	१	२०२×१०१ १६—१३
				,,	गद्य		२७२×१२८ १२—४०
				,,	गद्य	१	२६८×११६
				,,	गद्य		२१८×११० ३२—१९
		१८७७आश्विं कृ० १		प्राकृत	गद्य	१	२५५×११४ १४—५८
				हिन्दी-राज०		१	२५३×११० १९—६३
		वै० कृ० २ शुक्र०		प्राकृत	८ अध्ययन ग्र ग्र १२१६	१५५ २ रा नही	२८·५×११६ १५—२५
				,,	गद्य	१	१२४×११३ ११—२५
				,,	गद्य	१	२५५×११० ९—३०
	काना	१८७५ फा० शु० १३	जोधपुर	,,	ढाल ६	२	२०२×१२·० १६—४९
				,,	६	१	२५५×१०८ १८—४७
				,,	गद्य		२५·१×१२१ १७—४२

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पृष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
५१४	३१९	१३/७८	पाच ज्ञान अधिकार		
५१५	२४१४/३	६३/८	पाच वोल		
५१६	२०९/२	१२/३८	पाच महाव्रतो के भागा		
५१७	५१८	१७/४५	पाचमा आरा की सज्झाय	रिख लालचन्द	
५१८	१५५४/३७	४०/४	पाचमा आरा की सज्झाय		
५१९	१३००/६	३६/३०	पाच विषय के ५८ वोल		
५२०	१३७६	३७/२६	पाच शरीर का वासठिया थोकडा		
५२१	१२८१	३६/११	पाच संजयो का थोकडा		
५२२	२२९७	५९/४५	पाच समकित नो विस्तार		
५२३	२११५	४५/३२	पाक्षिक क्षमापना		
५२४	१५५४/३२	४०/४	पाक्षिक क्षमापना की सझाय	गुणसागर	
५२५	१३००/२	३६/३०	पाप विरक्ति का थोकडा (सारिणी)		
५२६	२११०/१	५४/२७	पुद्गल परावर्त्तन		
५२७	१२९६	५९/४४	पुद्गल विस्तर भागा विस्तार (सारिणी)		
५२८	२४५९/३	६३/५३	पुरुष का २८ ठिकाणा		
५२९	१९३०	४८/२०	पैतालीस आगम नाम (सारिणी)		
५३०	२०१४/१	५१/४	पैतीस अतिशय		
५३१	२००५	५०/१५	पैतीस वोल का विचार		
५३२	२०१५/२	५१/५	पैतीस वचन		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	उदो	१९२५आसोज सु० ६ मंगल०	किशनगढ	हिन्दी-राज०	गद्य	६	२० ० × ११ १ १८—३०
				”	गद्य ५ बोल		२६ ५ × ११ २ १५—४०
				”	गद्य२८८भागा		२५ १ × १२.० ३७—४२
रतलाम		१८९०	जयपुर	”	१४	१	२६ २ × ११ ३ १३—३९
				”	१२	४९	२६ ० × ११ ७ १९—४३
				”	सारिणी		२५ १ × ११.२
				”	सारिणी	१	२१ ५ × ११ ० २०—१८
	रिख अमनजी	१७८३आसोज व० ५ सोम०		”	सारिणी	३	२६ ० × ११.१ २५—७२
				”	गद्य	४	२७.४ × १२ ८ १६—३५
				प्राकृत	गद्य	१	२४ २ × ११.० १२—२९
				हिन्दी-राज०	पद्य १६		२६ ० × ११.७ १९—४३
				”			२५ १ × ११ २
				”	गद्य		२५ ५ × ११ २ १८—५०
				”		१	२७ ० × १२ ४ ३८—६६
				”	गद्य		२५ ३ × १० ३ १३—२९
				”	१		२५ ६ × १० ६ ११—३३
				”	गद्य		२४ २ × १२ ४ १९—४५
				”	गद्य	३	२०.६ × १० ९ १०—३०
				”	गद्य		२४ ८ × ११ ८ १९—४५

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
५३३	५६७/३	१६/२६	पैंतीस वाणी		
५३४	२०१५/१	५१/५	पैंतीस वाणी		
५३५	२०२१/२	५१/११	पैंतीस वाणी		
५३६	२०१४/२	५१/४	पैंतीस वाणी का गुण		
५३७	२०३६	५१/२६	पैंतीस वाणी का बोल		
५३८	३०६/१	१३/६८	पैंतीस वाणी का बोल		
५३९	११७३/२	२३/५८	पोसा का अठारह दोष		
५४०	२१२४/२	५४/४१	पोसा परवाना की विधि		
५४१	२१२४/१	५४/४१	पोसा लेने की विधि		
५४२	११११/७	३२/६८	पोसा सामायिक घडी नौकारसी, लोगस्स, सास, उसास आदि का व्यौरा		
५४३	२१३३	५५/७	प्रकृति की बात		
५४४	३२६	१३/८	प्रकृति बन्ध काल का		
५४५	१११२/१	३२/६६	प्रजापना आदि के फुटकर बोल		
५४६	१२५२	३५/४६	प्रज्ञापना दशम चरम अचरम पद		
५४७	१५५४/४	४०/४	प्रतिमा नी सज्झाय		
५४८	९६	६/१२	प्रवचन सारोद्धार सूत्र टब्बा		
५४९	६४२	२०/९	प्रशसनीय कर्मों के ११ बोल		
५५०	१५८०	४१/१०	प्रश्नोत्तर		
५५१	७५६	२४/२६	प्रश्नोत्तर		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		२५·२×११·४ ३२—४८
		१९१६ पौ० सु० १४	पीपाड	,,	गद्य		२४·८×११·८ १९—४५
				,,	गद्य		२५·४×११·५ २०—४०
				,,	गद्य		२४ २×१२·४ १९—४६
				,,	गद्य		२१·२×१० ६ १०—२३
				,,	गद्य		२६ ७×६ ४ १६—४८
				,,	गद्य		२२·७×११ ५ १३—३६
				,,	गद्य		२५·२×१०·४ १३—३९
				,,	गद्य		२५ २×१० ४ १३—३९
				,,	गद्य		२४ ३×१० ३ १६—३४
				,,	गद्य	६	२६ ५×१२ ० २३—३७
	ऋषि जीवण	१७७४ जे० शु० ५		,,	सारिणी	४	२६ ०×११ ० २३—२१
				,,	गद्य		२३·२×१०·८ १८—३४
				,,	गद्य	४	२५·१×११·२ १८—४४
				,,	पद्य १५		२६ ०×११·७ १९—४३
	जयमल	१७०७ आसोज सु० १ सोम०		प्राकृत		१४७	२६ ५×११ ० २०—३४
				हिन्दी-राज	गद्य		२५ ०×११ ६ १६—४२
				,,	गद्य	३	२६ ५×११ ८ ३८—१८
				,,	गद्य	२	२५ ८×११ ७ २०—२९

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
५५२	१३०१ / २	३६ / ३१	फुटकर थोकडे वोलो के (सारिणी)		
५५३	३ / १	१ / ३	फुटकर वोल (१७ प्रकार के वोलो का सग्रह)		
५५४	२११ / ७	१२ / ४०	फुटकर वोल		
५५५	६६८ / १	२० / ३५	फुटकर वोल		
५५६	७९६	२५ / ३	फुटकर वोल		
५५७	११३६ / २	३३ / २१	फुटकर वोल		
५५८	११७३ / २	३३ / ५८	फुटकर वोल		
५५९	११७४	३३ / ५९	फुटकर वोल		
५६०	१२३९ / २	३५ / ३३	फुटकर वोल		
५६१	१२९१	२६ / २१	फुटकर वोल		
५६२	१२९८ / २	३६ / २८	फुटकर वोल		
५६३	१३९७ / २	३७ / १७	फुटकर वोल		
५६४	१४३१	३८ / १	फुटकर वोल		
५६५	१४४२ / २	३८ / १२	फुटकर वोल		
५६६	१८२९	४५ / ५९	फुटकर बोल		
५६७	१९६५	४९ / १५	फुटकर वोल		
५६८	१९७७	४९ / २७	फुटकर वोल		
५६९	७६५	२४ / ३२	वध, उदय, उदीरण सत्ता विवरण		
५७०	१३१४ / ३	३६ / ४४	वंध के चार भेद		

रचना स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य	१	२५ ७×११ ५ ४१—२०
				"	गद्य		२५ ४×१०·३ २१—५६
				"	गद्य		२६ ३×१२ ७ १०—४१
				"	गद्य		२१ ०×१० ४ १५—४०
	सीताराम मुनि	१८८१ मा० कृ० ६	पाली	"	गद्य	१	२६ ०×१२·० २४—५०
				"	गद्य		२४ ७×१० ७ १९—५१
				"	गद्य		१२ ७×११·५ १३—३६
				"	गद्य	१	२३ ३×११ ३ २०—४१
				"	गद्य		२५ २×११·० ३५—२२
				"	गद्य	१	२५ १×११ २ २३—५१
				"	गद्य		२५ ८×११ ५ २५—५०
				"	गद्य		२२ २×११ ७ १६—३८
				"	गद्य	१	२५ ८×११ ९ १५—३७
				"	गद्य		२२ ५×१० ७ ४०—३०
				"	गद्य	१	२७ ६×१२ ८ २३—५३
				"	पद्य १७	१	१९ ४×११ ४ १२—२०
				"	गद्य	१	२३ ७×१०·८ १४—३६
	विद्याविशाल			"	गद्य	४	२४·८×१० ९ १६—५१
				"	गद्य		२३ ९×१० ६ ११—३२

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
५७१	५७८	१९/१०	वध लगा मुके लगा थोकडा		
५७२	६१८	१९/५०	वध लगा मुके लगा थोकडा		
५७३	२१०४	५४/२१	वधी विचार		
५७४	२१२१	३५/१५	वधी शतक या वधी के बोल		
५७५	१३६५	५७/१५	वखाण की माडली		
५७६	५७४	१९/६	बडी आलोयणा		
५७७	१३०५/२	३६/३५	बडी गतागत का थोकडा		
५७८	६६८/२	२०/३५	बत्तीस असज्झाय		
५७९	६४९/२	२०/१६	बत्तीस आगमो के नाम		
५८०	४३२/१	१६/३७	बत्तीस जोग संग्रह		
५८१	४५०/२	१६/५५	बत्तीस दोष वंदना		
५८२	५९७/९	१९/२९	बत्तीस प्रकार के संजोग		
५८३	२४५६/१	६३/५०	बत्तीस सूत्र असज्झाय		
५८४	१४८७	३८/५७	बयालीस प्रकार की भाषा टब्बा सहित		
५८५	१११७	३३/२	बलदेव वासुदेवा को आउखो		
५८६	२९५	१३/५४	बाईस अभक्ष्य व बत्तीस अनन्तकाय सिज्झाय		
५८७	१४२५/३	३७/७५	बारह बाल मरण		
५८८	१८८६/१	४७/१६	बारह भवन विचार		
५८९	८१८	५५/२५	बारह व्रत की ढाल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भापा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य	६	२६०×११० / १०—३६
				”	गद्य	२	२५०×११५ / २४—४५
	रिख मजू	१९१४ का० सु० ११	बीकानेर	”	गद्य	१	२४८×११२ / २७—६५
	आर्या सोना	१८३५	जयपुर	”	गद्य	२	२६१×११२ / १८—३८
				”	पद्य ४	१	२०२×१०२ / १६—३७
		१८३५ फा० सु० ३		”	गद्य	४	२५०×१७७ / १४—४३
				”	गद्य		२७०×१२४ / १३—४६
				”	गद्य		२१०×१०४ / १५—४०
				”	गद्य		२४८×१०३ / १५—३५
				”	गद्य		२५०×११५ / १६—४६
	नगाजी		जयपुर	”	गद्य		२५७×११·४ / २४—५३
				”	गद्य		२५२×११·४ / ३२—४८
				”	गद्य		३२२×१०·८ / १३—३८
				प्राकृत तथा हिन्दी	गद्य	१	२५१×११२ / २४—३७
				हिन्दी-राज०	गद्य	१	२५६—११४ / ११—४४
	नयनचन्द			”	पद्य ९	१	२६५×१२·१ / १२—३७
				”	गद्य		२२८×१०·६ / १९—४१
				सस्कृत	पद्य १२		२५०×११५ / १५—३३
		१९१२ आषाढ शु० ७ शुक्र०		”	ढाल १०	५	२३८×११८ / १५—३६

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
५९०	२२७ / ४	१२ / ५६	बारह व्रत की सज्झाय	कुशल चन्द	१८६४ चौमासे
५९१	१३७१	३७ / २१	बारह व्रत भंग प्रायश्चित विधि		
५९२	२१४७	५५ / २१	बारह व्रत विचार		
५९३	१९१७ / ३	४८ / ७	बारा सभाग साधुजी रा (धर्म कथा नो सभाग)		
५९४	५९७ / १४	१९ / २९	बावन अनाचार		
५९५	११११ / १	३२ / ६८	बावन अनाचार का बोल		
५९६	२०९ / ६	१२ / ३८	बावन प्राण		
५९७	११९७	५६ / १४	बावीस परिषह की चौपी	रिख रायचन्द	१८२२ का० बद ४
५९८	१३०१ / १	३६ / ३१	बासठ बोल का थोकडा		
५९९	२२५	१२ / ४४	बासठिया थोकडा		
६००	५८७	१९ / १९	बासठिया थोकडा		
६०१	९५०	२८ / ४९	बासठिया थोकडा		
६०२	१४३२	३८ / २	बासठिया थोकडा		
६०३	४०३	१६ / १८	बासद्या का थोकडा		
६०४	१८२	१२ / ११	बेजा तीजा ठाणा का बोल		
६०५	११११ / २	३२ / ६८	बीस असमाधि का बोल		
६०६	५९७ / १२	१९ / २९	बीस असमाधि के स्थान		
६०७	१८५१ / १	४६ / २१	बीस असमाधि के स्थान		
६०८	१४४२ / १	३८ / १२	बीस तीर्थंकर को अलावो		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
करेडा				हिन्दी-राज०	१९		२४ ५×१० ८ / १४—३६
				"	गद्य	१	२३ ८×११ ८ / १६—४०
				"	गद्य	३	२६ ३×११ ५ / १७—३८
				"	गद्य		२५ ८×११ ८ / १६—३९
				"	गद्य		२५ २×११·४ / १२—४८
				"	गद्य		२४ ३×१० ३ / १६—३४
				"	गद्य		२५ १×१२ ० / १७—४२
तिवरी		१९०४ सा० सु० ६		"	ढाल २२	११	२५ ४×११ २ / १२—३२
	ताराचन्द			"	सारिणी	६	२५ ७×१० ५ / ४१—२०
	हीराचन्द	१८७६	जयपुर	"	गद्य	२	२५ ४×११ ६ / १५—३१
				"	गद्य	११	२६ ४×११ १ / २४—१५
	माडणपि			"	गद्य	४	१७ ०×११ २ / १६—३०
				"	सारिणी	१	२५ ५×११ ८ / २३—५५
				"	गद्य	५	२६ ३×११ ५ / ४६—२१
				"	गद्य	५	२५ २×११ ३ / १४—४१
				"	गद्य		२४ ३×१० ३ / १६—३४
				"	गद्य		२५ २×११ ४ / २२—४८
				"	सारिणी		२४ ५×११ ५ / १७— ०
				"	सारिणी		२२ ५×१० ७ / ४०—३७

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
६०९	५४२/२	१७/६९	बीस बोल की सज्झाय	रायचन्द	
६१०	५९७/५	१९/२९	बीस बोल मोक्ष की गति के		
६११	१७४०	४८/१०	बीस विहरमान का लेखा		
६१२	१६२७	४१/५७	बीस विहरमान का लेखा		
६१३	१७६६	४४/६६	बीस विहरमान माता पिता लक्षणो का विचार		
६१४	६४२/५	२०/९	बुध अपसरई १० बोल		
६१५	१४४/२	९/९	बोल		
६१६	१६०८/३	४१/३८	बोल		
६१७	२१२१/२	५८/३२	बोल		
६१८	२१२१/१	५४/३८	बोल और सीमन्दर का पाना		
६१९	१७९८	४५/२८	बोल इकावन		
६२०	८०१	२५/८	बोल ज्ञाता सूत्र के अनुसार		
६२१	११११/१	३२/६८	ब्रह्मदत्त के सास उसास		
६२२	४९७/१	१७/२४	भगवत पारणो		
६२३	१६३८/१	४२/८	भगवती के तीस बोल		
६२४	२३९१/२	६२/६३	भगवती सूत्र का भाग		
६२५	१५३२	३९/२२	भगवती सूत्र विचार सटिप्पण		
६२६	६३२	१९/६४	भगवद्दर्शनी निवति बोल विचार भगवदर्थं		
६२७	१२९६/३	३६/२६	भगवान महावीर स्वामी की तपस्या का वर्णन		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
मेडता				हिन्दी-राज०	पद्य १६		२६०×११० / १४—४१
				”	गद्य		२५·२×११४ / ३२—४८
				”	गद्य	३	२५४×११३ / १२—३३
				”	गद्य	२	२१०×१०० / १३—३२
				”	सारिणी	१	२५०×१०४ / २३—१६
				”	गद्य		२५०×१०·६ / १६—४२
				”	गद्य		२५०×११·६ / १५—४२
				,	गद्य		२४·४×११·२ / १९—३८
	आर्या लाछा	१८६५	सवाई जयपुर	”	गद्य		२५०×११८ / १९—४२
	आर्या लाछा	१८६५ फा० व० ६	जयपुर	”	गद्य		२५·०×११·८ / १९—४२
				”	गद्य	१	२३४×१०२ / १६—४५
				”	गद्य	३	२७७×१२० / १९—३४
				”	गद्य		२४३×१०३ / १६—३४
	रामचन्द्र	१८३५ सा० सु० १	कोटलामलेर	”	पद्य २८		२४०×१०८ / १८—५५
		१८९५ फा० बद ११	मेडता	”	गद्य		२७०×१२५ / १७—४०
				”	सारिणी		२२०×८४ / ३४—१६
				”	सारिणी	२	२६५×११० / २१—५६
	आर्या नगा	१५५९	जयपुर	”	गद्य	१	२५८×११० / २१—१७
				”	गद्य		२५८×११४ / २१—४५

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
६२८	८६८	२७/३३	भवण द्वार थोकडा		
६२९	९०१	२७/३६	भवण द्वार थोकडा		
६३०	१२७	८/९	भवन द्वार थोकडा		
६३१	२०४	१२/३३	भवन द्वार थोकडा		
६३२	११८८	३४/८	भवन द्वार थोकडा		
६३३	३१८	१३/७७	भवन द्वार थोकडा दडक		
६३४	३२५/१०	१३/८	भांगा का थोकडा		
६३५	५७९	१९/११	भाव गुणस्थानो पर छ भाव का थोकडा		
६३६	२१९८/४	५६/१५	भाव पट्त्रिशका	ज्ञानसागर	१८६५ चौ०
६३७	१६६१/१	४३/२१	भाव संग्राम		
६३८	१४२७	४३/५७	भेषधारी की सज्झाय		
६३९	१०९०/६	३२/४७	मनु के तीन सौ तीन भेद		
६४०	६०६	१९/३८	महादण्डक (दड आदि का बीस वोल)		
६४१	१३३	८/१५	महादण्डक थोकड़ा		
६४२	६४८/३	२०/२५	महामोहिनी के तीस वोल		
६४३	५३२	१७/५९	महावीर के तेरह अभिग्रह की सज्झाय	रिख दुर्गादास	
६४४	७५१	२४/१८	महावीर जी का तेरह वोल का अभिग्रह	रिख चौथमल	१८५८ पौ० सु० ७
६४५	१६०१	४१/३१	मानोन्मान विचार टब्बा सहित		
६४६	१९४	१२/२३	मार्गणा का थोकडा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	उदाजी	चैं० कृ० १४	जयपुर	हिन्दी-राज०	गद्य	१४	२५ ० × १२ ० / १८—४०
				”	गद्य	१०	२५ ३ × १२·० / १८—४०
	आर्या पन्ना	१८६४ जे० सु०४ सोम०	जयपुर	”	गद्य	९	२५ ८—११ ५ / १७—५१
			बीकानेर	”	गद्य	२ से १७	२५ १ × ११ ० / १८—३३
				”	गद्य द्वार ६	१९	२४·६ × ११ ८ / १३—३९
	लालाजी	१८५३ चैं० सु० ७ शुक्र०	सवाई जयपुर	”	गद्य	११	२४·४ × १० ३ / १७—३९
				”	गद्य		२३ ६ × ११ २ / १३—४७
				”	गद्य	८	२१ ३ × १० ८ / १२—३०
किशनगढ				”	पद्य ३९		२४ ७ × ११ २ / १०—३४
				”	गद्य		२५ ० × १० ६ / १३—४४
				”	पद्य ४२	१	२५ ९ × ११ २ / १३—३४
				”	गद्य		२७ २ × १२ ८ / १२—४०
				”	गद्य	१४	२६·५ × ११ १ / २२—६२
				”	गद्य	२३	२६ ४ × १२ ९ / २०—२४
				”	गद्य		१६ ७ × १० ५ / १७—३४
				”	पद्य १४	१	२१ ५ × ९ ७ / १४—३५
सोजत				”	पद्य २७	१	२५ ७ × १० ९ / १४—४३
				प्राकृत	गद्य	१	२६ ० × ११ २ / १८—४८
		१९०९ जे० शु० १२		हिन्दी-राज०	सारिणी	२	२४ ७ × १२ २ / १८—४०

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्य–नाम ४	ग्रन्यकार ५	रचना–सवत् ६
६४७	६०७	१९/३९	मार्गणा का बासठिया थोकडा		
६४८	२२८९	५९/३७	मिथ्यात्व (कर मरदानो वेष चाली सरकार कू)		
६४९	१९८९/२	३६/१६	मिथ्यात्व के दस वोल		
६५०	१५५३/८७	४०/३	मिथ्यात्व विचार के सासरे की ढाल		
६५१	१९६/६	१२/२५	मिथ्या भ्रम		
६५२	११३०	३३/१५	मुनि परिसह की ढाल		
६५३	२३०२/१	५९/५०	मुँहपुत्ती रा २५ वोल		
६५४	१३१५/४	३६/४४	मोक्ष के प द्रह भेद		
६५५	१९०७	४७/३७	मोक्ष नी पैडी	वनारसी	
६५६	२२८३	५९/३१	मोक्ष महल की सज्झाय	ि ख रायचन्द	१८४० वै० वद १
६५७	२१७६	५५/५०	मोक्ष मार्ग वचनिका	रतनचन्द	
६५८	१५६९/३	४०/१६	मोह व र्म ऊपर सज्झाय	रतनचन्दजी	१८७२
६५९	११११/५	३२/६८	मोहिनी कर्म के वोल तीस		
६६०	१९३२/४	४२/२	मोहिनी कर्म को स्तवन		
६६१	२०९७	५४/१४	मोहिनी के वोल		
६६२	१२९९/२	३६/२९	योनि जीव मार्गणा के वासठ वोल		
६६३	२३५०	६२/२२	रत्नावलि ग्रादि तपो का यत्र		
६६४	२४३४	६३/२८	रायसि प्रतिक्रमण विधि		
६६५	१२२९/३	३५/२३	रूपी ग्ररूपी का वोल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	रामलाल			हिन्दी-राज०	सारिणी	२	२४·७×१० ६ २२—७
				”	गद्य	२	२४ ४×१० ७ १६ - २०
				”	सारिणी		२६ २×१० ६ २६—१६
				”	पद्य ११		२५ २×१२ ० २० —४३
				”	पद्य १२		२५ ८×११ ६ ११—३७
	रिख दुर्गादास	१८३९चौमासे	जोधाणो	”	पद्य १४	१	२० ०×१० ५ १२—३२
				”	गद्य		२४ ७×११ ५ १४—४१
				”	गद्य		२३ ६×१०·६ ११—३३
	खुशालचन्द	१८५६ पो० वद १०	वारी	”	२४	१	२४ ३×६ ८ १५—५४
पीपाड				”	पद्य १३	१	२५ ५×१०·५ ३२—१६
				”	गद्य	६	२५ ५×११ ६ १६—४६
देव गढ				”	पद्य ११	३	२२ ७×११·० १६—३६
				”	गद्य		२४ ३×१० ३ १६—३४
				”	पद्य १३		२५ ५×१३ ४ १६—४७
	पार्वती		आगरा	”	गद्य	१	२५·४×११ ८ १६—३६
				”	सारिणी		२१ ५×११ २ ४२—२६
	मुनि धीरज	१८२२ चै० सु० १०		”	सारिणी	१	२५ ८×११ ६
				”	गद्य	१	२५·७×११ १ १२—४५
				”	गद्य		२४ ८×१२ ० २५—४४

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
६६६	२०६४	५४/११	लघु क्षेत्र समास मूल विवरण सहित		
६६७	७०५/२	२१/२२	लघु दडक		
६६८	८८२	२७/१७	लघु दडक का थोकडा		
६६९	११९३	३४/१३	लघु दंडक का थोकडा		
६७०	२३८	१२/६७	लघु दडक का थोकडा		
६७१	१५७०	४०/१०	लघु दडक का थोकडा		
६७२	२१९२	५६/९	लघु दडक का थोकडा		
६७३	७०५/३	२२/२२	लघु नव तत्व व वडी नव तत्व		
६७४	८६७	२७/२	लघु सग्रहणी (लघु सयाणी)	लेसेन सूरि	
६७५	२३२९	२६/१	लघु सग्रहणी टब्बा	हरिभद्र सूरि	
६७६	१००	७/२	लघु सग्रहणी प्रकरण टब्बा		
६७७	२४७	१३/१०६	लब्धि के बोल थोकडा यत्र सहित		
६७८	१०९०/४	३२/४७	लोकान्तिक का नाम		
६७९	५	१/५	लोगरस वालाववोध		
६८०	११२०	३३/५	लोच विधि		
६८१	२२७४/२	५९/२२	वखाण माडणी		
प्र०६८२	३५७/१	१४/१०	वनस्पति सत्तरि का मूल	चन्द्र सूरि	
६८३	१९५८	४९/९	वर्णादि मार्गणा दो सौ पन्द्रह बोल व जीव भेद		
६८४	७१५	२२/६	विचार पट् त्रिंशिका	गजसार	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ६	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	कीर्तिरतनसूरि	१५१७ वैं० वद ६		प्राकृत		३६	२६०×११० / १५—६३
				हिन्दी-राज०	गद्य		२३४×११५ / १६—३०
	आर्या रत्ना	१७७१ माघ वद ८		"	गद्य		२४७×११·० / १३—३१
				"	गद्य	१३	२५३×११४ / १३—३६
	नगाजो	१८४७	वीकानेर	"	गद्य	६	२५२×१२० / २०—४६
	चुन्नीलाल	१६५५मिगसर सु० १०	करौली	"	गद्य	१८	२७५×६६ / ७—४३
				"	गद्य	१६	२६७×११५ / १२—४२
				"	गद्य		२३४×११५ / १६—३०
	ऋषि सूरजो	१६६० भा० कृ० ७ गुरु०		प्राकृत	पद्य २८०	१८	२७०×१२·४ / १५—३६
				"	३०	४	२७३×१३७ / १६—३३
	आर्या दिर्लपी	१७७६आपाढ सु०३ मंगल०	नागौर	"	ग्र०ग्र० ३०६ श्लोक१६४६	४०	२६१×११३ / १६—३६
	आर्या लाछा	१८४७आपाढ व० ७	सवाई जयपुर	"	गद्य	२	२५०×११३ / २७—६२
				हिन्दी-राज०	गद्य		२७२×१२८ / १२—४०
				प्राकृत व हिन्दी	गद्य	५	२६१×११३ / १३—३६
				प्राकृत	गद्य	२	२५·०×११५ / ६—२७
				हिन्दी-राज०	गद्य		२५·४×१२५ / १४—६२
	मुनि गजमुकुमाल प्र०	१६१० का० व० ११	आगरा	प्राकृत	गाथा ७७		२५८×११२ / १२—५१
				हिन्दी-राज०	सारिणी	२	२४५×१२० / १७—५५
		१८०६ चैं० कृ० ५ रवि०	गुरुवचनगरे	प्राकृत	४०	१०	२६२×११६ / १६—२७

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-समय ६
६८५	६२४	२८/२३	विचार पट् त्रिशिका	गजसार	
६८६	१६७२	४३/२	विनय का १३४ भेद		
६८७	१३६४	३७/४४	विरति की अपेक्षा आठ भंग		
६८८	३१३	१३/७२	विविध बोल संग्रह		
६८९	६०२	२८/१	विहार चूलिका टब्बा सहित		
६९०	८८६	२७/२१	वृहदालोयणा	मुनि चन्द्रभान	
६९१	४६१/२	१६/६६	वेद द्वार का थोकडा		
६९२	१३१४/२	३६/४	वैयावच की दस विधि		
६९३	६४६/१	२०/१६	व्याख्यान मांडणी		
६९४	१६३२	४८/२२	शास्त्र अध्ययन तप दिन आंबिल		
६९५	१७५६	४४/२६	शास्त्र के आंबिल		
६९६	१३८३	३७/३३	शास्त्रो के बोल		
६९७	१४३३	३८/३	शिक्षा के ८८ बोल		
६९८	१८६१	४६/३१	शिक्षा बहोत्तरी के बोल		
६९९	११७३/८	३३/५८	शील का सोलह बोल		
७००	१२१६/२	३५/१०	शील की सोलह प्रभ वना		
७०१	६१२	२८/२१	शील रथ यंत्र		
७०२	१३०२/२	३६/३८	शीलव्रत की नव वाडी		
७०३	५२०	१७/४७	श्रमण अतिचार		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	माणकचन्द	१८१९ चै० कृ० ३ सोम०		प्राकृत	४०	२	२६ ०×१२ ० / १२—२७
	रतनचन्द	१८८७ का० सु० १४	अलवर	हिन्दी-राज०	गद्य	१	२५ २×१२·५ / १८—३७
				”	गद्य	१	२५ १×१०·६ / १३—३४
	उदी	१९१९ चै० सु० ५	जयपुर	”	गद्य	९	२१ ०×११ ३ / १७—३१
		१९४६ मा० शु० ३	नयाशहर	प्राकृत	गद्य	४	२६ ९×१३ ० / १९—४८
				हिन्दी—राज०	गद्य-पद्य	६	२६ ४×१३ ० / १३—३५
				”	गद्य		२६ २×१२·७ / २५—५१
	रिख वसता		विक्रमपुर	प्राकृत	गाथा १०		२३ ९×१० ६ / ११—३३
				हिन्दी-राज०	गद्य		२४ ८×१० ३ / १२—३५
				”	गद्य	१	१९ ७×१०·२ / १८—२८
				”	गद्य	१	१६ ६×१० ६ / ८—२२
				”	गद्य	१	२५ ७×११ ० / २५—४६
	आर्या पन्ना	१८९७ जे० व० ८	अलवर	”	गद्य	२	२६ ४×१० ३ / १३—४४
				”	सारिणी	१	२४·८×११ ५
				”	गद्य		२२ ७×११ ५ / १३—३६
				”	गद्य		२५ ०×११ २ / २१—५०
				”	सारिणी	१	२३ ३×११ १ / १६—३५
				”	गद्य		२२ ५×१३ ८ / १९—३६
	आर्या नानी		किशनगढ	”	गद्य	१	२६ ०×११ १ / १५—५९

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७०४	४४०	१६ / ४५	श्रमणोपासक दान चर्चा (मूल प्राकृत टीका संस्कृत)		
७०५	२२३४ / २	५८ / १४	श्रावक करणी की सज्झाय	नेतसी	
७०६	११७३ / ६	३३ / ५८	श्रावक का इक्कीस गुण		
७०७	१४०७	३७ / ५७	श्रावक का इक्कीस गुण		
७०८	१२०४ / ३	३४ / २४	श्रावक का बारह बोल		
७०९	१९०४	४७ / ३४	श्रावक की करणी की सज्झाय	जिनहर्ष	
७१०	१५५३ / ७२	४० / ३	श्रावक की ढाल		
७११	१५५४ / ११	४० / ४	श्रावक की सज्झाय	चैनन	
७१२	१८२४ / २	४५ / ५४	श्रावक की सज्झाय		
७१३	५९७ / ६	१९ / २९	श्रावक के इक्कीस गुण		
७१४	२१४	१२ / ४३	श्रावक के उनचास भागा का थोकडा		
७१५	१२७२	३६ / २	श्रावक के उनचास भागा का थोकडा		
७१६	१६११	४१ / ४१	श्रावक के एक सौ चौबीस अतिचार	पार्श्वचन्द्र सूरि	
७१७	१२८२	३६ / १२	श्रावक के पचखाण के उनचास भागा का थोकडा		
७१८	६९८ / ३	२१ / १५	श्रावक के बारह बोल		
७१९	९१९ / २	२८ / १८	श्रावक गुण को स्तवन		
७२०	५६४	१७ / ६१	श्रावक सत्तावीसी	रतनचद	
७२१	५६०	१७ / ८७	श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण विधि		
७२२	१३५	८ / १७	श्रावक सूत्र टब्बा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				प्राकृत	गाथा २२	५	२२·० × १० ९ ११—३७
				हिन्दी-राज०	पद्य ११		२१·६ × १०·७ २१—३८
				”	गद्य		२२·७ × ११ ५ १३—३६
				”	२२	१	२३·१ × १० ६ १५—४६
				”	गद्य		२५·० × ११·६ १७—४८
				”	पद्य १९	१	२४ ० × १० ८ १३—३६
				”	१२		२५·२ × १२·० २०—४३
				”	पद्य १०		२६ ० × ११·७ १९—४३
				”	पद्य ७		२० १ × ९ ६ १२—२५
				”	गद्य		२५ २ × ११ ४ ३२—४८
		१८९७		”	गद्य	४	२४ ६ × ११ ० ११—३३
				”	गद्य	२	२७·० × १२ ७ ४४—३२
				”	पद्य १५२	६	२४ ८ × १०·५ १२—३८
				”	सारिणी	१	२४ ० × १२ ३ ३८—२८
				”	गद्य		२६ ७ × ११ ५ १९—४६
				”	गद्य		२५ ६ × ११·६ १८—४८
				”	पद्य २८	४	२० ४ × १० ८ ७—२३
				”	गद्य	३	२५ ८ × ११ ० १८—४९
	छगनचन्द्र	१८३६ वै० सु० ५	जोधपुर	प्राकृत	गद्य	९	२५·७ × १२ ५ २४—५२

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
७२३	११६८	३४/१८	श्राविका अतिचार		
७२४	१५२६	३६/१६	श्वासोश्वास का थोकडा		
७२५	४४८	१६/५३	षटकाय जीवो की अल्पा बहुत्व		
७२६	६२०	२८/१९	षट जीव निकाय		
७२७	१२८६/१	३६/१६	षट द्रव्य का थोकडा		
७२८	१२६०	३६/२०	षट द्रव्य की लब्धि का थोकडा		
७२९	२२७२	५६/२०	षट द्रव्य विचार		
७३०	१६३६	४८/२४	षड द्रव्य की चर्चा		
७३१	११६७	३४/१७	षडावश्यक बालावबोध टब्बा सहित		
७३२	६१४	२८/१३	सखावती सूत्र (बिन्दु दशा अध्ययन)		
७३३	१२६७	३६/२७	सख्या का विचार		
७३४	१७५	१२/४	सख्यात असख्यात अनतुएमान		
७३५	५४	४/१४	सग्रहणी बालावबोध	दयासिंह गणि	१४६७ सा० सु० १४ शुक्रवार
७३६	२०५२	५२/२	सग्रहणी सूत्र यत्र सहित		
७३७	६८१	२६/८	सग्रहणी सूत्र बालावबोध	दयासिंह	१७६७ द्वितीय श्रा० शु० १४ शुक्रवार
प्र० ७३८	६०३	१६/३५	सजया का थोकडा		
७३९	१४४८	३८/१८	सजया द्वार थोकडा		
७४०	२५१	१३/१०	सथारा की पाटी		
७४१	१०८३	३२/४	सथारा की पाटी		

रचना-स्थान ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य	११	२५ ६×१० ६ / ६–३७
				"	गद्य	३	२२ ७×१२ ३ / ६—२८
				प्राकृत	गद्य	१	२५ ४×११ ० / २१—५६
				"	चार अध्ययन	६	२५ ४×१० ६ / १३—३२
				हिन्दी राज०	गद्य		२६ २×१० ६ / २६–१६
				"	गद्य	१	२५ ३×११ ० / १७—५२
				"	गद्य	१	२६ ४×११ ७ / १३—३०
				प्राकृत	मंत्र	१	२४ ७×८ ८ / १३—१४
		१७०२ का० सु० ४		"		२४	२५ ६×११ ४ / १०—३०
				"	गाथा १००	२	२४ ०×११ २ / १६ - ४
				हिन्दी-राज०	सारिणी	१	२५ १×११ ७ / १७—६०
				"	गद्य-पद्य	३	२५ २×१० ६ / ११—४०
		१६५२ जेठ सु० ८	जालोर	"	गद्य ग्र.ग्र. १७५७	४५	२६ १×११ ६ / १६ ४२
				प्राकृत	गाथा २८७	२२	२५ ५×१० ८ / १६—४१
				"	ग्र ग्र .१८२४	४८	२६ २×११ ५ / १५—४०
	रामकुंवर प्र० जसवन्तदे	१८६० फा० शु० पू० मंगल०		हिन्दी-राज०	गद्य	३	२६ १×११ ३ / २५—८८
			चाटसू	"	गद्य	७	२०६×११·३ / १३—३१
				प्राकृत	गद्य	१	२५ ५×१२ ० / १३—४२
				"	गद्य	१	२५ ६×११ १ / १३—३६

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७४२	१०१	७/३	सथारा पइन्ना टव्वा		
७४३	७७०	२४/३७	सथारा बालावबोध		
७४४	३१०	१३/६६	सथारा विधि		
७४५	२१५४	५५/२८	सलेपण का पाठ पडिक्रमण		
७४६	८८४/१	२७/१९	सलेपण शान्ति स्तवन		
७४७	७६५	२५/२	सत्ताईस बोल		
७४८	१२७१	३६/१	सत्ताईस बोल का थोकडा		
७४९	२३०४	६०/	सत्तावन बोल का बासठिया थोकडा		
७५०	४६७	१६/७३	सत्तावन बोल का बासठिया थोकडा		
७५१	४२९/१	१६/३४	सत्तावन हेतु		
७५२	२३९१/१	६२/६२	सन्नीबाई का २६ भागा		
७५३	७५४/२	२४/२१	सप्तनाथ विचार		
७५४	२३६६/२	६२/३८	सप्त सती नाम		
७५५	३९९/१	१६/४	सप्रदेशी अप्रदेशी थोकडा		
७५६	३९९/२	१६/४	सप्रदेशी अप्रदेशी थोकडा		
७५७	५२९	१७/५६	समकित का ६७ बोल		
७५८	८६८/१	२७/३	समकित का ६७ बोल		
७५९	२४५३/३	६३/४७	समकित का ६७ बोल		
७६०	३२६/१	१३/८५	समकित की आलोयणा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-सख्या १२	पत्र स० १३	आकार १४
		१६३२ चैत वद ८		प्राकृत	गाथा १२२	२१	२४ ४ × ११ ५ १७—२६
		१६६६ वै० शु० २ रवि०	कांटा के दशपुर मे	हिंदी-राज०	गद्य	३०	२५ ४ × ११ ५ १७—४०
				,,	गद्य	१	१८·३ × ८ ५ १३—१८
	आर्या लाछा	१८५६ फा० सु० १	जयपुर	प्राकृत	गद्य	१	२२ ८ × १० ० १७—३८
				हिन्दी-राज०	गद्य		२३ ८ × ११ ० ६—२१
				,,	गद्य	६	२७ ० × १२·८ १०—३६
				,,	गद्य	४	२२ ६ × १४ ० १६—३१
	आर्या उदाजी	१६२२ फा० सु० ३	बीकानेर	,,	गद्य	५	२६ ७ × १२ ६ १६—३६
				,,	सारिणी		२४ ४ × १० ८ ५४—२१
				,,	गद्य		२५ ७ × ११ १ १४—४८
				,,	गद्य		२२ ० × ८ ४ ३४—१६
				,,	गद्य		२४ ६ × ११ ५ १०—३६
				,,	गद्य		२४ ४ × १० ३ १५—४७
	रिख गभीर			,,	गद्य		२६ ५ × १२ ० २३—६५
				,,	गद्य		२३ ६ × ११ ४ १२—३७
				,,	गद्य	१	२६ २ × ११ ८ १८—५६
				,,	गद्य		२१·३ × १० २ १६—३७
				,,	गद्य		२४·४ × १० ५ १८—४४
				,,	गद्य		१६ ८ × १० ६ १२—३३

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
७४२	१०१	७/३	सथारा पइन्ना टव्वा		
७४३	७७०	२४/३७	सथारा वालावबोध		
७४४	३१०	१३/६६	सथारा विधि		
७४५	२१५४	५५/२८	सलेषणा का पाठ पडिक्रमण		
७४६	८८४/१	२७/१६	सलेषणा शान्ति स्तवन		
७४७	७६५	२५/२	सत्ताईस वोल		
७४८	१२७१	३६/१	सत्ताईस वोल का थोकडा		
७४९	२३०४	६०/	सत्तावन वोल का वासठिया थोकडा		
७५०	४६७	१६/७३	सत्तावन वोल का वाँसठिया थोकडा		
७५१	४२९/१	१६/३४	सत्तावन हेतु		
७५२	२३९१/१	६२/६२	सन्नीवाई का २६ भागा		
७५३	७५४/२	२४/२१	सप्तनाथ विचार		
७५४	२३६६/२	६२/३८	सप्त सती नाम		
७५५	३९९/१	१६/४	सप्रदेशी अप्रदेशी थोकडा		
७५६	३९९/२	१६/४	सप्रदेशी अप्रदेशी थोकडा		
७५७	५२९	१७/५६	समकित का ६७ वोल		
७५८	८६८/१	२७/३	समकित का ६७ वोल		
७५९	२४५३/३	६३/४७	समकित का ६७ वोल		
७६०	३२६/१	१३/८५	समकित की आलोयणा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भापा ११	छंद-सख्या १२	पत्र स० १३	श्राकार १४
		१९३२ चैत वद ८		प्राकृत	गाथा १२२	२१	२४ ४×११ ५ १७—२९
		१९२९ वै० शु० २ रवि०	कांटा के दशपुर मे	हिंदी-राज०	गद्य	३०	२५ ४×११ ५ १७—४०
				"	गद्य	१	१८ ३×८ ५ १३—१८
	श्रार्या लाछा	१८५६ फा० सु० १	जयपुर	प्राकृत	गद्य	१	२२ ८×१० ० १७—३८
				हिन्दी-राज०	गद्य		२३ ८×११ ० ९—२१
				"	गद्य	६	२७ ०×१२·८ १०—३९
				"	गद्य	४	२२ ९×१४·० १९—२१
	श्रार्या उदाजी	१९२२ फा० सु० ३	बीकानेर	"	गद्य	५	२९ ७×१२ ९ १९—३९
				"	सारिणी		२४ ४×१० ८ ५४—२१
				"	गद्य		२५ ७×११ १ १४—४८
				"	गद्य		२२ ०×८ ४ ३४—१९
				"	गद्य		२४ ९×११ ५ १०—३९
				"	गद्य		२४ ४×१० ३ १५—४७
	रिख गभीर			"	गद्य		२९ ५×१२ ० २३—९५
				"	गद्य		२३ ९×११ ४ १२—३७
				"	गद्य	१	२९ २×११ ८ १८—५९
				"	गद्य		२१·३×१० २ १९—३७
				"	गद्य		२४ ४×१० ५ १८—४४
				"	गद्य		१९ ८×१०·९ १२—२३

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
प्र०७६१	१५५०	३६/४०	समकित को सज्झाय	कवि नेत प्र०	१७५२ जेठ सु० ५
७६२	५३७/१	१७/६४	समकित के ६७ बोल		
७६३	६४६/२	२८/४५	समकित ना १३ बोल		
७६४	६४६/१	२८/४५	समकित रा ६७ बोल		
७६५	१५८७	४१/१७	समकित विवरण ६७ बोल	अमर	१८०० आश्विन सु० १०
७६६	१६८३/१	४६/३३	समकित स्तवन	जयमल	१८३५
७६७	१२६	८/८	समाधि मरण रूप		
७६८	१२८६	३६/१६	समुच्चय जीव का वासठिया		
७६९	१२९९/१	३६/२६	समुच्चय जीव मार्गण के ६२ बोल		
७७०	१७१८	४३/४८	समुद्र घात विचार		
७७१	१७७२	४५/२	समेगी प्रतिक्रमण विधि		
७७२	१२००	३४/२०	समोसरण थोकडा यंत्र		
७७३	५६६	१६/१	समोसरण विचार		
७७४	१६०	१२/१६	सम्यक्त्व के बोल		
७७५	२०७१	५३/८	सम्यक्त्व कौमुदी टब्बा		
७७६	८३८	२६/६	सर्व वध देश वध का थोकडा		
७७७	४३७	१६/४२	सर्व वध देश वध थोकडा		
७७८	१७०१	४३/३१	सर्व वध देश वध थोकडा		
७७९	१९९७	५०/७	सर्व वध देश वध		

[..]ा-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
		१८१५ चैं० सु०१० शनि०	जयपुर	हिन्दी-राज०	पद्य ३०	४	२१ ६×११ ० / १४—२२
				"	गद्य		२७·२×१२ ८ / १५—४४
				"	गद्य		२२·६×१०·६ / १४—३०
				"	गद्य		२२ ६×१०·६ / १४—३०
				"	गद्य	७	२५·०×१० २ / ११—४६
				"	पद्य १५		२४ ५×१० ६ / २०—४८
				"	गद्य	३४ १८वा नहीं	२० ६×१० ६ / ८—२५
				"	सारिणी	१	२४·८×११·२ / २३—१३
				"	गद्य		२१ ५×११·२ / ४२—२६
	यति छगनलाल			"	गद्य	१	२३·७×११ १ / ८—२५
				"	गद्य	२	२६ ३×१२ ५ / २३—१२
	नन्दलाल	१९७८आषाढ सु० ५ शनि०		"	यन्त्र	४ से ११	२५ २×११ ३ / ४५—३३
				"	गद्य	६	२५·३×१२ ५ / २३—१८
				"	गद्य	२	२२ ७×१०·८ / १६—३६
	अनूप विजय	१८५०आश्वि शु० ११		संस्कृत		७३	२३ ६×१०·२ / १६—४८
	आर्या नथा		नागौर	हिन्दी-राज	गद्य	४	२१ ३×१०·५ / १७—४१
				"	गद्य	४	२५ ४×११ ० / १३—३८
				"	गद्य	२	२५ ८×१[illegible] / ३८—३०
				"	गद्य	३	२५ ६×११ ३ / ३६—२०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
अ०७६१	१५५०	३९/४०	समकित को सज्झाय	कवि नेत प्र०	१७५२ जेठ सु० ५
७६२	५३७/१	१७/६४	समकित के ६७ बोल		
७६३	६४६/२	२८/४५	समकित ना १३ बोल		
७६४	६४६/१	२८/४५	समकित रा ६७ बोल		
७६५	१५८७	४१/१७	समकित विवरण ६७ बोल	भ्रमर	१८०० आश्विन सु० १०
७६६	१९८३/१	४९/३३	समकित स्तवन	जयमल	१८३५
७६७	१२६	८/८	समाधि मरण रूप		
७६८	१२८९	३६/१९	समुच्चय जीव का वासठिया		
७६९	१२९९/१	३६/२९	समुच्चय जीव मार्गण के ६२ बोल		
७७०	१७१८	४३/४८	समुद्र घात विचार		
७७१	१७७२	४५/२	समेगी प्रतिक्रमण विधि		
७७२	१२००	३४/२०	समोसरण थोकडा यत्र		
७७३	५६९	१९/१	समोसरण विचार		
७७४	१९०	१२/१९	सम्यक्त्व के बोल		
७७५	२०७१	५३/८	सम्यक्त्व कौमुदी टब्बा		
७७६	८३८	२६/९	सर्व बध देश बध का थोकडा		
७७७	४३७	१९/४२	सर्व बध देश बध थोकडा		
७७८	१७०१	४३/३१	सर्व बध देश बध थोकड़ा		
७७९	१९९७	५०/७	सर्व बंध देश बध		

चना-स्थल ९	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ६	लिगि-स्थल १०	भाषा ११	छद सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
		१८१५ चैं० सु०१० शनि०	जयपुर	हिन्दी-राज०	पद्य ३०	४	२१ ६×११ ० / १४—२२
				”	गद्य		२७·२×१२ ८ / १५—४४
				”	गद्य		२२·६×१०·६ / १४—३०
				”	गद्य		२२ ६×१०·६ / १४—३०
				”	गद्य	७	२५·०×१० २ / ११—४६
				”	पद्य १५		२४ ५×१० ६ / २०—४४
				”	गद्य	३४ १८वा नहीं	२० ६×१० ६ / ८—२५
				”	सारिणी	१	२४·८×११·२ / २३—१३
				”	गद्य		२१ ५×११ २ / ४२—२६
	यति छगनलाल			”	गद्य	१	२३·७×११ १ / ८—२५
				”	गद्य	२	२६ ३×१२ ५ / २३—१२
	नन्दलाल	१९७८आषाढ सु० ५ शनि०		”	यत्र	४ से ११	२५ २×११ ३ / ४५—३३
				”	गद्य	६	२५·३×१२·५ / २३—१४
				”	गद्य	३	२२·७×१०·८ / १६—३६
	अनूप विजय	१८५०आश्वि शु० ११		संस्कृत		७३	२३ ६×१०·२ / १६—४४
	आर्या नथा		नागौर	हिन्दी-राज	गद्य	४	२१ ३×१०·५ / १७—४१
				”	गद्य	४	२५ ४×११ ० / १३—३८
				”	गद्य	२	२५ ८×[illegible] / ३४—३०
				”	गद्य	३	२५ ६×११ ३ / ३६—२०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७८०	१४१७/२	३१/६७	सलेपरण की पाटी		
७८१	१७६४	४४/३४	सात नय का संक्षिप्त विचार		
७८२	१४४०/५	३८/१०	सात नय के नाम		
७८३	२११/८	१२/४०	सात वर्गणा के नाम		
७८४	६४३/२	२८/४२	साध का दस लक्षण		
७८५	१८७/३	१२/४६	साधना आचार		
७८६	५६७/१३	१६/२६	सातना के ४२ दोष		
७८७	६५५	२८/५४	साधु आचार का वोल		
७८८	१५५३/८५	४०/३	साधु आचार पर ढाल		१८६५ चौमासा
७८९	८२५	२५/३२	साधु उपमा		
७९०	१६८	१२/२०	साधु कर्तव्य की ढाल	सवलदास	१९६८ मार्गशीर्ष शु० ..
७९१	२४८४/३	६३/८७	साधु गुण	अजितदेव सूरि	
७९२	१६७४/२	४६/२४	साधु को वारह मास का सुख		
७९३	२०६/५	१२/३८	साधुजी अहेतु समर्पण		
७९४	११४८	३३/३३	साधुजी का ५२ अनाचार		
७९५	११११/३	३२/६८	साधुजी के सवला के दोष का २१ वोल		
७९६	२१५५/२	५५/२६	साधुजी के सुख की ढाल	रिख सवलदास	१८६४ चौमासे
७९७	२०६/४	१२/३८	साधुजी ना समाचारी		
७९८	१५५३/७७	४०/३	साधु मर्यादा ढाल		१९१२ जे० सु० ...

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		२५ ८×११ ० / १९—२८
				„	गद्य	१	१० ६×२३ ७ / ४३—२३
				„	गद्य		२६ ३×११·७ / २०—५०
				„	गद्य		२६ ३×१२ ७ / १०—४१
				„	पद्य ११		२१ ६×१० ८ / २०—३६
	जीउ			„	गद्य		२१·६×१२ २ / २४—४६
				„	गद्य		२५ २×११ ४ / ३२—४८
	सगई वोसवास	१९०७ मा० कृ० ८		„	गद्य	१८	२० १×१० ४ / ७—२५
नागौर				„	पद्य १४		२५·२×१२ ० / २०—४३
				„	गद्य	१	२५ ७×११ ३ / २०—३९
खीचन्द	ताराचन्द	१८७८		„	पद्य १५	१	१२ ४×१० ४ / १५—२२
				„	१९		२५ ६×१० ६ / १३—३८
				„	गद्य		२५ ४×११ ६ / १३—४३
				„	गद्य		२५ १×१२ ० / १७—४२
				„	गद्य	१	२१ २×९ ८ / १५—३२
				„	गद्य		२४ ३×१० ३ / १६—३४
नागौर				„	पद्य २०		२४ ७×१० ० / १७—१४
				„	गद्य		२५ १×१२ ० / १६—४२
कुचेरा				„	पद्य ११		२५ २×१२ ७ / २० ४३

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७९९	२० ४	५० / १४	साधु समाचारी कथानक (समय सुन्दर कल्पलता से)	समयसुन्दर	
८००	१२५७	३५ / ५१	साधु समाचारी के ९६ बोल		
८०१	१८८४	४७ / १४	सामायिक करण की ढाल	रिख कुशालचन्द	
८०२	१३५७ / १	३७ / ७	सामायिक का पाठ		
८०३	११७३ / ७	३३ / ५८	सामायिक का ३२ दोष		
८०४	१७७१	४५ / १	सामायिक की ३६ दोष की सज्झाय	विनयचन्द	
८०५	१५५३ / ६८	४० / ३	सामायिक की ढाल		१८६४ चौमासा
८०६	११९	१२ / २८	सामायिक की सज्झाय	कुशालचन्द	१८६४ चौमासा
८०७	१४३९	३८ / ९	सामायिक के पाठ		
८०८	३४३	१३ / १०१	सामायिक के पाठ टव्वा		
८०९	३४२	१३ / १०२	सामायिक के पाठ सार्थ		
८१०	२३५६ / २	६२ / २८	सामायिक पौषध फल कुलक		
८११	६१९ / २	१९ / ५१	सामायिक रा दोष सज्झाय		
८१२	१३२३	३६ / ५३	सामायिक सूत्र		
८१३	१३४०	३६ / ७०	सामायिक सूत्र		
८१४	११५२ / १	३३ / ३७	सामायिक सूत्र		
८१५	७५९ / ३	२४ / २६	सायवल के नौ काल		
८१६	५४७	१७ / ७४	सावद भाषा और निरवद भाषा पर ढाल	सरूपचन्द	
८१७	२३९७	६६ / ६९	सास उसास		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
		१७९९ भा० ब० ७ बुध०		सस्कृत	गद्य	१३	२६ ०×११ ० / ११—३५
				हिन्दी-राज०	गद्य	५	२३ ३×११ ० / १९—३९
				,,	पद्य १६	१	२४ ७×१२ ४ / १७—३३
				प्राकृत	गद्य-पद्य		२५ १×११·० / १७—५१
				हिन्दी-राज०	गद्य		२२ ७×११·५ / १७—३६
				,,	पद्य १४	१	२६ ३×१२ ७ / १५—३६
करडा				,,	पद्य २९		२५ २×१२ ० / २०—४३
करडा				,,	पद्य १९	१	२६ ६×११ ७ / १४—३४
	साहेबराम	१८५०	जोबनेर	प्राकृत	गद्य	१	२५ ३×११ ३ / १६—५८
				,,	गद्य	५	२४ ८×११ २ / १८—२७
	भोजराज		अलवर	,,	गद्य	३	२५ २×११·४ / २१—४०
				,,	पद्य १६		२५ ५×११ ८ / १३—४६
				हिन्दी-राज०	पद्य १४		२१ २×९ ८ / १८—३५
				प्राकृत	गद्य	२	२५ ०×११ ० / ११—२८
				,,	गद्य	२	२५ २—११ ५ / १४—३३
	मानाजी	१९०६ भा० सु० ५ गुरु०	अजमेर	,,	गद्य		२८ ६×१४·२ / १४—३२
				,,	गद्य		२५ ८×११ ७ / १४—४१
	दौलतराम	१८७० मा० कृ० १४	अजमेर	हिन्दी-राज०	ढाल २	१	२५ २×११ ५ / २०—४७
	आर्या लाछा	१८६६ जे० व० ७ सोम०	सवाई जयपुर	,,	गद्य	१	१७ ३×१० ४ / १९—२२

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
८१८	१८३२	४६/२	सास उसास का थोकडा		
८१९	१७६५	४४/३५	सास उसास का थोकडा		
८२०	११११/९	३२/६८	सास उसास सख्या		
८२१	५००	१७/२७	सिद्ध पाउडानी गाथा		
८२२	४५३	१६/५८	सिद्धान्त प्रश्न		
८२३	७५४/१	६४/२१	सिद्धान्त वोल		
८२४	५५	४/१५	सिद्धान्त समुच्चय सार		
८२५	२४९८/४	६३/९२	सिद्धान्त सार रा ६९ वोल		
८२६	१९२	१२/२१	सिद्धान्त सारोद्धार		
८२७	२४४३	६३/३७	सिद्धो के ३१ अतिशय		
८२८	१२२४	३५/३६	सोमन्दर स्वामी और जीवाजी के दो पत्र		
८२९	१६२८	४१/५८	सीमन्दर स्वामी की चिट्ठी		
८३०	१५५४/१७	४०/४	सूक्ष्म छत्तीसी	उदय रिख	
८३१	८६८/२	२७/३	सूत्रवादी का २५ वोल		
८३२	९५१	२८/	सूयग मागच्छ अध्ययनम्		
८३३	२९२	१३/५१	सैतालीस दोष टव्वा		
८३४	१६७७	४३/७	सोभाग्यमलजी शाह के प्रश्नो के पूज्य हीराचन्दजी महाराज के दिये उत्तर		
८३५	१५३०	३९/२०	सौ वोल का वासठिया		
८३६	१५३१	३९/२१	सौ वोल का वासठिया		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य	३	२० ३×१३ ० / १४—२५
		१९९३ भा० सुद ११		”	गद्य	१	२५ ४×११ ९ / १७—५२
				”	गद्य ५		२४ ३×१० ३ / १६—३४
				प्राकृत	गद्य ४	१	२५ ४×११ ७ / २०—४८
				हिन्दी-राज०	गद्य	१	२६ ०×११·० / १५—४०
	मुनि पोहकर			”	गद्य		२४ ६×११ ५ / १०—३६
				”	गद्य-पद्य	२३	२५ ५×१० ९ / १६—५१
				”	गद्य		२१ ६×११ ७ / १३—४३
				”	गद्य	५	२६ ०×११ ५ / २२—५०
				”	गद्य	१	२४ ७×१० ७ / १६—४५
				”	गद्य	४	२५ २×११ ८ / १३—३९
				”	ग्र०ग्र० १०० गद्य	३	२० ०×१० ० / १८—३५
औरगाबाद				”	पद्य ४		२९ ०×११ ७ / १९—४३
				”	गद्य		२१ ३×१० २ / १६—३७
				”	गाथा ३९	१	२५ ९×१० ८ / १४—४९
	तखतमल	१९३८भाद्रपद वद १ बुध०		”	गद्य	१	२५ ३×१२ ३ / २४—४२
				”	गद्य	२	२५ ०×११·२ / १४—३७
				”	गद्य सारिणी	६	२२ ६×१२ ३ / २४—२४
				”	सारिणी	२	२९ ८×११ ९ / ३९—३०

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पृष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
८३७	१४३७	३८/७	सौ बोल का बासठिया थोकडा		
८३८	१७६७	४४/३७	स्त्री वेद का अल्पबहुत्व का विचार		
८३९	१७४६	४४/१६	स्थविरावली विवरण (मूल प्राकृत, टीका सस्कृत)		
८४०	१२५१	३५/४५	स्थानाग सूत्र, चतुर्थ स्थान के बोल		
८४१	६५६	२८/५५	स्याद्वाद मत मतंतर कथनम्		
८४२	२३३०	६२/२	स्वार्थ सिद्ध विमान की सज्झाय	रिख रतिराम	
८२३	१८८८	४७/१८	हयाली सज्झाय सार्थ	कवि देवपाल	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि स्थल १०	भाषा ११	छद-संख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	सारिणी	३	२६ ० × ११ ५ / ८६—२८
				,,	सारिणी	२	११ ० × २५·७ / ६४—२१
				प्राकृत संस्कृत	पद्य ५० ग्र०ग्रं० १५६	५	२५ ३ × ११·० / १६—२८
				हिन्दी-राज०	गद्य	७	२५ १ × ११·२ / १६—४२
	भूरेलाव			,,	२०	७	२० ० × १० ३ / ४—१७
				,,	पद्य १३	१	२४·२ × १२·५ / १३—३३
	मुनि शिवराम			,,			२५ ८ × १०·८ / १६—५०

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
१	३५६/१	१४/९	श्रनानुपूर्वी यत्र श्रौर फल		
२	२०९३	५४/१०	गोपाल मत्र राज प्रयोग		
३	१३८६/२	३७/३६	घटाकर्ण महामंत्र स्तोत्र		
४	२९७/२	१३/५६	घटाकर्ण स्तोत्र		
५	१००२	३०/२०	घटाकर्ण स्तोत्र		
६	१६४९/२	४२/१९	घटाकर्ण स्तोत्र		
७	१५३९/३	३९/२९	मणिभद्र यत्र सविधि		
८	२४८८	६२/८२	सिद्ध दण्डि की गाथा व यत्र		

रचना स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		२३'९×१०'८ १७—४३
				संस्कृत	गद्य-पद्य	९	२४ ०×११'५ ७—१९
				”	४		२०'७×१०'९ १२—२६
				”	४		२१ ०×१० ९ १७—२७
				”	४	१	२१ २×११ ४ ७—२३
				”	४		१९ ८×१० ४ १३—३३
				हिन्दी-राज०	गद्य		२५ ६×१२ ५ १९—३७
				प्राकृत	१३	१	२६ १×११'० १२—४९

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्टांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	१८८६ / ३	४७ / १६	अग्निवास		
२	२२०३	५६ / २०	अट्ठारहवी सदी का फलादेश		
३	२०४६	५१ / ३६	अट्ठावीस नक्षत्र सज्भाय	ऋषभदास	
४	१८७०	४६ / ४०	अट्ठावीस नक्षत्रो के तारे और आकृति		
५	३८	३ / १६	करण कतूहल मूल	भास्कराचार्य	
६	१४०१	३७ / ५१	गोरख पत्रा		
७	२२२०	५७ / ११	ग्रह लाघव करण अन्वय दीपिका सहित	व्याख्याकार जीवनाथ सूरि	
८	१८७४	४७ / ४	चन्द्र और सूर्य संख्या का विचार		
९	१५४०	३९ / ३	चन्द्रगुप्त राजा का सोलह स्वप्ना	रायचन्द	१८६४
१०	२३४३	६२ / १५	चन्द्रगुप्त राजा के सोलह स्वप्न	जयमल	
११	१५०७	३८ / ७७	चन्द्रगुप्त राजा के सोलह स्वप्न की सज्भाय	जयमल	
१२	२४१३ / १	६३ / ७	चन्द्रगुप्त राजा के सोलह स्वप्नो का वर्णन	जयमल	
१३	२०११	५१ / १	चमत्कार चिन्तामणि	नारायण	
१४	४८३	१७ / १०	चमत्कार चिन्तामणि	नारायण	
१५	६१६ / १	१६ / ५१	चवदा स्वप्ना		
१६	६२५	१९ / ५७	चौघडिया		
१७	४४३	१६ / ४८	चौदह सुपना	चन्द्रवल राणी	
१८	१८२३	४५ / ५३	चौदह स्वप्नो की ढाल		
१९	४५५	१६ / ३०	चौदह स्वप्नो की सज्भाय		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				संस्कृत	३		२५ ० × ११ ५ १५—३३
				हिन्दी-राज०	गद्य	७	२५ ९ × १० ७ १८—५५
	गणि अमी कुशलजी	शनिवार		,,	१२	१	२० ७ × ९ ६ ९—३०
				,,		१	२५ ३ × ११ ० १३—२८
				संस्कृत	अध्याय १०	१२	२४ ५ × ११ ६ ९—३३
				हिन्दी-राज०	सारिणी	१	१८ ० × ९ २ १५—३६
				,,		३२	२३ ५ × १०·४ ९—२७
	चतुर्भुज		नोगावा	,,	सारिणी	१	२५ ५ × १० ६ २८—१५
फलोदी				,,	५५	९	२४ ४ × १३·९ १८—१६
				,,	४८	१	२५ ७ × ११ ८ १६—३३
				,,	४२	१	२३ ३ × १०·५ १६—११
				,,	५२		२५ ३ × १२ ० २१—४४
		१९५३ श्रा० सु० ६	सिरियारी	संस्कृत	५२	११	२३ ६ × ११ २ ११—२३
				,,	५२	६	२५ ४ × १२ १ १४—३७
				हिन्दी-राज०	२		२१ २ × ९ ८ १८—३५
				,,	सारिणी	१	२४ ० × ११ ८ १०—८
				,,	७	१	२० ६ × १०·९ १२—२७
	आर्या पन्ना			,,	ढाल ४	२	२२·० × ९ ९ १४—३२
				,,	२१	१	२० ३ × ११ २ १६—३७

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२०	१४६१	३८ / ३१	चौदह स्वप्नो की सज्झाय	सेवक	
२१	४६३	१६ / ६८	ज्योतिद्वार (जोति चक्र)		
२२	१०६० / ३	३२ / ४७	ज्योतिषी के नाम		
२३	२१६०	५६ / ७	ज्योर्निर्माणमाला	केशवाचार्य	
२४	३३३	१३ / ६२	तापक्षेत्र यत्रम्		
२५	१८६५	४६ / ३५	दस स्वप्न	रिख रायचन्द	
२६	२६१ / ३	१३ / ५०	दस स्वप्ना की सज्झाय	रिख रायचन्द	१८३३
२७	४४६ / १	१६ / ५४	दस स्वप्नो की सज्झाय	रिख रायचन्द	१८३३ चौमासे
२८	२३४०	६२ / १२	पचाग शुद्धि (चन्द्रा की वृत्ति सहित सोदाहरण)	दिनकर मौढ	
२९	६०८	१६ / ४०	प्रश्न मनोरमा		
३०	२११० / २	५४ / २७	फल विधि		
३१	११३६	३३ / २४	वहत्तर स्वप्ना फल सहित		
३२	६१७	१६ / ४६	वहत्तर स्वप्ना को विचार		
३३	१५६१	४१ / २१	महादेवी सूत्र		
३४	४७६ / २	१७ / ६	महावीर स्वामी का १४ स्वप्न		
३५	३३६	२० / ३	मुहूर्त और रात के नक्षत्र		
३६	४२८	१६ / ३३	योग मुहूर्त आदि		
३७	३७६	१४ / २६	योगायोग विचार		
३८	१२२७	३५ / २१	वर्ष ज्ञान पर भड्डुली के दोहे		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	ढाल २ पद्य १६		२४ ३×१२ ० २१—४८
	महात्मा पन्नालाल		नागोर	”	गद्य	३	२४ ५×१२ ० १५—३८
				”	गद्य		२७ २×१२ ८ १२—४०
				संस्कृत	स्तवक १४	२ से ३०	१६ १×१० ९ १५—४८
				”		१	२५ ५×१० ७
				हिन्दी राज०	१३	१	२४ ७×१० ३ १२—३९
मेडता				”	१५		२५ ३×११ २ २२—४१
मेडता				”	१५		२१ ०×११ २ ११—३९
	परमानन्द	१८५३ सु० ७	विक्रमशहरे	संस्कृत	गद्य पद्य	९	२५ ५×११ ७ १४—३६
				”	गद्य	६	२५ ३×११·५ २४—४८
	कल्याण	१८५६आश्विन शु० १०	कुचामण	हिन्दी-राज०	गद्य		२५ ५×११ २ १८—५०
				”	गद्य	३	२५ २×१० ६ १४—४०
				”	गद्य	१	२४ ४×१० ४ ३२—३०
				संस्कृत	४३	१	२५ २×११ २ १९—४९
				हिन्दी-राज०	१३		२३ ०×१० ५ १७—३९
				”	गद्य	१	२६ ०×११ ५ १२—४१
				”	गद्य	१	२७ ७×१२·६ १६—४
				”	गद्य	१	२५ ०×१०·९ १०—५४
				”	पद्य	६	२५·८×११·६ २१—४८

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३६	१८५३	४६/२३	वर्ष मास काढणी		
४०	१८७१	४७/१	विवाह वृन्दावन सटीक		
४१	३३२	१३/६१	शकुनावली		
४२	१४४६	३८/१६	शकुनावली (अवयव केवली)		
४३	२०१२	५१/२	शकुनावली के दोहे		
४४	७०३/८	२१/२०	शनि गुरु मंगल स्तोत्र		
४५	१६०६	४१/३६	शिवा गोरख पत्र चौघडिया		
४६	१४०६	३७/५६	सत्तावीस नक्षत्र फल		
४७	४०२/६	१६/७	सात वार ना फल		
४८	७४२	२४/६	सामुद्रिक		
४६	१८८६/४	४७/१६	सिद्ध योग		
५०	१६३८	४८/२८	सूर्य मंडल की परिधि		
५१	१६७०	४२/४०	सूर्यांश सारिणी		
५२	१४७/१	६/१२	सोलह सुपना	जयमल	
५३	११११/८	३७/६८	सौ वर्ष की दिन घडी		
५४	१७१५/१	४३/४५	स्वप्न विचार		
५५	२२१०	५७/१	होरा प्रदीप	दामोदर	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
		१९४८ चै० व० ४	जतारण	हिन्दी—राज०	सारिणी	१	२२ ६×१३ ० / १४—३८
	जोशी महेशदान	१९०४ जे० व० १ गुरु०	आगरा	सस्कृत	१६ अध्याय	५३ २रा नही	२६ ७×१२ २ / १२—३९
				हिन्दी-राज०	सारिणी	४	२५ ७×११ ६ / १६—४५
				"		६	२४'४×१० ७ / १२—३८
		१८२३ वै० शु० १३	विजयनगर	"	२८	१	२५ ६×१३ ४ / १६—३३
				सस्कृत	पद्य २०		२९ ५×१४ २ / १२—४१
				हिन्दी-राज०	सारिणी	१	२४ ०×१० ५ / २०—४५
				"	गद्य	१	२५ ०×१२ ० / २७—१७
				"	पद्य ७		२६ ५×११ ८ / २७—५३
	रामरतन ब्राह्मण	१८७४	राजगढ	प्राकृत	पद्य २२९ भाग ३	७	२५ ५×११ ९ / १२—४५
				हिन्दी-राज०	पद्य ३		२५ ०×११ ५ / १५—३३
				"	यत्र	१	१४ ७×९ ८ / १२—१८
				"	सारिणी	१	२७ ७×१२ ० / २२—६०
	पीरचन्द	१८७६ चै० व० ३ शुक्र०		"	ढाल १		२५ ०×११ ६ / १५—४३
				"	गद्य		२४ ३×१० ३ / १६—३४
				"	पद्य ७		२२ ०×१० ४ / १२—२८
				"	अध्याय ६३	५२ १३वा नही	२० २×११ १ / ११—३२

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	१५४	१६/५६	काल तथा द्वीप वर्णन		
२	१६८६	४३/१६	कालोदधि समुद्र की परिधि आदि विचार		
३	५३०	१७/५७	क्षेत्र समास टब्बा (सचित्र)		
४	६८६	२१/३	क्षेत्र समास टब्बा (सचित्र)		
५	६७४	२६/१	क्षेत्र समास टब्बा सहित		
६	११८२	३४/२	क्षेत्र समास टब्बा सहित	टब्बाकार पासचन्द सूरि	
७	२०८२	५३/१६	क्षेत्र समास टब्बा सहित यत्र सहित		
८	१०३	७/५	क्षेत्र समास प्रकरण टब्बा		
९	१०६०/५	३२/४०	छत्तीस देवलोक के नाम		
१०	१०६०/७	३२/४७	छप्पन अन्तर द्वीप के नाम		
११	१३८५	३७/३५	जम्बू द्वीप के खण्ड विचार		
१२	२०८४	५४/१	जम्बूद्वीप को विवरण		
१३	१६६/३	१२/२५	जम्बूद्वीप जन्म माहात्म्य और दृष्टान्त सग्रह	कुशल	
१४	१८७२	४७/२	जम्बूद्वीप संघयण सूत्र		
१५	२०६२	५४/६	त्रिलोकसार		
१६	४६०	१६/६५	भवणो ग्राहणाय पुत्र		
१७	७८	५/१६	लोक नाल		
१८	११६६	३४/१६	लोकनाली सूत्र टब्बा सहित		
१९	६४३	२०/१०	सोढ़ पच्चीस आरज देश		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य	१	२५ ० × १० ८ / १५—४०
				,,	सारिणी	१	२५ ५ × १० ७ / १९—४६
	शिवराज			प्राकृत	गाथा २४४	६२	२५ ५ × १० ७ / ६—३१
	प० हरचन्द	१६६४आषाढ व० ३	बीकानेर	,,	गाथा २६४ ग्रं ग्रं. १२२५	३ से ४२	२५ २ × ११ ५ / १३—२०
				,,		१०	२५ ५ × १२ ० / १४—५२
	ऋषि रामनाथ	१९०९ जे० सु० ४ रवि०	वाराणसी	,,	गाथा २६४	४४	२७ ३ × १२ ९ / २०—३८
	लाछाजी	१८३०	जयपुर	,,		६२	२६ ० × ११ २ / १३—३७
	गुणविजय	१९०९ भा० व०१०मंगल०	नागौर	,,		२ से ३९	२८ १ × १२ ८ / १६—३९
				हिन्दी-राज०	गद्य		२७ २ × १२ ८ / १२—४०
				,,	गद्य		२७ २ × १२ ८ / १२—४०
				,,	गद्य	१	२५ ७ × ११·५ / १५—३७
				,,	गद्य	२१	२६ ३ × १२ १ / ९—२८
				,,	१२		२५·८ × ११ ६ / ११—३७
			बीकानेर	प्राकृत	सूक्त ३०	१	२५ ५ × १० २ / १२—५०
				हिन्दी-राज०	गद्य	२ से ३९	२४ ६ × ११ २ / १३—४१
				प्राकृत	पद्य ७८	८	२६ ० × १३ २ / ११—३२
	ऋषि माईदास			,,		३	२७·१ × १२ ० / १७—४२
				,,		४	२५ ७ × १० ८ / १३—३७
				हिन्दी-राज०	गद्य	१	२५ ४ × १० ३ / १४—४३

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	४		२५ ६ × १२ १ / २२—५१
	विद्याविशाल	१७९८	चन्द्रपुर	प्र कृत	२५	२	२५ ८ × १० ९ / २१—७५
				”	४१	२	२६ ७ × १३ ० / १६—४०
				हिन्दी-राज०	सारिणी	१	४३ २ × २८ ५
	लब्धिचन्द		वीकानेर	संस्कृत	सारिणी पद्य ९	२	२६ ७ × २६·२

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुटांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	१८३१/३	३५/२७	प्रश्नोहिणी प्रमाण		
२	२१८७	५५/५१	गांगेय अधिकार		
३	१८२१	४६/१	गांगेय पृच्छा भंग प्रकरण	पद्मविजय	
४	२३२८	६१/२३	पहाडा बड़ी इग्यारह तक		
५	२२३२	६०/४	प्रस्तार गणना		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	४		२५ ६ × १२ १ / २२—५१
	विद्याविशाल	१७९८	चन्द्रपुर	प्र कृत	२५	२	२५ ८ × १० ९ / २१—७५
				"	४१	२	२६ ७ × १३ ० / १६—४०
				हिन्दी-राज०	सारिणी	१	४३ २ × २८ ५
	लब्धिचन्द		बीकानेर	संस्कृत	सारिणी पद्य ९	२	२६ ७ × २६·२

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	२४९८/३	६३/९२	अट्ठारह देशो के राजाओ का विचार		
२	१७१४	४३/४४	अतीत वर्तमान चौबीसी नाम		
३	११४०	३३/२५	चौबीस तीर्थंकर का लेखा		
४	१४४५	३८/१५	चौबीस तीर्थंकर की आयु		
५	१२९	८/११	चौबीस तीर्थंकर को लेखो		
६	५८३	१६/१५	चौबीस तीर्थंकर को लेखो		
७	१०७१	३२/२८	चौबीस तीर्थंकर को लेखो		
८	१६५५	४२/२५	चौबीस तीर्थंकर को लेखो		
९	१०९९	३२/२६	चौबीस तीर्थंकर नो लेखो		
१०	१४६३	३८/३३	चौबीस तीर्थंकरो का आंतरा	आसकरण	१८५१ चौमासा
११	१३५०	३६/८०	चौबीस तीर्थंकरो का २२ बोल का लेखा		
१२	११०८	३२/६५	चौबीस तीर्थंकरो का लेखा		
१३	१६५९	४२/२९	चौबीस तीर्थंकरो का लेखा		
१४	२२३९	५८/१६	चौबीस तीर्थंकरो का लेखा (सतर सउवारा यंत्र)		
१५	१८०६/२	३७/५६	चौरासी गच्छ के नाम		
१६	२४९९/१	६३/९३	तीर्थंकर चौवीस का अन्तरा		
१७	१३१०	४३/४०	तीर्थंकर नं आंतरो		
१८	२३४	१२/६३	तीर्थंकर विह नाम और साधु साध्वियो के नाम सटिप्पण		
१९	३१६/२	७३/७५	दस श्रावको को लेखो		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य		२६०×११४ / २८—२१
				,,	सारिणी	१	२२·६×१०७ / २६—९
				,,	गद्य	६	२४·२×११४ / १३—३५
				,,	सारिणी	१	२४५×१०·३ / ३२—१८
		१९४४ पौ० सु० ८ गुरु०		,,		७	२६·१×१११ / १३—४०
				,,	सारिणी	६	२७१×११५ / १६—२०
	आर्या ज्ञान		जयपुर	,,	गद्य	४	२३५×११·० / १९—३८
				,,	गद्य	२ से ५	२४·६×१२·० / १९—३७
	आर्या ज्ञानाजी		अलवर	,,	गद्य	३	२५२×११० / १७—३५
वीकानेर				,,	गद्य	१	२२५×११७ / १३—२९
				,,	गद्य	८	२०५×१०९ / १५—३७
				,,	गद्य	६	२००×११२ / १६—३२
				,,	सारिणी	१	६७·०×४२·५ / २६—१०४
				,,	सारिणी	५२	२४·६×१०·७ / ८—३५
				,,	गद्य		२५·३×१०·८ / २१—५१
				,,	गद्य		२६०×११४ / २८—२१
				,,	गद्य	१	२४५×११·० / ४७—३८
				,,	गद्य	२	२६६×१२·५ / ३०—३१
				,,	गद्य		२२७×१०१ / १३—३३

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२०	९७३	२८/७२	पट्टावली		
२१	१६९५	४३/२५	पट्टावली		
२२	५९७/१८	१९/२९	वाइस टोलो के नाम		
२३	१४०६/३	३७/५६	वारह मत का नाम		
२४	१६३८/२	४२/८	वीकानेर की निशानी		१९२० आषाढ
२५	१९४३	४८/३३	महावीर पछाली पट्टावली		
२६	१५८६	४१/१६	लेखा, जिन चक्री और वासुदेवो का		
२७	२४९९/३	९३/९३	वर्तमान जिनभव		
२८	१६५४	४२/२४	विनति पत्र		
२९	१६६६	४२/३६	विनति पत्र	मद्रासी साधर्मी	
३०	१४०६/४	३७/५६	विभिन्न गच्छो की उत्पत्ति		
३१	१५१८	३९/८	साधुमार्गीय सम्प्रदाय पट्टावली		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य	२	२४०×११·८ / २४—४४
				”	गद्य	३	२६·२×११·१ / १४—४४
				”	गद्य		२५·२×११·४ / ३२—४८
				”	गद्य		२५·३×१०·८ / २१—५१
				”	१५		२७·०×१२·५ / १२—६१
				”	गद्य	१	२५·२×१०·७ / १६—५१
	वुद्धमल	१९२३ चै० शु० १२	नागौर	”	सारिणी	१	२५·५×१०·५ / १६—४१
		१८५५ आषाढ शु० १		”	गद्य		२६·०×११·४ / २८—२१
				”	गद्य	३	३४·२×११·६ / ३८—३२
	मद्रासी साधर्मी		मद्रास	”	गद्य	१	८३·०×१६·८ / ७७—१८
				”	गद्य		२५·३×१०·८ / २१—५१
				”	गद्य	१७ १,११,१३ नहीं	१५·८×१२·५ / १४—२०

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
२०	९७३	२८/७२	पट्टावलो		
२१	१६९५	४३/२५	पट्टावली		
२२	५९७/१८	१९/२९	वाइस टोलो के नाम		
२३	१४०६/३	३७/५६	वारह मत का नाम		
२४	१६३८/२	४२/८	वीकानेर की निशानी		१९२० आषाढ
२५	१९४३	४८/३३	महावीर पछाली पट्टावली		
२६	१५८६	४१/१६	लेखा, जिन चक्री और वासुदेवो का		
२७	२४९९/३	६३/९३	वर्तमान जिनभव		
२८	१६५४	४२/२४	विनति पत्र		
२९	१६६६	४२/३६	विनति पत्र	मद्रासी साधर्मी	
३०	१४०६/४	३७/५६	विभिन्न गच्छो की उत्पत्ति		
३१	१५१८	३९/८	साधुमार्गीय सम्प्रदाय पट्टावली		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	गद्य	२	२४०×११·८ / २४—४४
				"	गद्य	३	२६·२×११ १ / १४—४४
				"	गद्य		२५ २×११ ४ / ३२—४८
				"	गद्य		२५ ३×१० ८ / २१—५१
				"	१५		२७·०×१२ ५ / १२—६१
				"	गद्य	१	२५ २×१०·७ / १६—५१
	बुद्धमल	१९२३ चै० शु० १२	नागौर	"	सारिणी	१	२५·५×१०·५ / १६—४१
		१८५५ आषाढ शु० १		"	गद्य		२६ ०×११·४ / २८—२१
				"	गद्य	३	३४ २×११ ६ / ३८—३२
	मद्रासी साधर्मी		मद्रास	"	गद्य	१	८३ ०×१६ ८ / ७७—१८
				"	गद्य		२५ ३×१० ८ / २१—५१
				"	गद्य	१७ १,११,१३ नहीं	१५ ८×१२ ५ / १४—२०

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
१	२३०५	६०/३	चरक सहिता	चरकाचार्य	
२	२३०३	६०/१	माधव निदान	माधवाचार्य	
३	२४५४	६३/४	रोगापहार स्तोत्र	मनीराम	
४	५३३/२	१७/६०	रोगी परीक्षा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
		१७०९ फा० व० ४	जयपुर	संस्कृत		१७३	२२ ६×१३ २ / ११—२३
	रिख अनूपचन्द	१९२० श्रा० कृ० ५		”		८६	२७ ८×१३ ३ / ९—५२
				हिन्दी-राज०	पद्य १५	१	२४ ६×१० ५ / १४—३५
				”	पद्य ५	१	१७ ८×११ २ / १५—३१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	२०२४	५१ / १४	उपमा पत्र		
२	२०४१ / १	५१ / ३१	झमक बंध चंद (चित्र काव्य)		
३	५६७ / १५	१६ / २६	तीस साधुओं की उपमा		
४	१८११	४५ / ४१	बत्तीस उपमा		
५	४३२ / २	१६ / ३७	बत्तीस शील की उपमा		
६	२८४	१४ / ३७	रस मञ्जरी	भानुदत्त	
७	२४४६ / २	६३ / ५०	शील की उपमा		
८	६४० / १	२० / ७	शील की बत्तीस उपमा		
९	११११ / ४	३२ / ६८	शील की बत्तीस उपमा		
१०	२३२७	६१ / २२	शील की बत्तीस उपमा		
११	६६८ / १६	१६ / २६	शील की बत्तीस उपमा		
१२	५६७ / १७	१६ / २६	शील की सोलह उपमा		
१३	८६५	२५ / २२	साधु उपमा		
१४	२३१४	६२ / १६	साधु की चौपन उपमा		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
					गद्य	३	२४ ८×११ ० / १३—३७
						७	२६ ३×११ ८ / ११—३३
					गद्य		२५ २×११ ४ / ३२—४८
	आर्या पन्ना			हिन्दी-राज०	पद्य ३२	१	२४ १×१० ६ / १६—३८
				”	गद्य	२	२५ ०×११ ५ / १६—४९
मिथिला				संस्कृत	पद्य १३८	२०	३० ०×१० ५ / ८—४१
				हिन्दी-राज०	गद्य		२२ ४×१० ८ / १३—३८
	आर्या लाछा	१८४०	किशनगढ	”	गद्य		२५ ४×१० ४ / १७—३८
				”	गद्य		२३ ३×१० ३ / १६—३४
				”	गद्य		२४ ९×१० ६ / १५—३८
				”	पद्य ३२		२६ ७×१०·४ / १९—४६
				”	गद्य		२५ २×१० ४ / ३२—४८
				”	गद्य	१	२५ ७×११ ३ / २०—३९
				”	गद्य	१	२६ ३×११ ५ / १६—४७

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	१२२५	२५/१६	अनेकार्थ माला भाषा	नन्ददास	
२	८	१/८	अभिधान चिन्तामणि न ममाला (अपूर्ण)	हेमचन्द्राचार्य	
३	३८२	१४/३५	अभिधान चिन्तामणि नाममाला	हेमचन्द्राचार्य	
४	७३२	२३/७	अभिधान चिन्तामणि नाममाला टीका	हेमचन्द्राचार्य	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र स० १३	आकार १४
		१८०० फा० सु० ४		हिन्दी व्रज	१२२	४	२०० × ११४ / १९—४५
				सस्कृत	काड ३	५४	२६८ × ११८ / १३—४१
		१६७८आसोज सु०१० शनि०		”	काड ६	४४	२६२ × १११ / १५—४६
	प० भाना	१६५५		”	काड ६ ग्र १००००	१७२ १२०, १४१ नहीं	२६६ × ११० / १७—५७

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	२१८३	५५/५७	धातु पाठ		
२	१९६४	४६/१४	मातृका पद		
३	८१	६/२	सज्ञा व पच सधि प्रकरण		
४	१२२०	३५/१४	सारस्वत अवचूर्णि		
५	२४१	१२/७०	सारस्वत पच सवि		
६	२१३६	५५/१३	सारस्वत पच सधि प्रकरण		
७	२३२४	६१/१६	सारस्वत प्रक्रिया तद्धित प्रक्रियान्त	मदनभूति स्वरूपाचार्य	
८	८१५	२५/२२	सारस्वत व्याकरण पच सधि प्रकरण पर्यन्त		
९	३२१	१३/८०	सारस्वत सज्ञा प्रकरण टब्बा		
१०	६६१	२१/८	सारस्वत सूत्र मूल		
११	२१७२	५३/६	हेम चन्द्रिका बालावबोधिनी टीका सहित पुल्लिग व्यञ्जनात		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
	त्र्यबक	१६७२ का० सुद २ बुध०		सस्कृत	गद्य	१९	२१ ५ × १० ० / १२—३०
				”	गद्य	१	२४ ५ × ११ ५ / १७—४४
				”	गद्य	९	२४ ४ × ११ ४ / १० – २९
	मुनि कर्पूरविजय			”	गद्य	७	२५ ३ × १० ९ / २०—५५
				”	गद्य	१७	२९ १ × १४·० / १२—३८
	महात्मा पूनमचन्द	१९१४ पो० ब० ९	नागोर	”	गद्य	४	२४ ८ × ११ ९ / १५—३९
		१८६८	देशनोक	”	गद्य	२०	२५ ५ × ११ ५ / १३—४७
	जिनरग सूरि	१७४९ माघ शु० १	किशनगढ	”	गद्य	२६	२५ ६ × १० ८ / १३ –४२
				”	गद्य	६	२० ३ × ११ ० / १४—३१
				”	सूत्र	८	२७ ७ × १० ६ / ८—१३
				”	गद्य	९	२३ ४ × ११ २ / १२—२०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१	६४४/११	२०/११	अनु दे दो मेरी माय	किशनलाल	
२	६४४/१	२०/११	अनुमति दे दो मेरी माय	किशनलाल	
३	२३४१	६०/१३	आसिक पच्चीसी		
४	२३७३	६२/४५	ऋषभदेव को बारामासियो	मूलचन्द	
५	२४७/११	१३/६	कठिन लगन की पीड रे		
६	२४६१	६३/२५	कुदणाजी आर्या की पोथी की सूची		
७	२२१७	५७/८	कुलार्णव महारहस्य		
८	२०३३	५१/२३	कृष्ण को बारामासो		
९	२२९८	५६/४६	कृष्णजी को कामण		
१०	१४९९/५	३८/६६	कृष्णदान लीला		
११	२०४५/१	५१/३५	गूजरी की सज्झाय		
१२	१४९५	३८/३५	गौतम से एवता की विनती	लिखमीरतन	
१३	६३६/१	२०/३	चार प्रकार की स्त्रियो के लक्षण		
१४	१९०१	४७/४१	जोनक री ढाल		
१५	१६३१	४२/१	तर्क संग्रह आशिक टिप्पणी	अनन्तभट्ट	
१६	१२२६	३५/२०	दर्शन विचार		
१७	१८८३	४६/१३	नेमजी का बारामासा	[illegible] कुशालचन्द्र	चौमासे
१८	५२३/२	१७/५०	नेमजी का स्तवन		
१९	१५५३/[illegible]	४०/३	नेमजी की ढाल		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-मवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	१३		२५·८×११·५ / १५—३५
				"	११		२५·८×११·५ / १५ ३५
				"	२५	१	२५·३×११·५ / १७—६१
	उमेदविजय	१९०२ पौ० सु० ११	मेडता	"	१५	१	२४·६×११·० / १०—२६
				"			२५·६×१२·० / १५—४१
				"	गद्य	१	१६·९×१०·३ / ३६—२१
		१७७३ मगसर बद ६ गुरु०	जोधपुर	सस्कृत	अध्याय १७	२ से ५०	२६·५×१०·८ / १५—५२
				हिन्दी-राज०	१४	१	२४·८×१०·८ / १६—३३
				"	१६	२	२१·४×१४·४ / ११—३०
				"	४३		२१·२×११·६ / १९—३२
	पन्ना आर्या			"	७	१	२४·५×१०·२ / १०—३३
				"	१७	२	२५·३×९·६ / १२—३७
				सस्कृत	१४		२१·७×१०·५ / ९—३४
				हिन्दी-राज०	ढाल ३	२	२४·२×१०·८ / १४—४६
				सस्कृत		७	२७·५×१२·८ / १२—३०
				"	गद्य	४	२६·८×११·८ / १२—४१
सोजत				हिन्दी-राज०	१७	१	२१·५×११·४ / १५—२४
				"	५		२६·४×१०·७ / ३५—२०
				"	५		२५·२×१२·० / २०—४३

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ—नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
२०	५६४/२	१६/२६	नेमजी की विनती (नेमजी को बारामासो)		
२१	२०४७	५१/३७	नेमजी को बारामासियो		
२२	२४६६	६३/६०	नेमनाथजी की जान		
२३	७४६	१४/१३	नेमनाथजी रो बारामासियो		
२४	२११४/२	५४/३१	नेमनाथ राजमति बारामासियो	विनयचन्द	
२५	८०६/२	२५/१३	नेम बारहमासा	ऋषि सुजानमल	१९५२ वै० शु० ३
२६	२१८५/२	५६/२	नेम बारामासिया	रिख सुजानमल	१९२८ वै० सु ३
२७	१५६	११/१	नेम राजमती का बारामासा		
२८	१२६१	३५/५५	नेम राजमती का बारामासा		
२९	१२६३/१	३५/५७	नेम राजमती बारामासा	लाल विनोद	
३०	२२६०	५६/८	नेम राजमतो बारामासा	रूपविजय	
३१	१०६/१	७/११	नेम राजल चौमासो	चन्द जिनन्द	
३२	६२२	२८/११	नेम राजल बारामासिया		
३३	३६२	१४/१५	पद (भजन)	रतनचन्द	
३४	१६०८/५	४१/३८	पद (भजन)		
३५	२०३८	५१/२८	पद (भजन)		
३६	२२६२/३	५६/४०	पद (भजन)	जिनचन्द्र	
३७	१७४१/२	४४/११	पद गर्भ सम्बन्धी	प्रेमसुख भोजक	
३८	२८१/२	१३/४०	पद्य संग्रह		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	१४		२४०×१०६ / १६—४०
				"	६	१	२५२×१०२ / १३—२८
				"	गद्य	१	१६६×१०·२ / ११—३२
				"	४०	२	२५८×१२५ / १३—३६
रामनगरे				"	पद्य २३	४	१६८×१०४ / १५—३४
				"	पद्य १३	६	२७२×१२·८ / १५—५७
अजमेर				"	१३		२७१×१२७ / १३—४६
				"	१४	१	२५८×१०३ / १२—३२
				"	२६	१	२४६×१०७ / १५—४१
					२६		२११×१०५ / १६—४७
				"	३५	१	२४३×११० / १६—४८
				"	८		२३५×१०३ / १६—३६
				"	१४	३	२४८×१०८ / ८—३६
				"	६	१	२४७×१२८ / २१—४
				"	२८	२	२४४×११३ / १६—३८
		१६०६ वै० वद ६		"	१३	१	४१८×१०३ / २८—१७
				"	पद्य ४	१	२६३×११५ / १६—३१
				"	पद्य ६		६५५×३३१ / ४—११८
				"	पद्य १७		२६२×१०८ / १२—४१

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
३९	११५९	३४/४४	पुरुष की ७२ कला		
४०	१२३३	३५/२७	पेट के रोग का मंत्र		
४१	८६६	२७/१	प्रमेय कमल मार्तंड परीक्षा मुखालंकार	प्रभाचन्द	
४२	१४९२	३८/६२	फुटकर कवित्त	विनोदीलाल	
४३	१४९९/२	३८/६९	फुटकर पद		
४४	१७९४/२	४५/२४	फुटकर पद		
४५	५८२/२	१९/१४	फुटकर पद		
४६	१३९३	३७/४३	फुटकर पद		
४७	१४४१	३८/११	फुटकर पद संग्रह	जिनहर्ष,केशवदास	
४८	२३९५	६२/६७	फुटकर पद	सुनर कवि	
४९	२५०	१३/९	फुटकर सवैया	धर्मसी	
५०	१०९/२	७/११	वटाऊ के गीत	श्याम	
५१	१५९८/१	४०/१८	वारहमास को स्तवन		
५२	१७४१/१	४४/११	वारामासा	हीराचन्द सोनी	
५३	१७४१/६	४४/११	वारामासा		
५४	३८१	१३/१००	वारामासिया दो	हर्षकीर्ति, ऋषभसुन्दर	
५५	१९७३/१	४९/२३	वारामासियो		
५६	५२१/२	१७/४८	वारामासियो		
५७	५४९	१७/४९	वारामासियो	रतनचन्द	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
		१८८३ आसोज सुद १३		हिन्दी-राज०	गद्य	१	२३८×११० / ३३—२४
				,,	गद्य	१	२४७×११४ / १४—४१
	महात्मा शंभुराम	१८८४ सा० शु०१४सोम.	जयपुर	संस्कृत	परि०६	४०७	२८३×१२·६ / १०—४०
				हिन्दी-राज०	पद्य ६	१	२२२×१०५ / १७—३५
	आर्या फूलाजी	१९०७ पो० बद २	गढखेडा	,,	१४		२१२×११६ / १४—३२
				,,	पद्य ३४		२५०×११० / १७—४८
				,,	पद्य ५		२५३×११४ / १२—४१
				,,	२८	१	२५२×११·० / १६—४१
नागौर				,,	२४	१	२५८×११६ / १८—४७
				,,	४	१	२१५×१०३ / ११—२७
		१९४२ आषाढ सु० ९		,,	२४	१	२५६×११७ / २२—६०
				,,	११		२२५×१०० / १६—३९
				,,	१३		२४८×१०३ / १७—४०
				,,	१२		६५५×३३५ / ४६—११४
				,,	१३		६५५×३३५ / ४६—११४
				,,	पद्य २३+१३	१	२५०×११० / १९—५१
				,,	पद्य १३		२४७×११७ / १४—३०
				,,	१४		१८१×९३ / १५—३७
	सगरू	१९०७ सा० कृ० ५	अलवर	,,	१३	३	२६०×११० / ८—३६

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पुष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
५८	६७८/१	२०/४५	बारामासियो स्तवन	रगवल्लभ	६२ ...फा०सु०१४
५९	१९५६/२	४६/७	बारामागियो		
६०	१५५८/४०	४०/३	बारामासी सज्झाय		
६१	६६०/२	३०/८	बारामासो	मगलदास	
६२	१७४१/४	४४/११	बारामासो	जालीराम	.. सावरण सु १३ सोमवार
६३	२४७/१	१३/६	बीत दिना की प्रीत	रिख जसरूप	
६४	३६२/२	१४/१५	ब्राह्मण के पाच लक्षण		
६५	११५	७/१७	महावीर दसूटन विधि		
६६	२४७/१२	१३/६	मानो की उनगाज कुमारी		
६७	४७५	१७/२	मूर्ख का ६० बोन		
६८	१४८४	३८/५४	मूर्ख के ८४ लक्षण		
६९	२०२२/२	५१/१२	मेवकुमार को बारामासो		
७०	२४८१	६३/७५	मेडतिया श्री सघ की विनती	खुशालसुन्दर	१८३२ मगसर सु० २
७१	२४७/८	१३/४	मैं वारी हो नेमजी	रूपचन्द	
७२	१९८८	४८/३४	राखडी		
७३	१५००	३८/७०	राखडी का पद		
७४	१३७८/१	१७/२८	राजमती का वैराग्य गीत		
७५	१५५३/३२	४०/३	राजमती की अरज		
७६	१५५३/३३	८०/३	राजमती की अरज		

रचना स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
	पन्ना आर्या			हिन्दी-राज०	१५		२५ ६ × १० ६ १७—५५
				,,	१३		२५ ५ × १० १ १४—२३
				,,	पद्य १५		२६ ०—११ ७ १६—४५
				,,	पद्य ६		२६ ० × ११ २ १८—४०
				,,	पद्य १३		६५·५ × ३३ ५ ४६—११४
				,,	पद्य ४		२५ ६ × १२ ० १५—४१
				संस्कृत	५		२४ ७ × १२ ८ २१—४६
	जोशी देवकृष्ण	१९३९ आसोज वद ८	जयपुर	हिन्दी-राज०		३	२४ ५ × १० २ ११—४९
				,,	पद्य ६		२५ ६ × १२ ० १५—४१
	आर्या पन्ना	१८६८	अलवर	,,	गद्य	२	२३ ० × ११ ० १५—३२
				,,	गद्य	२	२२ ४ × ११ १ ११—३४
				,,	पद्य १४		२५ ० × १० ८ १०—३९
				,,	पद्य ११	१	२५ ३ × १० ७ १२—४८
				,,	पद्य ५		२५ ५ × १२·० १५—४६
	आर्या छगना		निराटिया	,,	पद्य १९	१	२५ ६ × १० ८ १९—३६
				,,	पद्य १६	१	१७ ५ × ११ ३ २१—२३
				,,	पद्य १७		२६ १ × ११ ६ १२—३३
				,,	पद्य १६		२५ २ × १२·० २०—[illegible]
				,,	पद्य ५		२५ २ × १२ ० २०—४३

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
७७	१५५३ / ३४	४० / ३	राजमती की अरज		
७८	१५५३ / ३५	४० / ३	राजमती की अरज		
७९	१६२४ / १	४८ / १४	राजमती को बारामासियो		
८०	१६२६ / ७	४८ / १६	राजमती को बारामासियो		
८१	४८१ / २	१७ / ८	राजल बारामासियो		
८२	१४२२	३७ / ७२	राजुल नेमनाथ का बारहमासा		
८३	१६१	११ / ३	राजुल सम्बन्धी पद		
८४	४७७ / २	१७ / ४	राधा बोलना अमृतवाणी		
८५	१२३१ / ४	३५ / २५	राम कटक		
८६	११६	७ / १८	राम सीता वियोग ढाल		
८७	१३०७	३६ / ३७	रिसालू का दोहा		
८८	१७८२	४५ / १२	रूक्मणी को चुडलो		
८९	१६१६ / ४	४८ / ६	रूपटा	हेमराज	१७१२
९०	११५१	३३ / ३६	लघु चरणायका		
९१	२०१६ / २	५१ / ६	लावणी		
९२	६४४ / १४	२० / ११	वामानन्दा राख हमारी लाज	किशनलाल	
९३	४०२	१६ / ७	विभिन्न फुटकर पद		
९४	१६३३ / ७	४२ / २	विभिन्न फुटकर पद		
९५	१६३२ / ५	४२ / २	विभिन्न फुटकर पद		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-संख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिन्दी—राज०	पद्य ५		२५ २×१२·० / २०—४०
				”	५		२५·२×१२·० / २०—४३
				”	पद्य २५		२२ ७×११ ३ / १७—३०
				”	पद्य १८		२४ ७×११ ४ / २०—४८
				”	पद्य २०		२३ ७×१० ५ / १६—४५
	आर्या लाछा	१८७३मिगसर ब० ५ रवि०	जयपुर	”	१८	१	२५·२×१०·६ / १८—४९
				”	१५	१	२४ ८×११ ८ / १६—४०
				”	पद्य १५		२४ ५×१० ८ / २०—३७
				”	पद्य २१		२५ ६×१२ १ / २२—५१
				”	१९	१	२५·२×११·२ / १५—३८
				”	६५	४	२६·४×१२ ६ / १४—३१
				”	१५	१	२५ ८×१२ ३ / २१—४२
अलवर				”	७		२६ २×१३ ० / १६—५३
	मजूलाल			”	पद्य १३	४	२६ ०×११ ४ / ९—२२
				”	९		२५ ६×१०·७ / १४—४०
				”	७		२५ ८×११ ५ / १५—३५
				”	विभिन्न		२५ ५×११ ८ / २७—५३
				”	पद्य २५		२५ ५×१३·४ / १९—४७
				”	पद्य ९९		२५ ५×१३ ४ / १९—४७

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पृष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
९६	१६३२ / ६	४२ / २	विभिन्न फुटकर पद		
९७	१६६६	५० / ६	विविध पद	कबीर, रतनचन्द आदि	
९८	२४७७	६३ / ७१	विविध पद	मूलो केसोराम	
९९	४०२ / १-२०	१६ / ७	विविध स्तवन सज्झाय संग्रह	रेखजी, देवीदास जेठो आदि	
१००	२४६३ / १	६३ / ५७	वीर के अभिग्रह की सज्झाय	रिख दुर्गादास	
१०१	२३३६	६२ / ८	वीर पारणा	मुनि भाल	
१०२	४२२	१६ / ६७	व्रजवासी ल्यायो घूंघरा		
१०३	१७०२	४३ / ३२	वृद्धि शान्ति		
१०४	३५३	१८ / ६	शत पचासतिका संग्रह टब्बा		१६६९ चैं० सु० १३
१०५	१३३२ / २	३६ / ६३	श्रेणिक तीर्थंकर पद पासी सज्झाय	रिख रायचन्द	१८४६ चौ०
१०६	१३९२ / १	३७ / ४२	श्रेणिक नृप तीर्थंकर पद पासी स्तवन	रायचन्द	
१०७	१४८० / २	३८ / ५०	श्लोक		
१०८	१७३७ / २	४४ / ७	श्लोक		
१०९	१२३७	३५ / ३१	श्लोक फुटकर		
११०	१३९० / २	३७ / ४०	सज्झाय	रिख रायचन्द	
१११	१६५२ / १	४२ / २२	सज्झाय	पदम उदय	
११२	१८०९ / ७	४५ / ३९	सज्झाय	समय सुन्दर	
११३	२२०४ / ५	५६ / २१	समस्त चैत्र पवाडी गीत	लाभ उदय	
११४	१८८	१२ / १७	सवइया	विभिन्न कवि	

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र-सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	पद्य ५२		२५ ५×१३ ४ / १६—४७
				”		१	२८ ७×११ २ / १७—५८
				”	७	१	२४ ६×१० २ / १४—४६
				”		६	२६ ५×११ ८ / २१—५५
				”	पद्य १४		२२ ०×१० २ / १४—३३
				”	पद्य २६	२	२६ ७×१२ ५ / ११—२८
				”	६	१	२० २×६.५ / १४—३१
				”	गद्य-पद्य	१	२५ ६×१० ३ / १०—३२
	सावतजी	१७७१ आसोज सु० २ बुध०	स्यालकोट	प्राकृत		२ से १६	२५ ०×१० ७ / १७—४०
मेडता				हिन्दी-राज०	पद्य १६		२३ ६×१० ६ / १७—४०
				”	पद्य १४		२५ २×११ ० / १६—६१
				”	पद्य १		२५.५×११ ४ / १५—४२
				”	पद्य ११		२४ ३×११ ० / १६—४१
				संस्कृत		१	२६ १×११ ७ / १६—४१
				हिन्दी-राज०	१७		२५ ५×११ ८ / २०—४६
				”	पद्य ५		२५ २×११ ५ / १६—३७
महदापुरनगरी				”	पद्य ८		२६ ०×१० ५ / १८—३६
				”	पद्य १४		२५ ७×११ ० / १८—३६
				”	गद्य	२	२८.२×११ ६ / १६—३१

क्रमाक १	ग्रन्थाक २	पृष्ठाक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-सवत् ६
११५	२११/५	१२/४०	सवैया		
११६	२६७/२	१३/३६	सवैया		
११७	२७४	१३/३३	सवैया	वालचन्द	
११८	२६२/४	१४/१५	सवया	ब्रह्म हरलाल	
११९	१४७/३	९/१२	सवैया		
१२०	१२५०	३५/४४	सवैया		
१२१	१३४६	३६/७६	सवैया		
१२२	१६२१	४१/५१	सवैया	केशवदास	
१२३	१४७७	३८/४७	सवैया कुशु लिया	कुशालचन्द	
१२४	३२५/७	१३/८४	सवैया दोहा		
१२५	२१६४	५५/३८	सवैया व छप्पय	राम, सुन्दर, शिचन्द माडण	
१२६	३६८/२	१४/२१	सवैया व दोहा	लालचन्द	
१२७	२४५०	६३/४४	मवैया स्तवन	ज्ञान सुन्दर	
१२८	५३४	१७/६१	सवैया कवित्त फुटकर		
१२९	१७४/३	१२/३	सिभाय		
१३०	१८०९/५	४५/३९	सिभाय		
१३१	१८२७/१	४५/५७	सिलोक		
१३२	२४६०	६३/५४	सीधोवरण व वारा अक्षरी		
१३३	१९८१	४९/३१	सिधोवरणा पाटी २ प्रति		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-संवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छंद-संख्या १२	पत्र सं० १३	आकार १४
				हिन्दी-राज०	पद्य ३		२६ ३×१२ ७ / १०—४१
				”	पद्य ५		२६ ०×११ ३ / १६—५३
				”	पद्य ३२	३	२५ ७×११ ८ / १८—३८
				”	पद्य २		२४·७×१२ ८ / २१—४६
				”	पद्य १		२५ ०×११ ६ / १५—४३
				”	पद्य ६	१	२० ६×११ ० / १०—३५
	पीरचन्द	१८८५ चै० सु० ११	जयपुर	”	पद्य ५	१	१४ ४×१० २ / १३—२३
				”	पद्य ६	१	२४ ०×१० ० / १७—४१
	छोगालाल	१९३३ भा० सु० ७	पाली	”	पद्य ११	१	२५ ७×१२ ० / १७—५१
				”	पद्य ४		२३ ६×११ २ / १३—४७
				”	पद्य ११	१	२२ ५×१० ४ / १४-४१
				”	पद्य ५		१६ ७×१० ६ / १७—३२
	बुद्धमल	१९०६ वै० बद ४	जयपुर	”	१०	१	२२ ६×१० ७ / १०—२८
				”	३	१	१७ ३×११ ६ / १८—१६
				”	पद्य २५		२५ २×१० ८ / २१—४७
				”	७		२६ ०×१० ५ / १८—३६
				”	४		२२ ८×६ ५ / १४—३०
				”	गद्य	१	२०·८×१०·३ / १४—२७
				”	गद्य	२	२१ २×१०·७ / ८—२०

क्रमांक १	ग्रन्थांक २	पुष्ठांक ३	ग्रन्थ-नाम ४	ग्रन्थकार ५	रचना-संवत् ६
१३४	२१५८	५५/३२	सुहागण की सज्झाय	कुशल	
१३५	३२५/१३	१३/८४	सोकडली को साल		
१३६	३००/२	१३/५९	सोकडली री सिज्झाय		
१३७	१५८३/८८	४०/३	सोकडली रो साल सुमत कुमत की ढाल)		
१३८	६४२/२	२०/९	सोचकर १० बोल		
१३९	६४२/३	२०/९	सोचकर १० बोल		
१४०	१४२५/२	३७/७२	सोलह सिंगार		
१४१	२३३३	६२/५	सोनी ढाल	रिख चन्द्रभाण	१८६४ काती सु० ४
१४२	२४५९/१	६३/५३	स्त्री का १४ ठिकाणा		
१४३	२४०५	६२/७७	स्थूलभद्र मुनि बारामासिया		

रचना-स्थल ७	लिपिकार ८	लिपि-सवत् ९	लिपि-स्थल १०	भाषा ११	छद-सख्या १२	पत्र-स० १३	आकार १४
				हिंदी-राज०	पद्य २०	१	२४·६ × १०·७ / १८--४८
				"	पद्य ९		२३ ६ × ११ २ / १३—४०
				"	पद्य ९		२५·२ × १०·७ / १५—४५
				"	पद्य ८		२५ २ × १२ ० / २०—४३
				"	गद्य		२५·० × १२ ० / २०—४३
				"	गद्य		२५ ० × १० ६ / १६—४२
				"	गद्य		२२ ८ × १० ७ / १९—४१
बीदासर				"	पद्य १६	१	२७ ३ × १३·३ / १३—२९
				"	गद्य		२५ ३ × १० ३ / १३—२९
				"	१७	२	२३ ४ × ११ ६ / १८—४३

परिशिष्ट—१

ग्रन्थकार

परिशिष्ट-२

लिपिकार

रचना-स्थल

परिशिष्ट—४

लिपि-स्थल

परिशिष्ट—५

प्रशस्तियाँ

स्तुति-स्तोत्र-वन्दनादि

(१) **गौतम रासो**.—क्रमाक १६७, ग्रथाक १८६८, पृष्ठाक ४६/३६, लिपिकार रामजी की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति :—इति श्री गौतम रासो सपुरणम' पुजजी श्री कल्याणजी तत सीप श्री रामजी ।

(२) **शंखेश्वर पार्श्वनाथजी रो छन्द** :—क्रमाक ७०२, ग्र० १८४१/४, पु० ४६/११ ग्रथकार विजय की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति :—वुवकू अर विजय सीष्य गु'णगाया ।

(३) **सीमंधर स्वामी को स्तवन** :—क्र. ८३२, ग्र'० ५४१, पु० १७/६८ लिपिकार पुण्यसार मुनि की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति :—इनि श्री सीमधर स्वामि स्तवन वाचनाचार्य श्री श्री श्री उदयप्रमोदगणि शिष्य प० पुण्यसार गणि लिप ।

कथा-काव्य-चरितादि

(४) **अंजना ने हनुमानजी नी चौपई (हनुमंत चरित्र)** :—क्र० ३, ग्र० २८, पु० ३/६, ग्रथकार भुवनकीर्ति व लिपिकार भुवनसागर की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) इयां तणी करणी आदरतां छतां रे, फल थायो असमान ॥ १ ॥
महावीर राजान तणै पट्टाक्रमैरे, वैरी शाषि प्रसिद्ध ।
कोटिक गण कुलचद कलानिलोरे, खरतर गछ विसुद्ध ॥ २ ॥
श्री जिनराज सूरीसर पाटइं दिनकरु रे, आगम अरथ निधान ।
श्री जिनरंग सूरीसर मतिवारसै रे, जांणे संघ विधान ॥ ३ ॥
तस आदेसै संवत सतरे छडोतरे रे, उदयपुरइं चौमासि ।
जगत सिंघ श्री रांण गाजै जिहां किणइरे, हिंदू पति जसवासि ॥ ४ ॥
जांबवती जस माता जग मै परगडी रे, तेह तणा परधान ।
केसरि मंत्र तणा सुत सांचा केसरी रे, जिहां तिहां लहता मान ॥ ५ ॥
देव भगत गुरु भगतयथी संगति करी रे, गछ दीपावणहार ।
मत्रीसर मन मोटें हां सो मांनीयैरे, तस बंध जगधीर ॥ ६ ॥

त्याग भोग सोभाग गुणे करि आगलो रे, गुणरागी नितमेव ।
श्री सुपास जिणिंद तणी ए किणिएगइ रे, सारइ मन सुधि सेव ।। ७।।
जावक भ्रमर भमै जसु, पावलैरे, मौज हिये मकरन्द ।
भागचंद बड़भागी विकसित सुषि सदारे, निरूपम जे अरविंद ।। ८ ।।
तात्मक धनि सुदि माघतणी तृतीया दिनै रे, सुभ जोगे गुरुवारि ।
अछइ नवै रस इणि मैं लेजो जोइनइं, अधिकारे अधिकार ।। ६ ।।
खरतर गच्छ सदाई सूरतरु सारिखो रे, साषि वडी येम साखि ।
फल सरिखा गुरु हुआ इणिमइ वडवडारे, मोठा हीयडे राखि ।। १० ।।
हेमसोम गुरुराय सु सीस तीर्णां तणा रे, वाचक पदवीधार ।
ग्याननंदि गुरुराज तणे सुपसाउ ले रे, जयवतो परिवार ।। ११ ।।
इम श्री भुवनकीरति भावधरी घणउरे, गुरूत्रानो जलवास ।
अधिको उछउ इहां किणि जेह कह्यउ हुवै रे, मिच्छा दुक्कड तास।।१२।।
सील प्रभावै समकित गुण नै धारिवइरे, दिन प्रति कोडि कल्याण ।
तिणि ए भणता गुणता सुणतां चोपई रे, जाविन जनम प्रमाण ।।१३।।

(ख) सर्वगाथा २५३।। अधिकार २ वयस्य सर्वगाथा दूहा ७०७ । प्रमाणमिम छइ ।। ढाल वयालीस नवली जावेनिरय ।। सवत् १७४६ वर्षे द्वितीय भाद्रपदे श्री किसनगढ मध्ये पूर्णमासी तिथौ यु० भट्टारक श्री जिनरग सूरि राजा ना शिष्य पडित नयनविशाल तत्शिष्य पडित भुवनसागर लिपि कृतम् । शुभ भूयात् । यादृश पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिखित मया । यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयता ।। श्रेयस्तात् ।

(५) अजयराज री चौपई :—क. २३, ग्र. २४, पु ३/५ ग्रथकार मानमोर व लिपिकार कालूहर की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) सवत् सतर छवीस सै, आसु मास ऊदारो रे ।
सुकल पक्ष दसमी दिनै, ए ग्रंथ कीयो सुखकारो रे ।।
खरतर गछ महिम निलो, जुगवर श्री जिनराजो रे ।
वादी गज घट भाजणो, सकल गछां सिरताजोरे ।।
बौहि वसै बोदीत ससो, तिण सम कोन विग्यानी रे ।
परतिष दीठो पारषो, जिण वाचि लिपियं वाणीरे ।।
साहसीक जिनराज सो, ओर न कोइ हूयो रे ।
साह जहांन सराहीयो, इण समो को सिद्धि न दूजो रे ।।
धारलदे धन जनमीयो, धरमसी साह मलारो रे ।
ऊपगारचा सिर सेहरो, पर दुख खडणहारो रे ।।

तासु सीस सोभा घणी, विद्या वृद्धि वखाणो रे ।
भावविजय गणीवर भला, सकल कला गुण जाणो रे ।।
शिष्य रतन जस गुण भर्यो, पडित बहु चतुराइरे ।
गुरु श्री भावविनय गुणी, सयल जीवां सुखदाइ रे ।।
तासु सीस पाठक कहै, गणि भावप्रमोद मतिसारे रे ।
अधिको ओछो नवि कह्यूं, शास्त्र तणे आधार रे ।।
बीकानेर सघ गहगहै, जिहां चोवीस टोलिन राजो रे ।
तेह तणें परसाद थी, मन वंछित सीझै काजो रे ।।

गुरु रालीयो जुग प्रधान गुरु चदो रे ।
चोपड़ा वंसे रवि समो, चिरजीवो जां मेरु दिनंदोरे ।।
सुधे मन ए चोपइ सुंणे, जिकै चित लाइ रे ।
तिहां घरि रिध सिध विस्तरे, दिन दिन सोभ सवाई रे ।।
भणतां ने गुणतां थका, लहीयै लील विलासो रे ।
आरत दूरे अपहरे, पूरें मन तणी आसोरे ।।
अै दृष्टांत सोहामणो, सुणतां नव निधि थाय रे ।
भावप्रमोद पाठक कहै, श्री संघ कुं सुखदाई रे ।।

(ख) इति श्री अजयराजा री चौपइ सपूर्ण । स० १६४० वर्षे पोष सुदि ५ लि. । प. । कालुहसेन पत्रा रू० चक्रे ।। श्री नयानगर मध्ये समाप्त भूत । ग्रंथाग्रथ ११२५ ।। श्रीरस्तु ।। लेखक पाठकयो चिर । श्री शातिनाथ जी शरू ।।

(६) **अमरसेन वयरसेन चरित्र** :—क्र. २८, ग्र० १२४, पु० ८/६, ग्रथकार जीवमागर व लिपिकार आर्या मया की प्र० ।

प्रशस्ति (क) पातसाह प्रतिबोधक सुन्दर, सोहम गुरु अवतार रे ।
हीरविजय सूर हीरो साचो, जैन तणो शिणगार रे ।। ३ ।।
पट धीरि तेहनो सुख कारक, कुमति मत गज सीहरे ।
शुद्धाचार गुरु सुद्ध पुरूपक, श्री बिजनय ना री हरे ।। ४ ।।
तास पटोधर प्रबर प्रभाकर, ज्ञान तणो भंडार रे ।
विजयदेव सूरी गछ धुरधर, सकल लोक हितकार रे ।। ५ ।।
गुण निधि गछधि पति मति सागर, भविक मनोकज भाण रे ।
तास पटोधर महिमा मडीत, श्री विजयप्रम जाण रे ।। ६ ।।
तास पट उदयाचल भास्करः सनिभः सनिभः ज्ञान निवास रे ।
परबाद मातग बिदारणं कवर बज सवास रे ।। ७ ।।

सकल गछ्इ सिरदार तप गछ तखते, बषत दिरांद रे ।
रत्नसमो बड चडते दिवा जे रे, श्री विजयरत्न सूरिसरे ।। ८ ।।
बाचक चक्र चक्रधर उपम, तप गछ सोभाकार रे ।
सर्व सास्त्र महारथ भाषक, उपसम रस भगार रे ।। ९ ।।
गुण रयण यर विद्या सायर कु, सागर गुरु राज रे ।
बड बखती सोभागी सुन्दर, साचो धरम जिहाज रे ।।१०।।
तास सीस पंडित गुण पडित, पाप रहित शुभ गात रे ।
हीरसागर गुरु हीरा सारिखो, जस पसरि जग ख्यात रे ।।११।।
तास सीस तत्पद पंकज मधुकर, पडित मे सिरिताज रे ।
श्री गंग सागर शुभ मति आगर, माने जस नर राज रे ।।१२।।
परतष तेह तणो सुपसाई, मन बछित फल थाय रे ।
शांतिनाथ जगनाथ ब्रह्म ये, कथा सरस कहवायइ रे ।।१३।।
भवत्यष्ट तीरथ बरस जाणो, मास श्रावण चग रे ।
बदि चोथि भृगुवार जाणो, कह्यो प्रबन्ध अंभगरे ।।१४।।
जे कांई मिथ्या मे प्रकास्यु, आपमति अनुसार रे ।
ते सबे मिथ्या दूक्कडे सू, ऊषां मुनिवर धीर रे ।।१५।।
ए षंड त्रीजे ढालवारे, सकल पूगी आस रे ।
कवि जीवसागर इम जपे, धरमथी जय वास रे ।।१६।।

(ख) इति श्री अमरसेन वयरसेन चरित्रे पितृ मेलण पूर्व भव कथा श्रवण दान देव पूजा करण दीक्षा ग्रहण । पचम देवलोका गमन शीव गमन लक्षणो नाम तृतीय खड सम्पूरण । मिति जेठ वदे ९ सवत् १८६५ का लिपतइ सवाइ जयपुर मध्ये श्री श्री श्री श्री एक सो आठ श्री श्री माहासत्या जी श्री श्री लाछा जी मोटी सती छ, गुणवन छ, गुणा का भडार छ प्रनकाभइ की छ, षेम्या का आगर, गुण का गार, सतोपवत धीरजवत गजहस्ती नी परे विचरो, सूर्य जसा तेजवत, भवइ, जीवा ना तारणहार, गुरणी जी री सेवाग, आज्ञाकारी गगाजी मया लीपत, सभव कल्लामसतु श्री ।

(७) आनद श्रावक संधि —क ५१, ग्र० ७४९, पु० २४/१६ ग्रन्थकार श्रीसार तथा लिपिकार ऋषि टीकम की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) पुहकरणी नयरी अति दीपता, श्रावक चतुर सुजाण ।
आदीसर जिणवर सु पसाउ लै, राज् प्रजा कल्याण ।।
४ ८ ६ १ = १६८४
संवत दिसा सिधि रस ससि तिपुरी मे कीधो चोमास ।
ए सम्बन्ध कीयो रलायामणो, सूणतां थाय उलास ।।

रतनहरष वाचक गुरू माहरो, हैमनंदन सुखकार ।
हैमकीरत गुरू बांधव नै कहनै, पभणै मुनि श्रीसार ।।

इति श्री आणंद श्रावक संधि ।। सनस्य ।।

(ख) ऋ० टीकमदास रायपुर मध्ये । सवत १८ ।। सामीजी श्री श्री १०८ श्री श्री धीरजमलजी सामीजी श्री श्री १०८ श्री श्री मोजीरामजी तत सीप ऋप टीकमदास रायपुर मध्ये ।। सवत् १८८१ काती वद १३।। बुधवार छै ।। कील्यणमूस्त ।।छ श्री।।

(८) आषाढ़ भूति जी री चौपई :—क ५७, ग्रं० २५६, पु० १३/१५, ग्रथकार ज्ञानसागर की प्र० ।

प्रशस्ति :—अचल गछ गिरुआ गछनायक, श्री गुणरतन सूरिंदो रे ।
तास पाट आचार सूरीवर, श्री क्षिमासागर मुणिंदो रे ।। ६ ।।
श्री गजसागर सुरि तणा शिष्य, ललित सागर बुद्धि सोहे रे ।
तास सीस मुनि माणिक्यसागर, मुझ गुरु भवि मन मोहे रे ।। ७ ।।
एते गुरू नो सुपसाय लही नें, आषाढभूति ऋषि गायो रे ।
ऋषभदेव ने संघ ने सांनिधि, सरस संबंध स थायो रे ।। ८ ।।
श्री वत्तापुरी गाम मां, सवत सतर चउवीसै रे ।
पोष कृष्ण द्वितीया पुष्यारक, सिद्धि योगसु जगीसेरे ।। ९ ।।
कीधो प्रत्यक्षर गणि, ग्रंथागर नो मानो रे ।
एकावन त्रिणसै लषयो, चित राषीया तोरे ।। १० ।।
सोलमी ढाल धन्यासीइ, पूरण चढी प्रमाणो रे ।
न्यानसागर कहे संघ ने, नित होज्यो परम कल्याणो रे ।। ११ ।।

इति आषाढ भूत चोपइ सपूरण । लीपत उदी, समत १९ साल वीस की ।।

(९) उत्तमकंवर की चौपई :—क्र० ६४, ग्र० २७, पु० ३/८, ग्रथकार तत्त्वहस व लिपिकार छगना की प्र० ।

प्रशस्ति (क) समत सतर इगतीसा नो काती, सुद तेरस दिन सार रे ।
सिद्धि जोग कीयो रास संपूरण, सुभ नषतर दिन बार रे ।। १६ ।।
सटांहडनर मां सरस संबधए, तत्त्वहस कह्यो मन रगै ।
धन्यासी री मां ढाल एकावनमी, सुणज्यो सऊं मन रगै रै ।। १७ ।।

सरव गाथा १२४४ । गरथागरथ सलोक सख्या १६३६ । इति श्री उत्तमकु मर ऋष चोपइ समापत ।

(ख) समत उगणीस सातरा, मीगसर सुद बीज वीसपतवार मासत्याजी महाराज श्री श्री श्री १००८ श्री श्री कुंनणाजी मासत्याजी री तत सीषणी श्री श्री १०८ श्री श्री दलुजी मासत्याजी री तत सिपणी छगनाजी कीसनगढ़ मध्ये सपूरण । श्री रसतु कल्याणमसतु ।

गुणवंता ना गुण भणतां सुणतां रिध सीद्धी घरे थाय रे ।। ११ ।।
सतिनाथ सवामी सु पमाई ।।

(१०) ऋषभ चरित्र .—क्रमाक ८१, ग्र ० ४४, पु० ४/४, ग्र शकार रायचन्द तथा लिपिकार नगाजी की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति —(क) पूज जैमल जी रे प्रशाद थी रेला, चीरत किधो रिष रायचद ।
सेतालिसमी ढाल सुहावणी रेला, सम्पूर्ण हुवी सरव सम्बन्ध ।। १३ ।।
समत अठारे चालिस मे रेला, ए कीधो आसोज मास अभास ।
सुद्ध पाचम सम्पूर्ण कीयो रेला, पून्य जोग पीपाड़ चोमास ।। १४ ।।
रिषभ चीरत्र चित नोरमल रेला, सुणजो मन हुलास ।
सुप संपत साता उपजै रेला, पामै इवचल लील वीलास ।। १५ ।।

कलस लिषते :—श्री नाभ ननण, जगत वंदण, सोवन वरण सुहावणौ ।
नैण दीठो लाग मिठो, प्रभू सदा भाग सुहावणौ ।। १ ।।
श्री आदेसर जपै कर्म कपै, निरित रहे नित रग रली ।
प्रभू आणद पूरै, धिला चूरै, जाण मन मान्या या साठली ।। २ ।।
ए रिषभ चीत्र कीधो, मै इमरत पीधो, मुज हीवडो ।
हरषो अंतघणो ।। ३ ।।
तंन मन मोनै, सुणियां कांनै, सषरी सतालिसमी ढाल ए ।
मूझ बुद्ध प्रमाण ग्रिथ गुथौ, रिषभ चरत्र टंकसाल ए ।। ४ ।।

(ख) श्री श्री श्री समत १८ स ४२ का लिखतु महासत्याजी श्री श्री श्री श्री चत्राजी की तत शिपणी श्री श्री श्री चनणाजी श्री श्री महासत्याजी कै श्री चत्राजी की तत सीपणी नगा लिपतू जपूर मधे ।।

(११) ऋषिदत्ता रास :—क्र ८२, ग्र ० १०२५, पु० ३१/८, ग्र थकार जयवतसूरि की प्र० ।

प्रशस्ति :—वड तप गछि साह करुहा, श्री विनयमंडन गुरुराय ।
रत्न त्रय आराधतांहा, जजगि धरम सुहाय ।।
जजगि धरम सहाय गुणा कर, सुविहि तनइ धुर कीध ।
तस सीस गुणा सोभाग सुनामई, जयवंत सूर प्रसिद्ध ।।
तणइं रसिक जनाग्रह जाणी, विरच्युं सती सु चरित्र ।
उत्तम जन गुण सुणतां भणतां, हुई जनम पवित्र ।।
सवत् सोल माहा मण ही, त्रितालु उदार ।
मगसिर सुदि चौदसि दिनि, इंहा दीपतु रविवार ।।
दीपंतु रविवार सुराहिणि, ससि वरतइ वष रासिइं ।
ए ऋषिदत्ता चरित्र वषाणिइ, जयवंत उल्हासि ।।

न्यून अधिक ज हुई आगम थी, मिछा दुक्कड ताम ।
कविता वक्ता श्रोता जननी, फलज्या दिनि दिनि आस ।।
इति श्री ऋषिदत्ता रासि सपूर्णम् ।

(१२) कानड कठियारा चरित्र :—क्र० १०६, ग्र० २४६४, पु० ६३/८८, ग्रथकार मानसागर की प्र० ।

प्रशस्ति :—सतरै सै सैतालीये समै, तीहा कीधौ चोमास ।
सदगुरु ना प्रसाद थी, पूगी मन नी आस ।। ८ ।।
श्री तपगच्छ गुराजीयो, श्री विजेय प्रभु सुरिंद ।
तस पट्ट गगन दिवाकरु, श्री विजयरत्न गुणिंद ।। ६ ।।
तस गछ मे महिमानिलो, श्री जयसागर उवझाय ।
तास सीस सोभा करू, जीतसागर गणि राय ।। १० ।।
मानसागर सुख संपदा, जीतसागर ण सीस ।
साधु तणा गावतां, पूगी मनह जगीस ।। ११ ।।
नवमी ढाल सुहामणी, गोडी राग सुरग ।
मांनसागर कहै सांभलौ, दिन दिन वधतै रग ।। १२ ।।

इति श्री सील विषय कानड कठीया रा री चउपई सपूर्ण ।।

(१३) क्षुल्लकुमार की चौपई :—क्र० १४५, ग्र० ५८८/१, पु० १६/२० ग्रथकार जयसोम की प्र० ।

प्रशस्ति :—रस (६) वारिधि (४) रस (६) ससिहर (१) वरसइ ।
वीकानयर नयर मन हरसइ ।।
श्री जिनचंद्र सूरि गुरू राजइ ।
एहवि चार भण्यो हित काजइ ।। ७१ ।।
प्रमोदमाणिक्य गणि सहगुरू सीस ।
गणि जयसोम कहइ सु जगीस ।।
आदीसर सुर तरु सुपसाइं ।
एह भणंता सवि सुष थाइ ।। ७२ ।।

(१४) गुणकरंड गुणावली :—क्र० १७६, ग्र० ४१, पु० ४/१, ग्रथकार ऋषि दीप की प्र० ।

प्रशस्ति :—सवत सत्रसतावन वरसै, दूसरा वार दिवसैजी ।
सरस समध कह्यो मन सरसै, सुंणियां भविजन हरसैजी ।। ६ ।।
गिरुउ गछ गुजराती गाजै, वसुधा पीठ विराजै जी ।
धर सगलो जांणै धनराजै, इधको जस आवाजै जी ।।१०।।

तस पाटे श्री पूज्य चितामण दीपे, जेहो दिनमणी जी ।
आचार्य उदवत पेमकरणजी, दोलित ह्वंत स दरसणजी ॥ ११ ॥

साषा ताम तणी जिहा सुन्दर, बड़ साषा जिम विसतरै जी ।
मोटा गुण आगर बहु मुनिवर, रिथ चितना निगथेवरजी ॥ १२ ॥

निरमल गुंण भरिया बहु ग्यान, मुनिवर श्री व्रधमान जी ।
शिष तेहना ऋषि दीप सु ग्यान, धरे सदा गुण ध्यांन जी ॥ १३ ॥

गुण गिरुवा राजे इम गावै, पग २ नव निध पावै जी ।
अवर लुध त्या घट मैं आवै, थिर सपत जस थावै जी ॥ १४ ॥

गुण करड गुणावलि गाया । सर्व गाथा ६०३॥ इति श्री गुण करड गुणावली सम्पूर्ण ॥

(१५) गुणावली चउपई :—क्र १८७,ग्र० ३५, पु० ३/१६, ग्र थकार ऋषि दीप की प्र० ।

प्रशस्ति (क) :—सवत सतरे सतावन वरसै, दसराहा रै दिवसै जी ।
सरस सम्बन्ध कह्यो मन सरसै, सुणीयां भविजन हरसेजी ॥ ६ ॥

गिरूवो गछ गुजराती गाजै, वसुधा पीठ विराजै जी ।
घर सगली जाणें धरराज, इधकी जस आवाज जी ॥ १० ॥

तस पाटै श्री पूज्य चितामण दीपै, जेहो दिनमण जी ।
आचार्यज उदयवत षेमकर्ण, दौलत दैत सुदरसणजी ॥ ११ ॥

शाषा तांम तणी जिहां सुन्दर, वड शाखा जिम विस्तरजी ।
मोटा गुण आगर बहू मुनिवर, थिर चित्तनां नग थिवर जी ॥ १२ ॥

निरमल गुण भरीया बहू ग्यानें, मुनिवर श्री वृद्धमानें जी ।
शिष्य तेहना ऋषि दीप सुध्यांन, धरै सदा गुणध्यान जी ॥ १३ ॥

गुण गिरूवां राजे इम गावै, पग २ नवनिध पावै जी ।
अविरल वुध ता घट मे आवै, थिर सपत्त जस थावै जी ॥ १४ ॥

(ख) इति श्री गुणावली चउपई सपूर्णम् । सवत् १६३६ मिति ज्येष्ठ कृष्णा द्वितीया २ तिथो । लिपित ऋषि चुन्नीलालेन । ग्राम आवोरी, दक्षण देशे । स्वात्माय वाचनार्थं लिषनीय ॥श्री॥

(१६) चदचरित्र :—क्र० १६१, ग्रं० १७, पु० २/७, ग्र थकार मोहनविजय व लिपिकार मुनि फतेचन्द की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) तप गछ नायक गुण गण नायक, विजय सेन सुरिंदा जी ।
प्रतिवोध्यो जिणै दिल्ली पति, अकबर साह मुंमिदा जी ॥ १६ ॥

तास चरण सुत पत्र सु मधुकर, कीर्तिविजय उवझाया जी ।
तास सीस कविकुलमुख मंडण, मानविजये कविराया जी ।। १७ ।।

तस पद सेवक मति श्रुति सागर, लब्धि प्रतिष्ठ कहाया जी ।
पडित रूपविजय गणि गिरुआ, दिन दिन सुजस सवाया जी ।। १८ ।।

तेहनै बालकै मोहन विजयै, अठोत्तर सौ ढालै जी ।
गायौ चंद चरित्र सुरगो, चरित्र वचन परनालै जी ।। १९ ।।

३ ८ १७ = १७८३

कीधौ चोथौ उल्लास सम्पूरण, गुण वसु संयम वर्षेजी ।
पौष मास सीत पचमी दीवसै, तेरणीज वारै हर्षे जी ।। २० ।।

राजनगरे चोमासौ करि नै, गायो चद चरित्र जी ।
श्रवण देई श्रोता सांभलिस्यै, थास्यै तेह पवित्र जी ।। २१ ।।

जो कोइ भण सै गुण सै सुण सै, तस घर मगल माला जी ।
दिन दिन वधते २ थास्यै, निर्मल कीर्ति विसाला जी ।। २२ ।।

अधिको उछुं जेह कहवाणुं, मिछामि दुक्कड तैहे जी ।
ध्रुव जिम अचल होज्यौ धरणीतल, चद तणा गुण एहैजी ।। २३ ।।

कलश :—ए चरित्र सागर हुंति निधि जतन सुर गिरि आचरचो ।
चद नृप सम्बन्ध शशी जिम, अति प्रभाकर उद्धरचौ ।।
श्री विजयक्षेम सुरिंद राजै, करि परम गुरु वदना ।
कवि रूपसेवक मोहनविजयै, वर्णव्या गुण चंदना ।। १ ।।

(ख) इति श्री मोहन विजय विरचिते चद चरित्रे प्राकृत प्रवधे चद प्रकट ।।१।। वीरमति वध आभागमन २।। सयम ग्रहण ३।। शिवपद प्राप्ति ।।४।। रूपाभि वस्तुभि कलाभि समर्थोयं इय चतुर्थोल्लास सम्पूर्णम् ।। म. १८७१ मीती मीघसर सुद प्रतिपदाय सोमवासरे लि० फनेचद गुजराति लुंकागछे प्रवर्ते प्रेमचदजी को सीष्य फतेचद लिपिक्रता कृष्णगढ नगरे । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।।श्री गणेशायनम , श्री गुरुभ्योनमः । ग्रथाग्रथ हजार ४०० ।

(१७) **चन्द चरित्रं** :—क्र० १९२, ग्रं ४९, पु० ४/९, ग्रथकार मोहनविजय व लिपिकार रूपविजय की प्र० ।

प्रशस्ति (क) तपगछ नायक गुण गण वायक, श्री विजेसेन सूरिंदाजी ।
प्रतिबोध्यो जिणै दिल्लीपति, अकबर साह भूमींदाजी ।। १६ ।।
तास चरण शत पत्र मधुकर, कीर्ति विजय उवझाया जी ।
तास सीस कवि कुल मुख मडन, मानविजय कविराया जी ।। १७ ।।

तस पद सेवक मति श्रुति सागर, लब्ध प्रतिष्ठ कहाया जी ।
पडित रूपविजय गणि गिरुआ, दिन दिन सुयस सवायाजी ॥ १८ ॥

तेहनै बालकै मोहन विजयै, अठोत्तर सो ढालैजी ।
गायो चद चरित्र सुरंगो, चरित्र वचन परिमैलैजी ॥ १९ ॥

कीधो चोथऊ उल्लास सम्पूरण, गुण वसु सयम वर्षे जी ।
पोस मास शित पचमी दिवसे, तरणीज वारै हर्षे जी ॥ २० ॥

राजनगरै चोमासु करिनै, गायो चंद चरित्रोजी ।
श्रवण देईन श्रोता साभलस्यै, थास्यै तेह पवित्रोजी ॥ २१ ॥

अधिको उछु जेह कहवाणु, मिछाम्रदुक्कड होज्योजी ।
ध्रुव जिम अचल होज्यो धरणी, चद तणा गुण कहज्योजी ॥ २२ ॥

कलश . ए चरित्र सागर हुतो निरषो यतनै सुरगिरि आवस्यो ।
चंद नृपति सबंध शशी जिम, अति प्रभाकर उद्धस्यो ॥
श्री विजयक्षमा सूरिंद राजे, परम गुरू नै वदना ।
कवि रूपसेवक मोहनविजयै, वर्णव्या गुण चदना ॥

(ख) इति श्री मोहना विजय विरचिते चद चरित्रे प्राकृत बधे चद प्रकटन ॥१॥ वीरमती वधा आगमन २, सयम ग्रहण ३, शिव पद प्राप्ति रूपाभि ४ श्चउभि कलाभि समद्यो चतुर्थेल्लास सपूर्ण ॥श्री॥ सवत् १८५८ । वर्षे शाके १७२३ प्र० मीति वैशाप सुध पचमीनी ५ सनीवासरे दीवसे । लीपत रूपविजे जनगर मध ।

(१८) चन्द्रलेहा चतुष्पदी :—क्र० २११, ग्र० १३८, पु० ६/३ ग्रथकार मतिकुशल की प्र० ।

प्रशस्ति :—सवत १७२८ सिधी कर मुनिससीजी, वदी आसू दशम रविवार ।
श्री पचीयाक मैं चूपस्यू जी, एह भण्यो अधिकार ॥ १२ ॥
खरतर गछ पति सुख करु जी, श्री जिनचद सूरिद ।
वड जिम वधती साषा षेममैजी, जानूं रजनीस दिणद ॥ १३ ॥
सुगुण थी श्री सुगुण कीरति गुणी जी, वाचक पदवी धरत ।
अतेवासीय चिर जुरै जयोजी, मतिवल्लभ महत ॥ १४ ॥

प्रथम तसु सीस अति प्रेमस्यु जी, मतिकुशल कहै एम ।
सामायक मन सुद्ध करो जी, जय वरो चदलेहा जेम ॥ १५ ॥
रतनवलभ गुरू सांनिधैजी, ए कीयो प्रथम अभ्यास ।
छसै चउवीस गाहा अछे जी, इगुणत्रीस ढाल रसाल ॥ १६ ॥
भणै गुणै सुणै भाव सु जी, गिरुआ तणा गुण जेह ।
मन सुधी जिन धर्म जे करे जी, त्रीभुवन पति हुवै तेह ॥ १७ ॥

इति श्री चदलेहा सामायक विपय चदलेहा चतुष्पदी सम्पूर्ण । १७४६ का जेठ वद तेरम शुक्रवार लिक्षतु नगा जेपुर मधे ।

(१६) चम्पक चरित्र :—क्र० २१७, ग्र० ७४८, पु० २४/१५. ग्रथकार चौथमल व लिपिकार रतनकुवर की प्र० ।

प्रशस्ति (क) गणनायक हुकमीचद मूनीसर, किरत जगमे जहारी ।
वेल वेल किया पारना, सूरविर आचारी ॥ २५४ ॥

तस पाटानूपाट सोभता, तीजे पद गूण धारी ।
मन्नालाल जी नाम आपका, सीतल ससी अनुहारी ॥ २५५ ॥

तस आज्ञापालक गुरुवर्य मम, हीरालाल जी गूण किना ।
होई मेहर माता केसर की, जब गरु सजम दीना ॥ २५६ ॥

सालडी क्यासी सहर सादड़ी, मारवाड़ के माईं ।
चौथमल ने जोड ढाल यहो, सरव्रण मास मे गाई ॥ २५७ ॥

(ख) इति चपक चरीत्र समाप्ता । स० १६८६ का साल । लखी रतनकुवरजी । जनतकुवर जी के नेसराई की पडत छती ई । समत १६८६ की साल लखी टोक मधे ॥

(२०) चारुई प्रतिवोध्या नी चौपी :—क्र० २२५, ग्र० ४०, पु० ३/२१, ग्रथकार समयसुन्दर व लिपिकार आर्या छगना की प्र० ।

प्रशस्ति (क) सोलसे पेसठ समे ए, जेठ मास म दिन सार ।
चोथो खड पुरो थयो ए, आगरा नगर मझार ॥ ४ ॥

वीमल नाव सुपसोलै, सानीध कुसल सुरींद ।
च्यार खंड पुरा थया ए, पाम्यो प्रमाणंद ॥ ५ ॥

देस प्रदेस दीपताए, नागड गोतर सीणगार ।
श्री संघ भार धुरधरू ए, उदयवत प्रीवार ॥ ६ ॥

सारू साह गुणे भला ए सघनायक सुबीचार ।
तेह तणों आगार करी ए, कीधो ग्रंथ अपार ॥ ७ ॥
श्री षरत्र गछै राजीयाए, जुगे प्रधांन जीणेचंद ।
श्री जीनसंघ सरूपसुरी ए, चीर प्रतमो रविचद ॥ ८ ॥

प्रथम सीष्य श्रीपुजनाए, सकलचद मुणींद ।
तास सीष्य वाचक भणेए, समयसुन्दर अणंद ॥ ६ ॥
च्यारे प्रतेक वुधना ए, ए च्यार ही खंड ।
च्यार खंड विसतरो ए, ज्यां रवि तेज अखंड ॥ १० ॥

सांभलता सुख सदा ए, भणतां अधिक ऊलास ।
गीरवां रा गुण गावता ए, आणंद लील वीलास ॥ ११ ॥

(ख) इति श्री च्यारुइ प्रतवोध्यानी चोपी सपुरण । ममत् १६०० वरस १२ का काती वदी ७ वीमपतवार मासत्याजी श्री श्री १०८ श्री श्री दतुजी माराज प्रसादे लीपतु छगना कीमनगड मधे

(२१) चित्रसेन पद्मावती कथा :—क्र० २२८, ग्र० १५६१, पु० ४०/११, लिपिकार हृदयराम की प्र० ।

प्रशस्ति .—इनि श्री चित्रासन पद्मावती कथा सम्पूर्ण । मवत १७६६ वर्षे शाके १६३४ प्रवर्त्तमाने माद्रपद माहे सुभे कृष्ण पक्षे ६ तिथौ गुरुवामरे मृगनिर नक्षित्रे । योगे श्री विजयगछे श्री पुज श्री १०८ कल्याणमागर सूरजी ऋषि श्री वछराज जी तत् शिष्य ऋषि श्री गोविन्दजी तत् शिष्य ऋषि हरदयराम । इद पुस्तक लिपत ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री श्री । श्री । श्री । श्री उदयपुर नग्रात् ।

(२२) चित्रसेन पद्मावती चतुष्पद —क्र० २२६, ग्र०. ६२, पु० ४/२२, ग्रथकार रामविजय व लिपिकार उमा की प्र० ।

प्रशस्ति (क) अट्ठारह सौ उपरि वरसे, चवदोतर वहंत ।
पोस मास सुदी दसमि तणै दिन, रास रच्यौ मनषतै ॥ ४ ॥
श्री जिन लाभ सूरीसर राजै, षरतर गछ वड भागी ।
षेम साष श्री शातिहरष सिष, श्री जिनहरष वैरागी ॥ ५ ॥
तास सीस वाचक सुषवरधन, कलानिधान कहीया ।
तास सीस वणारसपदधर, श्री दयासिघ मुनिराया ॥ ६ ॥
तासु चरण रजकण सुपासाये, सरसति सु निजरि पाई ।
रामविजै उवझाय ए चोपई, वीकानेर वणाई ॥ ७ ॥
पंडित चतुर साधुजण पेरण, ए उद्यम उपजायौ ।
ए संबंध सुणावौ, गावौ, ल्यौ सोभाग सवायौ ॥ ८ ॥

सर्वगाथा ४६५ । इति श्री दानधर्मनुमोदनाधिकारि चित्रसेण पद्मावती चतुपदी समाप्ता ।

(ख) सवत १८ वरस तेतरे ७३ आमोज वद इग्यारम दिन वार शुकरवार आरज्याजी श्री श्री माहमत्याजी श्री १०८ श्री ग्यानाजी री ततसीपणी उमा लिष्यता ।

(२३) चित्रसेण पद्मावती चरित्रः— क्र० २३१, ग्र० १०४२ पु० ३१/२५, ग्रथकार रामविजय व लिपिकार पन्नाजी आर्या की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) अठारह सौ ऊपरि बरसे, चवदोतर वहन ।
पोस मासु सुदै दसमि तरणे दिन, रास रच्यौ मन षतै ॥ ४ ॥
श्री जिनलाभ सुरासर राजै, षरतरगछ बडभागी ।
षेम साष श्रीसाति हरष सिष्य, श्री जिन हरष विरागी ॥ ५ ॥
तास सीस बाचक सुषबरधन, कला निधान कहीया ।
तास सीस वरण रस पद धर, श्री दियासिंघ सुनिराया ॥ ६ ॥
तासु चरण रज कण सुपासायै, सरसति सुनिजरि पाई ।
रामविजै उबझाय ए चौपई, बीकानेर बणाइ ॥ ७ ॥
पंडित चतुर साधु जण पेरण, ए उद्यम उजायौ ।
ए सबध सुणाबौ गावौ, ल्यौ सौभाग सवायौ ॥ ८ ॥

(ख) मरव गाथा ॥४६५॥ इति श्री दानधरमानुमोदनाधिकार चित्रसेण पदमावती सम्पूरण । काती बुद नौ । समत १८६८ कातीग वु नौमी वार बीसपतवार । लीपतु आरज्या जी श्री श्री श्री श्री सतोपा जी की चेली पना आरज्या । अलवर मराज वगतावरसिंघ जी को छ जी लिपतु अलवर मजी वाचवा वाला चरजीरवो करो जी क ।

(२४) **जामवती की चौपई** —क्र. २७८, ग्र० १८६६, पु० ४६/३६ लिपि० रतना की प्रश० ।
प्रशस्ति :—इति श्री जामवती चोपई समातो १८५२ **मारोट** म लीपतु श्री श्री आरजाजी **बालाजी** श्री श्री महसत्यजी श्री **लाछा जी** की तत सीपणी **रतना** लीषतु ।

(२५) **झाझरिया मुनि की सज्झाय** :—क्र. २६४, ग्र. १८६४, पु० ४६/३४ ग्रंथकार भावरतन व लिपिकार रिख रतन जी की प्र० ।

प्रशस्ति क) संवत्सर छपन्नां केरी, आषाढ वदि बीज सोहै ।
सोमवार समझाय ए कीधी, सांभलतां मन मोहै ॥ १० ॥
श्री पूनिमगच्छराज विराजै, महिमाप्रभ सूरिंद ।
भावरतन सीस भणै इम, सांभलतां आणद ॥ ११ ॥

(ख) इति श्री झाझरिया रिष नी सिझाय सपूर्णम् । स १८७२ शाके १७३७ प्रवर्त्तमाने मिति वैशाप वदि ४ गुरुवारे लिखि रतनचद्रेण मुनि ना श्री कृष्णगड मध्ये सु पभूया सू आर्या पठनार्थम् ।

(२६) **ढालसागर** (हरिवंश प्रबन्ध) :—क्र० २६८, ग्र० १८, पु० २/८ ग्रंथकार गुणसागर व लिपिकार आर्या छगना की प्र० ।

प्रशस्ति (क) गछी सव गछी प्रणमसु रे, वीजयवंत वीसेस ।
श्री वीजय गछ राजीया कांइ दिपै रे, गुर धरम सनेह ॥ १२ ॥
विजय रिख विद्या वलै रे, धरमदास मुनीस ।

खिम्या सागर षेम जी कांइ तेह ने रे, जग मांहि जगीस ।। १३ ।।
पदम सागर सुर सुरजी रे, सुजस जस भरपुर ।
पाय परणमी प्रभू तणा कांइ एम भणै रे, गुंण सागर सुर ।। १४ ।।
संवछर छिहतरै रे, मास सांवण सुध ।
तीथ सोम समुंतरा कांइ, बारस रे वारू अविरुध ।। १५ ।।
कुरकटेसवर नगर मै रे, पास सांम पसाय ।
संघ नै ओछक पणै कांइ, रचीयो रे चरित सुभाय ।। १६ ।।
ढाल सागर नांम श्री, श्री हरीवंस नो वीसतार ।
सु पर भावे जे साभलै काइ पांम रे सुख संपत सार ।। १७ ।।
एक सो एककांवनेरे, ढाल सो सो भाग ।
आदि तो आसावरी कांइ, अंत रै रे धन्यासी राग ।। १८ ।।
जब लगै गिर मेर जी रे, सगला गीरवर इस ।
तब लगे हरीवंस ए कांइ, थाज्योरे थीर वीसवावीस ।। १६ ।।
कलस :—हरी वंस गायो, सुजस पायो, ज्ञान बुध परकास नो ।
पाप त्राठो, गयो नाठो, पुन्य आयो आसनो ।। २० ।।
करण पुत्र कलत्र कमला, पढत सुंणत सोहांमणो ।
पूज्य श्री गुंण सुरी जंपै, सघ रंग बधामणो ।। २१ ।।

(ख) इती श्री ढालसागर हरीवस परवधे नवमोधिकार सपुरण ।। ६ ।। गरथागरथ सलोकाक्षर प्रमाण ५७६१ जेय ।। श्री रसतुः सुभ भवतु· आरज्याजी माराज श्री श्री १००८ श्री श्री कुनणा जी महाराज री तत सीषणी दलुजी मासत्याजी तत सीषणी लीषतु **छगना** समत १६ वरस ६ असाढ वद ४ अदीतवार लीपतु कीसनगढ मधै रामचदरस्य हेत वै लेखक पाठक चीरजीयात् सुभ श्रेयण परत जयणा सू वाचज्यो इती सपुरण कोधी ।

(२७) ढाल सागर (हरिवंश)—क्र० २६६, ग्र. ११६, पु० ८/१, ग्रथकार गुणसूरिसागर की प्र० ।
प्रशस्ति :—गछ खछ प्रणाम सूं रे, विजयवंत विसेस ।
श्री विजय गछ राजीया, काई दीपै रे गुरू धर्म नरेस ।। २५ ।।
विजय ऋषि विद्या वली रे, धर्मदास मुनीस ।
क्षिमा सागर षेमजी कांई, जेह नी रे जग मांहि जगीस ।। २६ ।।
पद्म सागर सूरिजीरे, सुयश जस भरपूर ।
पाय प्रणामी प्रभु तणा, कांई प्रभणइ रे गुणसागर सूरि ।। २७ ।।
संवछर छहतरै रै, मास सावण सुद तीज ।

सोम समुत्तरा कांई वासर रे, वारू अविरुध ॥ २८ ॥
कुरकटेश्वर नगर मइरे, पास स्वामि पसायै ।
सघ नइ उछक पणइ, कांइ, रचीयोरे मइ चरित सुभायै ॥ २९ ॥
ढाल सागर नांम, श्री हरिवंश नो विस्तार ।
सुध भावइ साभलइ, कांई, पामइ रे सुख संपत्ति सार ॥ ३० ॥
एक सौ एकावनइरे, ढालनो सोभाग ।
आदि तो आशावरी काई, अंतइरे धन्यासी राग ॥ ३१ ॥
लब लगइ गिरि मेरू जी रे, सकल गिरवर इस ।
तव लगइ हरिवश ए, कांइ, थाज्यो रे थिर विस्वावीस ॥ ३२ ॥
कलस :—हरवंस गायो सुख पाया, ज्ञान बुधि प्रकाशनउ ।
पाप त्राठो गयो नाठउ, पुन्य आयो आसनउ ॥
करण पुत्र कलत्र कमला, पढ़त सुणत सुहामणउ ।
पूज्य श्री गुण सूरि जपइ, संघ रंग वधामणउ ॥ ३३ ॥
इति श्री गुण सूरि सागर कृत ढाल सागर समाप्तः सवत १८६३ मिति वैसाख वदि ७ वीसपतवार लि० ।

(२८) देवराज बछराज की चौपाई —क्र० ३५०, ग्र० १६६ पु०११/८ ग्रन्यकार सुमतिवल्लभ की प्र० ।

प्रशस्ति --सवत सतरै गुणतीसै गुरुवार रे, मासी काती मन रंग ।
रतन वहत म गुरू सांनिधकारी कीधी चौपई रे, दीवाली दिन रंग ॥
राजै श्री जिनचंद सूर सूरि सरै रे, खरतर गछ सुर वृक्ष सोहै ।
तेहनी मोटी साखा खेमनी रे, पुण्य फल दैण प्रतक्ष ।
सुगुण कीरति कीरति सुगुणां मुख जगत मै रे, वाचक पदवी धार ।
मतिवलभ गणि सिष्य सुमतिवलभयौरे, गुण त्रय रतन मंभार ॥
अंतेवासी तासु उछ कयइ व छनौरे, एह रच्यौ अधिकार ।
मतकुसल गुरूआ गुण मन रगसुंरे, जपतां जय जयकार ॥
पास जिणंद तणै सुपसायै, रच्यी रे, तलवाडै ए चरित्र ।
भणंता गुणता सुणतां भाव सूं रे, मानव जनम पवित्र ॥
चमतकार तणी चतुरा चौपई रे, पैतालीस ढाल प्रधान ।
नवसै चौसठ गाहा छै इण चौपोयै रे, सुणता सदा छै कल्याण ।
धन धन सूधौ साधु नमो वछराजजी रे ॥
इति श्री वछराज रिपि चौपई समाप्त ॥

(२९) धन्ना जी की सज्झाय —क्र० ३७८, ग्र० १४५३, पु० ३८/२३, ग्रन्थकार रिख विनयचन्द की प्र० ।

प्रशस्ति —मन हीत घर बहु' दुष निकंवूं, अनोपचंद गुर राया।
धन धनो मुनिवर सदा सुष कर, बिनयेचंद गुण गाया।
इति धना की सिझाय सपूर्णः सम्वत् १८९२ आसोज सुद १

(३०) धर्मबुद्धि चतुष्पदी :—क्र० ३९२, ग्र० ४६, पु० ४/६, ग्रन्थकार लाभवर्धन की प्रश० ।

प्रशस्ति :—सवत सतरै बैतीलीसै, सरसै हरकरी।
गुणतालीस कही गुणवंती, सरस ढाल सुथरी ।।४।।
श्री जिनचद सुरुरुवरक, षरतर गछपति।
तासु विजय राजै ए चौपइ, ढाल कही निरती ।।५।।
श्री खेमसाखै गुणवर धन गणि, जाणे सकल जती।
वचन सिद्ध गुणवर वणारसी, माने छत्रपती ।।६।।
सिष्य तासु श्री सोमवणा रस, सोभागी सो सती।
तास विनय श्री सांतिहरष गणि, वाचक वड वषती ।।७।।
तास सीस नांमै लाभवरधन, एह प्रबंध कहै।
निरस छै तो पिण गुणियण जना हित, कर तुरत ग्रहै ।।८।।
भणै भणावै गाइ सुणावै, कहिवा मन उमाहै।
लालचंद नवनिधि रिधितसु गृह,सिव सुखसुजसलहै ।।९।।
सर्वगाथा ५३५ ।। इति धरम विषये धर्म बुद्धि चतुर्पदी समाप्त ।सवत १९३२ मित मगसर बुदी ११ मगलवार । श्री श्री

(३१) धर्मसेन चौपाई :—क्र० ३९६, ग्र० १०३९, पु० ३१/२२, ग्रन्थकार यशोलाभ व लिपिकार ज्ञानाजी आर्या की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) संवत सतरह सै चालीसै, जठ सुदि तेरस दिवसै।
सुपास तणौ दिख्या दिन उछव, सुरनर करे महोछवे।
तापासर जिन भुवन विराजै, अजित साति जिनराजै।
षरतरगछ सुरतरु सम सोहै, दांन अमृत फल मोहै ।।६।।
गछ चौरासी सिर रबि छाजै, सुरि जिनचंद बिराजै।
तसु राजै मई चरित्र ए रचियौ, साधु गुणे मन मचीयो ।।७।।
सागर चन्द्रनी साष उदारा, साधु बडा गुण धारावै।
वाचक पदवी पाट विराजइ, समयकलस गुरु छाजै ।।८।।
सुष निधान वाचिक पद धारा, गुणमणी रतन भंडारा।
तास सीस गुणे करि सोहै, भविक जीव पडिवोहै ।।९।।

श्री गुणसेन विद्या भंडारा, पर उपगारी उदारा।
तास सीस चरित ए भाष्यो, जादव हीड मै दाष्यो ॥१०॥

नेमिसर नै माधव पुछयो, भणतां गुणतां सव सुख पावै।
आलिय विघन दूरि जावै ॥११॥

यसो लाभ साधु गुण गावइं, मन वंछित फल पावै।
सकल संघ ने आणंद कारी, मंगल माला जयकारी ॥१२॥

(ख) इति श्री दानाधिकारे धरमसेण चोपई संपुरण: संवत १८ स तेरसेट को फगण बुधि तेरसे वार सुकरवार जपुर मध्य श्री श्री महासती श्री श्री जैतां जी की तत सीषणी श्री संतोषा जी की तत सिषणी लिपतं ज्ञाना अरज्या। सुभ सुभ वाचण वाला चेर जीवा जो।

(३२) **नरमदा सती नी चौपाई :** क्र० ४१६ ग्रं १४९, पु ६/१४ ग्रथकार रायचन्द व लिपिकार नगाजी की प्रशस्ति।

प्रशस्ति (क) सील उपदेस माला ग्रिंथ में ए, तिण माहे वीसतारज भाषैक।
रिख रायचन्दजी जोडी जुगतेसु ए, लेइ ग्रीथ नी साषेक ॥९॥

पूज बूधर जी हूवा दीपता ए, जांरे पूज जेमलजी हूवा पाट।
तिके पूं उपगारी पुन्य आतमीए, जा कीया उपगार रा ठाट ॥१०॥

ए नरवदा सती नी चोपइ ऐ, मे जोडी जांरे प्रसाद।
गुण गुण्यासी भराए, सुणतां लागै स्वाद ॥११॥

ए अठावीसमी ढाल सुहावणी ए, सुमूहतो सम्पूर्ण सबंध।
सील थकी सुष सासता ए, सीले सदा आणंद ॥१२॥
सम्त अठारे इगतालीसमे स, सैर जोधपुर चोमास।
मास मीगश्र में सम्पूर्ण करी ए, चित चोषै लील विलास ॥१३॥
इति नरवदा सती नी चोपइ ढाला २९ स॥

(ख) श्री श्री श्री श्री आरज्यां जी म्हासत्या जी श्री श्री श्री श्री १०८ श्री नंदाजी तत सीषणी नगा लिषतु १८ स ४६ क म लिषतुं जपुर मधे॥

(३३) **नल दमयन्ती चौपाई:**—क्र० ४२०, ग्रं० १४०, पु० ६/५, ग्रंथकार समयसुन्दर व लिपिकार रत्नशील गणि की प्र०।

प्रशस्ति (क) सुधरम सामि परंपरा, चंद कुल वडरी साष।
कोटिक गण गछ खरतरउं, भटार कीया सुभाष॥
सुभाष युग प्रधान जिणचद, प्रथम शिष्य शिरोमणी।

जसु गोत्र रीहड नाम पंडित, सकलचंद प्रसिद्धि धणी ।
तसु शिष्य पभणइ समय सुंदर, उपाध्याय इसीपरइं ।
वाचनाचार्य हरषनंदन प्रमुख शिष्य नइं आदरइं ।।

गोत्र गलोछा गहइगहइ, मेड़ता नगर मझारि ।
दिन दिन सघ मांहि दीपता, खरतर गछ सिणगार ।।

सिणगार धर्म तणा धुरधर, देव गुरु रागी घणुं ।
रायमल पुत्र रतन्न अभीपाल, षेतसी नेतसी भणुं ।।

राजसी ता सुभ त्री ज तिहां कणि, नेतसी आग्रह करी ।
चउपाई कीधी समयसुंदर नल दवदती चरित री ।।

संवत सोलतिहु तूरि, मास वसंत आणद ।
नगर मनोहर मेडतउ, जिहां वास पूज्य जिणंद ।

वासपूज्य तीर्थंकर प्रसाद हूँ, गछ खरतर गहइ ।
गछराय जुग परधान जिन सघ, सूरि, सदगुरु जस लहइ ।।

उवझाय इम कहइ समय सुंदर, कीयउ आग्रह नेतसी ।
चउपई नल दवदंती केरी, चतुर माणस चित्त वसी ।।

(ख) सर्वं गाथा २०५ । ढाल १० ।। इति नलदवदंती चउपई सम्पूर्णं । तउ प्रथम खंडे ढाल ७।। गाथा १७१ ।। द्वितीय खडे ढाल ५।। गाथा १३५।। तृतीय खडे ढाल ५ ।। गाथा १०१।। चतुर्थ खडे टाल ६ ।। गाथा १२४ ।। पचम खंडे ढाल ५ ।। गाथा १७६ ।। पष्ट खडे ढाल १० गाथा २०५ ।। सर्व ढाल ३८ ।। सर्व गाथा ९९१३ ।। सर्व छ खंड ग्रथाग्र थ १३५० ।। सम्वत १६९७ वर्पे ।। वैशाख शुदि ४ मगलवासरे ।। श्री अचले गछे ।। पूज्य श्री ४ श्री कल्याणसागर सूरिश्वर विजयराज्ये पं० श्री पू० श्री मुनिशील गणि तत स्मिष्य मु० रत्नसील गणि शिष्यणी माध्वी वाहला पठनार्थं । लिखितं आगरा मध्ये ।। छ ।। श्री ।। शुमस्याता लेखक पाठकयो रित्या शार्व चोवितरण ।। यादृश पुस्तके दृष्ट ताछशं लिखित मया ।। यदि शुद्दमशुद्धवा । मम दोपो न दीयात ।। १ ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।।

(३४) नेम नाथ रास :—क्र० ४५७, ग्र० ५८९, पु० १९/२१, ग्रन्थकार कनककीर्ति की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति —संवत सोलै वाणुवइ, सुदि माह पाचमि जाणि ।
वडनगर बीकानेर मै, रास चढ्यउ परमाण ।।३२।।
दीपतउ गछ खरतर तणउ, जिहां नाम जींद सुरिंद ।
जिनदत्त युगवर सारिषा, श्री जिनकुशल मुणिंद ।।३३।।
अनुक्रमइ पाट परम्परा, जिणचंद सूरि सुजाण ।
पद दीयउ युगनर जेह ने, अकबर नृप सुरताण ।।३४।।

जिणि टेक राखी जैन की, जिनचंद सूरि दयाल ।
जांहगीर भूपत रंजीयउ, षटदरसण प्रतिपाल ।।३५।।
तसु पाटि परगट गुण निलउ, जिनसिंह सूरि प्रधान ।
जिण कुमती गज भजिया, साचउ सिंघ समान ।।३६।।
तसु पाटि सूरिज सारिषा, पाय नमइ जसु नर राज ।
गछराज मांहे दीपता, चिर जीवउ जिनराज ।।३७।।
जिनचंद सूरि सूरिंदजी, तसु नय कमल सुसीस ।
तसु सीस जय मंदिर जयउ, पूरवइ मनह जगीस ।।३८।।
तसु सीस पभणइ भावस्युं, ए नेमि रास रसाल ।
कनक कीरति वाचक कहै, फलै मनोरथ माल ।।३९।।
कल्याण कमला सुख लहै, मन तणी पूरै आस ।
ए रास जे नर सांभ लै, पामै लील विलास ।।४०।।
चउवीस जिनवर ध्यावतां, थाय सदा जयकार ।
जिनराज सूरि प्रसाद थी, दिन दिन मंगल चार ।।४१।।
साहिब नेमिजी तोरी करणी सार ।।

इति नेमिनाथ रास ।।

(३५) नेम राजमती रास —क्र० ४६७, ग्र० २३८१, पु० ६२/५३ मुनि पुण्यरत्न की प्र० ।

प्रशस्ति —संवत पनर छियासियइ, रास रच्चउं मनि आंणि भाय ।
राज गछ मंडण तिलउ, गुरु श्री नंदि वरहन सुरी सुप्रसाय ।।६७।।
समुदविजइ तनु गुण निलउ, सेव करइ जस सुर न्र वृंद ।
पुन्य रतन मुनिवर भणइं, श्री संघ सुप्रसन्न नेम जिणंद ।।६८।।

इन श्री नेमनाथ राजमती रास समाप्त ।।

(३६) परेवा की सज्झाय (मेघरथ राजा की सज्झाय) —क्र० ४६३, ग्रं० २००७/१, पु० ५०/१७, लिपिकार आर्या मया की प्र० ।

प्रशस्ति —सवत १९ स ५२ मती वमाख वदे पाचम वीसपतवार कीशन पक्ष कीशनगढ मध्य । लीखत श्री श्री श्री श्रो श्री श्री १००८ श्री श्री आरज्या जी श्री श्री श्री श्री बालाजी श्री श्री १००५ श्री श्री माहासत्या जी श्री श्री श्री श्री लाछा जी माहा मोती सेती छ जी बालवीरतचारी छजी । सताइस गुण करी सहेत जी । माहा भररीक छ जी, उतम छ जी, वेरागी छ जी । गुण का आगल छ जी सुत्रराका भणनहार छ जी । सतरे भेदे सजम करीन सहित छ जी । दसवेद जती धरम धारी छ जी । आपम गुण घणा । मारी वुध थोडी छ जी । श्री श्री वाला जी की तत सीष्यणी मया लीपत सभवरय कल्याण मस्तु ।

(३७) पांडवा री चौपी —क्र० ५०१, ग्र० ४८, पु० ४/८, ग्रन्थकार लाभवर्धन व लिपिकार आर्या छगना की प्र० ।

प्रशस्ति (क):—समत सतरसै तेसट समेजी, बीलहाबीस मझार ।
तीहां करी सपुरण चोपईजी, सीष्य या ग्रह मन धार ।।११।।
तीन हजार ने सालसेजी, सलोक सताणवै जांण ।
माहाजने सेवण गरथ ने जी, एह कीयो प्रीमांण ।।१२।।
षंड तीनां तांइ कही जी, पाचमी ढाल ।
राग कालहरा मे सोभतीजी, नवी नवी देसी मे चाल ।।१३।।
श्री परत्रगछै गहेजी, श्री जीनसुष सुरिंद ।
खेम साखा तिहां दीपतीजी, सुजस बोले नरवीरंद ।।१४।।
श्री साधुरंग पाठक भलाजी, धरम सुंदर तसु सीष्य ।
गणि कमल सोम शिष्य तेहनाजी, नरपरणमे केई लख्य ।।१५।।
दानवीनय वाचक भलाजी, अतेवासी तास ।
गुणवरधन गणि दीपताजी, परसिध पुरं पुर जसवास ।।१६।।
श्री सोम सीष्य तसुं सुंदरुजी, सांतिहरष तसुं सिष्य ।
सोमवदन सोभा घणीजी, धरम ना धोरी परतष ।।१७।।
ते सतगुरु सुपसायलेजी, कीधी मे चोपइ एह ।
सुत्र वीरुधजी को कहीजी, मीछामै दुकड तेह ।।१८।।
साधुना सुध गुण गावतां जी, सही ए होवै नीसतार ।
इम जांणीनै मे वरणव्योजी, पांडव नो अधिकार ।।१९।।
करणी नही तीसी मांहरी जी, तेहवो नही तप धरम ।
पीण गुण गावतां साधुना जी,कटसी असुभ मुझ करम ।।२०।।
लीषे लीषावै धरम जाणनेजी, सुणे सुणावै जस लेह ।
लाभवरधन पाठक कहे जी, ग्यांन नीरमल लहे तेह ।।२१।।
इति श्री पाडवां री चोपी सपूर्ण । षट खडे सपूर्णम्

(ख) समत १९ वरस १३ जेठ सुधे सातम दुजी मंगलवार । मासत्यांजी माराज १००८ श्री श्री कुनणाजी माराज़ री तत सीषणी श्री श्री १०८ श्री श्री दलुजी म.सत्यां । जारी तत सीषणी छगना लीषतु कीसनगढ सहर मधे सपुरण कीधी छै ।।

(३८) पार्श्व चरित्र :—क्र० ५०२, ग्र० १२०, पु० ८/२, ग्रन्थकार अासकरण व लिपिकार महात्मा जगदेव की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) —धर्मदास नै धनराज जी रे, बुधरजी जैमलजी जाण ।
ज्यारा प्राटवी रायचंदजी, हरी कैसरी सीर सिवाण ।।८।।

ज्यां पुरसां रे प्रसाद थी, रीष आसकर्ण कहै एम ।
पास चिरत गुण गावीया, दीठा ग्रंथ मै जेम ।।९।।

औछो इधको कथौ हुवै तो, मिछाम दुकडं मोय ।
अलप बुध छै माहरी, प्रभू दोष मलम जो कोय ।।१०।।

पारस पारस सार से, तूत्र भवन कैरो नाथ ।
मन मैं ओछव अत घणो, जागू भजन करूं दिनरात ।।११।।

समत अठारै सैतालीस गै, सहर जोधोणे सुभ ठांम ।
वैसाख वद बीज रै दीनै, कीया पास तणा गुण ग्राम ।।१२।।

(ख) इति पार्स चरित्र सपूर्ण. । सवत १८७१ का शाके १७३६ मीती आसोज वदि ८ लिपर्त माहात्मा जयदेव वासी जोवनेर का लाषी जैपूर मे : ।।

(३९) **पार्श्वनाथजी की निसाणी** —क्र० ५१०, ग्र० १३३१, पु० ३६/६१, लिपिकार आर्या सरसा की प्र०

प्रशस्ति :— श्री १०८ चनणाजी श्री १०८ नानगाजी मोटी सत्या छे। गुण का भडार छे। परतक का भेदरीक छे। उत्तम छे। वेरागो छे। आपमे गुण घणा। मारी जीभ एक छे। आप मे गुण हनेक छे। श्री श्री १०८ श्री नानगाजी की तत सषणी सरसा लिखतु ।

(४०) **पुण्य सार चरित्र :—**क्र० ५१७. ग्र० १८१३, पु० ४५/४३ ग्रन्थकार पुण्यकीर्ति की प्र० ।

प्रशस्ति — षरतर गछ म्हाये चीरंजीयो, युगवर धीन जीनचद ।
आचारज महीमागार मुनीवर, श्रीजीनसाह सुरींद ।।४।।
श्री जीनकुसल सु रास प्रपंरा, मुनीवर महीमावंत ।
म्हीमा मेरु मुनी मोटा जती, क्रीयाबंत गुणवत ।।५।।
हरषचदर गणि हरष हीत करु, बाचक हरष प्रमोद ।
तास सीष पुन्य कीरती, इमभण, मन धरि हरष प्रमोद ।।६।।
संवत सोल सछासठी समें, बीजयदसमी गुरुवार ।
सांगानेर नगर रलीयामणो, पभण्यौ एह बीचार ।।७।।
एह चीत्र भवियण ज्ये सांभल्यो, भणे गुण नर जेहे ।
दान दान उदय अधीक नीत होबे, नव नधि होय सगेह ।।८।।
इति श्री पुण्यसार चरित्र संपूर्णम् ।

(४१) **पुण्यसार रास** —क्र० ५१८, ग्र० ४७ पु० ४/७ ग्रन्थकार मुनिपद्म व लिपिकार वल्लभ विजय की प्र० ।

प्रशस्ति (क) :—सकल गछ सिरेतिलो, तपगछ गुणनिलो । दीपतो दिन मणि तेज तोलें ।
वीर पाटें प्रभु हीर विजयो जयो, जग गुरु अकबर साह बोलें ।।९८।।

तस पटे श्री विजय सेन सूरि अभिनवो । वादी करी केसरी जे विराजे ।
वादविवाद करी विविध विद्या बलें । जगत सवाई गुरु बिरुद बाजे ।।६६।।
तस पट अ बरे तरणी तप तेज थी । धना अणगार समोवडि कहावें ।
श्री विजयदेव सुरिंद गोयम समो । सोहम जबू उपम सोहावे ।।७००।।
तेहना राज मा साधु गुणें सोभतो पडित मंडली मां विराजे ।
चरित्र चोखो तप जप क्रीया साधतो । पण्डित श्री शुभविजय राजे ।।७०१।।
तस पद कज सेवा रसिक मधुकर जस्यो, कहें मुनि पद्म ए रास रगें ।
ढाल पात्रीस करी प्रमाद परिहरि, पुण्यसार रास रच्यो पुण्य प्रसगें ।।७०२।।
कुकण देस मां नयरो महंकावती, रहीअ चोमासु गुरु भाइ भेला ।
प डित लालविजय तणा कहेण थी, रास आरभीउ शुभ वेला ।।७०३।।
तिहा जिन शांति पसाउलें बऊ थयो, आवता अष्टमी माहि कीधो ।
नयरी चपावती धर्म जिनदरिस नें, रास पूरण थयो काज सीधो ।।७०४।।
चद्र ऋषि अ बर नद संवशरें, वार मसी प चमी माघ मासि ।
गाइऊ रास उज्जल पषि उलटें, सांभलो श्री सघ मन उलासि ।।७०५।।
एह सुणता थकां संपदा बऊ मिले, भाव बिभय टलें भवह फेरा ।
पुत्र कलत्रादिक ऋद्धि परिवार सुख, पामीइं जाणि फल पुन्य केरा ।।७०६।।
भोग सयोग पुन्यसार परिपामीइ रतन चतुर दस नवह नीधी ।
पुन्य पसाउ लें मगलमालिका, होय जयकार वलो सकल सीधी ।।७०७।।

(ख) इति श्री अष्ट प्रवचन माता पालण फल विषये पुण्यसार रास सम्पूर्ण ।। श्री दरापारा नगरे । प० श्री वल्लभविजयेन यादृश पुस्तके दृष्ट तादृश लिखितम् मया । यदि शुधमशुधवा मम दोषो न दीयते । सवत १८३२ ना वर्षे वेशाख मासे सितेतर पक्षे सप्तमी तीथौ शनिवासरे लि० । शुभमस्तु ।।

(४२) बच्छराज रिषी चौपई --क्र० ५२६, ग्र० १२२, पु० ८/४, ग्र थकार सुमति-बल्लभ व लिपिकार नैणचद की प्र० ।

प्रशस्ति (क) सवत सतरै गुणतीसै गुरुवार परे मास कातो मन रग ।
रतन वद्दतम गुरू सांनिधकारी कीधी चौपई रे दीवाली दिन रग ।।६।।
राजै श्री जिनचंद सूरसुरीसरै रे, खरतर गछ सुर वृक्ष ।
सोहै तेहनी मोटी साषा षेमनी रे, पुन्य फल देण प्रतक्ष ।।७।।
सुगुणकीरति कीरति सुगुणां मुष जगत मै रे, वाचक पदवी धार ।
मतिवलभ गणि सिष्य सुमति वल्लभयौरे, गुण त्रय रतन भंडार ।।८।।
अ ते वासी तासु उछ कथइ वछनौरे, एह रच्यौ अधिकार ।
मतकुसल गुरुआ गुण मन रंगसु रे, जपना जय जयकार ।।६।।

पास जिणदन णै सु पसायै, रच्यौरे, तलवाडै ए चरित्र ।
भणतां गुणतां सुणता भावसु रे, मानव जनम पवित्र ।।१०।।
चमतकार तणी चतुरा चौपई रे, पंतालीस ढाल प्रधान ।
नव सै चौसठ गाहा छै, इन चोपोयै रे, सुणतां सदा हुवै कल्याण ।
धन धन सूधौ साधु नमो वछराजी रे ।।११।।

(ख) इति श्री वछराज रिपि चौपई समाप्त ।। सवत १८६२ का कार्तिक शुक्ल पक्षे पुण्य तिथो १२ चद्रवासरे । लिपिकृत स्वेतावर नैणचद जपुर मध्ये ।शुभमस्तु ।।

(४३) मगल कलश चौपई —क्र० ५५५, ग्र० १६८, पृ० ११/१०, ग्रथकार मुनि लक्ष्मीहर्ष व लिपिकार कालूहम की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) सवत सतरे उगणीसमैरे, माघ मास सुभ एह ।
सुद पक्ष तिथि एकादसी रे, गुरुवार नै दिन तेह ।।२।।
छत्रपति गछपति राजीयारे, विजयरत्न सुरि आणद ।
तप गछै गछ मांहै सीरे रे, अधिक प्रताप दिणद ।। ३ ।।
तस सेवक नित्य हर्ष गणि रे, सदा मन आणद ।
तत शिष्य लक्ष्मी हर्ष कहे रे, सेवै नरना वृद ।। ४ ।।
सहर काकदी नगर भलो रे, रह्या तिहां चोमास ।
श्रावक सदा सुखीया वसेरे, पुन्ये करी जस वास ।। ५ ।।
ढाल थइस सावीसमीरे दान तणो अधिकार ।
ए सांभलता सुख ऊपजै रै, कहीयो छै च्यार प्रकार ।। ६ ।।
ढाल सु ऊंघ दूरे करी रे, सांभलजे चितलाय ।
तस दुख दोहग दूरे गमे रे, इम पभणे मुनी राय ।। ७ ।।
सांभलिवो करिवो भाव सु रे, मन मे आणी विनोद ।
धर्म करे ते सुख लहै रे, उछै एह प्रमोद ।। ८ ।।

(ख) इति श्री मगल कलस चउपई समाप्त । सवत १६४० वर्ष । माघ वद १।। समाप्त भवतु ।१।। लि०। प । कालुहमेन पत्राम्ढ चक्रे।। श्री नवानगर मध्ये ।। श्री शातिनाथ जी सुभ मम करू ।।श्री।।श्री।।

(४४) मछोदर चौपई —क्र० ५५६, ग्र० ५३ पृ० ४/१३, ग्रथकार जिनहर्ष की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति—गिरी ससि भोजन वछरै, ए भाद्रव सुदि सुविचार ।
संपूरण चौपई ए आठमि, तिथि कविवर ।। २० ।।
श्री जिन चद्र सूरि सिरजयौ, ए खरतर गछ सिणगार ।
सुगरु सुपसाउ लै, ए बाहडमेड मझार ।। २१ ।।
श्री गुण वई नगणि वरु ए, वाचक पदवी धार ।
वणारस परगडाए, श्री श्री सोम सुखकार ।। २२ ।।

तास सीस रलीयामणा ए, साति हरष गुण जांण ।
कहै जिनहरष सु ए, तेत्रीस ढाल बखांण ।। २३ ।।

इति श्री धम विषये मछोदर चौपई सपूर्ण ।। सवत् १८४६ रा चैत्र सुदि ७ दिने लि० न्याय त्रिसालेन ।। ग्र थाग्र थ १००१।।

(४५) मल्लिनाथ स्तवन—क्र० ५६५, ग्र० ५०२, पु १७/२६, ग्र थकार नयरसुन्दर की प्र० ।

प्रशस्ति—सवत सोलै उण्यासी या निधि, दीवाली दिनकार ए ।
शृ गार नर धर नयर सुंदर, बीकानेर मझार ए ।। १ ।।
श्री सघ वीनती सरस जांणी, कीधो तवन उदार ए ।
श्री मल्लि जिणेसर सेवक जिन नै, सादा सिव सुषकार ए ।। २ ।।

इति श्री मल्लिनाथ जिन स्तवन सपूर्ण समाप्त श्री रस्तु सुम भयात् लेषक पाठकयो ।

चदणवाल समो चडै राजैमती सम जेह ।
चौथे जुग री करणी करै, कलि जुग माँहि एह ।।
सो माहरै श्रमाभयण, तीरथ भूल समान ।
तास सुसिष्याणी कारणै, लिख्यौ तवन परधान ।।

इति सपूर्ण ।।

(४६) महाबल मलयसुन्दरी राणी की चौपई—क्र० ५६६, ग्र० ४२, पु० ४/२, ग्र थकार जिनहर्ष की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति—श्री जयतिलक सूरीसरु, आगमीया गछ नै पटधार ।
मलय सुन्दरी नौ रच्यौ, ए चरित्र जोई श्रीकार ।। १७ ।।
सतरे सै एकावनै, आसू सुदि पडिवा ससीवार ।
रास कीयौ रलीयामणौ, पाटण मै सुणतां सुषकार ।। १८ ।।
चौथौ प्रस्ताव पूरो थयौ ढाल एहनी अडतालीस ।
तेरै रै चालीस श्लोक नी, सख्या प्रमाणै कही जास ।। १६ ।।
श्री जिन चंद सूरी सरु षरतर गछनायक गुणधार ।
वाचक शांतिहर्ष तणौ, सीस पभणै जिन हर्ष विचार ।। २० ।।

इति श्री मलय सुदरी चरित्रे मीलावदात पूर्व भव वर्णनो नाम चतुर्थ प्रस्ताव ४ । इति श्री महावल राजा मलय सुन्दरी राणी की चौपई समाप्तम् ।

(४७) महिपाल नरेन्द्र चतुष्पादिका क्र० ५५८, ग्र० १७०, पु० ११/१२, ग्र थकार विनयचन्द्र व लिपिकार व्यास बालाबख्श की प्र० ।

प्रशस्ति (क) धन गुरु है धनराज जी, धर्म बतायो जेण ।
क्षत्री कुल मे क्षमा करी, दुक्कर परीसह रे सहिया बहुतेण ।। १७ ।।

तास शिष्य धनराम जी, राखी रूडी रीति ।
साध क्रिया शुभ साधवी, प्रभु ने वचनें रे पूरी परतीत ॥ १८ ॥
श्यामाचारज सुख करू, सकल शास्त्र ना जाण ।
ज्ञान क्रियाधर मुनिवरु, तिण नाम थी रे वरतें कल्याण ॥ १६ ॥
ताराचद जी तेहना. शिष्य भला सु विनीत ।
अनूपचद जी तेहना, शिष्य साचा रे, पूरण तास प्रतीत ॥ २० ॥
तास प्रसादें विद्या लही, विनय अरु विनाण ।
श्री सतगुरुरें कृपा करी, मुज दीनो रे चारित्र ने नाण ॥ २१ ॥
श्री सदगुरु सुपसाउ लें, गुंथ्यो एह गिरथ ।
विनयचद नित्य भाव सु भवि नमीये रे, निशि दिन निगरथ ॥ २२ ॥
सव्वत हय वसु वसुध ए (१८८७) कार्तिक मास सुमास ।
पूर्वे वाहया सो लूणीयें. वली करीये रे आगली शाखनी आस ॥ २३ ॥
धन तेरस सवदि मे वदे, धर्म तें होत है धन ।
दीसें पर्व दीवाली मे. घर घर मे रे सबही राजी मन ॥ २४ ॥
बाहादरपुर मेवात मे, सहिर, भलो सुख वास ।
अलवर गढ नो परगनो, तिहा वसियो रे आनद चौमास ॥ २५ ॥
केसरपोलि नें ऊपरे, बिब भलो श्रेयास सोहन ।
इग्यारमा जिनवर तणो, जयकार रे, जिनवर जसवत ॥ २६ ॥
पोलि नें बाहिर गुमटहे, बाबा नो विश्राम ।
श्रावक जन मानें सही, आलसीयां रे छै सुख नो धाम ॥ २७ ॥
कोइ कहे नामहि ग्रथ मे, गुंथे ते कर है गुमान ।
भोला मन समझै नहीं, इण माहि रे केहवो अभिमान ॥ २८ ॥
विगर नाम कवि ना कथे, विगर बाप नो पूत ।
विन व्यवहारें वाणीयो, रजगुण विण रे एंणो रजपूत ॥ २६ ॥
नाम थी श्राद्धा नी पडे, पवर पेला नें मन ।
सहिनाणी विण गांठडी, कुण जांणे रे केहनो छे धन ॥ ३० ॥
नाम आपणो नविक है, कथनी तो कथ जाय ।
जैसे अलगो ऊपर है, केइ कुमति रे निज कुबुद्धि चलाय ॥ ३१ ॥
कहै केवलीये नहीं कह्यो, सिद्धान्ते निज नाम ।
या कुंडी साहूकारनी इण माहि रें, कैसो नाम नों काम ॥ ३२ ॥
कागद मे नाम न विग्रहै, लिखें है सब समाचार ।
स्याबासी तें तु ऊंभो कहो कहियेंरे, केहनें घर द्वार ॥ ३३ ॥

सावद्य वचन जे विरचीयो, तेहनो पश्चाताप ।
करऊ मन वच काय सुं, मिथ्या दुकृत रे नासें सहूपाय ॥ ३४ ॥
धर्म वषाण्यो जे मुखैं, तेह तणो फल होय ।
पुण्य बंध ने निर्जरा, इम समझोर श्रोता सब कोय ॥ ३५ ॥
आदित्य तेज जिम अधिकहि, सागर वर गभीर ।
अविचल वायक सुख दीयें, मतिदाय करे मुझने मुझ महावीर ॥ ३६ ॥
चोथो खड वषाखीयो, थइ चोत्रीसमी ढाल ।
विनयचंद जिन वचन थी, सदा वरतोरे शुभ मगल माल ॥ ३७ ॥

कलश— श्री चन्द्र गछै सुजस अछै, देवभद्र सूरेश्वरु ।
तास शिष्यहि सिद्धिसेन सूरि, मुनि चद्रहि हित धुरु ।
तास शिष्य वीरदेव गणीये, रच्यो ग्रंथ निरमलो ॥
महीपाल चरित्रहि पद्य बधे, मागध भाषायें भलो ॥ १ ॥
जयो जगत जीवराज गुरुवर, केवली धर्म प्रकासीयो ।
धनराज धन सुभ राम रिषिवर, श्याम आगम भासीयो ।
ताराचद अनूप मुनिवर, शिष्य विनय या भणी ।
चउपई महीपाल मुनि नी, श्री सघ रग वधामणी ॥ २ ॥

(ख) सर्व सख्या ११४६०॥ इति श्री श्रीमन्महीपाल चरित्रे प्राकृत बधे महीपालस्य रत्न सचय पुर राज्य समर्पण ॥ १ ॥ धर्म घोष सूरिणोपदेश द नेन चतुष्कषाय करण फल कथा कथन ॥२॥ चतुर्भार्या सहित महीपालेन शिक्षा ग्रहण ॥३॥ महोग्र तपसा केवल प्राप्ति ना निर्वाण गमन एभिश्चतुर्भि कलाभिः समर्थितोय चतुर्थि खड ।४॥

इति श्री श्रीमन्महीपाल नरेन्द्र चतुष्पदिका सपूर्ण ॥ प्रथम खडे ढाल । २७। द्वितीय खडे ढाल ३१ । तृतीय खडे ढाल ॥३१॥ चतुर्थ खडे ढाल ।३४। सव सख्या ॥१३३॥ सर्व ग्रथाग्रथ सख्या ४०५६ । सवाई जयपुर । सवत १९४३ मार्गशीर्ष शुक्ल २ लिप्यकृत बालवकस व्यास ।

(४८) मानातु ग मानवती—कथा प्रबन्ध—क्र० ५८१, ग्र० २११ पु० ३५/५, लिपिकार ज्ञानाजी की प्र० ।

प्रशस्ति—अनुपचन्दजी गुर प्रसादै सुकल मास तेरस सही ।
बरस अठारा सयसितरैं, जयनगरे ए कही ॥

इति श्री मानतुग मानवती कथा प्रबन्ध सम्पूर्ण । मिती कार्ति बदे तेरैस लषत ग्यानाजी, हीरांजी, पाराजी, की चेली । जयनगर मध्ये । सतत्र की साल म १८७७ का । श्री । श्री । श्री ।

(४९) मुनिपति चरित्र—क्र० ५८७, ग्र० १६६, पु० ११/११, ग्रथकर धर्ममन्दिर व लिपिकार की प्रश० ।

प्रशस्ति (क)– श्री जीनधरम सुरीसरु, जसु दरसण हिवडौ हीसरे।
तसु राजइ सबध रतन, संवत सतरै से पचीसै रे ॥६॥
पाटण माहि परगडो, सीरी सांमी पास विराजै रे।
तसु सानिध चउपई रची, चतुंरा नै कठै छाजैरे ॥७॥
श्री षरतर गछै परगडो, जुग प्रधान श्री जीनचदौ रे।
तास सीष भवनमेरु, पण्डित जनम आंणदो रे ॥८॥
वाचनाचारज गुणनिलौ, श्री पुन्यरतन कहीजै रे।
तास सीस वाचक वरु, दया कुसल लहीजै रे ॥९॥
तास सीस पण्डितवरु, मुनि धरममीदर हुलासो रे।
कीधी चउपई चाह थी, वांचतां लील विलासो रे ॥१०॥
च्यार षड नी ए चउपई, पैंसठ ढाल प्रधाने रे।
जय समुद्र नी हुसमुं, मुनी गुण गुणतां नव निधांनो रे ॥११॥

(ख) इति श्री मुनीपति चरितर सपूरण। श्री श्री श्री १००८ श्री दलुजी री तत सीषणी लीषतु ॥ समत १९ मैं नमा रा काती वद १२ सोमवार रे दिन सपुरण सुभ भवतु कील्याण ममतु ॥ कीसनगढ मध्ये जाणवा ॥

(५०) रतनपाल चरित्र—क्र० ६५६, ग्र० ३०, पु० ३/११ ग्रंथकार सूरविजय व लिपिकार छगना की प्रश०।

प्रशस्ति (क) समत सतरबतीस बरस, सुभ मोरत सुभ वार रे।
सुर बीजय सपुरण कीधो, तीजो षंड उदार रे ॥१०॥
बीनती करूं तुमने कर जोडी, कोइ बीध चोरत मन धरीयो रे।
असुध होय तो तूमे सोधज्यो, पीण हासी मत करीयो रे ॥११॥
गुणतां ने वले सांभलतां, भणंता हरष अपार रे।
गुण गावतां वले गुणवत केरा, बरते जय जयकार रे ॥१२॥

(ख) इति श्री रतनपाल चरित्र सपुरण। समन १९ बरस तेरा का बेसाष बद ७ अदीतवार मानत्या जी माराज श्री श्री १०००८ श्री श्री दलु जी री तत सीषणी लीपतु छगना कोसनगढ मघे सपुरण कीधी छै।
भणज्यो गुणज्यो सीषज्यौ, हीतकर दीज्यो दांन।
पोथी जतनां राखज्यो, जुं पावो सुनमांन ॥

(५१) रतनचूड की चौपाई—क्र० ६५७, ग्र० १३६, पु० ९/१, ग्रंथकार अमरसागर की प्र०।

प्रशस्ति–उपदेस रत्नाकर थकी, मैं जोई ए संबंध।
एकसठ ढाल दूहें करी, लोकभाष्यांइ रच्यो एह सम्बन्ध ॥६६॥
वीस सहस सप्त सत उपरि, सतसठि श्लोक जांण।
ग्रंथ ग्रंथ चौपई तणो गणी, कीधो रे एह सख्या प्रमाण ॥६७॥

वसु[८] वेद[४] सागर[७] सुरपति[१] ए (१७४८) सवत सख्या जांरा ।
मधु मास सित दसमी दिने, गुरुवारें रे चोपई चउंठो प्रमाण ।।९८।।
मालव देस मां अति भलु, खलचीपुरु पुण्यवास ।
सिष्य तणा आदर थकी कीधी, चोपई तिहा रहो चौमास ।।९९।।
अमीय रसायरण सारषी, कवियरण वारगी देष ।
नीरस वाणी जाणी माहरी, मोटा मुनिवर मति मूको उवेष ।।१००।।
पण्डितनी जोडि आगलें, किहां आगे छ माहरी जोड़ ।
जिम मेरु गिरवर आगलें, किम होये नान्हो परवत जोड ।।१।।
कवियरण नी बुद्धि आगलें, ए माहिरी कही कुरण वुध ।
खोटी होइ ते षरी करो, तुम वाचज्यो जी मुनिवर मन सुध कोध ।।२।।
सकल भटारक सामती तस, भाल तिलक समांन ।
श्री विजयदेव सुरगुरु, गिरुआ गछपति रे हुआ युग प्रधान ।।३।।
तस पाट उदयाचल प्रभाति, उदयो अभिनवो सुरीस ।
तपागछ तखत विराजतो, जयवतारे श्री विजयप्रभ सुरोस ।।४।।
तस पट प्रभावक अति भलो, जस वदन विराजे चद ।
सुविहित सुरी शिरोमरणी, आचार्य रे विजयव्रत सुरीद ।।५।।
वाचक चक्र चूडामरणी, श्री धर्मसागर उवझाइ ।
कलिकाल मांहि जेणी कह्यो, जीनसासन रे उद्योत सवाइ ।।६।।
तस सीस परणयालीस आगम, सूत्र अरथ भडार ।
पडत गुरणसागर गुरू जे जग मांहे रे, कवि कुल सिरणगार ।।७।।
तस सीस साधु सिरोमणि, श्री भाग्यसागर गुरुराय ।
वालकपरणे व्रत आदरी जिरणे कीधा रे, घरणा धर्म ना काज ।।८।।
तस सेवक वली सहोदर, पुण्यसागर गरिगराय ।
अति भई भावी पुण्य प्रभावी गुरण गिरुआरे, तप निरमल काय ।।९।।
तस चरण पकज रसग मधुकर, अमर सागर सोस ।
सिष्य तणें हिति कारणें कीधी चोपी रे, पूगी मनह जगीस ।।१०।।

इति श्री रत्नचूड नी चौपई सपूर्णमस्तु । सदा लेखक पाठकयो कल्यारणस्तु ।

(५२) रत्नपाल ऋषि चरित्र :—क्र० ६५६, ग्र० ५४, पु० ४/१६, ग्रंथकार मोहनविजय की प्र० ।

प्रशस्ति—सवत ख्यांग सजम करी जाणो, मगसर मास सुहायो जी ।
तीथ पंचमी गुरवार तणें दीन, विजय महुरत मिन भायो जी ।। २३ ।।
तप गछ मंडरण कुमती नो षडरण, वीजय रत्न गुरू राजें जी ।
जा सदी वाजे पीशुरण तरणा मद, सहसा दूरें भाजे जी ।। २४ ।।

वाचक कीर्तवीजेंय सेवक, मांनवी जै कवीराया जी ।
ता सीस बुध रूपवीजय गुरु, तेहना प्रणमी पाया जी ।। २५ ।।
मोहनवीजये रास ए गायो, पूरव रतन माहे जी ।
रत्नपाल मुनी राय तणा गुण, च्यारे खडे भाया जी ।। २६ ।।
चौथो खड अठारे ढालें, पुरो थयो सुवीसाल जी ।
च्यारे खडे शुपरे गेली, नोतन छासठी ढालें जी ।। २७ ।।
वर्णवीने जो कहेशि पवित्र भा, हीत करी श्रोता सुणशे जी ।
तो उपजस्यै रस सही जन नें, दूष दोहग अवगणशे जी ।। २८ ।।
होस्यें घर घर मगल माला, साभलता ए रसाला जी ।
धण कण कचण लीलालवी, मोहनवीजय विलास जी ।। २९ ।।

एती श्री रत्नपाल ऋषि चरित्रे चतुखड समाप्त ग्रथाग्रथ श्लोक ।।२१०१।।
सवत १८७० का मिती माघ सुदि ३ लिषापित आर्या जी श्री चनणा जी तत् शिष्यणी आर्ज्याजी नानगाजी पठनार्थं ।

(५३) राम यशौ रसायन —क्र० ६६४, ग्र० १२३, पु० ८/५, ग्रथकार केशराज व लिपिकार आर्या उमा की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) संवत सोलै आसीइरे, आछो आसो मास ।
तिथ तेरसि अंतरमुग्पुर माहि, आणी अति उल्हास ।। ४४ ।।
विजय गछ नायक गिरूउ, गोयम नउं अवतार ।
बिययवत वियय ऋष राजा, कीधो धरम्म नुंधार ।। ५० ।।
धरम्म मुनी धर्म्म जन नुं धारी, धरम तणौ भडार ।
षिमा दया गुण केरो सागर, सागर षेम उदार ।। ५१ ।।
श्री गुर पदम मुनिसर मोटौ, मोटो जेहनौ वंस ।
चउरासी गछ मइ जाणी तौ, प्रघट पणै परसस ।। ५२ ।।
तस पाटोधर गुण करि गाजै, गुण सागर जयवत ।
कडु सुतन कलप तरु कलिम, सुर सिरोमण सत ।। ५३ ।।
ए गुर देव तणइ सु पसाइ, ग्रथ चढउं सु प्रमाणि ।
ग्रथ गुणे गिर मेरु सरीषो, नदरस मांहि बखाणि ।। ५४ ।।
एवं वासठि ढाल सुघारी, बचन रचन सुनिसाल ।
राम यसो रे रसायण नामा, ग्रंथ रच्यौ सु रसाल ।। ५५ ।।
कविजन तो कर जोडि करइरे, पंडत सुं अरदास ।
पंचा आगे तो बाचेवड, जो होवै अभ्यास ।। ५६ ।।

अषर भंगइ ढाल ज भगै, राग ज भगै जोय ।
वाचता रे बचन इन भगै, रस नही उपजै कोइ ।। ५७ ।।
अक्षर जांणी ढाल ज जाणी, राग ज जाणी एह ।
पचा आगइ बाचता थी, उपजिसिइ अति नेह ।। ५८ ।।
जब लग सायरै नौ जल गाजइं जब लगि सुरज चंद ।
केसराज कहै तब लगए, ग्रथ करो आनद ।। ५९ ।।

कलस राम लक्ष्मण अनइ रांवण, सती सीता नी चरी ।
कही भाषी चरित साषी वचन रचन करी षरी ।।
सग रग विनोद भक्ता अने श्रोता सुख भणी ।
केसराज मुनिद जपइं, सदा हरिख बधामणी ।। ६० ।।

(ख) इति श्री ढाल द्राषाष्टा रामयसो रमायने चतुरथो अधिकार समाप्त । सवत १८ वर्षे ७२ जठ सुदि तेरस दीन शुकल पक्षे सोमबारे बिकानेर मध्ये पुज श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री १००० श्रीमन जी तत सिष्य पुज जी श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री १००० श्री नाथुराम जी तत सिष्य पुज श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री १००० श्री लिपमीचद जी तत् सिष्यणी आरज्या जी श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री १००० इडा जी जेठा जी तत सिष्यणी आरज्या जी श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री रूपा जी री तत् सिष्यणी श्री श्री १००० श्री आरज्या जी श्री सुषाजी तत् सिष्याणी श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री १००० श्री अजबाजी, षेमा जी, मीठु जी री तत् सिष्यणी श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री १००० श्री आरज्या जी श्री ग्याना जी री तत सीष्यणी लिषत उमा आत्मा अर्थे ।।

रामचीरत सट बट कीयो उमा जीता रामरासो जीता रो छै दावउ वेदावउ करवाया वै नही ।

(५४) रिसालूराय की बात— क्र० ६६६, ग्र० २६, पु० ३/७, लिपिकार आर्या उदी की प्र० ।

प्रशस्ति—इति रीसालुराय की वारता सपुरण । आरज्या जी श्री श्री १००८ श्री मासात्याजी श्री सीरकवर जी श्री नाथाजी की तत मीषणी लीषत उदी जयपुर मधे समत १३ चेत सुध पाचम वार बुधवार सपुरण ।

(५५) रूपसेन चरित्र चौपई—क्र० ७०७, ग्र. ५०, पु० ४/१०, ग्रथकार रूप ऋषि व लिपिकार वीर ऋषि की प्र० ।

प्रशस्ति (क) गुजराती लौकागछ भला, पक्ष कह्या धनराजो रे ।
सोहम स्वामी परपरा, गछपति श्री मेघराजो रे ।। ६ ।।
थेवर श्री सिघराज जी, थेवर श्री गुरुदासो रे ।
थेवर श्री सार्नसिघ जी, प्रेम ऋषी गुण बासो रे ।। ७ ।।

बंग देस मांहे भलो, मक्सूदाबाद अजीमगल जानो रे ।
गुजराती लौंकागच्छ तणी, तिहां पोसाल प्रमांनो रे ॥ ८ ॥
सवत अठारा अठन्तरे, श्रावण शुदि चौथ गुरुवार रे ।
ऋषि श्री कृष्ण जी कृपा थकी, एह रच्यौ अधिकारो रे ॥ ९ ॥
अधिको उछो पद हुवै, ते पडित शुध धरिज्योरे ।
मुझ कविताई देखि ने, हांसी कोई मति करिज्योरे ॥ १० ॥
ग्यानावरणी कर्म थकी, भूल चूक जे होई रे ।
मिछामि दुक्कड मे दिउं, सघ आगल इहा जोई रे ॥ ११ ॥
एह चरित्र सूणी करी, कोईयक नेम करीजो रे ।
रूपसेन जिम सुख लह्या, तिम शिव रमणी वरीजो रे ॥ १२ ॥
श्री जिन धर्म प्रसाद थी, एह सुगम करी ढाल रे ।
जिन वांनी मुझ मन वसी, पालो नेम रसाल रे ॥ १३ ॥
चौतीस अतिसय प्रभु तणी, तिम ए चौतीस ढाल रे ।
रुप ऋषी कहै होइज्यौ, श्री सघ मगलमाल रे ॥ १४ ॥
इति श्री रूपसेन चरित्र चौपई, चौतीसे ढालै सवध: समाप्त ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥

(ख) दूहा—गच्छ गुजराती रूपरिषि सभा चातुरी जांण ।
ता अर्थे पोथी लिखी, विर रिषी मन आंण ॥
सवत १८७९ रा वर्षे मिती भादवा सुद अष्टमी दिने । सैहर मक्सूदाबाद मध्ये लिखी॥

(५६) लीलावती महासती की चतुष्पदी —क्र० ७१६ ग्र ० १३७, पु० ९/२, ग्र थकार लाभवर्द्धन व लिपिकार आर्या नगा की प्र० ।

प्रशस्ति (क) श्री षरतर गच्छ गहगहेरे, श्री जिनचद सूरिंद ।
चतुर चोपडा वश मे, प्रतपे जांणि दिणंद ॥ ४ ॥
श्री षेम साखें प्रगडा, वणारस वरीयाम ।
श्री गुण वर्धन गुण वरुं, तलो नांम तिसो प्रणाम ॥ ५ ॥
शिष तेहना रूष करु, वणारस श्री सोम ।
साधु गुणे की सोभता, सु प्रसन्न मुष जाणि के सोम ॥ ६ ॥
शातिहर्ष शिष तेहना, वाचक पदवी सुपसाउ ले, ए सरस रच्यौ अधिकार ।
इण कलि काले जोवतां, ए तो गोतम अवतार ॥ ७ ॥
सवत सतरसो गया वली, उपरि अठावीस ।
काती सुदि चवदिस दिनें, ए सपूर्ण सु जगीस ॥ ८ ॥
सहिर लेत्रावे सोभती, भला वसे म्हाजन वृंद ।
खरत्रगच्छ रागी घणुं, जिन धर्म धरे आणद ॥ १० ॥

चोमासो सुख सूं रह्या, श्री संघ तणो सुपसाय ।
धर्मी श्रावक श्राविका, दिन दिन अधिके हीज भाव ॥ ११ ॥
तिहां ए कीधी चौपइ, गाथा छ से प्रोणाम ।
तीस ढाल गुणे भरी, सुणता हर्ष सुजांण ॥ १२ ॥
सुणे भणे जे भाव सूं, ए स्त्री तणो अधिकार ।
कहे लाभवरधन तेहने, रिद्धि सिद्धि सदा सुखकार ॥ १३ ॥

(ख) इति श्री लीलावती ना नाम्या महामत्याश्चतुष्पदी सपूर्णा मग मून । समत् १८ म ४७ का किस्न पक्ष वार विसप्तवार दिन १४ स लिपतु आरज्या जी श्री श्री श्री श्री श्री श्री चनणा जी लिपतु नगा विकानेर मध्ये ।

(५७) विक्रमसेन कुमार की चौपई :—क्र० ७२० ग्र० २५ पु० ३/६, ग्रथकार मानसागर व लिपिकार आर्या छगना की प्र० ।

प्रशस्ति (क) सतर से चोइस वरस जांणो, काती मास बांणी जी ।
कडे नगर रे गुणषांणा, गरथ चढीयो परीमांण जी ॥ ४ ॥
तपे गछपति विजदेव सुरिंदा, दीप्प हे तेज दिणदाजी ।
तस पाट श्री वीजयपरभ मुणीदा, पर तपो जा रवि चंदा जी ॥ ५ ॥
तस गछ मांहे पाठक पुरन्दर, श्री विद्यासागर ने गुण सुन्दर जी ।
तस सीषह जसा सागर गुण मदीर, सेवे सुर नर भुंघरेजी ॥ ६ ॥
तस पाटे वाचक वड वयरागी, सुंदर भुप सौभागी जी ।
श्री जयसागर जीनगुण रागी, महिल महिमा जागी जी ॥ ७ ॥
नाम लहीये अधीक जगीस, गुण री वीस्वावीस जी ।
तस पाट जीतसागर गणि इस, जीव ज्यो कोडे बरीस जी ॥ ८ ॥
तस सीषइ मानसागर मती सारे, भवीयण ने हितकार जी ।
रास रच्यो मे पर उपगारे, भणतां जय जयकार जी ॥ ६ ॥
थीर हीरे वो ए गरथ बीचारी, ज्या लगे धुरनी तारी जी ।
कठ करी ने गासी नर नारी, सांभलतां सुषकारी जी ॥१०॥
विक्रम चरीत्र नै ए चोपइ, गरथ रच्यौ मे जोइ जी ।
अधीको उंछो भारयो सोई, मिच्छामदुकडं होइ जी ॥११॥
भाव करी ने जे नर भणैसी, ते नर सीव रमणी वरसी जी ।
एह सबध सदा सांभल सी, तास मनोरथ फलसी जी ॥१२॥
ढाल बावनमी जि मै गाइ, मानसागर सुषदाई जी ।
दिन २ चढ़ते तेज सवाई, दिन दिन दौलत पाई जी ॥१३॥
सरव गाथा १०८८ । इति विक्रमादीत नो वीक्रमसेन कुमार नी चोपइ सपुरणम् ।

(ख) इती श्री सपुरण मासत्याजी माहाराज श्री श्री १०८ श्री श्री दनु जी री तन सीपणी लीषतु छगना । समत १६ स बरस १२ माहासुद वीनत पाच अदीतवार, कीमनगढ मधे जाँणवा ।

कम्यां करीयां ने वांकड़ी, नीचा कर दोय नयण ।
इण कष्टै पुस्तक लीख्यौ, जतनां राषज्यौ सयण ॥

(५८) विक्रमादित्य चरित्रम्—क्र० ७२२, ग्र० १३६, पु० ६/४ ग्रथकार मानविजय की प्र० ।

प्रशस्ति—सवत १७२६ ज कर गुणनि, वर्ष तणो परिमाणो जी ।
पोस शुक्ल तिथि अष्टमि दिवसै, बुध वासर गुण षाणो जी ॥ २२ ॥
ढाल बाण सव सख्याइ जांणो, महद धम तणा धारि जी ।
अठ विस तेने उपर पांसठ गाथा, दुहा युत सारि जी ॥ २३ ॥
श्री विजय संघ सुरि तप गछ दीयो, महिमडल मणि धारि जी ।
तस सिस पाठक पद जयवतो, देव विजय सुखकारि जी ॥ २४ ॥
तस सिस ज्ञानै गोतम जेहवो, ज्ञान विजय रीषि राया जी ।
तस सिस पडित रत्न वषाणु, दस विध धर्म सोहाया जी ॥ २५ ॥
तस सिस मानविजय कवि भाष्यो, विक्रम महिपति रासो जी ।
जो भवि भावे भणस्यै सुणसै, तस मंदिर लछि वासोजी ॥ २६ ॥
श्री जय धर्म सुरिसर राजै, गाम खेमतें गुण गायो जी ।
श्री सघ केरो वयण सुणि नै, मालवपति हुलरायो जी ॥ २७ ॥
अधिको उछौ भाष्यु जे हौवै, वक्ता सुधारि सुध करज्यो जी ।
विक्रम नृप जीम महितल मोटो, तिम तमे श्रोता सत धरज्यो जी ॥ २८ ॥
ध्रु जीम अवचल रहै ज्यौ महि तल, एह संबध गुणमालो जी ।
मो मन वछित पुर्ण उदीयो, गातां रा रास रसालो जी ॥ २६ ॥

इति श्री कलियुगे कर्णावतारे महादाता रे श्री विक्रमादित्य चरित्रे प्राकृत प्रवधे पच षड छत्रोत्पति प्रवधे षष्टमो उलास सपुर्णन् । स १८८४ ना प्रवर्तमाने कृष्ण पक्षे सु० श्रा । व । ६ दिने श्री हरिदुर्ग मध्यै श्री रस्तु । श्री ग्र थाग्र थ सख्या ४००० हजार नी छै । सख्या ३०००७०००७५ ।

(५६) शालिभद्र धन्ना अधिकार छैढालिया —क्र० ७५५, ग्र० ३४६, पु० १३/१०५, ग्र थकार रामचद्र की प्र० ।

प्रशस्ति—स्वामी वृद्धिचंदजी गुरुप्रतापे, षटढाल एक दिन रची ।
उगणीसे इकतीस अहिपुर, जो उंचक नोचक कही कच्चि ॥

तेहनो मुज पातक वृथा, होवो, भगवत शाखसूं ।
जाव जीवहुं श्रद्धा साची, भगवत वचने राषठूं ॥३॥

इति शालिभद्र धन्नाधिकारे पढ्ढालियो संपूर्णम् ।

(६०) श्रीपाल महाराय चौपई— क्र० ७७५, ग्रं० १२१, पु० ८।३, ग्रंथकार जिनहर्षकी प्र० ।

प्रशस्ति— सवत सतरे से चालीसे, चैत्रादिक सुजगीसैजी ।
सातम सोमवार सुभ दिवसै, पाटण विसवावीसैजी ॥९॥
श्री खरतर गछ महिमा वधारी, जिनचंद सूर पटधारी जी ।
शातहरष वाचक सुषकारी, तास सीस सुविचारी जी ॥१०॥
कहै जिनहरष भविक नर सुणिज्यो, नवपद महिमा थुणज्यो जी ।
उगुण पंचासे ढाले गुणज्यो, निज पातक वन लुणज्यो जी ॥११॥

इति श्री सिधचक्र महातम श्री श्रीपाल महाराय चौपइ सम्पूर्णम ॥ सवत १९४६ मार्ग शीर्ष कृ० ९ ।

(६१) श्रेणिक राजा चौपई :क्र० ७८३ ग्र० ५७/२ पु० ४/१७ ग्रंथकार जयसार व लिपिकार आनन्दरूप की प्र० ।

प्रशस्ति (क) सवत नयण शैल गज भू वरसे, फागुण सत्तमि हिरसै जी ।
शुक्ल पक्ष बुधवारै कीधी, गुरुमुख थी बुध लीधी जी ॥९॥
वड खरतर गछ जग जै च्यार, साष जसु कहीयै जी ।
कुसल सूर साषा वडदावै, क्षेम धाड कहावै जी ॥१०॥
पाठक सहिज की रस वडदावै, गजगज विरुद धरावै जी ।
पुन्यसार वाचक ज धारी कनक माणक्य सुखकारी जी ॥११॥
पाठक रत्न से पर पदधारी, दीप कुंजर जसधारी जी ।
हस्त रत्न वाचक पद सोहै, युक्तमेन मन मोहै जी ॥१२॥
तासु सीस वाचक जयसारै, चरित रच्यौ हितकारै जी ।
श्री जिनहर्ष सूरि सुपसायै, जसु सुनि नर सुखदाय जी ॥१३॥
दांनवंत गुणवंत भलेरा, श्रावक गुणे स नू रा जी ।
तिमही श्राविक जिन धर्म धारी, अमकी सो भवधारी जी ॥१४॥
तसु आग्रह चौपी ए कीधी, देशी गुरु मुख लीधो जी ।
हरष घणौ मन मांहे धारी, चारु विषय निवारी जी ॥१५॥
जेसलमेर चौमास एं कीधी, अधिको सोभा लीधी जी ।
श्री चिंतामरण पास पसायें, दिन दिन साता थायै जी ॥१६॥
एह सबध सुणौ भव प्राणी, आसति अधिकी आंणी जी ।
अठ सिध नवि निध अधिक वीशाला, वधज्यो मगलमाला जी ॥१७॥

(ख) सर्वगाथा ५९८ श्लोक सख्या ८०१। संवत १८७५ एवा जयसार जी गणि तत शिष्य प श्री अमरचन्द जी तत भ्रात्र प. प्रमहिमा रत्नजी शिष्य प. अणदा लिपी कृत पाली नगरे मगलवारे मिति आसु सुदि ७ दिने।

(६२)—सुदर्शन कथा भाषा बन्ध — क्र० ८२२, ग्र० ६१, पु० ४/२१, ग्रन्थकार विमलसिंह की प्र०।

प्रशस्ति — गछ उतपत गुजरात, काहू लुकौ वड श्रावक।
जिन मारग रो जांण, परम जिन धर्म प्रभावक॥
उण रै सूष उपदेस, सुणे नर नार सुकोमल।
समकत किधी सुध, मूल मथ्यात तजे मल॥
भाण नूण जगमाल भण, सजम त्यै पाटण सहिर।
परवरै साध पूर प्रबल, गरजै गछ लुकौ गहिर॥१६॥
प्रथम रूप रिष पाट, थाट जिवागिर थभण।
दोय वरसघ दुजल रुघ, जसधत जिण सासण।
रूपसिह गछराज, दाषवड लाज दमौदर।
धर्मलिन धनराज, सकल चितामण सद्गुर।
श्री पूज क्षेमकरण गुण समद, तेज पूज तिणरै तषत।
धर्मसीह गुर प्रतपै धरा, विमल सूजस चटत वषत॥२०॥
कीध सुदरसण कथा, जथा मै गुर भूप जांणी।
आंणी मन उछाह, वदीमत सार वाणी।
सिल सिरोमण सेठ, प्रगट जीम उतम प्राँणि।
उणरी कथा अनूप, सकल भविजन सुषदाणी।
पूंजाण आण मन आसत, सूणजो नर भण जौ सकै।
धीर जपो रिदै जिनवर धरम, त्रिभुवन मै तारक तकौ॥२१॥

इति सुदरसण कथा भाषा बध सम्पूर्ण।

सम्वत १९४३ काती सुदि १२ सोमवार। लीषत लीछमी नारायण ब्रहमण सवाइ जनगर मधे।

(६३) सुभद्राजी को पचढालियो :—क्र० ८३८, ग्र० ११८६/१, पु० ३४/६, ग्रथकार विनयचंद की प्रश०।

प्रशस्ति : कलस—गुण गुणी लकत हरन दरे मेत, श्री आचारज स्वाम जी।
तीस चरण सवत ताराचंदजी, करि अति अभिराम जी॥
अनोपचद जी तास सिष्य, आदरी आदर भरी।
तास चरण सेवक विनेचदज, ढाल पाचु करी॥१॥
गगन हुरुहोव वसु धरा वरषै (१८७०) पोस मे सित धादसी।

जैपुर जिन पद पुरो मथ मै, अखड चद कला जोसी ।।२।।

इति सुभद्राजी को पचढानो सपुरण ।

(६४) हसराज बछराज नी चौपई —क्र० ८६६, ग्र० ७६८, पृ० २५/१, ग्रंथकार जिनोदयसूरि व लिपिकार ऋप शुक्ला की प्र० ।

प्रशस्ति (क) हस प्रबन्ध सुहामनो, कहे श्री जिनोदय सूरि ।
भणें गुणे श्रवणें सुणें, तिहा घरि आणद राज ।।६७।।
च्यार खड चौपइ करी, श्री सघ सुणवा काज ।
पुन्य घणो विसेखे पामीई रे, हस अने वछराज ।।६८।।

(ख) इति श्री हंच बछराज चोपई मम्पूर्ण । मम्वत १६१-(?) वर्ग मास क—आसाढ वीद ४ दीने वार मगल । सामी जी श्री श्री श्री श्री श्री पंडितराज जी श्री ज्ञान का सागर श्रीमत महाराज श्री नेत्तमजी महाराज तत् सिष सामीजी महाराज श्री मघराज जी तत् सिष चरण का चाकर समीपे का वसनवाला न फेर ऋप सुकला का दसकत छे । जाजपूर्मधे ।। श्री योरस्तु, कल्याणमस्तु शुभ भवतु ।।

(६५) हरिवश ढाल सागर —क्र० ८७४, ग्रं० ५६६, पु० १८/२, ग्रंथकार गुण सूरि की प्र० ।

प्रशस्ति—गछ स्वछ प्रणामसुरे, विजयवत विसेष ।
श्री विजयगछ राजोया, काई दीपइ रे गुरु धर्म नरेस ।।८०।।

विजय ऋषि विद्यावलारे, धर्मदास मुनीश ।
क्षिमासागर खेम जोहनीर, जग माहि जगीस ।।८१।।

पद्म सागर सुरिजीरे जोरे, सुयश जस भरपूरि ।
पाय प्रणामी प्रभु तणां, काई पभणइ रे गुण सागर सुरि ।।८२।।

संवछरछह तरई रे, मास सावण सुद्ध ।
तीज सोमुत्तरा काइं, बासररे वार अविरुद्ध ।।८३।।

कुर्कटेश्वर नगर मइ रे, पास स्वामि पसाय ।
सघनइ उछक पणइं कांई, रचायो रे मइ चरित सुभाय ।।८४।।

ढाल सागर नांम श्री हरिवश नो विस्तार ।
सुद्ध भावइं सांभलई काइ, पामइ रे सुख सपति सार ।।८५।।

एकसउ एकावनइ रे, ढाल नो सोभाग ।
आदि तो आसावरी काई, अंतइ रे धन्यासी राग ।।८६।।

जब लगइ गिरि मेरुजोरे, सकल गिरवर ईस ।
तव लगई हरिवंश ए, काई थाज्यै रे थिर विस्वावीस ।।८७।।

कलश —हरिवश गायो, सुयश पायो, ज्ञान बुद्धि प्रकाशनउ ।
पाप ओठउ गयो नाठउ, पुन्य आयो आसनउ ।
करण पुत्र कलीत्र कमला, पढत सुहाणउ ।
पूज्य श्री गुणसुरि जपइ सघि रग वधामणउ ।।

इति श्री ढाल सा०

उपदेश-नीति-वैराग्यादि

(६६) उपदेश बावनी ।—अ०५६, ग्र ० ६०, पु० ४/२०, ग्र थकार किसनदासजी की प्रशस्ति ।

प्रशस्तिः—श्री जयसिघराज लुंकागछ सिरताज ।
अज तिनकी कृपाल, कविताइ पाइ पावनी ।।
संवत सतर सतसठें विजें दसमी को ।
ग्र थ की समापती भइ है मन भावनी ।।
साधनी सग्यांन साइ, जाइ श्री रतनबाई ।
तज्यौ देह तापें एह, रची परचावनी ।।
मत की न मनि जीनी, तत्वही कुं रुचि दीनी ।
बाचक किसन कीनी, उपदेश बावनी ।।६२।।

इति वाचक किसनदास कृत बावनी समाप्तः लि० देवकृष्ण ।

उपदेशात्मक दूहेः—क्र० ६६, ग्र० १८५१/१ पु० ४५/४५ लिपिकार रायकवरी को प्र० ।।

प्रशस्तिः—आरज्याजी श्री श्री माहाकवरि जी तत सिषणी लिखत ।
रायकवर आरज्या ।। ढुढाण देस । चोरू नगर लीखी ।।

(६८) क्षमा छतीसी—क्र० २१६, ग्र० २१५ पु० १२/४४, ग्र थकार समयसुन्दर की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति —नगर माहि नागोर नगीनो, जिहां जिनवर सादजी ।
श्रावक लोक वसे अति सुषीया, धर्म तणइ प्रसादजी ।।३४।।
खिमा छतीसी खातइ कीधी, आतम पर उपगारजी ।
श्रावकपणि सॉमलता समज्या, उपसम धरयो अपारजी ।।३५।।
जुग प्रधान जिनचंद सूरीसर, सकलचद तस सीसजी ।
समयसुन्दर तस सीस पयंपइ, चतुर्विध सघ जगीसजी ।।३६।।

इति क्षमाछतीसी सपूर्ण ।।

(६९) दिवाली को स्तवन—क्र०३३५ ग्र० ३६० पु० १४/१३, लिपिकार हमीरमल की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति —इति श्री समत १८६६ विरपे मीति वेसाख सुद ८ पुज्य श्री १००८ श्री गुमनचदजी । श्री दुरगदास जी सामी जी श्री रत्नचद जी तत्र सिष्य हमीरमल नागोर मध्ये । श्री । श्री । श्री ।

(७०) **बालचंद बत्तीसी** —क्र० ४२४, ग्र ० ५३५,पु० १७/६२, ग्रथकार बालचंद की प्रशस्ति ।

प्रशस्तिः—महा सूषकंद रूपचंद जांरणीये ।

श्री रूप जीव गणी कुयर श्री मूल मूंनी ।।

रतनसिह जस धरणी, त्रिभोवन मांनीइं ।

विमल जास जसवास, मूनी श्री गंगदास ।।

हसंत दीषत तास, बत्रीसी वषांरणीए ।

बाण वसू रस चंद, दीवाली मंगलचंद ।।

आइमदावाद इंद, रंग मंन आरणीइं ।

इति श्री बालचद बत्रीसी सपूर्ण ।। ऋष दानाजी सामीजो । ऋष पेमचदजीन लीषछे ।

जैनागम

(७१) **अनुत्तरोववाई सूत्र टब्बा** —क्र० ६, ग्र ० ७४७, पु० २४/१४, लिपिकार तिलोक ऋषि की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति :—इति अणुत्तरोववाइय सुत्र ।। नवम अग सम्मत्त ।। सवत १९३० वर्षे फाल्गुण मासे ।। कृष्ण पक्षे ।। अष्टमि त्तिथौ ।। चद्रवासरे ।। ग्र थाग्र थ १९२ ।। लिपिकृत पुज्य श्री १००८ कान्ह जी ऋष जी । तत शिष पुज्य श्री १००७ तारा ऋष जी तत शिष पुज्य श्री १००६ काला ऋष जी । तत शिप पुज्य श्री १००५ श्री बगसु ऋष जी । तत् शिष पुज्य श्री १०८श्री धन जी ऋष जी । तत् शिप स्वामि जी श्री गुरदयाल श्री १०८ श्री एवताऋष जी ।। तत् शिप । लिपिकृत । तिलोक ऋष । देश मालवो । कसबे ग्राम मउ मध्ये । श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु । श्री श्री ।। जो वाचो सो । जण्णा कर्के वाचजो । सुद्ध परुपजो । नहि माने जिनकु आप आपणा इष्ट की आण हे । ज्ञान, ध्यान, तप, जप, की वृद्धि करजो सो सिघ्र मोक्ष पावोगा ।। ए हमारी आसीस हे भव्य प्रते श्री ऐ ना ।।

(७२) **आचारंग सूत्र प्रथमांग :**—क्र० १५, ग्र. १५२, पु० १०/२

सवत १६६३ वरषे श्री जिनचद सूरि विजय राज्ये श्री ज्ञान सा महोपाध्याया नां शिष्य प हेम हस मुनि एण विनय हर्ष मुनिभ्यः सा० नाना भार्या काली तत्पुत्र सा० वर्द्धमानेन् पुत्रसिह जी सहितेन प्रदत्ता प्रतिनिय ।।

(७३) **चउसरण प्रकरण** :—क्र० ६०, ग्र ० २९७/१, पु० १३/५६ लिपिकार रिख शोभाचन्द की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति .—इति श्री चउसरणपइन्न सपूर्ण । पूजनीय महाज श्री श्री श्री श्री विनेचद जी महाराज तत् प्रसादात् लिपिकृत ऋष सोवाचद्रेण । श्री हरषचद वाचनार्थं ।

(७४) **नन्दी सूत्र टब्बा** —क्र० ९९, ग्र ० ३४८, पु० १४/१, लिपिकार किशोरसागर की प्र० ।

प्रशस्ति —सवत् १८३३ रा मिती चैत्र सुदि १० दिनै लिषत प० किसौर सागरेण ।। श्री वडलु ग्रामै लिपि कृता ।। श्रीरस्तु ।। कल्याणमरस्तु ।। श्री चिंतामण जी प्रसादैन ।। श्री अजीतनाथ जी सत्य छै ।

जैन प्रकरण

(७५) आलोयणा पद :—क्र० ८६, ग्र० २०७, पु० १२/३६, ग्रथकार व लिपिकार पेमराज की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति (क) उगणीस छतीस का, धुलिया स्हर मझारो रे ।
कीस्न गुरु प्रभाव थी, पेमराज मंगलाचारो रे ।। ६० ।।
प्राणी तैं पाप कीया घणा, आतमदोष अनेक है सो जीन आपसीकारी रे ।
ओगण म्हारा मत लेषवो, श्री जिन मुझ ने तारो रे ।। ६१ ।।
प्राणी तैं पाप कीया घणा इति ।। ६७ ।।

(ख) पुज जी श्री श्री १०८ श्री धनजी जी । पुज जी श्री १००८ श्री बीह्लु जी । पुज श्री १००८ श्री नथमल जी पुज श्री १००८ श्री भोजराज जी । पुज श्री १०८ श्री किल्याण जी । स्वामी जी श्री १०८ ज्ञान जी स्वामी जी श्री १०५ श्री कीसन जी । तेहनो सीष पेमराज । सवत १९३६ माह सुदि १५ सोमवार ।

(७६) गुण ठाणा ना द्वार :—क्र० १८१, ग्र० १८० पु० १२/६, लिपिकार चतराजी की प्र० ।

प्रशस्ति :—श्री आगर माहि लिपत आरज्या जी गोला जी री तत सिषणी कूसला लिखत कातिग वदि बीज लिखतम् कूसला । ३१ दवार । श्री लिषमा जी आरजा जी की सिषणी तत फूला जी चतराजीन इकीस दवार दीयाछई । श्री गोरधजी चोमासो कियो जदि लिपछइ जी ।

(७७) गुण ठाणा पर इक्कीस द्वार का थोकड़ा :—क्र० १८२ ग्रं० १२१५, पु० ३५/६, आर्या नथूजी की प्र० ।

प्रशस्ति :—समत १८ से ५१ वर्षे मीती चत्रवदी ६ वार सनीसर सुभ भवती सपूर्ण । लिपतू आर्य्या जी श्री श्री श्री १०८ श्री षेमाजी तत सीपणी लीषतू श्री श्री श्री १०८ श्री श्री माहासती जी वीना जी तत सीपणी लीषतू नथो दीली मध्ये ।

(७८) द्रव्य प्रकाश भाषा बंध :—क्र० ३६६, ग्र० १२५, पु० ८/७. ग्रथकार देवचन्द गणि की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति :—संवत-कथन :

दूहा :—विक्रम संवत मास यह, भय लेश्या के भेद ।
सुध सयम अनुमोदिकै, करि आश्रव को छेद ।। १६२ ।।
ता दिन या पोथी रची, वध्यौ अधिक संतोष ।
सुभ वासर पूरन भई, प्रथम जिनेसर मोष ।। १६३ ।।
अथ ग्रंथ महिमा :

सवैयो ३१ · गुण कौ निधान है कि मानौं निरवांन है कि,
साची जिनवानिय मेंा अधिक उदार हैं ।
मांनी मद भंजन है, मिथ्या मति भजन हैं,
ज्ञान दृष्टि अंजन शिलाका सुखकार है ।
रांम कौ रमन है कि दुष्ट को दमन है कि,
पर कौ वमन है, अपार पारावार है ।
संत कौ सवाद है कि शुद्ध स्यादवाद या मै,
और कौ विषाद नांहि ग्यांनी उर हार है ।। १६४ ।।

दूहा :—स्यादवाद युत द्रव्य षट, जहां वषां ने ठीक ।
नांमै द्रव्य प्रकासयौ, ग्यान ग्रंथ तहकीक ।। १६५ ।।
पुनः ग्रंथ महिमा :

सवैयौ ३१ :—परसूं प्रतीति नांहि, पुन्य पाप भीति नांहि,
राग दोष रीति नाहि, आतम विलास है ।
साधक कौ सिद्धि है कि बुझिवै कौं बुद्धि है कि,
रीझिवै कौं रिधि ग्यांन भांन कौ विकास है ।
सज्जन सुहाव, दूज चंद ज्यूं चढ़ाव है कि,
उपसम भाव यामै, अधिक उलास है ।।
अन्य मत सौ अकद, वंदत है, देवचंद,
ऐसे जैन आगम मै द्रव्य कौ प्रकाश है ।। १६६ ।।

दूहा :—ग्यांन ध्यांन सुष थांन यह, यही मुकति कौ पंथ,
जीव द्वार पूरन भयै, पूरन भयौ गरंथ ।। १६७ ।।
इति श्री द्रव्य प्रकास भाषा वध ग्रंथे पडित देवचद गणि विरचिते तृतीयौ जीवद्वार समाप्त।।
लि० । प० मैरूदास ।

(७९) **पंच समवाय स्तवन :**— क्र० ४७२, ग० ५८१/१, पु० १९/१३, ग्रंथकार कीर्तिविजय की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति कलस :—ईम धर्मनायक मुक्तिदायक, वीर जीनवर संथुणो ।
सये सतर संवत बह्लि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणों ।।
श्री वीजेयदेव सुरिंद पटधर, वीजेय प्रभु मुणिंद ए ।
किर्तिविजेय वाचक सीस, इणि परिवीनेय कहे आणंद ए।।५८।।
इति श्री पच समवाय स्तवन सपूर्णम् । स० १९४२ चैत्र सुदी १४ नै ।।

(८०) **वनस्पति सत्तरिका मूल :**—क्र० ६८२ ग्र० ३५७/१, पु० १४/१०, लिपिकार मुनि गजसुकुमाल की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति —इति बनस्पति सरिका सूत्र समाप्त । सवत १६१० वर्षे कातिग वदि ११ एकादशी तिथौ । खरतरगछे उ० श्री पू विनयकीर्ति मिश्रानू तच्छिष्येन लि० वा० गयमुकमाल मुनि ना । श्रुश्राविका वाई श्रद्धा पठनार्थे । श्री आगरा नगरे । सलेमसाहि विजय मारणे । श्री माँगल्य ददानु । शुभ ।

(८१) श्रावक सूत्र टब्बार्थ :—क्र० ७२२, ग्र० १३५, पु० ८/१७, लिपिकार छगनचन्द्र की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति —पुज्य जी श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री रुगनाथ जी तीत पाट पूज्य जी श्री माहाराज श्री श्री १०८ श्री श्री टोडरमल जी तीत पाट पूज्य जी श्री श्री १०८ श्री मेरुदास जी त्यागी वेरागी माहाराज जी तीत शिष्य स्वामी जी श्री १०८ श्री लीखमिचद जी तीत शीष स्वामी जी श्री १०८ श्री जीलमफोज तत सीष्य सामी जी श्री १०८ श्री तीत सीस प० श्री छगनश्चन्देरण हस्त दिक्षित् ... गुण रो भाजन स० १६३६ वे सु ५ जोधपुर मध्यें ।

(८२) सजया का थोकड़ा —क्र० ७३८, ग्र० ६०३, पु० १६/३५ लिपिकार रायकुवर की प्रशस्ति ।

प्रशस्ति :—समत १८६० वर्षे फागुण मास का सुकल पषे पुरण मासी तिथि मगलवार । फागइ मध्ये । आरज्या जी श्री श्री दीपा जी तत सीपणी आरज्या जी श्री दुरगा जी तत सीपणी आरज्या जी श्री श्री श्री माहाकवर जी आतमा अर्थे तत सीसणी लीपत रायकुवर आरज्या की छै । सुभ भवतु कल्याणमस्तु । छ' छ

(८३) समकित की सज्झाय —क्र. ७६१, ग्र० १५५०, पु० ३६/४० ग्रथकार कवि नेत की प्रश० ।

प्रशस्ति :—संवत सतरे सै बावने, जेठ सुकला सातिम सुभ दिनै ।
सुगुरु श्री धनराज पसाय, नेत कहे बहु आणंद थाय ।। ३० ।।

इति श्री समकत नी सभाय सपूर्ण । स० १८१५ वर्षे चैत मास सुकल पाप वार सनीसर वर दसमी ।

परिशिष्ट—६

ग्रंथकार-प्रशस्तियाँ

लिपिकार-प्रशस्तियाँ

परिशिष्ट—८

ऐतिहासिक रचनाओं की सूची

पृष्ठ सख्या	क्रमाक	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थकार	छद-सख्या
		स्तुति-स्तोत्र-वन्दनादि		
८	७१	आसकरणजी गच्छपति	—	६
८	७२	आसकरणजी महाराज के गुण	सवलदास	३३
८	७३-७४	इस्या गुरुदेव हमारा	किशनलाल	७-७
१२	११३	कनीरामजी महाराज के गुण (र. १६३६)	चन्दनमल	ढाल ४
१४	१२६	कुशलाजी की सज्भाय	—	३४
१६	१३७	गुरुणी का गुण	—	१३
१६	१३८	गुरुणी की सज्भाय	रायचन्द	२०
१६	१३६	गुरुणी की स्तुति चौमासा	बाई सरूपा	१५
१६	१४०-४१	गुरुणी जी के गुण (स १८३६)	रायचन्द	२२
१६	१४२	गुरु गुण की महिमा	आसकरण	५
१६	१४३	गुरु गुण गाथा ढाल	—	१६
१६	१४४	गुरु गुण ग्राम (स १८६५)	—	६
१६	१४५	गुरु गुण ग्राम ढाल	रायचन्द	२०
		(१८०४ होली चौमासा)		
१६	१४६	गुरु गुण ग्राम पर ढाल (सं० १८८८)	—	७
१६	१४७	गुरु गुण ग्राम पर ढाल (१८७६ आपाढ)	—	१२
१६	१४८	गुरु गुण ग्राम स्तवन	—	६
		(१८६६ होली चौमासा)		
१६	१४६	गुरु गुण ग्राम स्तवन	आसकरण	५
१६	१५०	गुरु गुण महिमा स्तवन	गुणसागर	२१
१६	१५१	गुरु गुण माला (१८८२ चौमासा)	रिख भगवानदास	१४

१६	१५२	गुरुजीरी सज्झाय (स० १८४२)	रायचन्द	१३
१८	१५३	गुरु महिमा	—	१०
१८	१५४	गुरु महिमा	—	३
१८	१५५	गुरु महिमा (स १९०५ चौमासा)	—	७
१८	१५६	गुरु महिमा	—	१२
१८	१५७	गुरु महिमा स्तवन (स० १८७७ जेठ २)	सवलदास	१४
१८	१५८	गुरु स्तवन (१८६३ का व ५)	रायचन्द	१०
१८	१५९	गुरु स्तवन	रतनचद	२३
२२	१६६	चुन्नीलाल जी म० का गुणगान (स० १९५४)	गुलावाजी	११
२६	२४३-४४	जीतमलजी म० का स्तवन	—	७-७
२६	२४५-४७	जीतमलजी म० का स्तवन (स० १९१२)		६-६
२६	२४६	जीतमल जी म० का स्तवन (स० १९००)	गुलहजारीजी	२५
२८	२४८	जीतमल जी म० का स्तवन	—	५
२८	२४९	जीतमलजी म० के गुणगान (स० १९१३)	—	७
२८	२५२	जयमलजी के गुणो की प्रथम ढाल	—	२०
२८	२५३	जयमलजी म० के गुण (स० १८९१)	रिख भगवानदास	१८
२८	२५४	जयमल जी म० का स्तवन	मुनिराम	१०
२८	२५५ ५६	जयमल जी री गुणमाला (स० १८५३)	रायचन्द	ढाल ३
५०	४६७	पूज्य गुणमाला स १९२२	रिख कस्तूरचद	७
५०	४६८	प्रताप अभिधान (सवाई प्रतापसिह की प्रशस्ति)	—	१६७
६२	५८८	रतनचद जी म० रा गुण (स. १९०७)	विनयचव	१७
६२	५८९	रतनचदजी म० रा, गुण (स० १८९२)	रिख हमीरमल	९
६४	५९०	रतनचद जी म० का स्तवन	शभूनाथ	२९
६६	६१८	रामचन्द्र जी म० रा गुण	—	८

६८	६४२-४३	विनयचंद जी के गुणगान (सं० १९६२-६५)	मुनि सुजानमल	१०
७०	६४९	विरधमानजी तपसी की ढाल	—	९
७४	७०३	शत्रुंजय उद्धार गाथा	—	१३
८२	७७९	सबलदास जी म० के गुण (१९०४)	रिख रायचन्द	११
८४	७८९	साधुजी रा गुणगान (१८६३)	रिख चंद्रभाण	१६
९४	८९३	स्वामीजी म० की विनती	रायचन्द	११
९६	८९६	हेमऋषि स्तवन	—	९
९६	८९८	हेमचन्द मुनि सज्झाय	मुनि गुलाब	९
९६	८९९	हेम महामुनिराज स्तवन (१९०६)	—	२९
९६	९००	हेमराज जी स्वामी का गुण (१९०६)	स्वामी करमचंद	९
९६	९०१	हेमराज जी स्वामी रा गुण (१९०६)	—	९

कथा-काव्य-चरितादि

१००	२९	अमीचन्द ऋषि की ढाल (१८९६)	—	१७
१००	३०	अमीचन्द जी की ढाल (१८९६)	—	७
११२	१३६	केदारजी तपसी की ढाल	—	८
११२	१३७	केदारजी तपसी की ढाल (१८९६)	—	१३
१२०	२२७	चित्रगुप्त कथा (कायस्थ उत्पत्ति)	—	श्लो० ७५
१२६	२८२	जिनदत्त की सज्झाय (१७९७)	—	१०
१३०	३१०	तेरापंथी जीतमल जी (१९११)	रिख करमचंद	१३
१४८	४८४	पद्मिनी चरित्र	लब्धोदय	खण्ड ३
१४८	४८५	पद्मिनी चरित्र	लब्धोदय	खण्ड ३
१५२	५१५	पुण्य रतन सूरि गुरु फाग	—	२४
१५२	५२५	प्रागदास जी म० के सथारा की सज्झाय	—	२९
१६४	६४३	मोती जी स्वामी की ढाल (१८९७)	—	९
१६६	६४९-५३	रतन गुरु की सज्झाय	—	४२
१६६	६५०-५४	रतन गुरु की सज्झाय	—	५९
१६६	६५१	रतन गुरु की सज्झाय	—	४९
१६६	६५२	रतन गुरु की सज्झाय	—	३८

१६६	६५५	रतनचद जी म० के गुणों का चौढालिया	हमीरमल	ढाल ४
१८८	८७०	हरजी की सज्भाय	जिनसागर	१६

इतिहास

३८०	१	अट्ठारह देशो के राजाओ का विचार	—	गद्य
३८०	१५	चौरासी गच्छ के नाम	—	गद्य
३८०	१८	साधु-साध्वियो के नाम सटिप्पण	—	गद्य
३८२	२०	पट्टावली		,,
३८२	२१	पट्टावली		,,
३८२	२२	वाइस टोलो के नाम		,,
३८२	२३	बारह मत का नाम		,,
३८२	२४	बीकानेर की निशानी (१६२०)		१५
३८२	२५	महावीर पछाली पट्टावली		गद्य
३८२	३०	विभिन्न गच्छो की उत्पत्ति		गद्य
३८२	३१	साधुमार्गीय सम्प्रदाय पट्टावली		गद्य

प्रकीर्णक

३६२	६	कुनणाजी आर्या की पोथी की सूची		गद्य
३६८	७०	मेडतिया श्री संघ की विनति	खुशालसुन्दर (१८३२)	११
४०२	११३	समस्त चैत्य पवाड़ी गीत	लाभ उदय	१४

परिशिष्ट—६

शुद्धि-पत्र

पृ. स./क्रमाक	अशुद्ध	शुद्ध
	स्तुति-स्तोत्र-वन्दनादि	
१२/१०२	ज्ञानसागर	ज्ञानसार
२०/१८८	३६/१५, ज्ञानसागर	५६/१५, ज्ञानसार
२०/१६०	ज्ञानसागर	ज्ञानसार
३८/३४३	लावण्य विजय	लावण्य समुद्र
४८/४४४	१६७५	—
५२/४६०	श्रीहर्ष	भगवानदास
	·· ····१८ पौ० क्र० ६, जयपुर	१८८१, कटालिया
	—	लिपि स० १८८५ पौ० क्र० ६, जयपुर
५२/४६१	ज्ञानसागर	ज्ञानसार
६२/५८१	रामचन्द	रायचन्द
६२/५८४	हरष	—
६६/६२२	देवसूरि	मानदेव सूरि
७४/७०१	व्याख्यात पूर्वं	जिन शासन स्तुति
७४/७०२	विजय	बुधकुअर
७८/७३४	शान्तिनाज	शान्तिनाथ
८४/७८३	एक पार्श्वनाथ मत्र	उपसग्गहर स्तोत्र
८४/७८६	मुनि ज्ञानचन्द	देवमुनि
८६/८०४	जयलम	जयमल
८६/८०६	१६५२	१६५१
६०/८३८	सवलदाल	सवलदास
६४/८८२	१७७०	१७७७
	कथा-काव्य-चरितादि	
१००/२०	अखण्ड	अम्बड
१००/२८	जीवसार	जीवसागर
१०२/४५	८२३	१८२३

पृ स./क्र.	अशुद्ध	शुद्ध
१०२/५२	१८१८	१६८४
१०४/६१	लब्ध	लब्धिविजय
१०४/६६	तत्वहस	तत्वहस
१०४/७३	उदयी	उदायी
१०६/८२	१७३१	१७४१
१०८/६६	—	जिनहर्ष
१०८/१०५	जयरगमणि, १७३१	जयरंग गणि, १७२१
११२/१३६	—	जयरग
११२/१४५	जिनचन्द	पदमराज
११४/१६०	कुशालचन्द	चौथमल
११८/१६३	चन्दन चरित्र	चन्द चरित्र
१२०/२२५	१८६५	१६६५
१२८/२६४	१६५६,१७१७	१७५६,१८७२
१२८/२६८	गुण सारग	गुणसागर
१२८/२६६	सूरि सागर	गुणसागर सूरि
१३०/३०६	तेरह ढाल,	साधुवन्दना की तेरह ढाल
१३०/३२१	रिखजी	कुशलसिंह
१३२/३३२	दिवाली काव्य	दिवाली कल्पनो अधिकार
१३४/३५०	सुम्मतिवल्लभ	मतिकुशल
१३६/३६८	१७८७	१७७७
१४२/४२१	सयय सुन्दर	समय सुन्दर
१४४/४४७	दिवीनोलाल	विनोदीलाल
१४६/४७१	रत्न मुनि	पुण्यरत्न
१४८/४८४	वल्लोल गणि, रायचन्द्र	लब्धोदय, रामचन्द्र
१४८/४८५	ज्ञानसमुद्र	लब्धोदय
१५०/५००	हरिविजय सूरि	सेवक
१५२/५१६	१६२६	१६६६
१५२/५१६	सालदेव	मालदेव
१५२/५२६	सुमतिवल्लभ	मतिकुशल
१५४/५४४	१८३	१८३५
१५६/५६०	जयतलक सूरि	जिनहर्ष
१५८/५७४	१८८६	१८३६

पृ सं /क्र.	अशुद्ध	शुद्ध
१५८/५७६	१९३९	१८३९
१५८/५८० से ५८३	अनूपचन्द	विनयचन्द
१६४/६२६	१८७	१८७०
१६६/६५६	सूरज विजय	सूर विजय
१६६/६५६	१७१२	१७६०
१७०/६८७	धर्म सुन्दर	धर्मसमुद्र
१७४/७२५	धाणल	थाणल
१७४/७२६	उग्रई	कुडई
१७६/७४३	१९५२	१८५२
१७६/७४६,४७,४८, ५१,५२,५६ ५७,५८,५६	मतिसार	जिनराज सूरि
१८२/८१४	श्रषि	ऋषि
१८४/८२२	विमल बुकागछ	दीप
१८४/८२३	धर्मसिंह	दीप
१८४/८२९	विभव सुजस	दीप
१८६/८४८	विनयचन्द	धर्मवर्द्धन
१८८/८६६	जिनचन्द्र सूरि	जिनोदयसूरि

उपदेश-नीति-वैराग्यादि

१९२/१३	पद्यावलि	पदावली
१९४/३०	ऋषभदेव	विभिन्न कवि
२१४/२१९	सममसुन्दर	समयसुन्दर
२१६/२४१	ज्ञानसागर	ज्ञानसार
२१८/२६२	तणा	तणा सम्वाद
२२२/२८६	सुन्दरदास	भूधरदास
२२२/२९२	सेवक, १८२८	मनोहरदास, १७२८
२२२/२९३	१७२२	१७२८
२२२/२९६	चन्द्रभाग	चन्द्रभाण
२३०/३६३	ज्ञानसार	बनारसीदास
२३४/४०१	परिग्रह की चौपाई	परिग्रह की चौपाई
२३४/४१०	ज्ञानसागर	ज्ञानसार
२३४/४१८	जिनचन्द, १६७६	जयसोम १६४६

पृ.स./क.	अशुद्ध	शुद्ध
२३८/४४०	वल्लभगणि	लक्ष्मीवल्लभ गणि
२५२/५७७	विजयसेन	सोमप्रभ
२५२/५८०	सिसु जो पितु	सिख सुणी प्रीउ माहरी रे

जैन प्रकरण

पृ.स./क.	अशुद्ध	शुद्ध
२८२/४६,४७	ज्ञानसागर	ज्ञानसार
२८६/८९	आवली	आवती
२८८/९९	टीकाकार	मूल रचयिता
३०६/२६९	३२/७ चौरानवे	३२/७०, चौरासी
३०८/२८७	जीवचार	जीववार
३१४/३५८	१६३१	१७३१
३१८/३८२	८३	८४
३१८/३९९	भाण	भाषा
३२६/४७२	१७/८८, कीर्ति विजय	१९/१३, विनय विजय
३३०/५१२	वोल	वेलि
३३८/५७५	५७/१५ माण्डली	३७/१५ माडनी
३४४/६३६	ज्ञानसागर	ज्ञानसार
३५४/७३७	१७९७	१४९७
३६६/८४३	देवपाल	देपाल

भूगोल-खगोलादि

पृ.स./क.	अशुद्ध	शुद्ध
३७६/१९	सोढ	साढा

इतिहास

पृ.स./क.	अशुद्ध	शुद्ध
३८०/१४	(सतर सवायण यत्र)	(सत्तरसउ ठाणा)
३८०/१८	विहमान	विहरमान

व्याकरण

पृ.स./क.	अशुद्ध	शुद्ध
३९०/७	मदनभूति	अनुभूति

प्रकीर्णक

पृ.स./क.	अशुद्ध	शुद्ध
४००/८९	रूपटा	सेहरा
४०४/१२३	कुणलिया	कुण्डलिया

प्रशस्तियाँ

पृ० स०	पक्ति स०	अशुद्ध	शुद्ध
४३०	२५	विजनय नारीहरे	विजयमेन सूरिह रे
४३२	१४	वक्तापुरि	वक्रापुरि
४३४	८	गुराजियो	गुरु राजियो
४३४	१२	ण	गणि
४३४	१३	तणा	तणा गुण
४३४	२७	दूसरा वार	दसराहार
४३५	२	ह्वँ त स दरसण जी	ह्वँ तस दरसण जी
४३५	४	चितना निग	चित नानिग
४३५	८	अवरलवुध	अविरल बुध
४३५	१४	धरराज	धनराज
४३५	१६	देत सुदरसण जी	ह्वँ तसु दरसण जी
४३५	१८	चितना नग	चिन, नानग
४३६	१	सुत पत्र	शतपत्र
४३६	८	तेणीज	तरणिज
४३६	१५	निपि	निरपि
४३८	११	सालडी वयामी	साल इक्यासी
४३८	१६	नाव सुपसोलै	नाथ सुपसाव ले
४३६	८	चित्रासन	चित्रसेन
४४१	२३	गुण सूरि सागर	गुणसागर सूरि
४४२	१६	सुम्मतिवल्लभ	मतिकुशल
४४७	४	या ग्रह	आग्रह
४४८	१७	जीनसाह	जिनसिंह
४४६	६	नयई	नयरी
४४६	२३	सुमतिवल्लभ	मतिकुशल
४४६	२६	वददतम	वल्लभ
४४६	३१	उछ कथई	उछक थइ
४५०	१	जिणदनणँ	जिणद तणँ
४५०	३१	गुणवईतगणि	गुणवर्द्धन गणि
४५१	६	सादा	सदा
४५१	११	चैड़	वडँ
४५२	११	वसुध ए	वसु धरा

पृ स	प.स.	अशुद्ध	शुद्ध
४५५	३२	जा सदी वाजे	जास दीवाजे
४५६	१	मानवी जै	मानविजै
४५६	२	ता	तास
४५६	३	पूरव रतन	पुरपत्तन
४६१	१६	सहिज की रस	सहजकीर्ति
४६१	२०	ज धारी	जस धारी
४६१	२१	रत्न से पर	रत्नशेखर
४६२	४	विमलसिंह	दीप
४६२	६	काह	साह
४६२	८	मूष	मुख
४६२	१७	चटत	चढत
४६२	१८	भूष	भुख
४६२	२०	सिल	सील
४६५	८	इद	द्र गे
४६७	२४	कीर्ति विजय	विनय विजय